Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश
New Light on the Most Ancient East

लेखक
वी० गॉर्डन चाइल्ड

अनुवादक
प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, एम० ए०, पुराणशास्त्री

८५ प्रा

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
सम्मेलन-भवन, पटना-३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

With author's best
Compliments to Dr.
D. R. Regmi

[illegible]
17/2

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

New Light on the Most Ancient East

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

New Light on the Most Ancient East

लेखक

वी० गॉर्डन चाइल्ड

अनुवादक

प्रो० राधाकृष्ण चौधरी, एम० ए०, पुराणशास्त्री

अध्यक्ष

इतिहास एवं प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति विभाग

(गणेशदत्त कालेज बेगूसराय)

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी

सम्मेलन-भवन, पटना-३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(C) भारत सरकार

भारत सरकार की विश्वविद्यालयस्तरीय ग्रंथ-निर्माण-योजना के अंतर्गत भागलपुर विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में अनूदित और बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित यह ग्रंथ सर्वश्री रूटलीज़ एंड केगन पॉल, लंदन द्वारा प्रकाशित वी० गॉर्डन चाइल्ड की अंग्रेजी पुस्तक New Light on the Most Ancient East का हिंदी अनुवाद है, और भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय के शतप्रतिशत अनुदान से प्रकाशित है।

930.9
चा 93 न्यू

प्रथम संस्करण : १९७०
२,०००

3960

मूल्य : पंद्रह रुपये मात्र

मुद्रक ।
कमल प्रिंटिंग प्रेस, पटना-४

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रस्तावना

शिक्षा-संबंधी राष्ट्रीय नीति-संकल्प के अनुपालन के रूप में विश्वविद्यालयों में उच्चतम स्तरों तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा के लिए पाठ्य-सामग्री सुलभ करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने इन भाषाओं में विभिन्न विषयों के मानक ग्रंथों के निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन की योजना परिचालित की है। इस योजना के अंतर्गत अंग्रेजी और अन्य भाषाओं के प्रामाणिक ग्रंथों का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रंथ भी लिखाए जा रहे हैं। यह कार्य भारत सरकार विभिन्न राज्य सरकारों के माध्यम से शतप्रतिशत अनुदान देकर तथा अंशतः केंद्रीय अभिकरण द्वारा करा रही है। प्रत्येक हिंदीभाषी राज्य में इस योजना के परिचालन के लिए भारत सरकार के शतप्रतिशत अनुदान से राज्य सरकार द्वारा स्वायत्तशासी निकाय की स्थापना हुई है। बिहार में इस योजना का कार्यान्वयन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के तत्त्वावधान में हो रहा है।

योजना के अंतर्गत प्रकाश्य ग्रंथों में यथासंभव भारत सरकार द्वारा स्वीकृत मानक पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, ताकि भारत की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में समान पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

'प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश' नामक प्रस्तुत ग्रथ V. Gordon Childe द्वारा लिखित New Light on the Most Ancient East का हिंदी अनुवाद है। यह अनुवाद वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के भागलपुर विश्वविद्यालय में काम करने वाले अनुवाद अभिकरण के तत्त्वावधान में प्रो० राधाकृष्ण चौधरी द्वारा किया गया है।

आशा है, अकादमी द्वारा मानक ग्रंथों के प्रकाशन संबंधी इस प्रयास का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जायगा।

लक्ष्मीनारायण सुधांशु
अध्यक्ष
बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी

पटना,
दिनांक २ दिसम्बर, १९७०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विषय-सूची

प्रस्तावना	पृ० च
१. इतिहास से प्रागितिहास की ओर	१
२. रंगमंच की स्थापना	१६
३. मिस्र के प्राचीनतम कृषक	४१
४. नील के तट पर अफ्रीकी तथा एशियाई	६५
५. फराऊनों का उत्थान	६७
६. मेसोपोटामिया का उपनिवेशीकरण	१२७
७. मेसोपोटामिया में नगर क्रांति	१५३
८. प्रारंभिक वंशीय काल	१८३
९. ईसा पूर्व तृतीय सहस्राब्दी में भारतीय सभ्यता	२१३
१०. दजला-तिग्री से सिंधु तक	२३४
११. उर्वर चाप के शृंगों के मध्य	२३७
१२. प्रसार के प्रमाण	२६६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रथम अध्याय

इतिहास से प्रागितिहास की ओर

आज से केवल एक हजार वर्ष पूर्व तक स्कौटलैंड और शेष उत्तरी यूरोप अशिक्षा एवं असभ्यता के अंधकार में डूबे हुए थे। एक हजार वर्ष पूर्व हमारे अंधकारपूर्ण महादेश पर भूमध्यसागर के तटवर्ती कतिपय स्थलों से इतिहास का आलोक प्रकट होने लगता है और फिर दूसरी ही सहस्राब्दी में ये प्रकाश-स्थल एक-एक कर मिटने-से लगते हैं, जबकि पौराणिक वीरगाथाओं का दीप्त प्रकाश ट्राय (Troy) और टिरिन्स (Tiryns) के पौराणिक दुर्गों को उद्भासित करता है। प्रागैतिहासिक पुरातत्ववेत्ता हमारे पूर्वजों और अग्रगामियों के भोंड़े हथियारों एवं बेडौल आभूषणों के उत्खनन द्वारा उन्हें लगभग काला श्रेणियों एवं स्थानीय वर्गों में सजाकर उनके असभ्य अतीत पर किंचित प्रकाश डाल सकता है। इस प्रकार वह उत्तरोत्तर युगों में ब्रिटेन एवं उसके समीपवर्त्ती भू-भागों में बसनेवाली विभिन्न मानव जातियों के भौतिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करने में सफल होता है और बहुधा उनके उपकरणों की सहायता से इस प्रकार के मानव वर्गों के परिभ्रमणों का भी पता लगा सकता है।

तथापि, इस प्रकार प्रकाश में लाई गई मानव जातियाँ प्रायः अनिवार्य रूप से नामरहित ही रहती हैं। उनका आध्यात्मिक जीवन हमलोगों के लिए वस्तुतः एक बंद पुस्तक है, और इनकी प्राचीनता अधिकांश व्यक्तियों के लिए संदेह का विषय हो सकती है। परंतु, इन प्रागैतिहासिक यूरोपीय जातियों की अंधकारपूर्ण एवं उलझी आख्यायिका के मध्य से गुजरने वाला सूत्र स्पष्टतः दृष्टिगोचर होता है। वह है प्राच्य आविष्कारों का पश्चिम की ओर प्रसार, उनका अंगीकरण और रूपांतरण। यूरोप के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सांस्कृतिक क्षेत्रों में आगत अथवा अनुकृत प्राच्य वस्तुएँ जो उपलब्ध हुई हैं, उनके अध्ययन के द्वारा ही हम कुछ निश्चित शब्दों में ईसवी पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के पूर्वार्द्ध के अशिक्षित यूरोप में अभिज्ञात विभिन्न सांस्कृतिक वर्गों के युग की परिभाषा की आशा कर सकते हैं।

नील के तट पर और मेसोपोटेमिया (Mesopotamia) में लिखित इतिहास का स्वच्छ प्रकाश पूर्णतः पचास शताब्दियों तक हमारे पथ को आलोकित करता है। इसका सिंहावलोकन करते ही हम इसकी दूरतर सीमा पर सुव्यवस्थित शासन, नागरिक जीवन, लेखन-पद्धति एवं सजीव कला के दर्शन कर सकते हैं। प्राचीन प्राच्य में भी सभ्यता की दिग्विजय के नाटक के कम-से-कम कुछ उपाख्यान खुले रंगमंच पर अभिनीत होते हैं। एक क्रांति हुई जिससे मनुष्य परोपजीवी बने रहने से विरत हुआ और कृषि एवं धनोपार्जन को अपनाकर अपने वातावरण की दासता से मुक्त होकर स्वयं स्रष्टा बना। इसके पश्चात् धातुओं की खोज हुई और उनके गुणों का परिज्ञान हुआ। परंतु, क्रांति के ये सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षण वस्तुतः पर्दा उठने के पूर्व ही समाप्त हो चुके हैं। ऐसी स्थिति में भी हम नील (Nile) और फरात (Euphrates) के तटों पर हुई क्रांति के प्रारंभ के इतने समीप हैं कि वाल्टिक (Baltic) के तटवर्ती पाकालदीन मलकूटों अथवा स्कॉटलैंड के तटों पर विद्यमान शंख-शुक्तियों की राशियों के सूक्ष्म परीक्षण की अपेक्षा वहाँ की उस महत्तम प्रगति को अधिक अच्छी तरह समझने की आशा रखते हैं। बहुधा प्राच्य देशों से प्राप्त सूचनाएँ यूरोपीय प्रागितिहास पर लिखित टीका का कार्य करती हैं। प्राचीन प्राच्य जातियों के कुछ व्यक्ति यूरोप के विभिन्न भागों के नव प्रस्तरयुगीन निवासियों के निकट संबंधी थे अथवा वहाँ पहले से ही बसनेवाली प्राचीन प्रस्तरकालीन मृगयाजीवी जाति की संतान थे। क्या हम अपने असभ्य पूर्वजों के प्राच्य संबंधियों के माध्यम से उन पूर्वजों के आध्यात्मिक जीवन के विषय में भी ज्ञान प्राप्त करने की आशा नहीं कर सकते हैं? क्या साहित्यिक कृतियों में वर्णित प्राच्य जातियों की प्रथाएँ मूक यूरोप की सम-सामयिक रूढ़ियों पर प्रकाश नहीं डाल सकती हैं?

अतः प्राचीन प्राच्य का प्रागैतिहासिक एवं पूर्वैतिहासिक पुरातत्व यूरोपीय इतिहास के वास्तविक मूल्यांकन की अपरिहार्य भूमिका है। यूरोप का प्रागितिहास मुख्य रूप से प्राच्य उपलब्धि के अनुकरण की, अधिक-से-अधिक अनुकूलन की, कथा है। स्वयं इन उपलब्धियों के उल्लेख प्राचीन प्राच्य के प्रागैतिहासिक एवं पूर्वैतिहासिक पुरातत्व में सुरक्षित हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इतिहास से प्रागितिहास की ओर

जिस प्रकार के आश्चर्यजनक आविष्कार प्राचीन प्राच्य में होते थे, उस प्रकार के अन्वेषण संप्रति पुरातात्विक अथवा मानवशास्त्रीय अनुसंधान के किसी भी क्षेत्र में नहीं हो रहे हैं। मैं केवल वदारी (Badari) में मिस्र के अति प्राचीन अतीत के पूर्णत: एक नवीन अध्याय के प्रारंभ का उदाहरण प्रस्तुत करना आवश्यक समझता हूं, जो इससे पूर्व ज्ञात किसी भी स्थान की सभ्यता से अधिक प्राचीन एवं उन्नतिशील नव प्रस्तरयुगीन संस्कृति या ईसवी पूर्व चतुर्थ सहस्राब्दी के अंत में विद्यमान सुमेरी सभ्यता की चकाचौंध को या फिर हड़प्पा और मोहेंजोदारों के उत्खनन के साथ प्रागितिहास के रंग-मंच पर भारत के नाटकीय प्रवेश को प्रकाश में लाता है। अभी तक मानव संस्कृति की शुद्ध पुरातात्विक कथा की दृष्टि से इन क्रांतियों के मूल्यांकन प्रस्तुत करने की चेष्टा नहीं की गई है और पुरातात्विक संदर्भ भी जिससे ये क्रांतियां सम्बद्ध हैं, प्रागैतिहासिक क्षेत्र के सामान्य कार्यकर्त्ता के लिये किसी भी तरह सरल नहीं है। यही इस ग्रंथ में, मेरे अपने क्षेत्र के सजातीय होते हुए भी, उससे भिन्न कार्यक्षेत्र के विशेषज्ञों के प्रयास के परिणामों का सर्वेक्षण प्रस्तुत करने के निमित्त क्षमा-याचना है, क्योंकि मेरा यह सर्वेक्षण एकांगी, अपूर्ण एवं अनिश्चित हुए बिना नहीं रह सकता।

विषय-प्रवेश के रूप में भाषा वैज्ञानिक इतिहासवेत्ताओं के कुछ निष्कर्षों की संक्षिप्त आवृत्ति आवश्यक है, जिससे मैं अपने आख्यान की पीठिका-स्वरूप पुरातन तिथि विज्ञान के आधार की परिभाषा और हमारे नाटक में भाग लेने वाले प्रमुख अभिनेताओं का परिचय दे सकूं।

प्रथमत: यूनानी भाषा में मनेथो (Manetho) द्वारा संकलित टॉलेमी फिलाडेलफस (Ptolemy Philadelphus) के निर्देशन में रचित अभिलेख एवं अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन मिश्रदेशीय इतिवृत्त के कतिपय अंश, विशेष रूप से १३०० ई० पू० के आस-पास लिखित तथाकथित तुरिन पेपिरस (Turin Papyrus) और लगभग १४०० वर्ष पूर्व का पलेमो (Palemo) शिलालेख, ये उपर्युक्त मिश्र देशीय लिखित अभिलेख लगभग तीन हजार वर्ष ई० पू० के वाद से ही पुरातात्विक स्मारकों के तिथि-निर्धारण का कार्य करते हैं। मनेथो ने इस ऐतिहासिक काल को जो परंपरानुसार मेनृस (Menes) नाम से अभिहित, वास्तव में एक मिश्रीय व्यक्ति प्रथम फेयरो (Pharooh) के द्वारा उच्च और निम्न (Upper and Lower) मिश्र के एक राज्य के रूप में संयोजन से प्रारंभ होता है, विभिन्न शाखाओं में विभक्त किया है। आधुनिक इतिहासवेत्ता गौरवमय मिस्र के मुख्य तीन काल स्वीकार करते हैं। ये काल क्रमश: प्राचीन, मध्य और नवीन राज्यों के नाम से अभिहित हैं जो एक दूसरे से पतन अथवा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विप्लव की अंतरावधि से विभक्त हैं। प्राचीन राज्य मनेथो (Menetho) के तृतीय-पंचम राजवंशों के, मध्य ग्यारहवें-बारहवें के तथा नवीन अठारहवें और उन्नीसवें राजवंशों के अनुरूप हैं। इस समग्र अवधि में अधिकांश स्मारकों का युग सौर वर्षों में निर्धारित किया जा सकता है। इसके लिये राजाओं एवं उनके राजत्वकाल की सूचियों को साधूवाद है जो मिस्र देशीय पंचांग में विशिष्टता के साथ दी हुई कुछ ज्योतिष तिथियों से नियंत्रित हैं।

मिस्र देश की पंचांग शुद्ध रूप के अभिलिखित निरीक्षणों के विषय में संख्या के प्रयोग की प्रथम लिखित उपलब्धि है। यह पंचांग हमलोगों की पंचांग की जननी है जो केवल अल्प संशोधनों के कारण, जिनका संबंध क्रमश: जूलियस सीजर (Julius Caesar) और पोप ग्रिगोरी (Pope Gregory) से स्थापित किया जाता है, इससे भिन्न है। तथापि इसका आविष्कार नील-घाटी की अद्वितीय कृषि-व्यवस्था का प्रत्यक्ष उत्तर है। मिस्र देश की कृषि का समग्र चक्र वार्षिक जल-प्लावन पर अवस्थित है। किंतु, यह क्रम एक नियमितता के साथ आवृत्त होता हैं, जो अन्य नद्याश्रित पद्धतियों में अतुलनीय है। पचास वर्षों के अभिलिखित निरीक्षण यह सूचित करने के लिये पर्याप्त थे कि जल-प्लावनों की सामान्य अंतरावधि पूर्ण ईकाई के निकटतम ३६५ दिनों की थी।[१] जिस किसी को भी इसका ज्ञान था वह भविष्यवाणी कर सकता था कि कृषि-कार्य का दौर कब प्रारंभ होना चाहिए और कृषकों को इस प्रकार की सफल भविष्यवाणी दैवी सर्वज्ञता का चिह्न जान पड़ती थी। लेकिन ज्ञात नहीं कि मेनृस (Menes) की प्रामाणिकता का यह आधार था या नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने या किसी अज्ञात पूर्ववर्ती व्यक्ति ने उपर्युक्त आविष्कार का प्रयोग शासकीय पंचांग के आधार के रूप में किया। यह शासकीय पंचांग चांद्र पंचांग, जिसका प्रयोग अब भी अधिकांश बर्बर और असभ्य जातियाँ करती हैं—के स्थान पर प्रयुक्त हुई। यह कृत्रिम सायन वर्ष प्रत्येक ३० दिनों के १२ महीनों में विभक्त किया गया और शेष अंतर्विष्ट ५ दिन ऊपर से जोड़ दिये गए।

यद्यपि सौर पंचांग के निमित्त यह प्रथम प्रयास विलक्षण रूप से विशुद्ध था, फिर भी प्रत्येक वर्ष में करीब ६ घंटे अवशिष्ट रह जाया करते थे। एक शतक में एक

---

१. देखिये नेउजबर (Neugebauer) ओ०, 'Die Bedeutungslosigkeit der "Sothisperiode" fur die alteste agyptische Chronologie,' Acta Orientalia, xvii, 1938, 169-195 और 'La Pe'riode sothiague', Chron.d' Egypte, 28, 1939, 258-262.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सौ के चतुर्थांश दिनों के (पचीस दिनों के) इस संचित दोष ने शासकीय और सायन वर्षों के बीच की विषमता को अत्यधिक स्पष्ट बना दिया। जल-प्लावन, वपन और शस्य ऋतुओं के इन शासकीय नामों का उन क्रिया-कलापों के साथ कोई संबंध न रहा जिनका मार्ग प्रदर्शन इनका उद्देश्य था। इस प्रकार जिस उद्देश्य की पूर्ति के लिये इस पत्री का निर्माण हुआ था, उसके लिये वह स्पष्ट रूप से निरर्थक रही। परंतु, तब तक ईसाइयों के इस्टर के समान वैयक्तिक और स्थानीय पर्वों के साथ अपने संबंध के कारण यह इतनी अधिक पवित्रता प्राप्त कर चुकी थी कि उसका परिवर्तन सरल न रहा। वस्तुतः जुलियस सीजर (Julius Caesar) के शासन काल तक यह प्रचलित रही। जुलियस सीजर (Julius Caesar) विदेशी होने के कारण, स्थानीय अंधविश्वासों का प्रत्याख्यान कर सका।

परंतु इसके पहले ही प्राचीन राजवंश के अधीनस्थ फराओं (Pharaohs) के कर्मचारी कृषि-कार्यों के निर्देशन के लिये एक उपाय का आविष्कार कर चुके थे। विषय यह है कि मेम्फिस (Memphis) के अक्षांश में लुब्धक नक्षत्र (Sirius) का सौर उदय, जो मिस्र देशवासियों का सोथिस (Sothis) है, जल-प्लावन के प्रारंभ से सामंजस्य रखता है। तदनुसार सोथिस (Sothis) संबंध निरीक्षण कर्मचारियों द्वारा कृषि-कार्य को प्रारंभ करने के लिये संकेत देने के निमित्त उपयोग में लाये गए। लुब्धक (Sirius) का सौर उदय प्रत्येक १४६१ वर्षों में एक बार शासकीय वर्ष के प्रारंभ से अवश्य मेल खाता था। यह काल सोथिस (Sothis) चक्र के नाम से अभिहित है। एक ऐसा चक्र १३९ खीष्टाब्द में प्रारंभ हुआ था और मिस्र देशवासी शासकीय एवं नाक्षत्रिक वर्षों के पारस्परिक संबंध प्रदर्शित करने वाले अभिलेख छोड़ गए हैं। यह नाक्षत्रिक वर्ष अठारहवें राजवंश के अनेक राजाओं के अधीन और बारहवें राजवंश में सेनुसर्त (Senusert) के आश्रय में सोथिस (Sothis) के नाम से परिभाषित किया गया। बाद का अभिलेख हमलोगों को मध्यकालीन राज्य की प्रामाणिक तिथि प्रदान करता है। यह मध्यकालीन राज्य पूर्ण वंशावलियों के आधार पर लगभग २००० खृ० पू० में अवश्य ही प्रारम्भ हुआ होगा। परंतु, यह कल्पना करने का कोई समुचित कारण नहीं है कि उक्त तिथि-पत्री सोथिस (Sothis) चक्र के प्रारंभ में प्रवर्तित हुई। अतः चतुर्थ राजवंश के अधीन शासकीय पंचांग का प्रयोग यह सिद्ध नहीं करता, जैसा कि एडवर्ड मेयर (Edward Meyer) की धारणा है कि उक्त पत्री एक सोथिस (Sothis) चक्र पूर्व ही अर्थात् ४२३६ खृ० पू० में प्रवर्तित की गई। इसका आविष्कार संभवतः लिखित अभिलेखों के बाद, अधिक संभव, मेन्स (Menes) के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शासनकाल में हुआ। किंतु, शासकीय जीवनियों के माध्यम से परीक्षित राजवंशावलियों की सहायता से २००० ई० पू० पीछे जाकर उसके राज्यारोहण की तिथि का निर्धारण करना पड़ता है। अभिलेखों के असंदिग्ध आधिक्य और कुछ शासनों के निर्दिष्ट अवधिकालों में संभाव्य अत्युक्तियों के फलस्वरूप १९५० ई० में तिथि के प्राक्कलन २८३० और ३१८८ ई० पू०[१] के बीच में एक दूसरे से पृथक रहते हैं।

पंचांग का निर्माण, जो कि सायन वर्ष के निर्दोष प्राक्कलन के समीप लाने का प्रथम प्रयास था, नील घाटी में जल-प्लावनों के कम-से-कम पचास वर्षों के अभिलिखित निरीक्षणों, अतएव यथासंभव ज्ञात प्रमाणों को सुरक्षित रखने के निमित्त परंपरागत प्रतीक पद्धति अर्थात् लेखन कला की पूर्व कल्पना पर आधारित था। क्या, यह सत्र प्रथम फेयरो (Pharooh) मेन्स (Menes) के शासनकाल से संबद्ध किया जा सकता है? केवल प्राचीन लेखों में सुरक्षित, परंतु साधारणतया स्वीकृत[२] एक परंपरा के अनुसार मेन्स (Menes) जिसने मुहाने को जीतकर समस्त नील-घाटी को एक राज्य के रूप में संघटित किया था, उच्च मिस्र का राजा था। अपनी मृत्यु के अनंतर वह अपने उत्तराधिकारियों के समान अपने संरक्षक देवता श्येन होरस (Falcon Horus) से अभिन्न मान लिया गया। इस प्रकार उसने एक नूतन होरस (Horus) नाम ग्रहण किया। मेन्स (Menes) जिसका नाम निश्चित रूप से किसी भी स्मारक पर नहीं पाया गया है, एक दृष्टि से होरस नर मर (The Horus Nar mer)[3] बन गया। किंतु, विभिन्न देशी परम्परायें उच्च (Upper) और निम्न (Lower) मिस्र में स्वतंत्र राज्यों के प्राक्कालीन अस्तित्व की ओर निर्देश करती हैं।[४] इनमें से प्रत्येक राज्य लाल और श्वेत राजमुकुट आदि समुचित राज्य चिह्नों से युक्त था। अंत में ये राज्य-

---

१. स्टॉक (Stock) प्राणिगत तिथि का पक्ष लेते हैं। 'Die erste Zwischenzeit Agyptens', Analecta Orientalia, ३१, रोम, १९४९, ग्लेनवीले (Glanville) में सीवेल (Sewell) उच्चतर सीमा पर जोर देते हैं, दी लिगेसी ऑफ ईजिप्ट (The legacy of Egypt), १९४१, २—११।

२. किसी एक मेन्स (Menes) के अस्तित्व पर सन्देह व्यक्त किया गया है, उदाहरणार्थ, Annales du Service, xii, १९४२, २९०।

३. अतः अपने बाद के वर्षों में पेत्री (Petrie), एडवर्डस (Edwards) रीजनर (Reisner), एमरी (Emery) और प्रथमतः पेत्री (Pet ie) ने मेन्स (Menes) का 'होरस अहा' (The Horus Aha) के साथ तादात्म्य स्थापित किया है।

४. देखिये, राँके (Ranke) पूर्व में सभ्यता के प्रारंभ (The Beginnings of Civilization in the orient), जे० ए० ओ० एस्, पूरक, ४, १९३९, १—१५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिह्न प्रथम राजवंश के परवर्ती मिस्र देशीय राजाओं (Pharaohs) के द्वारा धारण किए जाने वाले दोहरे मुकुट एवं अन्य राज-चिह्नों में सम्मिलित कर लिए गए। उसी समय पश्चिमी मुहाने पर होरस धर्मावलम्बियों का एक स्थान था और हिराकोन-पोलिस (Hierakonpolis) पर पड़नेवाली इसीकी केंद्रित प्रकाश रश्मि माध्यमिक केंद्र रही होगी। तदनुसार सेथे (Sethe) ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि दक्षिण से श्येन (Falcon) जाति ने इसकी एकरूपता स्थापित की थी। तब होरस (Horus) और सेथ (Seth) के बीच के संघर्ष, जिनकी चर्चा मिस्र देशीय पौराणिक आख्यानों में की गई है, दक्षिण की इस विजय को प्रतिबिंबित करते। सेथे (Sethe) के अनुसार इसकी परिणति एक प्रागवंशीय संयुक्त राज्य की स्थापना होती जिसकी राजधानी काहिरा के समीप हेलियोपोलिस (Heliopolis) में होती। यदि हेलियोपोलिस (Heliopolis) का राज्य कभी अस्तित्व में था तो इसीके अधीन मिस्र देशीय लेखन-पद्धति की स्थापना हुई होगी। एकमात्र मुहाने में उपलब्ध वनस्पति और पशु मिस्र लिपि-चिह्नों में अत्यधिक प्रमुख थे। यद्यपि ब्रेस्टेड[1] (Breasted) ने प्लेरमो (Palermo) प्रस्तर पर प्रथम राजवंश के पूर्व संयुक्त मिस्र के राजाओं के निर्देश पाने का दावा किया है, परन्तु हेलियोपोलिस (Heliopolis) का संयुक्त राज्य केवल कल्पना का विषय है जो प्रत्यक्ष रूप से पुरातात्विक या साहित्यिक प्रमाणों से अभिप्रमाणित नहीं होता।

इसके विपरीत हम एक ऐसे युग के अस्तित्व का प्रमाण पायेंगे जब उत्तर ने, जो उस समय एशिया से पूर्णरूपेण प्रभावित था, दक्षिण पर राजनैतिक नहीं तो कम-से-कम सांस्कृतिक आधिपत्य स्थापित किया। सम्प्रति भाषा तत्वज्ञों ने मिस्र देशीय भाषा में, वस्तुतः हामीय-अफ्रीकी भाषा वर्ग के भीतर सामी तत्त्वों के प्रवेश का अनुसंधान किया है। और "वाम" तथा "दक्षिण" के लिये प्रयुक्त शब्दों के क्रमशः "पूर्व" एवं "पश्चिम" के लिये प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ सामंजस्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि मिस्र में सामीय तत्व का प्रसार उत्तर से सामीय जातियों अथवा विजेताओं द्वारा हुआ, जिन्होंने नदी तक अपना मार्ग प्रशस्त किया था, क्योंकि, प्रस्तुत शब्द मिस्रीय भाषा में सामीय स्तर से सम्बन्ध रखते हैं।

इस विषय में तुलनात्मक नृवंश विज्ञान हमें कुछ विशेष आधार प्रदान करता है। सामाजिक और धार्मिक संस्थाएँ, जो मिश्र के इतिहास के उषःकाल में ऐसी परि-

---

१. बुल अंस्त फ्रॉस द आर्क ऑरिएंट (Bull. Inst. Franc. d'Arch. orient) ३०, काहिरा (Cairo), १९३२, ७०२, तुलनीय ओ० एल० जेड०, १९३२, ७०४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पक्वता के साथ हमारे सामने उपस्थित हैं, केवल अपनी विकास पद्धति के अनुसंधान के लिये ही हमें चुनौती नहीं देती, प्रत्युत हमारे प्रयास को भी सरल बनाती हैं। फ्रेजर (Frazer) के चित्रण के अनुसार सर्वशक्तिमान एवं देवत्व प्राप्त फराओ (Pharaoh) के आकार के पीछे एक विनीततर व्यक्ति, अलौकिक राजा की छाया अस्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। वह अपनी मायावी शक्ति के बल पर सार्वभौम सत्ता सम्पन्न बनता है, जिसे इनके मूल्य स्वरूप अपनी शारीरिक जीर्णता के कारण उस शक्ति के क्षीण होने के पूर्व ही अनिवार्य रूप से प्राण त्याग करना चाहिए। वस्तुतः समकालीन बर्बरों के बीच उस प्रकार के राजाओं को अभिप्रदत्त अधिकांश कार्यों का श्रेय केवल फेयरो (Pharooh) को ही नहीं दिया गया, प्रत्युत मायिक विधि के अनुष्ठान के द्वारा, जो विधिवत् मृत्यु के तुल्य था, उन राजाओं के अदृष्ट से भी बच गया। मेनूस (Menes) से लेकर प्रत्येक फेयरो (Pharooh) द्वारा नियत समय पर मनाया जाने वाला सेड (Sed) उत्सव राजा का ओसिरिस (Osiris) के साथ मासिक तादात्मयीकरण था। ओसिरिस (Osiris) एक देवता था जो मरकर पुनः जीवित हुआ था। प्रतीकात्मक मृत्यु और पुनरुज्जीवन के द्वारा राजा को अभिनव जीवन और पौरुष प्रदान करना इस उत्सव का उद्देश्य और कार्य था[1]। अतः यह उस समय की पूर्व कल्पना करता है, जब युवक और शक्तिशाली उत्तराधिकारियों को अवसर प्रदान करने के निमित्त फेयरो (Pharooh) के पूर्वजों का वस्तुतः समारोह के साथ वध कर दिया जाता था जिससे कि उनका मायिक प्रभाव उनकी निर्बल काया के साथ लुप्त न हो जाय।

उसी प्रकार मिस्र-देशीय विश्वदेवता-वाद में अद्भुत पशु देवताओं की कल्पना यह अभिव्यक्ति करती है कि होरस श्येन, हाथर गो और नीथ सर्प (Falcon Horus, Cow Hathor, Serpent Neith) और अन्य देवतागण देवकों (Totems) से उदभूत हैं और यह (तत्व) संयुक्त मिस्र राज्य की पृष्ठभूमि में दैविक जातियों की विविधता सूचित करता है। इन जातियों के वंश परंपरागत संरक्षक पशु और वनस्पति स्थानीय देवता के रूप में परिणत हो गये और तब उन सबों ने शेमसुहोर (Shemsuhor) के द्वारा उस देश के एकीकरण के साथ विजयिनी जाति के श्येन (Falcon) गण-चिह्न के अधीन राष्ट्रीय विश्वमूर्त्ति पूजा में स्थान पाया।

सम्प्रति ऊपरी नील (Upper Nile) पर आजकल जो रहते हैं, वे आकार-प्रकार, शरीर की ऊँचाई, कर्परीय अनुपात, भाषा और वेष-भूषा में प्राचीनतम मिश्र

---

१. सो मोरेट (So Moret) ट्राइब टू इम्पायर (Tribe to Empire), १५१ आगे; सेलिमन, जे० आर० ए० आई०, १९१३, ६६५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देशवासियों से संबद्ध हैं[1]। ये वृष्टि निर्माता जादूगरों या दिव्य राजाओं के द्वारा शासित होते हैं, जो हाल तक संस्कार विधि से मार दिये जाते थे और जन-जातियाँ गण-चिह्नों के अनुसार विभिन्न जातियों में संगठित की जाती हैं। वंश परम्परागत पशुओं (अ० गण चिह्नों) के साथ एक केंद्रवर्ती राजा, जो सविधि हत हुआ था, के द्वारा शासित शिलक (Shilluk) जनजाति के सदस्य मेनूस (Menes) के ईश्वरीय राज्य के अव्यवहित पूर्व की अवस्था का चित्र उपस्थित करते हैं। इससे भी प्राचीनतर प्रागवस्था डिंका (Dinka) जातियों में देखी गई हैं। वे स्वायत्तशासी गण-चिह्न-युक्त जातियों के गण है, जो वहुधा परस्पर संघर्षरत रहते हैं। इनमें से प्रत्येक एक वृष्टि निर्माता जादूगर या अलौकिक राजा के द्वारा शासित होता था, जो वृद्धावस्था के वशवर्ती होने के पूर्व ही ससमारोह मार डाला जाता था। वस्तुतः ऐसा प्रतीत होता है कि उच्च नील पर रहनेवाली इन जनजातियों के मध्य सामाजिक विकास एक ऐसी अवस्था में अवरुद्ध कर दी गई थी, जब इनके इतिहास के प्रारंभ होने के पूर्व मिश्र देशवासियों ने अपना मार्ग प्रशस्त किया था। वहाँ हमारे अधिकार में एक जीवंत संग्रहालय, है जिसके प्रदर्श हमारे संग्रह में विद्यमान प्रागैतिहासिक तत्वों के अनुपूरक एवं सजीवताप्रदायक हैं।

इस प्रकार पौराणिक आख्यान और भाषा-विज्ञान, तुलनात्मक धर्म और नृवंश विज्ञान नील घाटी में ३००० ई० पू० से वहुत पहले घटित जनजातीय और राजवंशीय आंदोलनों और आध्यात्मिक तथा सामाजिक क्रांतियों पर कुछ प्रकाश डालते हैं। पुरातत्व शास्त्री के फावड़े ने उसी प्रदेश में असभ्यता से सभ्यता की ओर मानव के विकास के पुष्ट साक्ष्य को प्रकट किया है। यह अभी संक्षेप में प्रदर्शित परंपराओं और निगमनों को विशेष रूप से प्रमाणित करता है और साथ-ही-साथ उनका अनुपूरण एवं सीमा

१. सेलीमेन (Saligman) जे० आर० ए० आई०, १९१३, ५९७ आगे; पेत्री (Petrie) एनसियन्ट इजिप्ट (Anc. Eg.); १९१५, ७०। शेमसू होर (Shemsu Hor) को पुंत भूमि के साथ (उदाहरणार्थ हॉल Hall, Anc. Hist. ९२) सम्वद्ध करने की चेष्टा को सेथे (Sethe) के गवेषणाओं के आधार पर कर देना चाहिये और उनसे संबंधित मेसन्यू (Mesniu) धातुकर्मी नहीं है, पर प्रायः भाले बनाने वाले हैं जो मुहाने के दलदलों में जलहस्तियों को वर्छियों से मारा करते थे; तुलनीय मोरेट, नील, १०८, और हॉल, केम्ब्रिज हिस्ट्री (Cambridge Ancienty History); २९१। तथापि हॉल के द्वारा उद्धृत पुंत की भूमि के विषय में प्रचलित परंपरायें वंशीय मिश्र में निर्णायक रूप से एक ऐसे तत्व को सिद्ध करती हैं जो एबीसिनिया या अरेबिया के इस अपरिचित दक्षिणीय प्रदेश के लोगों के साथ संबंधित है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परिवर्द्धन भी करता है। परंतु इससे भी आगे अतिप्राचीन मिस्र के पुनरुज्जीवित शरीर को यूरोप के अपने प्राचीनतम अतीत के सजीव संपर्क में लाता है और एक क्षण के लिये उसके मृतप्राय शरीर में जीवन-ज्योति का संचार करता है।

उचित अवसर पर हम पुरातत्व के रहस्योद्घाटनों का सविस्तार वर्णन करेंगे जो अमूर्त विकास को नहीं, प्रत्युत विभिन्न मूर्त वर्गों की पारस्परिक एवं पूर्णरूपेण एक दूसरे से पृथक प्रदेशों के अंशदानों के सम्मिश्रण को प्रकाश में लाते हैं। किंतु, सर्वप्रथम हम संधार में उस विषय की व्याख्या करें जिस पर वह चित्र आधारित हो सके। जैसा कि कहा जाता है—हमारा प्राक्-राजवंशीय मिस्र का ज्ञान प्रायः संपूर्ण रूप से समाधियों के माध्यम से प्राप्त होता है। किन्तु, उन समाधियों पर कोई लिखित प्रमाण नहीं है जिससे कि एक पंचागीय तिथि उपलब्ध हो सके। प्रत्येक समाधि-स्थल में प्रदर्शित समय की अवधि के अनुमान से अधिक हम कुछ नहीं कर सकते हैं। इस विषय में सर फ्लीन्डर्स पेत्री (Sir Flinders Petrie) धन्यवाद के पात्र हैं। पेत्री ने उस पद्धति के विश्लेषण से अपना कार्य प्रारंभ किया था, जिसमें कि तरंगांकित फलकों ने, जो कभी विशेष प्रकार के घड़ों का मूठों के रूप में व्यवहृत किये जाते थे, समय के प्रवाह में पड़कर मूठों के रूप में अपना वास्तविक कार्य छोड़ दिया और वे विगड़कर मात्र विभूषक-सव्याकोचन के रूप में रह गए। तदनंतर उन्होंने इस क्रमिक प्रक्रिया की विभिन्न अवस्थाओं और समाधिवर्ती उपस्करों की अन्य संबद्ध वस्तुओं के विकास की प्राग वस्थाओं में पारस्परिक संबंध स्थापित किया। अंततः उन्होंने एक सांख्यिक अनुमाप का निर्माण किया, जिसके द्वारा अन्य समाधियों की तुलना में किसी एक समाधि के सापेक्ष स्थिति काल की परिभाषा अंकों में दी जा सके। इस अनुमाप में ३० से लेकर ८० तक अंकित तथाकथित अनुक्रम तिथियाँ हैं जो वस्तुतः स्थिति काल का वास्तविक बोध नहीं कराती हैं। किंतु, उनको पृथक् करनेवाली अंतरावधियों का कोई आधार प्रदान किए बिना वे केवल लौकिक श्रेणियों में उत्तरोत्तरवर्ती अवस्थाओं को ही सूचित करती है। इस अनुमाप के आधार पर मेनस (Menes) का राज्यारोहण काल ७७ अनुक्रम तिथि में स्थिर किया गया। परंतु, वह अब अ० ति० ६० के समीप आता प्रतीत होता है। प्राक्-राजवंशीय अमरासी सभ्यता का प्रारंभ अ० ति० ई० में निर्धारित किया गया और तब उस अ० ति० के पूर्व बदारी सभ्यता (Badari Civilization) को रखा गया।

प्राक्-राजवंशीय युग की अवधि के प्राक्कलन के द्वारा अ० ति० ३० को लगभग पूर्ण महत्व देने का प्रयास किया गया है। डियोसपोलिस (Diospolis) के समीप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रागितिहासिक और प्राक्सामी राजवंशीय समाधियों की संख्या की तुलना के द्वारा सर फ्लीन्डर्स पेत्री (Sir Flinders Petrie) इस निष्कर्ष पर पहुचे कि प्राक्-राजवंशीय काल और मिस्र के प्राचीन राजकीय विस्तार में घनिष्ट साम्य है। अत: अ० ति० ३० संक्षिप्त काल-क्रम के विज्ञान के अनुसार ६००० खी० पू० में पड़ती है। पीक[1] (Peak) और फ्लेयर (Fleure) गणना की एक भिन्न पद्धति का प्रयोग करते हुए प्राक्-राजवंशीय युग का अस्तित्व काल इसका आधा मानते हैं। मैक आईवर (Mac Iver) और मेस (Mace) का कथन है कि समग्र अवधि में व्यवहृत एक समाधि स्थान में समाधियों की संपूर्ण संख्या लगभग ५०० है। यदि यह मान लिया जाय कि जिस समाज की समाधियां प्रकाश में लाई गई है वह समाज आकार में एक आधुनिक किसानों के गांव के समान हैं, तब समाधि के स्थान के द्वारा प्रदर्शित काल २००० वर्षों का होगा। क्योंकि, आजकल वयस्कों की मृत्यु दर का औसत चार वर्षो में एक हैं।

प्राग्राजवंशीय मिस्र के संबंध में हमारा ज्ञान कितना नवीनतम है, इसे यहाँ स्मरण करना प्राय: अनुचित नहीं होगा। मिस्रीय प्रागैतिहासिक काल का समस्त अध्ययन केवल ५० वर्षों से कुछ ही अधिक प्राचीन है। १८९५ ई० के पूर्व मिस्र का अभिलेख वस्तुत: पिरामिड युग (Pyramid age) से प्रारंभ हुआ था। बाद में अमैलन्यु (Amelinau) और द मोरगेन (De Morgan) ने प्रथम राजवंशियों की समाधियों का पता लगाया और पेत्री ने उनसे भी प्राचीनतर समाधियों की एक शृंखला का अन्वेषण किया, जो हमें उस युग तक पीछे ले जाती हैं जब लेखन-कला से अनभिज्ञ निर्धन ग्रामवासी नील के तटों पर निवास करते थे। इस ग्रंथ का बदारी नामक प्रस्तावनात्मक अध्याय मात्र १९२४ ई० में उद्घाटित हुआ था। संयोगवश उस स्थान की गवेषणाओं ने एक नवीन अध्याय के उद्घाटन की अपेक्षा अधिक काम किया, क्योंकि, उन गवेषणाओं ने पेत्री (Petrie) की अनुक्रम तिथि-निर्धारण-पद्धति की प्रथम भू-स्तर विज्ञानीय अभिपुष्टि के द्वारा पूर्व उपलब्ध सामग्री के हमारे पाठ को अभिप्रमाणित किया है। बदारी के समीप की बस्ती में मृत्तिका-पात्र संबंधी वस्तुएँ उपलब्ध हुई हैं। ये वस्तुएँ सिद्धांत: परवर्ती काल की मानी गई। वस्तुत: वे उन ध्वस्त झोपड़ियों में उपलब्ध हुई हैं जो दूसरे ध्वंसावशेषों पर अवस्थित हैं, जिनमें अनुमानत: अपेक्षाकृत प्राचीन भांडों के उपखंड हैं और इस प्रकार जिनका पूर्वकालीन होना प्रदर्शित

---

१. डिसपोलिस पव (Dispolis Parva) में प्रथमत: निर्मित। यह प्रक्रिया प्री-हिस्टोरिक इजिप्ट (Pre-historic Egypt) में विस्तारित की गई है और नवीन अनुक्रम तिथियों को प्री-हिस्टोरिक इजिप्ट कॉरपस ऑफ पोट्री (Corpus of Pottery) में परिशिष्ट के रूप में जोड़ दी गई हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होता है। अब ब्रंटन (Brunton) ने बदारी सभ्यता (Badarian Civilization) के प्रारंभ के पूर्व तासी सभ्यता (Tasian Civilization) के अस्तित्व का पता लगाया है। दूसरी ओर यह अनुक्रम केवल ऊपरी मिस्र (Upper Egypt) के लिये ही मान्य है। १९४० ई० के समीप के उत्खननों ने ऐसे जन-समुदायों पर प्रकाश डाला है जिसके समानांतर उदाहरण उससे दक्षिण में उपलब्ध नहीं होते।

मेसोपोटैमिया में बेरोसस (Berosus) द्वारा यूनानी भाषा में लिखित इतिवृत्त के अवशिष्ट-खंड और देशी वृत्तांतों से युक्त कुछ मृत्पट्ट उपलब्ध हुए हैं। ये कीलाक्षरों में लिखे हुए हैं और जल-प्रलय-पूर्व के कतिपय राजाओं के नामों के साथ उन राजाओं और राजवंशों की पूर्ण सूची प्रस्तुत करना इनका अभिप्राय है जो जल-प्लावन काल के बाद से शासन कर रहे थे। यदि अभिलेख में कुछ अंश विच्छिन्न नहीं रहते तो राज संबंधी वर्षों के योग प्रभुसत्ता के स्वर्ग से अवतरित होने के समय से सभी घटनाओं का पूर्ण आनुतिथ संधार हमें प्राप्त हो जाता। किंतु मेसोपोटेमीय सभ्यता की प्राचीनता भी १९३० और १९५० ई० के बीच बड़ी तीव्रता के साथ घटा दी गई है। नील के तटों की अपेक्षा दजला फरात घाटी में एकीकरण बहुत बाद में हुआ। क्रमबद्ध लिखित इतिहास के प्रारंभिक काल में मेसोपोटेमिया अनेक स्वायत्त-शासी नगर राज्यों में विभक्त था। अंत में ये नगर राज्य बेबीलोन के प्रथम राजवंशीय राजा हम्मुराबी (Hammurabi) के अधीन एकल राज्य या साम्राज्य में संघटित कर दिये गए। परंतु इसके द्वारा विहित एकीकरण भी सर्वथा पूर्ण नहीं था फलस्वरूप उसका साम्राज्य अस्थाई रूप से विभिन्न समसामयिक राजवंशों के बीच विभक्त हो गया। अत: बेबीलोनियाँ की राज्य-सूची भी प्रथम राजवंश को परिवर्द्धित अस्तित्व काल प्रदान करती है। क्योंकि इसके संकलयिता ने परस्पर व्याप्तियों की उपेक्षा करते हुए, बेबीलोनिया के किसी भाग के सभी समसामयिक शासकों को अप्रतिहत अनुक्रम में विन्यस्त किया है। सौभाग्यवश हम्मुराबी (Hammurabi) के समय में असीरिया भी एक एकतंत्रात्मक राज्य हो गया और इसकी एकता मेड्स के पूर्व निनेवा (Ninaeveh) के पतन काल तक कभी भी अधिक गंभीरता के साथ खंडित नहीं हुई। अत: अब असीरीय सूचियों, मिस्रीय अभिलेखों और शुद्ध पुरातात्विक सूचना सामग्री को संमुख रखकर बेबीलोनीय सूचियों की शुद्धता की जांच के द्वारा हम्मुराबी (Hammurabi) की राज्यारोहण-तिथि को लगभग १७९० ख़ृ० पू०[1] या कम-से-कम १७३० ± ३० ख़ृ०पू० में स्थिर करना संभव है।

---

१. सिडनी स्मिथ (Sidney Smith), अललाख एण्ड क्रोनोलोजी (Alalakh and Chronology), लंदन, १९४०, लेकिन अलब्राइट (Albright), बी० ए० एस० ओ० आर०, ८८, १९४२, २८—३३ हंमुराबी के राज्यारोहण को ६० वर्ष बाद मानता है, जैसे १७२८ ई० पू०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परन्तु हम्मुराबी (Hammurabi) का साम्राज्य प्रथम नहीं था। उससे पूर्व उर (Ur) के तृतीय राजवंश के सुमेरीय राजाओं ने एवं उससे पूर्व सारगोन (Sargon) ने और अगद (Agade, अक्कद, Akkad,) के अवशिष्ट सामी राजाओं ने प्रत्येक लगभग एक शताब्दी तक समस्त सुमेर, अक्कद और निचले मेसोपोटेमिया का संयोजन करके साम्राज्यों की स्थापना की थी। उर (Ur) साम्राज्य के अधीन एक सुमेरीय लिपिक ने प्रत्येक साम्राज्य-नगर के राजकीय वर्षों और नामों के साथ उन नगरों की सूची तैयार की थी, जिन्होंने समय-समय पर प्रभुसत्ता का उपभोग किया था। ऊपरी महत्व के आधार पर इस सूची को स्वीकार करने पर उल्लिखित शासनों का केवल समाकलन जल-प्रलय एवं जल-प्रलय-पूर्व काल तक के किसी भी राजा की ऐतिहासिक तिथियाँ समुपस्थित कर सकती है। परंतु सूची को मात्र ऊपरी महत्व के आधार पर ग्रहण नहीं किया जा सकता है। प्रथमतः केवल जल-प्रलय पूर्व राजाओं के ही राज्य नहीं वल्कि जल-प्लावन के वाद के अनेक प्रारंभिक शासकों के राज्य असामान्य रूप से काल्पनिक हैं। किश (Kish) का प्रथम राजवंश जो जल-प्लावन के वाद प्रथम था, उसके प्रथम तेईस राजाओं ने कुल मिलाकर २४, ५१९ वर्ष ३ महीने और ३½ दिन राज्य किया था। तब किश तृतीय की प्रथम शासिका और उसके पुत्र जिसने किश के चतुर्थ राजवंश का सूत्रपात किया था, के वीच ११७ वर्षों तक अस्तित्व में रहनेवाला अक्षक का राजवंश सन्निविष्ट कर दिया गया है। तीसरी वात यह है कि अगद (Agade) के सारगोन (Sargon) के पूर्व राज्य-सूची में उल्लिखित कोई भी राजा किसी भी समसामयिक स्मारक के ज्ञात नहीं था। तदनंतर उर (Ur) के प्रथम राजवंश का प्रथम राजा जिसका स्थान राज सूची में काल्पनिक राज्यों वाले उरूक (Oruk) का एक राजवंश लेता है, अ० अन्निपद्द (A. Annipadda) का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ। अंत में अगद के सारगोन (Sargon) के समसामयिक शिलालेख यह प्रदर्शित करते हैं कि सूची में अनेक शताब्दियों द्वारा एक दूसरे से पृथक् दिखाये गये राज वस्तुतः एक ही समय में अपने-अपने नगरों में राज्य कर रहे थे।

जेकाब्सन (Jacabsen)[1] ने संतोषजनक रीति से वस्तुस्थिति की व्याख्या की है। संकलनकर्त्ता ने किश (Kish), एरेक (Erech), उर (Ur) तथा अन्य नगरों से स्थानीय राजाओं की सूचियां एकत्र की है। परंतु, यह मानते हुए कि उर तृतीय (वंश) के राजाओं के समान इन राजाओं में से प्रत्येक ने सभी नगरों पर अवश्य ही

---

१. दी सुमेरियन किंग लिस्ट (The Sumerian King list), ओ० आई० ए० एस्०, शिकागो, १९३९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शासन किया होगा, उसने सूचियों को विभक्त कर दिया है और उन विभक्त सूचियों को अनुक्रमानुसार फिर से अनुभागों में सजाया है। उसने संभवतः इस प्रामाणिक लिखित सामग्री की अनुपूर्ति पौराणिक गाथाओं और वीराख्यानों से की है। समसामयिक लिखित सामग्री की सहायता से बनाई गई सूचियों के समाधान अगद (Agade) के सारगोन (Sargon) के राज्यारोहण की तिथि को कुछ विश्वस्तता के साथ करीब २३२५ ± २५ ई० पू० में और उर प्रथम (Ur) के अ० अन्निपद्द (A. Annipadda) के राज्यारोहण को प्रायः २५०० ई० पू० में रखने की छूट देते हैं। उर एवं अन्य स्थानों में इससे भी पूर्व राज रहे होंगे। पर, अ० अन्निपद्द (A. Annipadda) के बहुत पूर्व ही लेखन कला के विकसित होने के बावजूद राज-सूची में किसी भी राजा के नाम का तादात्म्य सम सामयिक अभिलेख में उपलब्ध नामों से नहीं हो पाया है।

जलप्रलय-पूर्व का खंड असंदिग्ध रूप से ऐतिहासिक स्रोतों की अपेक्षा अधिकांश में काल्पनिक स्रोतों पर आधारित है। परंतु, जल-प्लावन-निक्षेप वस्तुतः उर (Ur), इरेक (Erech), शरुप्पक (Sharuppak) और किश में दृष्टिगोचर हुए हैं। तथापि, ये जल-प्लावन-निक्षेप पूर्णतया भिन्न पुरातात्विक क्षितिजों पर उपलब्ध हुए हैं। अतः हम यह पहचान नहीं सकते कि राज-सूची का जल-प्लावन कौन था और न तो हम इसकी ऐतिहासिकता की ही पुष्टि कर सकते हैं। तथापि, यह महत्वपूर्ण है कि मेसोपोटेमिया में प्राप्त प्राचीनतम अभिज्ञातव्य मंदिर राज-सूची में राजत्व के स्वर्ग से अवतरित होने के बाद प्रथम जल-प्रलय पूर्वकालीन राजकीय नगर के रूप में अभिहित इरिडु (Eridu) में १९४८ ई० में खोद कर निकाला गया।

तथापि, तुलनात्मक भाषा विज्ञान दजला-फराही समतल में मानव जीवन के इन प्रारंभिक दिनों पर प्रकाश डालता है। ऐतिहासिक काल में यह घाटी विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले दो भिन्न जातीय तत्वों के द्वारा आवासित थी। दक्षिणी भाग, जिसमें इरिडु (Eridu), लारसा (Larsa), लगश (Lagash), अम्मा (Amma), अदव (Adab), इरेक (Erech), और शरुप्पक (Sharuppak), फरा (Fara) नगर सम्मिलित थे, बाबुल के प्रथम राजवंश के अधीन इस भू-भाग के एकीकरण के समय तक विलक्षण लोगों के अधिकार में था। इन लोगों को, जो अपनी भाषा और वेश-भूषा से पृथक हैं, हमलोग उन्हें सुमेरीय (सुमेर से, देश का सामीय नाम) के रूप में जानते हैं। जैसा कि पुरातात्विक अवशेष सूचित करते हैं, आदिम काल में सुमेर के निवासी बाबुल के उत्तरी भाग और असीरिया में भी फैल गए थे। पर, वहाँ वे उन लोगों के साथ मिल गये थे जो हिब्रू (Hibrew), असीरीय और अरबी की सजातीय सामीय कथ्य भाषा-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाषी थे। जलप्लावन के वाद सर्वप्रथम अस्तित्व में आनेवाले किश (Kish) के प्रथम राजवंश के समय में वंशीय सूचियों में उल्लिखित शासकों के वीच हम सामीय नामधारी व्यक्तियों को पाते हैं और उत्तर के नगर किश (Kish), सिप्पर (Sippar), अक्षक (Akshak), ओपिस (Opis) और अगद (Agade), जिसने वाद में समस्त उत्तरी वाबुल को अक्कद के रूप में अपना नाम दिया परंपरानुसार सामीय शासकों के निवास स्थान थे।

अंत में राजनीतिक शक्ति सामीय जनों के हाथ आई। पर, इसके बहुत समय वाद तक मध्यकालीन यूरोप में लैटिन की तरह कर्मकांड और जादू-टोना गें सुमेरी भाषा प्रयुक्त होती रही और परवर्ती वाबुली विधि में (पाये जाने वाले) तत्व सुमेरीय स्रोतों में उपलभ्य हैं। इस प्रकार सुमेरीय साधारणतया बाबुल में सभ्यता के प्रवर्त्तक समझे गए हैं।

परंतु स्वयं सुमेरीय लोग मिश्रित जाति के सदस्य रहे होंगे अथवा उनके अग्रगामी भिन्न राष्ट्रीयता के अनुगामी रहे होंगे। उनकी परंपराएँ कुछ अंश में परस्पर विरोधी हैं। इरिडु (Eridu) तक तैर कर लोगों को नगर-निर्माण की शिक्षा देने वाले समुद्र यात्री मानव ओनस का उपाख्यान इसकी दक्षिण अंचलीय उत्पत्ति की दिशा में संकेत करता है। कृत्रिम टीलों में पूजा-विधि इन लोगों के पर्वतीय होने का संकेत करती है। जल-प्लावन के पूर्व राज्यसत्ता के केंद्रों के रूप में उल्लिखित शरूप्पक (Sharuppak) और जिम्वीर (Zimbir) जैसे कुछ नगरों के नामों की सुमेरीय रूप में सुविधापूर्वक व्याख्या नहीं हो पाई है। इनके रूप तिग्री के पूर्व पार्वत्य प्रदेशों में ऐतिहासिक युग में वोली जाने वाली एलम (Elam) की अंजानीय भाषा के निजी तत्वों के अनुरूप हैं। स्पीजर (Speiser) इस संदिग्ध वर्ग को जोफतीय (Japhatite) नाम देने के पक्ष में हैं।[1] कुछ लोग, जो न तो सामी थे और न सुमेरीय तथा जो रंग की स्वच्छता के कारण सुमेरियों से भिन्न थे, जाग्रोस (Zagros) से पश्चिम पहाड़ी प्रदेशों में आदि काल में निश्चित रूप से निवास करते थे। स्मिथ (Smith) ने इन लोगों को सुमेरीय की संज्ञा दी है और स्पीजर (Speiser) के मतानुसार इनकी भाषा जाफतीय रही होगी। इनके संबंधियों ने कभी सुमेर पर भी अपना अधिकार जमाया होगा।

---

१. स्पीजर (Speiser), मेसोपोटेमियन ऑरिजन्स (Mesopotamian Origins), फिलाडेलफिया (Philadelphia) १९३०, मेयर (Meyer) की आलोचना के लिये देखिये मेस्नर (Meissner) ए० एफ० ओ० ५, १—१०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

भाग्य से पुरातात्विक प्रलेख असामान्य संस्कृतियों का स्पष्ट अनुक्रम प्रदान करता है। तथापि, इनमें से किसी को भी भाषात्मक नाम देना संकटास्पद होगा। तिग्री फराती घाटी के निवासी अनेक पीढ़ियों तक गीली मिट्टी के ईंटों से बने घरों वाले गाँवों और अंत में नगरों में लगातार एक ही स्थानों में रहते थे। काल-क्रम में मकान गिर जाते थे, परंतु तब अंगभूत मिट्टी नीचे पाट दी जाती थी और इस प्रकार बनी ऊँची समतल भूमि पर नया घर बना लिया जाता था। उस समय तक प्रायः गली का धरातल निक्षिप्त कूड़े-कचड़े से ऊँचा हो जाता था। परिणामतः प्रत्येक बस्ती उत्तरोत्तरकालीन गृहों के अध्यासित अवशेषों से निर्मित ढूहे अथवा टीले के रूप में परिणत हो जाती थी[1]। इस प्रकार के टोले के वैज्ञानिक उत्खनन में प्रत्येक भूमितल (फर्श) इसके ऊपर संचित कूड़ा-कर्कट के साथ समय विशेष की संस्कृति को तिथि अनुक्रम में निर्देशित करता है। क्योंकि निम्नतम स्तर अपने ऊपर के स्तर से स्पष्टतः अधिक प्राचीन रहता है। अतः किसी टीले की खुदाई स्थान विशेष की संस्कृतियों को प्रकट करती है और अनेक उत्खनित टीलों ने समानांतर संस्कृतियों की अभंग परंपराएँ प्रस्तुत की हैं। वस्तुतः मरणशील मानव न ढलानों पर और न तो ऊँची पहाड़ी की चोटी पर ही अपना घर बनाना चाहते। अतः कुछ काल के बाद ये बस्तियाँ स्थानांतरण की ओर प्रवृत्त हुई। देवालयों की बात कुछ भिन्न थी। अब ऐतिहासिक सुमेरीय नगर देवालयों के चारों तरफ विकसित हुए थे। जिस तरह मध्य-युग में ईसाई पौर अपने गिरजाघरों को निरंतर परिवर्धित और अलंकृत करते रहे। ठीक उसी प्रकार धार्मिक और समृद्ध सुमेरवासियों ने अपने मंदिरों का पुनर्निर्माण पहले की अपेक्षा अधिक महत्वाकांक्षी पैमाने पर किया। परंतु साधारणतया वे पवित्र भवनों को पृथ्वी पर पाटकर इस कार्य का प्रारंभ नहीं किया करते थे। प्रत्युत, इसकी कई फीट ऊँची दीवारें खड़ी छोड़ दी जाती थीं और भीतरी भाग को मिट्टी से भर दिया जाता था, जबकि बाहर की ओर पुरानी दीवारें कच्ची ईंटों के चबूतरे से, जिस पर नया मंदिर बनता था, ढक दी जाती थीं। अतः अध्यासित मंदिर आवास स्थलों के स्तर विज्ञान की अनुपूर्ति सुविधापूर्वक करते हैं।

अनेक स्थलों के उत्खनन से उद्भूत होने वाला संगत चित्र संक्षेप में सुविधापूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है। सारगोन (Sargon) और अगद (Agade) के राजवंश-युगीन-गृहों के नीचे समोन्नतोदर ईंटों (वे ईंटें जिनका एक भाग चौरस और दूसरा भाग

---

१. इस पद्धति के उत्कृष्ट वर्णन के लिये देखिये फ्रैंकफट, टाउन प्लानिंग रिव्यू, २१, लिवरपूल, १९५०, १००।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उपधानाकार हो) से बनी रचनाएं मिलती हैं। इस प्रकार परिभाषित काल सिर्फ "प्राक्-सारगोनीय" (Pre-Sargonic) नाम से परिभाषित हुआ था। क्रिश्चियन ने "समोन्नतोदर काल" (Plano-Convex Period) का सुझाव रखा था पर, अंत में "आदिवंशीय" (Early Dynastic) नाम से स्वीकृति पाई। फ्रैंकफोर्ट (Frankfort) ने १९३६ ई० से इस काल को तीन प्रावस्थाओं में विभक्त किया है। विशद विवरण अब तक पूर्ण रूप से प्रकाशित नहीं हुए हैं। पर, अ० अन्निपदद् (A-anni-padda), भी तृतीय राजवंशीय काल में रखा गया है। प्राचीनतम समोन्नतोदर दीवारों के नीचे पटिया के आकार की चिपटी ईंटों से बनी अन्य दीवारों के ठूंठ हैं जो कि मृद्-भांडकला, समुत्कीकरण (glyptic) और शिलालेख की विशिष्ट शैलियों से संबद्ध हैं। ये तत्व जम्देत नस्र अवस्था, जिसका नामकरण अक्कद (Akkad) के एक स्थान, जहाँ कि १९२६ ई० में यह संस्कृति अभिज्ञात हुई थी, के निश्चायक हैं। इसके अनंतर १९३० ई० में जम्देत नस्र युग के मंदिरों के नीचे वर्का (Warka) में प्राचीनतम उरूक और बाईबिल कालीन इरेक (Erech) में जर्मन उत्खनकों ने एक नई संस्कृति के अवशेषों का परिचय पाया। ये अवशेष उरूक काल के द्योतक हैं। ये दोनों संस्कृतियाँ उत्तरकालीन बेबिलोनियां में सर्वत्र पायी जाती हैं और पूर्व से ही साधारणतया एक प्रकार की लेखन पद्धति से संबद्ध हैं। अतः डिलूजा (Delougaz) इन दोनों को "आद्य साक्षर" (Protoliterate) के रूप में एक ही वर्ग में रखने के पक्ष में हैं।

उबेद (Ubaid) संस्कृति के गाँव और भी अधिक प्राचीन तथा विशुद्ध रूप से प्रागैतिहासिक हैं। इस संस्कृति का यह नाम १९२२ ई० में उर के निकट खोदे गये एक स्थान के नाम पर पड़ा। यह संस्कृति अपने चित्रित भांडों के द्वारा बड़ी आसानी से पहचानी जाती है। सुमेर में एरिडु (Eridu), उर (Ur), इरेक (Erech) एवं अन्य स्थलों पर बंजर भूमि में उबेद संस्कृति के अवशेष पाये जाते हैं। पर, एक स्थान को छोड़कर अक्कद (Akkad) के अन्य स्थानों में वे लुप्तप्राय जान पड़ते हैं। फिर ये उत्तरी मेसोपोटेमिया में दृष्टिगोचर होते हैं, जहाँ तिग्री पूरब असीरिया में कुर्दिश पहाड़ियों से लेकर कर्शमिश (Carchemish) के निकट यूफ्रतस के मोड़ और उससे भी दूरतर पश्चिम तक उपलब्ध होते हैं। उत्तर में उबेद संस्कृति (Ubaid culture) से पूर्व एक हलफियन (Halafian) नाम की संस्कृति का अस्तित्व पाया जाता है। यह संस्कृति १९१४ ई० के पूर्व आपेन्हम (Oppenheim) द्वार पहले-पहल अभिज्ञात हुई थी, परंतु १९३३ ई० में मलोवा (Mallowan) ने ही इसके स्तरीय अनुक्रम को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्थिर किया। १९४५ ई० से दो या तीन और भी अधिक प्राचीन प्रावस्थाएँ सर्वप्रथम ल्वायड (Lloyd) और सफर (Safar) द्वारा खोदे गये असीरिया के हस्सुना (Hassuna) प्राचीनतम कृषि संस्कृति, जिसका परिचय तिग्री फराती घाटी में १९५० ई० में मिला थं, को उपस्थापित कराता है। तथापि, कुछ पूरब हटकर पहाड़ियों पर स्थित जर्मो (Jarmo) नामक स्थान अपेक्षाकृत प्राचीन और सरल तत्व को प्रकट कर सकता है।

इस प्रकार लगभग ३००० ई० पू० में ऐतिहासिक बननेवाली दुनिया का मानचित्र प्रस्तुत करने के बाद उस प्रदेश का उल्लेख करना बच जाता है, जो संप्रति हमारे लिए ऐतिहासिक नहीं होते हुए भी पहले से ही एक ऐसी सभ्यता का गर्व कर सकता है जो मिस्र और सुमेर की सभ्यता से पूर्णतया साम्य रखती है। वह प्रदेश है सिंधु-घाटी जहाँ १९२० ई० में होने वाले आविष्कारों ने एक वास्तविक नगर-सभ्यता पर प्रकाश डाला है। यहाँ लेखन कला एवं सभ्यता की द्योतक अन्य कलाएँ पहले से ही विकसित हो रही थीं। यहाँ की लिपि का अभी भी उद्वाचन नहीं हो पाया है और नूतन पुरातात्विक सामग्री की व्याख्या के लिए आख्यानों का युक्ति-युक्त उपयोग नहीं किया जा सकता है। परवर्ती अध्याय में हम अवशेषों का विवरण प्रस्तुत करेंगे। इतिहास के उषःकाल में ऐतिहासिक होने की संभावनाओं से युक्त एक तृतीय प्रदेश के अस्तित्व का संकेत करना ही यहाँ पर्याप्त है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वितीय अध्याय

रंगमंच की स्थापना

हमारे प्रथम अध्याय में अभिहित वास्तविक सभ्यता के तीन प्राचीनतम केंद्र पचीसवें और पैंतीसवें अक्षांश के मध्यवर्ती कटिबंध पर स्थित हैं। आजकल यह पृथ्वी का सबसे अधिक गर्म और सूखा जलवायवीय कटिबंध है। अत्यधिक शुष्कता और निस्सीम ग्रीष्मकालीन उष्णता इन तीन प्राचीन केंद्रों और मध्यवर्ती क्षेत्रों की सामान्य विशेषताएँ हैं। भौगोलिक दृष्टिकोण से भी एक प्रकार की एकता समस्त प्रदेश की विशेषता प्रदर्शित करती है। मिस्र, सुमेर और पंजाब उन स्थायी महानदियों की घाटियों में स्थित हैं जो न्यूनाधिक रूप में निरंतर मरुस्थलीय समतल से होकर गुजरती हैं। यह समतल वस्तुतः विलक्षण प्राकृतिक भौगोलिक विशिष्टता से अवरुद्ध है। सहारा, जो इसका पश्चिमीय अनुभाग है, किसी भी तरह चौरस नहीं है, क्योंकि इसकी सतह सर्वथा बड़ी पर्वत-शृंखलाओं और कभी-कभी समुद्री सतह से भी नीचे पड़ने वाले गर्तों से खंडित हैं। अरबी मरुस्थल सहारा का प्राकृतिक विस्तार है, पर नील घाटी के दर्रे के द्वारा यह सहारा से पृथक कर दिया गया है और लालसागर के महाविवर द्वारा स्वयं भी खंडित है। उक्त दर्रे और उसके ऊपर ऊँचे शिखर के पूरब की ओर यह रेगिस्तान मेसोपोटेमिया की अवनत भूमि और फारस की खाड़ी की ओर ढालुआँ हो जाता है। जाग्रोस (Zagros) और पश्चिमीय फारस की समानांतर शृंखलायें, जो और भी अधिक ऊँचा मरुस्थल बनाती हैं, इस महागर्त के दूरतर तट को सीमा बनाती हैं। यह मरुस्थल भौगोलिक दृष्टिकोण से अनातोलियायी आरमेनियायी समतल से संबद्ध है, परंतु जलवायु के आधार पर अरब के अधिक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समीप है और तब दूसरे सीमांत पर यह समतल भू-भाग पुनः पश्चिमी भारत के अत्युष्ण निम्न समतल में विलुप्त हो जाता है। इस प्रकार अतलांतिक के किनारों से लेकर मध्य भारत के मानसूनी प्रदेश तक शुष्क देशों का एक अबाधित क्षेत्र फैला हुआ है। ये देश अधिकांश में एक दूसरे से भिन्न होते हुए भी इनके परस्पर संपर्क के अवरुद्ध करने वाले किसी भी प्रकार के अजय प्राकृतिक भौगोलिक वक्र सीमा-गुल्म के बिना एक दूसरे से संबंधित हैं। अतलांतिक और तिग्री के बीच के भू-खंड की एकता कम-से-कम इस क्रम की है जो समस्त प्रदेश को सूचित करने के लिए उभय साधारण "अफ्रेशिया" (Afrasia) शब्द के प्रयोग का न्यायतः समर्थन करता है।

सहारा के दक्षिणी किनारे पर तृणस्थलो (Savannah) है जो उष्ण कटिबंधीय वन तक व्याप्त है। और पूर्वीय तथा दक्षिणीय फारस में बहुत दूर तक मानसूनी वर्षा सीमांत वन की अभिवृद्धि में सहायक होती है। इसके अनंतर भारतीय सागर इस कटिबंध की दक्षिणी सीमा का निर्माण करता है और फिर सिंधु के पार तक यह मानसूनी जंगल से घिरा रहता है। उत्तरी सीमांत भूमध्य सागर द्वारा निर्दिष्ट होता हुआ प्रतीत होता है। परंतु जलवायु के आधार पर स्पेन का पाइरेनिन-अल्पाइन-बाल्कन (Pyrenean-Alpine-Balkan) तटों के उत्तरवर्ती चक्रवातिक भू-भागों की अपेक्षा सहारा के साथ निकटतर संबंध है। और प्राकृतिक भौगोलिक दृष्टिकोण से अंत में अभिहित शृंखलायें अंतःस्थलीय समुद्र की अपेक्षा अधिक वास्तविक विभाजक रेखा का काम करती है। अतः एशिया में यद्यपि यह मरुस्थल एलबुर्ज (Elburz) के उत्तर तुरानी घाटी तक फैला हुआ है, तथापि हमारे क्षेत्र की सच्ची उत्तरी सीमा का निर्माण वे ही रेखाएं करती हैं जो निरंतर अनातोलियन सम्युंजक (Massif) काकेशस तथा एलबुर्ज (Elburz) और हिंदुकुश एवं हिमालयीय शृंखलाओं में फैली हुई हैं। तथापि मध्य एशियाई मरुस्थल में, विशेषतया तारिम घाटी में परिस्थितियां एक दूसरे से बहुत भिन्न नहीं हैं।

आजकल समस्त प्रदेश वर्षा की भीषण कमी से पीड़ित है जो इस प्रदेश को इससे गुजरने वाली बड़ी नदियों से निकाली गई, सिंचन प्रणालियों के विस्तारक्षेत्र के बाहर वस्तुतः बसने के अयोग्य बनाती है। उत्तरी एवं मध्य यूरोप में बरसनेवाले अतलांतिक चक्रवात केवल शिशिर में ही भूमध्यसागर पहुंचते हैं और सहारा को पूर्णतया छोड़ देते हैं। वे ही शिशिरकालीन चक्रवात वस्तुतः मेसोपोटेमिया, इरानी पठार और सिंधु घाटी भी पहुंचते हैं। परंतु पैलेस्तीन-सीरिया के उच्च समतल को पार करने में वे इतना अधिक बरस चुके होते है कि इससे और अधिक पूरब उत्तरी सीरिया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में एक संकीर्ण मेखला को छोड़ कर वर्षा अपर्याप्त होती है और मध्य फारस का उच्च भू-भाग भी वस्तुतः मरुस्थल ही बना रहता है। साथ ही जटिल कारण पुंज पश्चिम[1] से होनेवाली चक्रवातिक वर्षा पर निर्भर रहने वाली सिंधु घाटी में मानसूनी वर्षा में बाधक सिद्ध होते हैं। इस स्थिति में समस्त प्रदेश सिर्फ इससे गुजरनेवाली नदी-घाटियों को छोड़कर दूर-दूर और छोटी संख्या में बसे हुए लोगों का ही पोषण कर सकता है। ये लोग, सांस्कृतिक प्रगति के लिये प्रोत्साहन नहीं मिलने के कारण वस्तुतः अविकसित ही रह गये हैं।

परंतु हमारी कहानी आरंभ होने के समय उपयुंक्त अवस्था नहीं थी। उस समय उत्तरी यूरोप हार्ज (Harz) तक बर्फ से ढका हुआ था और आलपस तथा पाइरेनीज हिमानियों से आवेष्टित था, तब उत्तरध्रुवीय उच्च दबाव ने अतलांतिक वृष्टिकारक[2] पवन को दक्षिण की ओर मोड़ दिया। आजकल मध्य यूरोप से गुजरने वाली आंधियाँ उस समय में भूमध्य सागर की खाई और उत्तरी सहारा के ऊपर से गुजरती थीं और लेबानन में बिना बरसे हुए ही मेसोपोटेमिया और अरेबिया होते हुए फारस तथा भारत तक अबाध गति से पहुंचती थी। शुष्क सहारा में नियमित रूप से वर्षा होती थी और उससे भी दूरतर पूरब में वर्षा आजकल की अपेक्षा केवल अधिक उदार ही नहीं थी, बल्कि शिशिर में सीमित रहने के बजाय साल भर वितरित होती रहती थी। ईरान के समतल पर का अधःसादन यद्यपि विस्तृत हिमानियों के संवर्धन के लिए अपर्याप्त था, तथापि उसने उन बड़े गर्तों को जो आजकल खारे मरुस्थल (के रूप में विद्यमान) हैं, उन छिछले अन्तःस्थलीय समुद्रों से भर दिया, जिनके अस्तित्व ने जलवायु की कठोरता को कम कर दिया है।

जलवायु विज्ञान के इसी प्रकार के अनुमान हैं जिनकी अभिपुष्टि भूगर्भशास्त्र करता है। वादी (Wadi) के सूखे तल, जो सहारा होकर गुजरते हैं और नील के दोनों तटों में प्रवेश करके अरब को समतल भूमि को पटाते हैं, उन बरसाती जलों की कटाव-शक्ति को अभिप्रमाणित करते हैं, जिनको कभी वे वहाँ लाये थे। फारस और

१. भारतीय मानसून पर देखिए— सिंपसन, क्यू० जे० मि० सो०, १९२१, १५१ आगे।

२. क्यू० जे० मि० सो० में, १९२१। ब्रूक्स विभिन्न प्रागैतिहासिक अवस्थाओं में वृष्टिकारक पवन के संभावित मार्गों का प्रदर्शित करनेवाले मानचित्र देते हैं। देखिए उनका "इवोल्यूशन ऑफ क्लाइमेट", लंदन, १९२४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बलूचिस्तान[1] में पुरानी झीलों के चारों ओर की ऊँची तटीय रेखाएँ अंतःस्थलीय समुद्रों की बाढ़ का साक्ष्य देती हैं, जैसे कि पहले कहा गया है और उनमें अनेक धाराएँ वहीं थीं जो आजकल मरुस्थल में परिणत हो गई हैं।

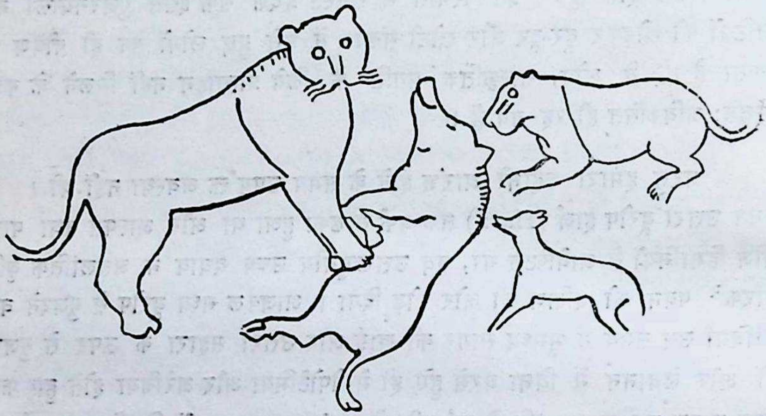

चित्र १. सहारा, गलमा के निकट केफ मेस्यूर (अल्जीरिया) में पत्थर पर उत्कीर्ण चित्र

उस समय, जबकि यूरोप का अधिकांश भाग चीनी मिट्टी के रूप के जमा होने वाली धूल से युक्त हिमहत भूमि (Tundra) या वायु-शोषित भूमि (Wind-swept steppe) के रूप में था, हम उत्तरी अफ्रिका, अरब, फारस और सिंधु घाटी में उस प्रकार की वृक्ष घास भूमि (Park lands) और तृणस्थलियों (Savannahs) की संभावना कर सकते हैं, जिस प्रकार आजकल भूमध्य सागर के उत्तर में पाई जाती हैं। जबकि महाहस्ती अर्णामय गैंडे और बारहसिंहें, फ्रांस एवं दक्षिणी इगलैंड में चर रहे थे तब उत्तरी अफ्रिका ऐसे पशु-समुदाय का पोषण करता रहा होगा जिस प्रकार का पशुवर्ग आजकल रोडेशिया[2] में पाया जाता है। उन प्रदेशों में जो आजकल पूर्णतः मरुस्थल हैं, इनका (पशु समूह का) प्राक्तन अस्तित्व वस्तुतः उन चित्रों से सिद्ध होता है, जो इन इलाकों में हाथियों, दरियाई घोड़ों, हरिणों, जंगली सांड़ों, बैनले गधों एवं घास वृक्षस्थल के अन्य चौपायों और उनके भक्षक चीतों, शेरों एवं भालुओं का

१. स्वेन हेडिन (Sven Hedin), ओवर लैंड टू इंडिया (Overland to India). ii, २१४, आगे। ए० जे० ए० (A. J. A.), १९५०।

२. बूले (Boule), ल' अंथ्र (L' Anthr.), १०, १९००,५७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिकार करने वाले लोगों के द्वारा उत्कीर्ण किए गए, पत्थर तोड़कर बनाए गए, अथवा चट्टानों पर चित्रित किए गए थे। इस तरह के चित्र सहारा के मानचित्र[1] में (Atlas), फेज्जन में, त्रिपोलेटेनिया,[2] कनात के मरूद्यान, नील[3] के उभय तटवर्ती मरुस्थलों और अरब[4] में भी सामान्य रूप से पाए जाते हैं।

परंतु अभी यह विश्वास किया जाता है कि इन चित्रों में अधिकांश भूगर्भशास्त्र के आधुनिक काल से जबकि इससे पूर्व यूरोप में हिमनद एवं हिम-फलक पिघल चुके थे[5] संबद्ध हैं। पूर्व धारणा के विपरीत उनके निर्गमन ने उत्तरी अफ्रीका और हिदर एशिया में मरुस्थलीय परिस्थितियों की दिशा में कोई आकस्मिक विपत्तिजनक परिवर्तन नहीं उत्पन्न किया। अत्यधिक वर्षा की कमी का विद्यमान साम्राज्य एक ऐसी क्रमिक प्रक्रिया का परिणाम है जिसमें मानव और उनके पशुओं ने अपना समुचित योगदान दिया होगा। तथापि, यह जलवायवीय परिवर्तन नहीं था जिसने आधी शताब्दी में ओक्लाहोम (Oklahome) को धूल के कटोरे (Dust-bowl) के रूप में बदल दिया। वस्तुतः पाषाण चित्र "रोडेशियाई पशुवर्ग" को उतर जीविता और समुचित वनस्पति समृद्धि को उस युग में प्रदर्शित करते हैं जब पशुपालक उत्तरोक्त ओक्ला होम का उपयोग वस्तुतः चारागाह के रूप में कर रहे थे।

तथापि उत्तरी अफ्रिका और दक्षिणी एशिया के तृणस्थल अंतिम हिम-युग में मनुष्यों के द्वारा उतने ही सघन आबाद थे जितनी कि यूरोप की हिमहत भूमि और शोषस्थलियां हैं। उन्होंने बड़ा ही अनुकूल वायुमंडल प्रदान किया होगा। आजकल समस्त उत्तरी अफ्रिका में, सीरिया में, पैलेस्तिन, कुर्दिस्तान और ईरान के पठार में पाषाण के उपकरणों से सज्जित शिकारियों के अवशेष हमें उपलब्ध होते हैं। ये उप-

---

१. Frobenius and Obermaier, Hadschra Maktuba, Munich, 1925; Flamande, Les Pierres ecrites, Paris, 1921; Solignac, Les Pierres e'crites de la Berberie occidentale, Tunis, 1928, etc.

२. Graziosi, L' Arte rupestre della Libia, Naples, 1942; Reygasse, L' Anthr; xiv, 1935,534—570.

३. विंकलर (Winckler), दी रॉक ड्राइंग्स ऑफ साउदर्न अपर इजिप्ट; i, १९३८; ii, १९३९।

४. मैन (Man), xxxii, २९७; ए० जे० ए०, xxxvii, ३८३।

५. वोफ्रे (Vaufrey), L' Art rupestre nord-africain', आई०, पी० एच्०, में० २०, १९३९; विंकलर (Winkler) ब० उ० (op. cit), ग्रेजिओसी, ब० उ०, २३८, L, Anthr. Iv, १९५१, ४८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करण एक धारवाले और नुकीले दो धारोंवाले चाकू हैं जो अंतिम हिम युग के प्रारंभ में (वूर्म १) यूरोप और उच्च एशिया में मुस्तैरी महाहस्ती के शिकारियों द्वारा प्रयुक्त चाकुओं के समान थे। परंतु इनमें से अधिकांश लेवालूसी शैली में बने थे। यह शैली यूरोपीय मुस्तेरियनों द्वारा साधारणतया, परंतु अनन्य रूप से नहीं, प्रयुक्त कार्य पद्धतियों की अपेक्षा अधिक दूरदर्शिता एवं बुद्धि वैभव चाहती है। इसके अतिरिक्त,

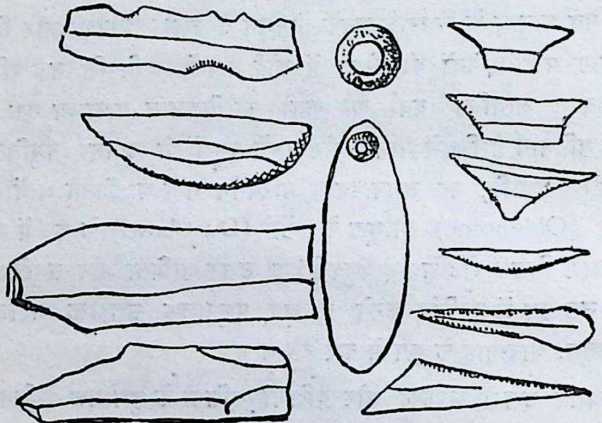

चित्र २. आइन मोहाद से (प्राप्त) केप्सियन अनलाश्म फलक तथा शुतुरमुर्ग के अंड-कर्पर से बने चक्राकार मनके, $\frac{1}{4}$।

जब मुस्तेरियन उपकरणों के यूरोपीय निर्माता और मोरक्को[1], पूर्वी अफ्रिका एवं रोडेशिया[2] में उनके कतिपय सम सामयिक अफ्रिका मुश्किल से आधुनिक मानव के रूप में विकसित हो सकने वाले मानव परिवार की विपथगामी (नियंडर्तल या नियंडतलोभ शाखाओं से संबंधित थे, तब पैलेस्तिन[3] के लेवालूसी-मुस्तेरियनों के कम-से-कम कुछ

१. हो और मोवियस (Howe and Movious), 'ए स्टोन ऐज केव साइट इन तांजियर (A Stone Age Cave Site in Tangier)', पीबडी संग्रहालय के कागजात, २८, हार्वर्ड, १९४७।

२. नेचर (Nature), १३८ (cxxxviii), १९३६, १०८२—४; जे० आर० ए० आइ०, Lxxvii, २८।

३. कीथ और मेक काउन (Keith and Mecown), दी स्टोन एज ऑफ माउंट कारमेल (The Stone Age of Mount Carmel), ii, ऑक्सफोर्ड, १९३९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लोग आधुनिक प्रकार की दिशा में अग्रसर होने वाले अपेक्षाकृत कम विशिष्टीकृत कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह आधुनिक प्रकार पूर्ण मानव (Homo sapiens) था, जैसा कि हमलोग अपने को सगर्व कहते हैं।

अब १९४७ ई० तक यूरोप में ज्ञात उत्तरवर्ती प्रकार के आदि प्रतिनिधि अधिकांश में ब्लेडों पर बने प्रस्तर के अत्यधिक उत्कृष्ट उपकरणों से सज्जित प्रतीत हुए। ये ब्लेड मोस्तीरी लेवाल्यूसी फलकों के निर्माण में प्रयुक्त पद्धति की अपेक्षा भिन्न रीति से बनाए गए लम्बे और पतले फलक हैं। इस प्रकार यह विश्वास किया गया कि ब्लेड औजार सर्वदा एवं अनन्य रूप से मेधावी मानवों द्वारा बनाए गए थे और ब्लेडों पर आधारित उद्योगों का नाम अनुमानतः केवल प्राक्तनतर आदि मानव वर्ग के द्वारा निर्मित मूस्तेरी लेवल्यूसी संघातों के विपरीत "उत्तर मानव युगीन" दिया गया। परंतु यह परिभाषा अब भ्रामक सिद्ध हुइ है। हमारे अंचल में ब्लेड के औजार प्रारंभिक पूर्व पाषाणकालीन यूरोप की तरह सब जगह प्राचीनतर फलकों का स्थान नहीं लेते हैं, जैसा कि वे पूर्व पाषाणकालीन यूरोप में दृष्टिगोचर होते हैं।

तथापि पैलेस्तीन और सीरिया में जहाँ लेवल्यूसी मोस्तीरी मानवों ने आधुनिक (नव मानव) लक्षण प्रदर्शित किए थे, ठीक वहाँ भी लेवल्यूसी मोस्तीरी उपकरणों के आधुनिकतम संघातो में वास्तविक ब्लेडों (सधार फलकों) का विशेष अनुपात संमिलित है। वस्तुतः एमीरियन[1] के रूप में परिभाषित ये संघात पूर्व मानवीय (Palaenthropic) अथवा अवर पूर्व पाषाणकालीन फलक परंपरा से नव मानव प्रवर (upper) पूर्व पाषाणकालीन फलक परंपरा की दिशा में संक्रमण प्रदर्शित करने का, दुनियाँ के किसी भी स्थान में अभिज्ञात अन्य संस्कृति की अपेक्षा अधिक अच्छा दावा रखते हैं। इसके अनंतर तुरत ऊपर पड़ने वाले स्तरों में इस संक्रमणकालीन एमीरीय उद्योग का स्थान वास्तविक सधार फलकवाले उपकरणों के संघात लेते हैं। ये उपकरण क्रीमिया, बालकन, मध्य यूरोप, फ्रांस और इगलैंड में प्राप्त आरिगनेशियन उपकरण से संबंधित हैं[2]। साथ ही कुर्दिस्तान में जर्जी[3] की कंदरा से उपलब्ध औजार ठीक उसी तरह

१. टरविले-पीटर (Turville-Petre), रिसर्चेज इन प्री-हिस्टोरिक गेलिली (Researches in Pre-historic galilee), लंदन, १९२७, ३—१४; गैरोड और बाटे (Garrod and Bate), दी स्टोन एज ऑफ माउंट कारमेल, 1, ५०—५३।

२. गैरोड (Garrod), पी० पी० एस०, iv, १९३८।

३. गैरोड, अमेरिकन स्कूल ऑफ प्री-हिस्टॉरिक रिसर्च, बुलैटिन, vii, १९३१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दक्षिणी रूस, मोरेबिया और अवर आष्ट्रिया के पड़ावों से परिचित ग्रावेतियन उपकरणों से पूर्णतः संबंधित हैं। यहाँ तक कि अफ्रिका माइनर में भी मरुभूमि तथा शैल घरों में घोंघों के कर्परों की विशाल राशि यूरोप के शातैलपिरोनियन और औरेनियन फलक

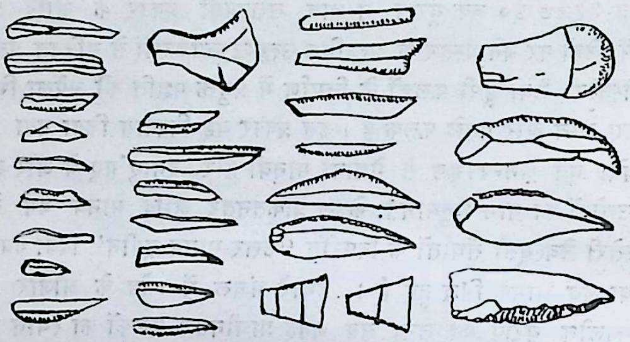

चित्र ३. उत्तरकालीन केप्सियन अथवा मोतलन फलक और सूक्ष्म पाषाण, मॉर्सेटि और अलीब्रचा, कान्सटेन्टाईन, ¼ ।

उद्योग चि० २-३ प्रस्तुत करारी है इन्हीं उपकरणों से अभिन्न ओजार पूर्वी अफ्रिका[1] में सम सामयिक पड़ावों की विशेषता प्रदर्शित करते हैं। परंतु इन दोनों क्षेत्रों में इनके निर्माताओं ने सूक्ष्म ज्यामितिक अनलाश्मों-सूक्ष्म पाषाणों से सज्जित मिश्रित हथियारों के प्रति झुकाव दिखाया है। ये तत्व यूरोप में केवल आधुनिक काल में और मध्य पाषाण संस्कृतियों में जनप्रिय हुए।

दूसरी ओर अफ्रीका के बड़े भू-खंडों पर फलक उद्योगों का स्थान प्रारंभिक पूव पाषाण समय में लेवलोसी परंपरा को जारी रखने वाले शल्क उद्योगों और सम सामयिक फलक उद्योगों से भिन्न हैं। इस पद्धति में दोनों भागों या सतहों और किनारों से सूक्ष्म ऊपरी शल्कों को हटाकर मूल शल्क पतला बनाया जाता है। अन्य शल्क कभी उत्तर मानव फलक उद्योगों के निजी समझे जानेवाले पटुतापूर्ण उपकरणों, नक्काशी यंत्रों आदि के रूप में परिवर्तित कर दिए गए हैं।

---

१. एल० एस० बी० लीकी (Leakey), दी स्टोन एज कल्चर्स ऑफ केनिया कॉलोनी, १९३१; स्टोन एज अफ्रीका, १९३६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इन प्रारंभिक पूर्व पाषाणकालीन शल्क उद्योगों में से अन्यतम, जो अतेरियन के रूप में परिभाषित हैं, समस्त उतरी अफ्रिका में अतलांतिक तटों से लेकर मिस्र[1] में खार्गा मरूद्यान तक विख्यात शिकारियों के दलों को प्रस्तुत करता है। इन्होंने अपने शल्कों को भालों के लिए कार्यक्षम दो तरफा नोकों और नुकीले वाणासिरों के रूप में भी परिवर्तित करने का प्रबंध किया (चित्र ४)। अगर उन्होंने स्वयं आविष्कार न भी किया हो तो भी उनके अधिकार में उपरोक्त वाणसिरों को फेंकने के लिए धनुष अवश्य ही रहा होगा। और पैलस्तीन की एमीरियन प्रकार की नोकें कभी-कभी अत्तरी (Aterian) संदर्भों में भी उपलब्ध होती हैं। स्वयं नील घाटी में सेबीलियन प्रकार लेवालोसी परंपरा के समानांतर विकास को प्रदर्शित करता हुआ प्रतीत होता है।

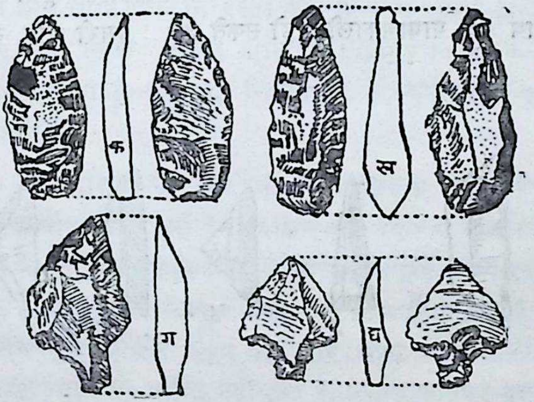

चित्र ४. अंतरी दोतरफा नोकें (क-ख) ओर वाण सिरें (ग-घ); क, ग, घ $\frac{1}{3}$, ख $\frac{1}{4}$।

परंतु, यहाँ दोतरफा समाकुंतन विरलता से प्रयुक्त होता था जबकि विभिन्न भागों से निर्मित अस्त्रों के प्रति प्रवृत्ति ने सूक्ष्म पाषाणों[2] की बहुलता को प्रोत्साहित किया। अंततः सोमाली लैंड और पूर्वी अफ्रीका में तथाकथित स्टिल खाड़ी का उद्योग अतेरी

१. केटोन थोम्प्सन (Caton-Thompson), 'दी अतेरियन इंडस्ट्री', जे० आर० ए० आइ०, lxxvi, १९४६।

२. विग्नार्ड इन बुल, Soc Pre'hist. Franc, १९२८, २००. आगे, हुजाईगीन (Huzayyin), 'द प्लेस ऑफ इजिप्ट इन प्री-हिस्ट्री', Institut d'Egypte Mem,, xlix, काहिरा, १९४१; केटॉन थोम्प्सन (Caton-Thompson), पी० पी० एस०; xii, १९४६,१००-११८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नोको की तरह दोतरफा नोकों को प्रदर्शित करता है, पर बाण-शिर नहीं पाए जाते हैं। अंत में हम दोतरफा अतेरी परंपरा पाएँगे जो मिस्र में परवर्ती अनलाश्म कर्म को प्रभावित करती है, जबकि एशिया में फलक परंपरा ही बराबर दृष्टिगोचर होती है।

यूरोप में प्रारंभ से ही यह स्वीकार किया गया कि ज्यामितिक आकारों में सावधानी से समाकृंतित सूक्ष्म अनलाश्म ही मानव युग (Pliestocene) तथा पुरातन पाषाण युग के अंत से नूतन युग के प्रारंभ तक फैले हुए काल तक प्रथम कृषकों के उद्भव के साथ विशेष रूप से जनप्रिय थे। इसलिए वर्णनात्मक "सूक्ष्म पाषाण पद" "मध्य पाषाण" इस विभाजक पद के लिए बहुधा भ्रांत रूप में व्यवहृत होता रहा। पर, वस्तुतः ज्यामितिक सूक्ष्म पाषाण अंतिम हिम-युग में शिकारियों के कुछ वर्गों द्वारा प्रयुक्त होते (वूर्म २—३)[१] थे। और उत्तरी अफ्रिका तथा केन्या में सूक्ष्म पाषाण ठीक उसी सत्यता के साथ पूर्व पाषाणकालीन हो सकते हैं। दूसरी ओर, यूरोप और अफ्रिका

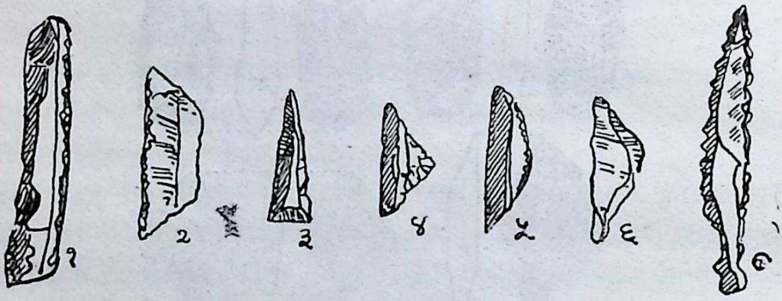

चित्र ५. भारत में विंध्य पहाड़ियों से उपलब्ध सूक्ष्म पाषाण (नतूपियन आकार) ब्रिटिश संग्रहालय के आधार पर, 'पाषाणयुग निर्देशिका,।

इन दोनों स्थानों में कृषकों द्वारा पहले ही इन क्षेत्रों के उपनिवेशीकरण के बाद तक, अर्थात् उत्तर पाषाणकालीन अवस्था के उदय होने के बाद तक सूक्ष्म पाषाणों का प्रयोग होता रहा। इसलिए किसी भी सीमा तक सुंदरतापूर्वक निर्मित सूक्ष्म अनलाश्मों के समवाय अपने आप में अपने निर्माताओं की सापेक्ष प्राचीनता के प्रदर्शक नहीं

१. उदाहरणार्थ, पीरोनी (Peyrony) 'Laugerie Haute', आई० पी० एच०मे० १९, १९३८; L. Anthr;. xlix, १९३९—४०, ७०२; बूसौनी (Bouysonnie), वही; L; १९४६, चित्र ६१, ६३ लाकोरे और बैरल (Lacorre and Barral) रिव्यू Etudes Ligures, xiv, बोरदिघरा (Bordighera), १९४८,१९-३४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं। वस्तुत: डा० लीकी (Dr. Leakey) ने व्यावहारिक प्रयोगों के द्वारा दिखाया है कि सूक्ष्म पाषाणों से सज्जित वाण विलक्षण रूप से घातक हथियार हैं, जो विशेष प्रकार के शिकारों के अन्वेषण में प्रयुक्त होते हैं। उसने दर्शाया है कि केवल सूक्ष्म पाषाण भी आराम से बैठकर काम करने वाले पुरातत्वज्ञों के द्वारा कल्पित कठिनता की अपेक्षा बहुत कम ही प्रयास में फलक और शल्क इन दोनों से बनाये जा सकते हैं। अत: प्राचीन संसार में इनका व्यापक एवं उचित रूप में लम्बी अवधि तक जनप्रिय बना रहना बहुत आश्चर्यजनक नहीं है। यद्यपि हम जोन-जौफ-प्रोट्स से लेकर उत्तमाशांतरीप और अतलांतिक तटों से लेकर भारत में विंध्य की पहाड़ियों तथा मंगोली मरुस्थल तक (चित्र ५) चारों ओर बिखरे हुए सूक्ष्म पाषाणों के संघात पाते हैं, पर, अकेले न तो मध्य पाषाणकालीन बस्ती और न लोक प्रव्रजन ही सिद्ध करने में उपयोग आ सकते हैं, और किसी "वामन जाति" (Pigmy race) के साथ उनका संबंध स्थापन निर्हेतुक कल्पना है जो उनके निर्माताओं के कंकालीय अवशेषों द्वारा स्पष्टत: खंडित हो जाती है।

केवल कला की शैलियां भी युग अथवा जाति के स्वरूप निर्णय के लिये समान रूप से अविश्वसनीय सिद्ध हुई हैं। दक्षिण-पूर्वी स्पेन में मध्य सहारा के इन-एजान (In-Ezzan) में और दक्षिणी अफ्रीका में भी छिछले चट्टानी आवासों में पाये-जाने वाले चित्रों के बीच वस्तुत: बिलकुल विलक्षण साम्य पाए गए हैं। पर, अब प्रथमोक्त भी नवीनतम युग के अंत (वूर्म ३) और बहुत संभव प्रारंभिक से नूतन युग की अपेक्षा अधिक प्राचीन प्रतीत नहीं होते हैं, जबकि कतिपय बुशमेन (Bushmen) चित्र ऐतिहासिक काल के हैं। सामान्यत: शिकारियों द्वारा जादूई उद्देश्यों की पूर्ति के लिये चट्टानों पर प्राकृतिक अथवा अर्धप्राकृतिक चित्र चित्रित वा उत्कीर्ण किये गए हैं या तराशे गए हैं। पर, ये शिकारी अपने शिकार के उत्पादनों को अनुपूर्ति पशु अभिजनन तथा अन्नोत्पादन से प्रारंभ करने के बावजूद इस अभ्यास को आवश्यक रूप में नहीं छोड़ते हैं। सूक्ष्म पाषाणों के समान शिलालेख उन क्षेत्रों में, जो आजकल आवास के अयोग्य हैं, शिकार का साक्ष्य देते हैं। अन्यथा वे कलाकारों की खास प्राचीनता का प्रदर्शन नहीं करते हैं।

फिर, अफ्रीका लघु और नाईजीरियाई तथा मिस्री सूडान में शिकार के पशुओं के कर्परों तथा अस्थियों की विशाल राशियां, जो बहुधा मानवीय शवाधानों में भी व्याप्त हैं, एवं निकट एशिया की गुफाओं में इसी प्रकार के निक्षेप उन समुदायों के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं जो उस स्थल पर या तो स्थाई रूप से रहते थे या

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रत्येक वर्ष नियमित रूप से अपना पड़ाव डालते थे। संप्रति इस प्रकार की बस्ती अथवा शिविर का युग निर्णय करना कदाचित ही संभव है। निःसंदिग्ध रूप से अधिक

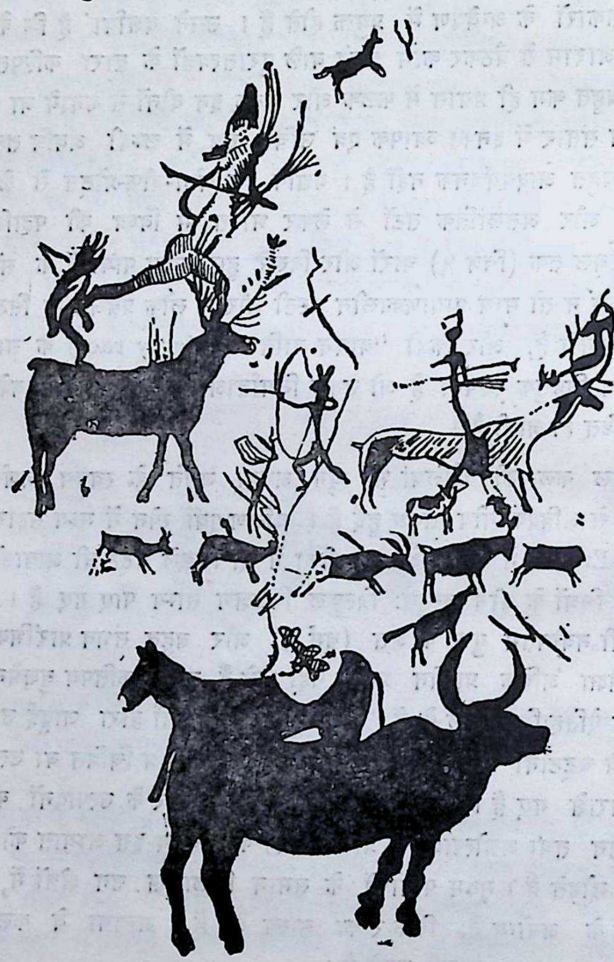

चित्र ६. आलपेरा, दक्षिण-पूर्वी स्पेन में एक चट्टानी आश्रय की दीवारों पर चित्रित दृश्य, ब्रियूल (Breuil) के आधार पर।

से अधिक यही करस कते हैं कि शायद कृषि प्रारंभ के बावजूद इसके अधिवासियों ने शिकार करना नहीं छोड़ा था। परंतु वे विशुद्ध खाद्य-संबंधी के रूप में रहे हों या

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं, अफ्रेशिया में जीवन दशाओं ने सामान्य तया अविरल एवं व्यापक परिभ्रमणों के लिए अवश्य ही बाध्य किया होगा। विशेषतः शुष्क स्थल प्रदेश में, जैसी कि उत्तर मुस्तेरी काल में भूमि हो रही थी, शिकारियों को शिकार के झुंडों की खोज में लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। सूखा पड़ने की स्थिति में अथवा शिकार की आपूर्ति को विरल बनाने वाले अन्य कारणों की वजह से उन्हें पूर्णतः अपने आवासों का स्थानांतरण करना पड़ा होगा। इस प्रकार के सामान्य अथवा असामान्य आवागमनों के द्वारा विभिन्न दल मित्रतापूर्ण का द्वेषपूर्ण पारस्परिक संपर्क में लाये गये होगें। जिससे उन्हें अपने अनुदानों एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिये अथवा विदेशी तत्त्वों के अपहरण और अपने शत्रुओं के आचारों के अनुकरण के अवसर मिले होगें। इस प्रकार का जन-संकुल वातावरण उद्भावनाओं एवं आविष्कारों के लिये विलक्षण सुविधाएं प्रदान करता है।

आविष्कार यदि आर्थिक क्रांति का जनक हो तो ये सुविधाएँ बढ़ जाती हैं। खाद्योत्पादन, जिसमें खाद्योपयोगी पौधों की, खासकर सस्यों की विमर्पित कृषि एवं पशुओं का दमन, अभिजनन और चयन सम्मिलित थे, एक आर्थिक क्रांति के रूप में था। अग्नि पर अधिकार पाने के बाद मानव इतिहास में यह सबसे बड़ी उपलब्धि थी। इसने खाद्य की प्रचुरतर एवं अधिक विश्वसनीय आपूर्ति का द्वार खोला। इस आपूर्ति पर मानव का अब अपना नियंत्रण था और दूसरों की सहायता के बिना ही मनुष्य के अपने प्रयत्नों के द्वारा निस्सीम प्रसार के योग्य थी। इंगलैंड में हुई औद्योगिक क्रांति के दृष्ट परिणामों के आधार पर निर्णय करने पर जनसंख्या में त्वरित वृद्धि इस प्रकार के परिवर्तन का सहज परिणाम होगा। अंत में, वे बच्चे, जो एक शिकारी के लिये भारस्वरूप हो सकते हैं, बाल्यावस्था में ही खाद्योत्पादक के द्वारा उपयोगिता के साथ खेतों के कमाने और जानवरों के चराने के काम में नियुक्त किये जा सकते हैं। पर, केवल संख्यागत वृद्धि से शीघ्र ही अधिक विस्तृत क्षत्र में आबादी का प्रसार होगा। पशुचारक यायावरी प्रवृत्ति के लिये प्रसिद्ध हैं, पर कुछ प्रकार के कृषक एक स्थान पर पूर्णतः स्थायी रूप में नहीं रह सकते हैं।

अब भी अफ्रीका के विस्तृत क्षत्रों में की जानेवाली खेती के सीधे-सादे रूप को साधारण रूप में कुदाल संस्कृति (Hoe-culture) अथवा "उद्यान-संस्कृति" का नाम दिया गया है। जमीन के छोटे खंड साधारणतया स्त्रियों द्वारा कुदाल से तैयार किए जाते हैं और उनमें बीज तबतक बोये जाते हैं जबतक कि फसलों की उपज में ह्रास होना प्रारंभ न हो जाय। न तो खाद डालकर उपज बढ़ाने की विधि और न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नियमित जोताई पर ही ध्यान दिया जाता है। जब एक भू खंड शक्तिहीन हो जाता है तो अकृष्ट भूमि का एक नया खंड साफ करके खेती के योग्य बनाया जाता है। अंत में जब एक क्षेत्र पूर्णतया निस्सत्व हो जाता है तो समूची बस्ती इस जगह को छोड़कर नई जगह चली जाती है। इस तरह कुदाल-संस्कृति वस्तुतः खानाबदोशी को प्रोत्साहित करती है।

पर यदि कृष्ट क्षेत्र अंतिम पह्यान अथवा वादी का तल हो, जहां नियमित समय पर बाढ़ आती हो, तो स्थानांतरण अनावश्यक हो जाता है। बाढ़ नई मिट्टी लाती है, जो खाद के रूप में खेतों पर जमा कर दी जाती है जिससे उनकी उर्वरता फिर से कायम हो जाती है।

और, यदि जल-प्लावन पर्याप्त रूप में नियमित हो तथा उचित ऋतु में आता हो तो वह दोनों की सिंचाई में वर्षा का स्थान ले सकता है। इस स्थिति में स्थाई निवास लगभग अपरिहार्य हो जाता है। यह तभी सभव है जबकि जल-प्लावित भूमि में खेती होती है। सिंचाई का पूरा लाभ उठाने के लिए अधिक पानी को हटाने या कमी को पूरा करने के उद्देश्य से प्रणालियां खोदनी पड़ती हैं और इस प्रकार उसके अपने परिश्रम के द्वारा फलप्रद बनाये गये क्षेत्र को कृषक स्वेच्छापूर्वक नहीं छोड़ेगा, क्योंकि उस भूमि में पूंजी लगाई जा चुकी है। जलोत्सारण एवं सिंचन के कार्यों में सामान्यतः समस्त समुदाय के सहयोग की आवश्यकता होती है। वे सामाजिक दृढ़ता के साधक आर्थिक संबंध का निर्माण करते हैं और जलापूर्ति के उपयोगाधिकार को नियंत्रित करने की संभाव्यता समुदाय के हाथों में स्वीकृति का आधिकार प्रदान करती है। अंततः इसे ही नदी-व्यवस्था पर निर्भर रहनेवाले समस्त क्षेत्र के राजनैतिक एकीकरण की ओर अग्रसर होना चाहिए। वस्तुतः हम देखेगें कि उच्चतर सभ्ताएँ प्रथमतः सिंचनाधीन कृषि पर निर्भर थीं। इससे यह सूचित नहीं होता कि सिंचनाधीन कृषि उद्यान कर्म से आवश्यक रूप में अर्वाचीन है। पेरी (Perry)और चेरी (Cherry) की इससे विपरीत धारणा थी।

खाद्योत्पादक अर्थव्यवस्था के निर्माण में कृषि एवं पशुपालन के सापेक्ष कर्तव्यों के संबंध में अबतक किसी प्रकार का मतैक्य नहीं हो पाया है। प्राध्यापक मेनघिन[१] (Menghin) एक संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसकी धारणा है कि पशुओं के दमन और पौधों की कृषि का प्रारंभ विभिन्न दलों द्वारा हुआ। पशुदमन का उदय शिकारी लोगों के बीच हुआ होगा और कृषि की उत्पत्ति उन लोगों के बीच हुई होगी

१. Weltgeschichte der Steinzeit विएना १९३१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो पहले से मूलों, बीजों और बेरों के संचयन में संलग्न थे। मिश्रित कृषि केवल पशुपालकों एवं कृषकों के संयोग से ही उत्पन्न हो सकती है। अन्य व्यक्ति कृषि को ही प्राथमिकता देते हैं। इनके अनुसार कृषक अपने अध्यवसायों के द्वारा प्रतिश्रुत आहार के बल पर वन्य पशुओं को पालतू बनने का प्रलोभन दे सकता था। पुरातात्विक अभिलेख का स्वरूप परवर्ती धारण का अनुचित रूप में पक्ष लेता हुआ प्रतीत होता है। यत्र तत्र हंसियों के पत्थरों, चक्कियों और बहुत संभव, भांड खंडों को छोड़नेवाले कृषकों की अपेक्षा तंबुओं में रहने वाले और अस्थि के उपकरणों तथा चर्मपात्रों का उपयोग करने वाले पशुचारकों द्वारा अभिज्ञातव्य चिह्न छोड़ने की कम सभावना है।

किसी भी स्थिति में प्रारंभमान शुष्कता की दशाओं ने, जिनका संकेत हमने किया है, खाद्योत्पादक अर्थ व्यवस्था अपनाने की दिशा में प्रेरणा दी होगी। धाराओं और सूखते हुए सोतों के तटों पर दृढ़ीकृत सकेंद्रण ने पोषण के साधनों के गहनतर अन्वेषण के लिए बाध्य किया होगा। मरुस्थलीय विस्तारों के कारण (शेष भागों से) बढ़ती के साथ विच्छिन्न होने वाले मरूधानों में पशु और मानव एकत्र हुए होंगे। इस प्रकार के दृढ़ीकृत सान्निध्य ने मानव और पशु के बीच उस प्रकार के स्थाई संघटन को प्रोत्साहित किया होगा, जो "पशुदमन" (Domestication) इस शब्द से अभिव्यक्त होता है।

और अफ्रेशिया में अच्छी घास और पालतू बनाने योग्य जानवर मनुष्य को प्रचुरता से मिलने लगे थे। वस्तुतः इसी अंचल में, पर इसके अफ्रीकी संविभाग की अपेक्षा संभवतः एशियाई संविभाग में, पशुओं एवं वनस्पतियों के उपयुक्त वर्ग एक साथ प्राप्य थे।

जंगली धान्य[1] बीजों के वर्तमान वितरण के आधार पर यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि अन्नों का उत्पादन संभवतः एशिया में प्रारंभ हुआ था। जंगली जौ वस्तुतः एशिया माईनर, ट्रांसकाकेशिया, तुर्किस्तान, अफगनिस्तान, फारस, पैलेस्तिन और संभवतः अरबिया पेत्रा में पाया गया है। पर इसका पता अमेरिका में भी लगा है जो वृष्टि समय में पैलेस्तिन से स्वेज और उसके डेल्टा को संयोजक भूमि तक पूर्वज वनस्पति के प्राकृतिक निवास स्थल के विस्तार को सूचित करता है। वेविलोव (Vavilov) जंगली जौ के छिटफुट सीसों से नहीं, बल्कि उत्पादित प्रकारों

१. सस्यों के विषय में देखिए एंटीक्वीटी, vii, १९३३, ७३, आगे, स्कीमेन (Schiemann), Entstehung der Kulturpflanzen (Ergebnisse der Biologie, १९), बर्लिन, १९४३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की संख्या के आधार पर तर्क प्रस्तुत करते हुए वनस्पति-दमन को दूसरा केंद्र एबीसीनिया, जहां अभी तक जौ नहीं पाया गया है, में स्थिर करते हैं। एमर (Emmer) गेहूँ के जंगली पूर्वज को अट्टाईस क्रोमोजोम्स वाला सिरियाई गेहूँ पश्चिमी फारस, मेसोपोटेमिया, सीरिया और पैलेस्तीन की देशी उपज माना गया है। अस्तु, वेविलोव के मतानुसार एमर की खेती उत्तर-पूर्वीय अफ्रिका में अवश्य ही शुरू हुई होगी। पर, यह क्षेत्र अधिक-संभव प्रसार का केवल द्वितीय केंद्र था। प्रारंभिक केंद्र सीरिया था। गेहूँ के अन्य वर्ग का अकृष्ट रूप बल्कानी गेहूँ (Triticum monococcum) बाल्कन, एशिया माइनर, उत्तरी सीरिया, और फारस के सीमांतवर्ती खुर्दिस्तान में अनायास उत्पन्न होता है। कतिपय वनस्पति शस्त्रियों की धारणा है कि खाद्योपयोगी सर्वसाधारण गेहूँ सामान्य गेहूँ (Triticum vulgare) और बियालीस क्रॉमोजोम्सवाले तत्संबंधित वर्ग (Triticumcompactum) पूर्वक्ति वर्गों के बीच सांकर्य के परिणाम हैं। वन्य पूर्वज अज्ञात है। वेविलोव के सिद्धांतानुसार उनकी कृषि का प्रारंभिक केंद्र अफगनिस्तान में अथवा उसके आस-पास निर्धारित करना होगा। यदि रोटिकोपयोगी एवं क्लब गेहूँ (bread and club wheat) और छोटी तीसी पश्चिमी एशिया की उपज हैं तो एंमर (Emmer) जौ और बड़ी तीसी की कृषि प्रथमतः उत्तरी वा पूर्वी अफ्रिका में प्रारंभ हुई होगी।

अपेक्षाकृत अधिक समीचीन तर्क जानवरों, विशेषतः भेड़ो[1] पर आधारित है। अफ्रीका में जंगली भेड़ों का अस्तित्व नहीं है, क्योंकि उत्तरी अफ्रीका का तथाकथित पुच्छहीन विशाल मेष (Barbary sheep) वस्तुतः इस जिस से संबंधित नहीं है। इसके विपरीत एशिया में तीन प्रकार के जंगली भेड़ों का अस्तित्व है जिनमें से सबों ने घरेलू भेड़ों के कुल को जन्म दिया है। ओविस म्यूजिमो (Ovis musimon) नाम से ख्यात दक्षिणी यूरोप का जंगली पहाड़ी भेड़ (Mauflon) भूमध्य सागर के उत्तर कोर्सिका और सर्दीनिया में रहता है और कभी महाद्विपीय यूरोप में अधिक दूर तक फैला था। इससे कुछ भिन्न प्रकार हिदर एशिया के पहाड़ी प्रदेशों में अनातोलिया से लेकर एल्वर्ज और जाग्रोस तक निवास करता है। ई० पू० चतुर्थ सहस्राब्दी के एक

---

१. जे० कॉस्सर इवार्ट, प्रोक० हाइलैंड एंड एग्रिकल्चर, ६००, xxv, १९१३, १९० आगे, आंटोनियस, Grundzuge einer Stammesgeschichte der Haustiere, Vienna, १९२२, Hilzheimer, Zeitschr f. Saugtierkunde, iii, बर्लिन, १९२८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुमेरीय पात्र पर (फ० २० बी०) एशियाई पहाड़ी मेष पालतू बनाया गया दीख पड़ता है। परंतु, उसका यूरोपीय सजातीय यूरोपीय प्रागितिहास में कुछ बाद में सिर्फ नियंत्रित किया गया। स्विट्जरलैंड के झील-घरों और मध्य तथा पश्चिमी यूरोप के अन्य प्राचीन निक्षेपों में प्राप्त प्राचीनतम पालतू मेष, दलदल भूमि में रहने वाला मेष (Ovis palustris) लंबी पूंछ वाले एशियाई अरियल (urial) [हड़प्पा भेड़ (Ovi svignei)] भेड़ का पालतू वंशज है। एलबर्ज की उत्तरी ढालें, तुर्किस्तान, अफगनिस्तान, बलूचिस्तान और पंजाब इस प्रकार के निवास स्थल हैं। प्राचीनतम मिस्रीय मेष [1]. आविस लांगाइप्स (Ovis longipes) इसी कुटुम्ब से संबंद्ध बताया जाता है। पुरानी दुनिया के भेड़ों का तृतीय प्रकार आर्गल (Argal) अरियल भेड़ों के निवास स्थल के पूर्वीय भाग में रहता है। पशुओं के वर्तमान वितरण के आधार पर यदि कोई तर्क प्रस्तुत करना चाहे तो यह स्पष्ट हो जायगा कि अफ्रीका और यूरोप में कम से कम भेड़ों का उपस्थापन एशिया से हुआ था। फिर भी यह संभव है कि वृष्टि समय में दक्षिणी यूरोप का जंगली पहाड़ी भेड़ (Mauflon) या अरीयल भी उत्तरी अफ्रीका में रहता था। यद्यपि उत्तरी अफ्रीका के नवतमयुगीन (Pleistocene) प्राणि वर्ग में एशियाई अथवा यूरोपीय वर्ग स्पष्टतः दुष्प्राप्य हैं, तथापि वहां इनमें से कुछ प्रकारों के उपस्थापन के साक्ष्य के रूप में उँटों के शिला-चित्रों की ओर निर्देश करना संभव है। "भेड़ या बकरे" की हड्डियों के रूप में अस्पष्ट रूप से अभिज्ञात अस्थियां उत्तरी अफ्रीका[2] के उत्तर पूर्व पाषाण अथवा मध्य पाषाण कालीन स्थलों में वस्तुतः दुर्लभ नहीं है। स्पष्टतः आविस लोंगाइपस वर्ग से संबद्ध निष्कीटित भेड़ों का चित्र प्रस्तुत करने वाले शैल लेख यहां विद्यमान हैं।

अनेक गो-वंशों के अस्तित्व का समीचीन साक्ष्य उपलब्ध है। उत्तरी अफ्रीका में आदिम जाति के विशालकाय पशु के साथ-साथ छोटे वृष के अस्तित्व की ओर प्रायः विशेष ध्यान देना उचित है।[3]

अफ्रेशिया में अन्नोत्पादक अर्थ-व्यवस्था के उदय की शर्तों की पूर्ति इस प्रकार हुई कतिपय मध्य पाषाणकालीन संस्कृतियों में इसके उदय के संकेत मिलते हैं। चक्कियों की तरह बनाये गये पत्थर के चिकने ब्लॉक, जो कुछ पीसने के लिए

१. हिल्जीमर (Hilzheimer), एंटीक्वीटी, x, १९३६, १९५, आगे; कीमर (keimer), एनाल्स दु सर्विस, (Annales du Service), xxxviii, २९७।

२. L' Anthr, xlii, ४७६।

३. L' Anthr, xlii, ४७६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निश्चित रूप में प्रयुक्त होते थे, उत्तरी अफ्रीका[1] में केप्सियन (Capsian) या ओरेनीय (Oranian) स्थलों पर पाए गए हैं।

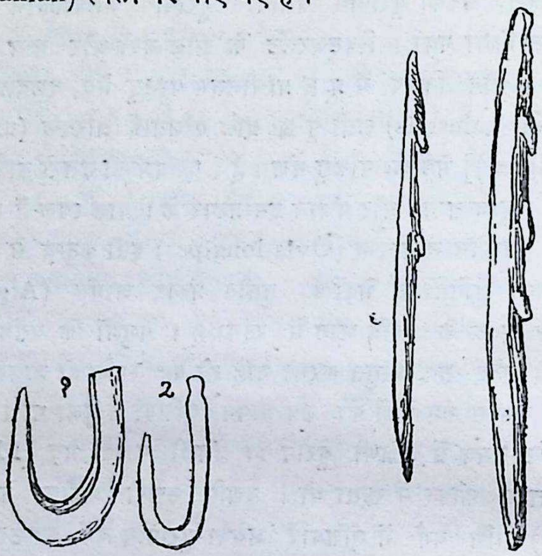

चित्र ७. नतूफियन मछली पकड़ने के कांटे, $\frac{2}{3}$, और रस्साबंधी बर्छी, $\frac{3}{4}$

इसी प्रकार अनेक शैल लेख आखेट्य पशुओं के साथ ही साथ मेषों और चौपायों के चित्र यहाँ प्रस्तुत करते हैं। ये प्राणी निश्चित रूप से पालतू हैं। तथापि, इस प्रकार के पर्यवेक्षण स्वयं इस क्रांति में प्रलेख के रूप में नहीं लिए जा सकते। ये स्पष्टतः मिश्रित अर्थ व्यवस्था को प्रकट करते हैं जो आवश्यक रूप में संक्रमण-कालीन नहीं है। जबतक मलकूटों और चित्रों की तिथि अधिक विशुद्ध रूप में निर्धारित की जाय, तबतक यह प्रतर्क्य है कि इन मलकूटों और चित्रों में उपस्थापित कृषि के उपकरणों और पालतू प्राणियों का कृषि एवं पशु अभिजनन के उत्पत्ति-स्थलों से, प्रायः कुछ विलंब से यहाँ पर प्रचार किया गया। जहाँ तक अफ्रीका का संबंध है, नील घाटी में प्रथम कृषक ग्रामों की अपेक्षा प्रस्तुत चित्रों और मलकूटों का निरपेक्ष रूप से प्राचीनतर होना बहुत असंभव प्रतीत होता है। प्रत्युत, वे तत्वतः उत्तरकालीन हो सकते हैं।

---

१. L' Anthr; xlii, ४२६; तु० वोफ्रे (Vaufrey), L' Art rupestre nord-africain।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आज केवल एक संस्कृति ज्ञात है जो प्रतीयमान औचित्य के साथ कालिक

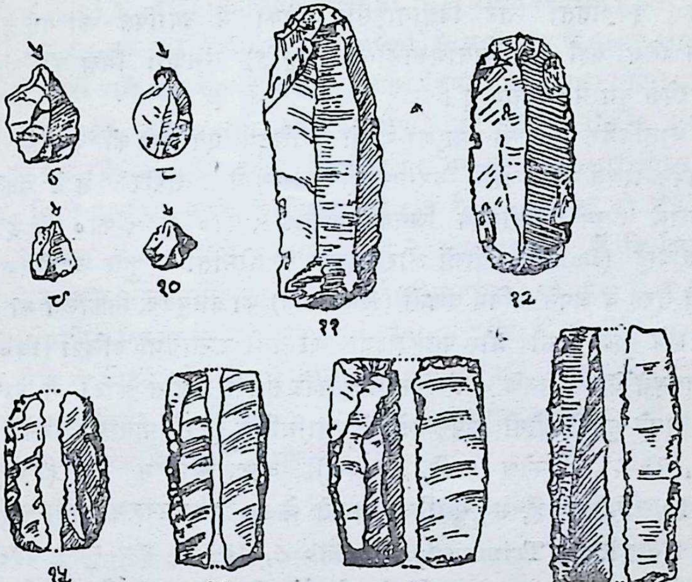

चित्र ८. नातूफियन सूक्ष्म पाषाण, १/३, जे० आर० ए० आइ० के अनुसार, ७-१० ताँबे पर नक्काशी करने के सूक्ष्म औजार, २२-२६ अर्धचंद्राकार उपकरण, २७-३० त्रिकोणात्मक उपकरण, सं० ३० हल्वानी सुधार प्रदर्शित करता है, ३१ व्यायाम दंड (Trapeze)।

प्राथमिकता एवं संक्रांतिकालीन स्थान का दावा कर सकती है। पैलेस्तीन के संस्कृति-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनुक्रम में स्थानीय उत्तरपाषाण कालीन (संस्कृति) की अपेक्षा नातूफियन[1] (संस्कृति) की तैथिक पूर्ववर्तिता स्तर विज्ञानानुसार जेरिको में स्थापित की गई हैं। और, जैसा हम देखेगें, वहाँ उत्तरपाषाणकालीन (संस्कृति) संभवतः मिस्र की संस्कृति के साथ निरपेक्ष युग में तुलनीय है।

नातूफियन शिकारी मछुआ थे जो आखेट्य एवं जल की आपूर्ति के लिए सुविधापूर्वक स्थित कंदराओं में बराबर जाया करते थे। शरीर[2] से वे संकीर्ण-दीर्घ मस्तक वाले लघुकाय लोक थे जिनकी ऊँचाई ५ फी० से ५ फी० ३ ईंच थी। आधुनिक बांटू (Bantu) कबीलों और सहारा के सीमांतों के कुछ प्रारंभिक निवासियों की तरह वे अपने अग्रिम दशनों (Incisors) को बलपूर्वक निकालने का अभ्यास करते थे। वे कांटे, रस्सी और पतली हड्डी की बनी रस्साबंधी बर्छियों (चि० ७, से मछली पकड़ते थे। उनके अस्थि-निर्मित कांटे संभवतः ज्ञात कांटों में प्राचीनतम हैं।[3] वे अपने मृगयोपयोगी उपकरणों को ज्यामितिक सूक्ष्म पाषाणों, जिनमें अर्धचंद्र (चि० ८, २२-६), त्रिकोण (वही, २७-३०), और व्यायाम दंड (Trapezes) (वही, ३१) संमिलित हैं, से सुसज्जित करते थे। ये उपकरण कभी-कभी दोनों भागों से स्माकृतित (Trimmed) हैं (चि० ८, ३०)। यह सूक्ष्म पाषाणों के निर्माण की बड़ी असामान्य पद्धति है जो पैलेस्तीन के बाहर मिस्र में हेल्वान को छोड़कर शायद ही ज्ञात है, परंतु, तांबे पर नकाशी करने के सूक्ष्म उपकरण (Micro-burins) (चि० ८, ७-१०) समस्त सूक्ष्म पाषाण उद्योगों के सामान्य सहचारी हैं। पर, परवर्ती नातूफियन निक्षेपों में त्रिकोणात्मक वाण-सिरे दृष्टिगोचर होते है जो मूठ लगाने के लिये मूल के निकट खाँचदार[4] हैं (चि० ११०)। कुछ छोटे फलक हरिण की रोढ़ की बनी मूंठों में क्रमिकता से लगा दिए जाते हैं। ये मूंठ एक छोर पर नलिका युक्त (Grooved) रहती थीं और कभी-कभी इनके एक किनारे पर हरिण के सर के आकार की नकाशी बनी रहती थी। फलकों के विश्लेषण से यह सूचित होता है कि ये चाकू एक प्रकार के तृण को काटने के लिए प्रयुक्त होते थे।

---

१. गेरोड और बाटे (Garrod and Bate) 'दी स्टोन एज ऑफ माउंट कारमेल' (The Stone Age of mount Carmel), 1, १९३७, ९—१६, ३०—४०, ११९।

२. कीथ, न्यू डिस्कवरीज रिलेटिंग टु दी एंटींक्वीटी ऑफ मैन, १९३१, २०९-२१३; तु० आ० इ० पै० ह्यू० मे० ९, १९३२।

३. जे० आर० ए० आई०, Lxii, १९३२, २७२, एंट० जे०, xxviii, १९४८, ५२-४।

४. न्यूवीले (Neuvil'e), आर० बी०, xliii, १९३४, २५३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और, मूंठ पर चरते हुए प्राणी के प्रदर्शन का उद्देश्य संवेदनात्मक[1] जादू (Sympathetic magic) के द्वारा उनकी कार्यक्षमता का अभिवर्धन रहा होगा। कार्मेल पर्वत पर मघारत-अल-वाद (Mugharetel-Wad) में अपने घर के सामने नातूफियनों ने उठी हुई कोरों वाले वृत्ताकार कुंडों का निर्माण किया था जिनका उपयोग संभवत: तृणबीजों को कूटने के साथ-साथ "कर्मकाण्डीय" उद्देश्यों की पूर्ति के लिये हुआ होगा। बसाल्ट (Basalt) के मूसल, जिनमें से एक मृग-खुर के आकार में उत्कीर्ण है, निस्संदेह किसी वस्तु को कूटने के लिये प्रयुक्त होते थे। इस वस्तु को रोढ़ के चाकू से काटे गये तृण बीज ही क्यों न माना जाय? यह ज्ञात नहीं है कि किस प्रकार का तृण काटा और कूटा जाता था। पर, पैलेस्तीन जंगली जौ और एमर (Emmer) का संभावित निवास स्थल जान पड़ता है। नातूफियन इन वार्षिक तृणों को समुचित रीति से काटते रहे होंगे। अत: कोई कारण नहीं कि उन्होंने उनका उत्पादन प्रारंभ नहीं किया हो। वे वस्तुत: अनलाश्म के नुकीले वजनदार ओजार बनाते थे जो खोदने के काम में प्रयुक्त हो सकते थे।

वे पुष्पमाल्यों, हारों, कंगनों एवं छिद्रित शंखादि के कड़े छिलकों की लड़ियों तथा हरिण के दांतों के आकार में उत्कीर्ण लोलकों की बनी मेखलाओं से अपने को अलंकृत करते थे। परोक्त में से कतिपय अंतिम उत्तर पाषाण कालीन यूरोप[2] में जनप्रिय तथाकथित पंखदार मनकों का पूर्वाभास देते हैं। मृतक शिविर स्थल के निकट दफना दिए जाते थे। कुछ, जो खास कंदरा ही में गाड़ दिए गए थे, पीठ के बल निकुंचित अवस्था में लेटे थे। दश कंकाल एक दल के रूप में तीन स्तरों में साथ-साथ लिटाए गए थे। कुछ शव गुफा के सामने चबूतरे पर दफनाए गए थे। ये प्रथमत: पूर्णतया अकुंचित मुद्रा में और फिर बाद में केवल निकुंचित मुद्रा में थे। पर, इस बार भी कभी-कभीपाँच या सात की समष्टि में थे।

जैसा कि पहले अभिव्यक्त किया गया है, इस बात के कुछ स्तर वैज्ञानिक साक्ष्य हैं कि पैलेस्तीन में नियमित कृषकों के प्रथम ग्रामों की अपेक्षा नातूफियन बस्तियां वस्तुत: अधिक प्राचीन हैं। पर, उनके निरपेक्ष युग का निर्णय मिस्र और

---

१. कारवें (Curwen), प्लाउ एंड पाश्चर (Plough and Pasture), लंदन, १९४६, ८९।

२. गेरोडे एंड बाटे (Garrod and Bate), Op. cit, फलक, xiv, २. xv, १; तु० चाइल्ड (Childe), डॉन, परिशिष्ट, एस० वी०, पंखदार मनके।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटेमिया की संस्कृतियों के साथ उत्तरकालीन संस्कृतियों के संबंध पर निर्भर करता है। क्योंकि, नील और तिग्री फराती घाटियों में ही साहित्यिक अभिलेख एवं ऐतिहासिक तथिकी बहुत दूर पीछे जाती है। और, उनमें प्रागैतिहासिक संस्कृतियों का क्रम पूर्णतम है। पुरातात्विक दृष्टिकोण से इस प्रकार प्रतिलिखित कृषक-जीवन का अभिलेख वृहत्तम नहीं माना जा सकता है। तथापि, मिस्र और मेसोपोटेमिया के संस्कृति-क्रम आवश्यक रूप से मानदंड प्रदान करते हैं जिनके द्वारा ऐतिहासिक दृष्टिकोण से अधिक अविकसित प्रदेशों में उपलब्ध संस्कृति-क्रमों को अवश्य ही मापा जा सकता है। अतः नातूफियनों अथवा केप्सियनों या अपेक्षाकृत अधिक समय तक निरक्षर रहने वाले प्रदेशों के निवासियों के परवर्ती ऐश्वर्य पर विचार करने के पूर्व इनका वर्णन करना एकमात्र तर्कसंगत है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तृतीय अध्याय

मिस्र के प्राचीनतम कृषक

आजकल मिस्र विशेषतया उर्वर एवं निवास योग्य देश के रूप में प्रतीत होता है, जो कि मरुस्थलीय कटिबंध के आर-पार विस्तृत है और जो सूडान की हरी-भरी भूमि को भूमध्यसागरीय वृष्टियों की समुद्र तटीय मेखला से पृथक करता है। इसकी यह विशिष्टता केवल नील नदी के कारण है जो स्वयं केवल एक चल-मार्ग ही नहीं है, प्रत्युत अपने वार्षिक जल-प्लावन के द्वारा घाटी के दोनों तटों के भू-खंड को उर्वर बनाती है। तथापि, मिस्र प्रकृतिक भौगोलिक इकाई नहीं है। मुहाना अथवा निचला मिस्र खुला और कहीं-कहीं दल-दल मैदान है जो लीबिया और फिलिस्तीन के तटवर्ती भू-भागों से संबद्ध है तथा दोनों दिशाओं और समुद्र मार्ग से प्रवेश योग्य है। इसके विपरीत उपरला मिस्र एक संकीर्ण दर्रा है जो दोनों ओर से चट्टानी दीवारों से घिरा है, जिनके ऊपर अभी लीबिया और अरब के रेगिस्तानों में शुष्क उच्च समतल हैं। फिर भी, ये चट्टानी दीवारें अनेक स्थानों में दोनों तटों पर पुरानी धाराओं के संकुचित मार्ग द्वारा कटी हुई हैं। ये धाराएं वृष्टि-समय में पूर्वीय और पश्चिमीय पठारों को सींचती थीं। ये जल-मार्ग लाल समुद्री तटों अथवा नील के प्रवाह-पथ के समानांतरवर्ती खातों में स्थित नखलिस्तानों की श्रृंखला से आनेवाले सार्थों के लिये घाटी में प्रवेश-द्वार का काम करते हैं।

संप्रति काहिरा से दक्षिण का प्रदेश वृष्टिविहीन हैं और यदि नील नदी की बाढ़ के द्वारा इसकी वर्षिक सिंचाई नहीं होती तो यह पूर्णतः मरुस्थल रहता। परंतु वृष्टि समय में स्थिति अवश्य ही अत्यधिक भिन्न रही होगी[1]। ऊँचे रेगिस्तान से

१. प्राग्वंशीय मिस्र की जलवायु, वनस्पति एवं पशुवर्ग पर देखिए—न्यूबेरी 'ईजिप्ट एज ए फील्ड फॉर ऐंथ्रॉपोलॉजिकल रिसर्च (Egypt as a Field For Anthropological Research)' ब्रिटिश एसोशिएशन (British Association) १९२४ के एच (H) संविभाग के अध्यक्षीय भाषण।

डा. डिल्ली रमण रेग्मी
कल्याणी रेग्मी स्मारक
पुस्तकालय
3900

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुजरने वाली वादी की घाटिया जंगली घासों से निश्चिय रूप में ढकी रही होगी। इनमें संभवतः जंगली अनाज भी रहे होंगे। और, यह वनस्पति समुदाय जंगली गदहों, बाबर्री भेड़ों, यूरोपीय सांड़ों, हरिणों, छोटे मृगों, जिराफों और इनका शिकार करने वाले सिहों और चीतों के समूह के पोषण के लिए पर्याप्त रहा होगा। ऐतिहासिक काल में भी मध्य राज्य के मकबरों की भित्तियों पर इस प्रकार के जानवरों के आखेट अभिचित्रित हैं। खास घाटी में नदी के दोनों ओर विस्तृत दल-दल थे। और यहाँ के जंगल में हाथी, अफ्रीकी बारहसिघें और दो प्रकार के जंगली सूअर विचरते थे। इनके अतिरिक्त दरियाई घोड़े, घड़ियाल और वैनले भालू भी थे जो हाल तक भी बचे हुए थे। अति प्राचीनकालीन मिस्रवासियों के समय के वातावरण से तुलनीय वनस्पत्य एवं पशुवर्गीय वातावरण की जानकारी के लिए हमें मानसूनी क्षेत्र में बहुत दूर तक धारा के उद्‌गम की ओर यात्रा करनी होगी। श्वेत नील के तट पर यात्रियों को स्वतः उगने वाले पौधे मिलेंगे जो ऐतिहासिक मिस्र में केवल उद्यानों में ही बचे थे।

उत्तर पूर्व पाषाण काल से ही उच्च समतल के शिकारी घाटी में आते रहे जो इसके दोनों तटों के ऊँचे चबूतरों पर अपने उपकरण छोड़ गये है। अभी हाल में खास घाटी में ठीक गेवेल सिलशिला के ऊपर सेबिल में[1] और फायूम की ओर बहने वाले सोतों के तटों पर लेवालूसी परंपरा के आग्नेय प्रस्तर उद्योग (Flint Industries) अभिज्ञात हुए हैं। इन उद्योगों का झुकाव सूक्ष्म पाषाण के आकार की दिशा में है और तिथि में ये प्रारंभिक पूर्व पाषाण काल से संबद्ध हैं। सिर्फ यह आशा की जाती है कि जैसे-जैसे आस-पास के मरूस्थलों में अनावृष्टि पूर्व की अपेक्षा बारंबार तथा तीव्रतर होती गई वैसे ही सुसिंचित घाटी में यायावरों (घुमक्कड़ जातियों) का अन्तः प्रवेश तीव्र गति से हुआ होगा। इस घटना को उन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा होगा जिन्होंने परोपजीवी जीवन से उत्पादक जीवन में परिवर्तन का प्रोत्साहन दिया होगा। श्री पेरी[2] (Perry) ने जोरदार शब्दों में मिस्र में कृषि के उद्‌भव स्थल होने के दावे को रखा है।

घाटी के तटों पर गेहूँ और जौ के पूर्वज - अपेक्षाकृत कुछ अच्छी वनस्पतियों के अस्तित्व को मानते हुए भी उनके सुव्यवस्थित कृषिकर्म की कल्पना का संकेत कहीं

१. विग्नार्ड (Vignard) बुल इंस्ति० फ्राँ अ केरे (Bull Insti. Franc. a caire), xxii, हूजियन (Huzayyin), ए० जे० ऐ० (A. J. A.), li, १९४७, १९१.

२. दी ग्रोथ ऑफ सिविलिजेशन (The Growth of Civilization), ३०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अन्यत्र नहीं बल्कि नील नदी के तटों पर ही मिलेगा। वार्षिक बाढ़ और उस बाढ़ के द्वारा निक्षिप्त उपजाऊ मिट्टी के कारण मानवीय हस्तक्षेप के बिना ही पृथ्वी पर गिरे हुए अन्नकण अंकुरित हुए होंगे। श्री पेरो (Perry) लिखते हैं "नील घाटी अपने पूर्ण सिंचन चक्र की सहायता से मिस्रवासियों के लिए गेहूँ और जौ उपजाती रही होगी।"....आवश्यकता सिर्फ इस बात की रही होगी कि कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति अधिक विस्तृत क्षेत्र में पानी ले जाने के लिए सोते बनाने के उद्देश्य से सादे उपकरणों के विषय में सोचें। आधुनिक पर्यवेक्षकों ने सूडान की नीलिय जनजातियों के बीच इस प्रकार की जीवन पद्धति का वर्णन किया है जो सेवलीय शिकारियों खाद्य संचयी संस्कृति और मिस्र के प्राचीनतम स्थिर निवासियों की सुव्यवस्थित कृषि के मध्य की अवस्था का अच्छी तरह प्रतिनिधित्व कर सकती है। गत शतक में हदेंदो जाति के लोग पूर्वी रेगिस्तान में खानाबदोश गड़ेरियों के रूप में रहते थे। परंतु, इन लोगों के न्यूनाधिक रूप में स्थायी गांव थे जो जल प्लावित भूमियों की पहुँच के भीतर रहते थे, जहाँ वे लोग ग्रीष्म के उत्तरार्ध में चले जाते थे। तब वे तुरत आई हुई बाढ़ से गीली मिट्टी पर मक्के के बीज बोते थे और फसल की प्रतीक्षा में लग जाते थे। इस प्रकार के लोग, जो कि अत्यधिक शुष्क मेखला के दक्षिण में स्थायी रूप से बस गए थे, प्रायः हम सबों के लिए स्पष्टतः ऐसी जीवन-पद्धति छोड़ गए हैं जिसका संबंध नील घाटी में पुरातत्व के द्वारा हमारे समक्ष निस्संदिग्ध रूप में प्रकाश में लाये गए तासियनों के साक्षात पूर्वजों के साथ ठहराया जा सकता है।

दलदल घाटी में निकले हुए बदारी के निकट के मरुस्थलीय उभाड़ों पर के पाड़वों से तासियन[१] निश्चित रूप में एमर (Emmer) और जो, जिनके दाने उनकी बस्तियों में पाये गए हैं, की खेती करते थे। उनका आटा पीसने के लिए काठीदार चक्कियों और ५० से० मी० लंबे तथा २७ से० मी० लंबे पत्थर के टुकड़ों का प्रयोग करते थे। उन पर २५ से० मी० लंबाई ११·५ से० मी० चौड़ाई और ७.५ से० मी० मोटाई वाले पत्थर की चक्कियों द्वारा अनाज आगे और पीछे की ओर रगड़े जाते थे। यह अब भी अनिश्चित है कि इनकी फसलों की सिंचाई नील के वार्षिक जल-प्लावन से होती थी या कभी पूरबी मरुस्थल से बहनेवाली वातीय धाराओं से या वर्षा से भी होती थी। यह भी स्पष्ट नहीं हैं कि किसी हद तक अन्नोत्पादन पशुपालन से संबद्ध था। फिर भी, भेड़ों और बकरों की हड्डियों के

२. ब्रंटन (Brunton), मोस्तेगेद्दा (Mostagedda), १९३७, २६—३३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अस्तित्व की सूचना मिली है। किसी भी स्थिति में वस्तुत: स्थिर अर्थ-व्यवस्था तब तक नहीं उपलब्ध हुई थी। क्योंकि समाधियां छोटे-छोटे वर्गों में छिट फुट रूप में बिखरी हुई हैं। शिकार और मछली पकड़ने का काम अब भी निश्चित रूप से मुख्य भोजन के साधन रहे होंगे। वाण के सिरे वस्तुत: आश्चर्यजनक रूप में दुर्लभ हैं। पर, मछलियां खप्पर या सींग की बनी छोटी बंसियों से पकड़ी जाती थीं। (चि० ९) फिर भी, इनकी यह प्रणाली नतूफियनों की अपेक्षा अधिक विकसित थी।

१ : १

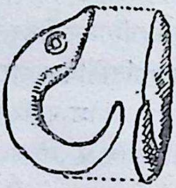

चित्र ९. मछली फँसाने का तासी कांटा, $\frac{१}{१}$, ब्रंटन के अनुसार।

वस्तुत: नील घाटी अब भी दलदल से भरी पड़ी थी और इसके दोनों तरफ तथा सहायक नदियों के तट पर बड़े आकार के वृक्ष उगते थे। इसलिए बढ़ई के काम के लिए लकड़ी मिल जाती थी। इस काम के लिए उत्तम दानेदार पत्थर के टुकड़ों को रगड़कर धार बनाकर या पृथ्वी-तल से संचित अनलाश्म की ग्रंथियों के फलक बनाकर कुल्हाड़ियाँ बनाई जाती थीं। गुल्म की लंबी धुरी के समकोणों पर ठीक कर पुन: उसे तेज करने की पटुतापूर्ण ट्रांचेट (Tranchet) विधि संभवत: पहले से ही प्रयुक्त होती थी। तथापि इसके निश्चित प्रमाण [१] का अभाव है।

खाद्य एवं पेय पदार्थ रखने के लिए तासियन पहले ही बर्तन बनाते थे जो कि साधारणत: बहुत रुखड़े होते थे। पात्र रंग में भूरे और काले हैं, पर बहुधा ये विषम ज्वाला के कारण धब्बेदार और कभी वायुमंडल के जंक पैदा करने वाले प्रभाव के संमुख रहने के कारण बाहर से लाल हैं। पश्चान्निर्दिष्ट पात्र भी भीतर में काले हैं। क्योंकि संभवत: आग फूंकने के समय वे औंधे मुंह रखे जाते थे ताकि भीतरी भाग जंक लगाने की प्रक्रिया से सुरक्षित रहता था। इस तरह ये (पात्र) तकनीकी

१. हूजायीन (Huzayyin), मांड एंड मायर्स (Mond and Myres), सिमेटरीज ऑफ अमंत. (Cemeteries of Armant), १९३७, २०९-२११।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दृष्टि से 'कृष्णमुख'' मृद्भांड कला के, जो बाद में मध्य (Middle) एवं उपरले (upper) मिस्र की विशिष्टता है, प्रारूप हैं।

यद्यपि पात्रों के आकार सादे हैं, तथापि बहुतों के पेंदे चिपटे हैं (चित्र १०)।

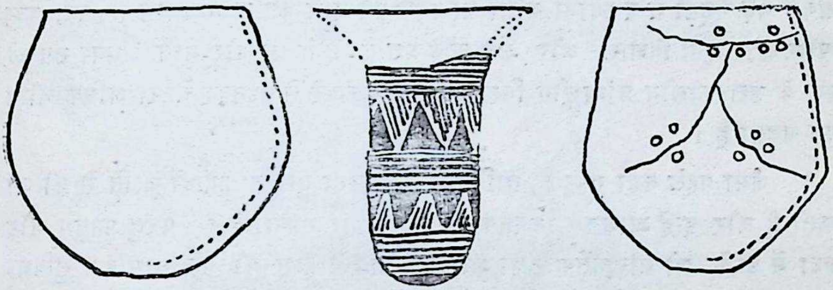

चित्र १०. तासी बर्तनें 1/6, ब्रंटन के अनुसार।

छिछला समकोण चतुर्भुजाकार कठौता और मूठ के रूप में प्रयुक्त तथा कोर से निकले हुए जीभ के आकार के प्रक्षेपण (Projection) से युक्त चिपटा करछुल इसके उल्लेखनीय आकार हैं। इनमें गोल पेंदीदार और मोटे पटहाकार कोर वाले काली मिट्टी के चंचवाकार पात्र सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यह आकार अंततः चर्मपात्र से अनुकृत किया गया होगा। पर, तासियन चषक (चि० १० मध्य) उत्कृत रेखाओं से विभूषित हैं और रूपांकन (Design) को भड़कीला बनाने के लिए सफेद गारे से भर दिए गए हैं। विभिन्न भागों में विन्यस्त सांचों का संकेत बांस के पात्रों (टोकरियों) से मिला होगा। और वस्तुतः समान आकार-प्रकार और सज्जा से युक्त टोकरिया आजकल भी अफ्रीका में बनाई जाती हैं। इस प्रकार के पात्रों का महत्त्व पश्चिमी यूरोप में विद्यमान उसी प्रकार के बर्तनों में दृष्टिगोचर होता है। हमारे समक्ष टोकरी निर्माण कला में इन बर्तनों के संभावित आधार होने के बावजूद हमें इन दोनों में साक्षात संबंध मानने में संकोच होता है। वस्तुतः तिग्री (Tigris) के तटों पर विभिन्न भागों में विभूषित समान प्रकार के आकार उपलब्ध होंगे।

पटसन के कुछ अस्पष्ट चिह्नों के अस्तित्व के बावजूद तासियन वेशभूषा के विवरण अज्ञात हैं। पर, मुख या नेत्र संभवतः पहले से ही रंगे जाते थे, क्योंकि परवर्ती युगों की तरह समाधियों में रंग-पट्ट उपलब्ध हुए हैं। फिर भी, तासियन रंग-पट्ट सेतखड़ी के बने हैं जो परवर्ती आकारों के विपरीत मोटे और समकोण चतुर्भुजाकार हैं। आभूषण निश्चित रूप से धारण किए जाते थे। लाल सागर से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उपलब्ध छिद्रित कर्पर (खोली) हड्डी या हाथी दाँत के वर्तुलाकार मनके और हाथी दांत की एक चूड़ी मिली है।

तासियनों को आकुंचित मुद्रा में खाल ओढ़ाकर और घास-फूस के ताबूतों में रखकर बड़े गड्ढों में दफनाया जाता था। ये सब दीर्घ कपाल मानव थे। पर, कुछ कपाल अपेक्षाकृत विशाल और लंबे चौड़े प्रतीत होते हैं और मध्य अथवा उपरले मिस्र के उत्तरकालीन प्राग्वंशीय मिस्र वासियों के चेहरे से इनका चेहरा अधिक चौड़ा जान पड़ता है।

जैसा पहले कहा गया है, तासियनों की तुलना युक्तितः हदेन्दों जाति से की जा सकती है और इन्हें आद्यतम सिंचनकारी माना जा सकता है। परंतु फायूम और डेल्टा में इनके जो सांस्कृतिक तथा शारीरिक संबंधी हैं उनको यह नाम कम सुविधा के साथ दिया जा सकता है।

फायूम की बस्तियां[1] वर्तमान झील की सतह के ऊपर १८० फीट की ऊँचाई तक उस काल में फायूम खात को भरने वाली एक विस्तृत झील के किनारे पर बसी हुई हैं। यहाँ के निवासी आजकल मिस्र में उपजाए जाने वाले गेहूँ और जौ से अभिन्न प्रकार के एमर (Emmer) गेहूँ और जौ की खेती निःसंदिग्ध रूप से करते थे। पटसन भी उपजाया जाता था। सस्य लकड़ी के पीछे डंडे में लगाए हुए अनलाश्म के धारदार शल्कों के बने हंसुओं से काटे जाते थे (चि० ११ अ)। और घास-पात को चटाई से परत किए हुए जमीन में खुदे गड्ढों में एकत्र किए जाते थे, और काठीदार चक्कियों में पीसे जाते थे। सुअर, गाय, बैल और भेड़ें या बकरे पाले जाते थे।

शिकार और मछली फंसाने के काम सहज रूप से किए जाते थे। शिकारी मुख्यतः धनुष और बाणों पर निर्भर थे। बाणों के ऊपरी भाग में पीले पेंदीदार आग्नेय पत्थर के सिरे लगे रहते थे जिनके वक्र पार्श्व कभी-कभी इन्हें पादरियों की टेढ़ी टोपियों का आकार प्रदान करते थे। केप्सियन और नतूफियन प्रकार की वर्तुलकार हड्डियों की बनी नोंकें, जो दोनों छोरों पर तेज बनाई रहती थीं, बाणों और बर्छियों के सिरों पर लगी रहती थीं। गदाओं के सिरों पर मोटे छिद्रित अस्थिचक्र लगे रहते थे अथवा ऐसे पाषाण-खंड लगे रहते थे जिनमें उनको मुठिया से बांधने वाली

१. केटन-थांपसन (Caton-Thompson), दी डेजर्ट फायूम (The Desert Fayum), लंदन, १९३४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चर्मरज्जु को निविष्ट करने के लिए नाली बनी रहती थी। मछलियां रस्सा-बंधी बंर्छी से फंसाई जाती थीं। हड्डी के रस्सा-बंधी बर्छों के सिरों पर वर्तुलाकार धड़ों से उभरते हुए कांटे लगे रहते थे जो स्पष्टतः पैलेस्तीन की नतूफियन बर्छियों की तरह हैं। तासा की तरह रगड़कर तेज बनाई गई धारों वाले फरसों के सिरे पाषाण-खंडो और अनलाश्म से भी बनाए जाते थे। उत्तरोक्त अनलाश्म उपादान अनेक

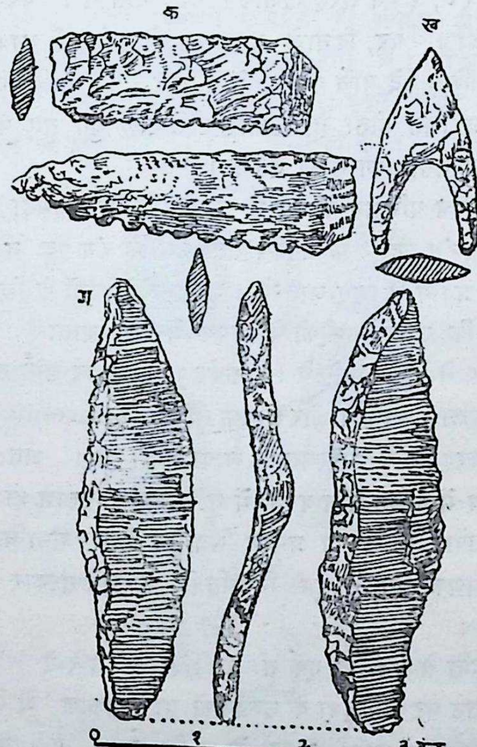

चित्र ११. हंसुओं के दांत क, वाण के सिरे ख, किनारे पर चोट देकर बना शल्क ग, एंटीक्यूटी, १ में केटन थाम्पसन के अनुसार शल्क स मध्य में चोट देकर अलग कर लिया गया है जैसा कि बीच दृश्य में कुब्बा से प्रदर्शित होता है।

अन्य उपकरणों के निर्माण के लिए कुशल रीति से बनाया जाता था। इन उपकरणों में ओपदार फसल संमिलित हैं। तथाकथित पार्श्वघातित (किनारे पर चोट देकर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बनाया हुआ) फलक विलक्षण हैं। एक छोर से दूसरे छोर तक समकोणों पर चोट देकर इसको आंतरिक (Core) से अलग कर दिया जाता था और फिर, जैसा कि चित्र ११ ग में दिखाया गया है, दोनों किनारों पर इसमें सुधार किया जाता था। इस प्रकार के उपकरणों का युग निश्चित नहीं है।

तासा की तरह मृद्भांड बनाए जाते थे। इनके आकार लगभग समान हैं। विशेषतः करीब चित्र १०, १ की तरह द्विशांकव पात्र होते थे। परंतु, चषक (Beaker) उपलब्ध नहीं था। पर, किनारों पर ऊपर को उठी हुई आयताकार नालियां और विशेष प्रकार के भिन्न पेंदे वाले कटोरे हमें मिलते हैं। थालियों की विशिष्टता फलक ३ के द्वारा प्रदर्शित होती है। और ढीले-ढाले बुने हुए पटुआ के वस्त्रों के अवशेष वस्त्र-निर्माण व्यवसाय का साक्ष्य देते हैं।

अनेक खुरचन यंत्र परिधान के रूप में उपयोग के लिए चमड़ा बनाने का संकेत करते हैं। तासियन (रंग पट्टों) के अनुरूप सेतखली के रंग पट्ट नील की तरह यहां भी निस्संदिग्ध रूप से प्रयोग में लाए जाते थे। शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से बने हुए चक्राकार मनके, जैसा कि उत्तरी अफ्रीको केप्सियन में देखा जाता है, और निच्छिद्रित कर्पर आभूषणों के रूप ने पहने जाते थे। कर्पर भूमध्यसागर तथा लालसागर अथवा भारतीय महासागर से लाए जाते थे और दहरूफ सैकिज (amazonite) मध्य सहारा के तिबस्ती या किसी तरह पूर्वीय मरुस्थल से लाया जाता था। अतः बाहरी दुनियां के साथ द्वितीय अध्याय में वर्णित वातावरण में सुविधापूर्वक उत्पन्न हो सकने वाले एक प्रकार के आदिम व्यापार संबंध का प्रमाण विद्यमान है। समाधियां नहीं पाई गई है। अतः उत्तरपाषाणकालीन फायूम निवासियों के शव संस्कार तथा शारीरिक विशिष्टताएं अज्ञात हैं।

पूर्वगामी संस्कृति से संबंधित एक तीसरी संस्कृति मेरिम्दे [१-४] (Merimde) में मुहाने के पश्चिमी तट पर आस्ट्रिया के उत्खनकों द्वारा प्रकाश में लाई गई है। यह स्थान नील की रोजेट्टा (Rosetta) शाखा के २ कि० मी० पश्चिम में बालुकामय उभाड़ पर बसा हुआ हैं और ६०० × ४०० मी० में व्याप्त है। यहाँ के प्रथम निवासी

१-४. जंकर (Junker) 'Vorlaufige Berichte uber die grabung der Akademie der Wissenschaften in Wien auf der neoli-thischen siedelung von Merimde-Benisalame in Anzeiger d. Akad. d. Wiss. Wien, phil-Kist. KL.

१. १९२९, १५६—२४८ २. १९३०, २१—८१।
३. १९३२, ३६—८८ ४. १९४०, ४—१६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमजोर आवास बनाते थे जो जमा होने वाले बालू के भीतर बहुधा दब जाते थे। इनके केवल अग्निकुंड और कूड़े-कर्कटों के गढे बचे हुए हैं। कालक्रम से बस्ती में विस्तार हुआ और प्रावस्था [1] में अधिक मजबूत आवास बनाए गए जो ५ से ६ मी० आर-पार और अंडाकार अथवा घोड़े की नाल के आकार के होते थे तथा खंभों से घिरे रहते थे जो संभवतः जैसा कि आधुनिक मिस्र के छोटे गांवों में देखा जाता है, नरकटों की चटाई को संभालते थे। अन्ततः तृतीय प्रावस्था में इस प्रकार की योजनानुसार रचनाऐं १.५ मी० मोटी गीली मिट्टी की राशि की भीत से घेर दी जाती थी जो वलुई आंधियों से पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह रक्षा करती थी। कुटीर कभी भी आस-पास नहीं होते थे। संभवतः प्रत्येक कुटीर या कुटीरों का समूह अपने आंगन में रहते थे। पर, इनके समूह पंक्तिबद्ध रहते थे जो बीथियों के किनारे विन्यस्त होने का दृश्य उपस्थित करते थे।

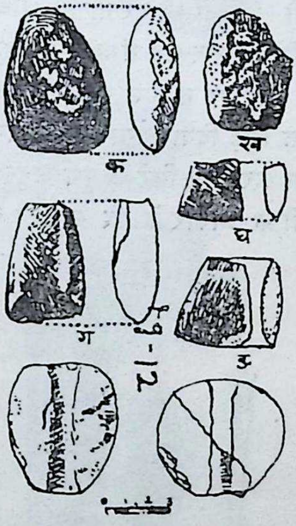

चित्र १२. मेरिम्दे से उपलब्ध कुठाराग्र और गदाग्र जुंकर के आधार पर

बहुत प्रारंभ से ही जौ और एमर (Emmer) की खेती होती थी जो फायूम प्रकार के हसिए से काटे जाते थे। अभी भी अनाज आपस में मिले हुए अनेक गढों में जमा किया जाता था। वह द्वितीय प्रावस्था में मिट्टी से पुती हुई टोकरियों में बंद रहता था और तृतीय प्रावस्था में मिट्टी के बड़े भांडों या पियोई में बंद रहता था[1]।

१. वही, १९४०, ४, १६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो पशु फायूम में पाले जाते वे ही यहाँ भी रखे जाते थे। दरियाई घोड़े (Hippopotami) अब भी डेल्टा के पंक में विलोड़न करते थे और स्पष्टतः फायूमी लोगों के समान मेरिम्दे निवासियों (Merimdians) के द्वारा खा लिए गए। शिकारी अपने वाणों के सिरों पर खोखले आधार वाली अनलाश्म की नोंके लगाते थे। फिर भी इनके पार्श्व फायूम में पाये जाने वाले वाणों की नोंकों के पार्श्व की अपेक्षा अधिक सीधे होते थे। गदाओं के सिरे नाशपाती के आकार के (चि० १२), जैसे कि एशिया में अथवा गोलाभ[1] होते थे। दोनों किनारों पर सुधारे गए और कभी-कभी ऊपरी भाग में पालिश किए हुए अनलाश्म के फलक संभवतः चाकुओं या कटारों का काम करते थे अथवा कभी गड़ासों[2] के रूप में उपयोग करने के लिए डंडे के समकोणों पर भी चढ़ाए जाते थे। गोल छिक्का का प्रस्तर ढेलवांस के अस्तित्व का साक्ष्य देता है। बारहसिंहे के सींग से बनी बंसियों, जो स्पष्टतः चित्र ९ की तासियन जैसी बनी होती थीं, के द्वारा अथवा फायूमी बर्छियों की तुलना में अधिक चौरस बर्छियों से फंसाई जाती थीं। नलिकायुक्त छोटे प्रस्तर-खंड संभवतः बोडक का काम करते थे और अनलाश्म के गुल्म जो कि एक सिरे पर नोकीले फलक के रूप में निर्मित था, और जिसके कुंदे पर का छिलका अविकल छोड़ दिया जाता था, बानक-सूत्र का काम करता होगा। परशु के सिरे फायूम से प्राप्त फरसों के सिरे के पूर्ण अनुरूप हैं। अस्थि निर्मित सूईयां, लंबे, मोटे, सूजे और रुखानी के आकार के रंदे कतिपय नतूफियन आकारों के अभिनव निर्माण हैं (चित्र १३)।

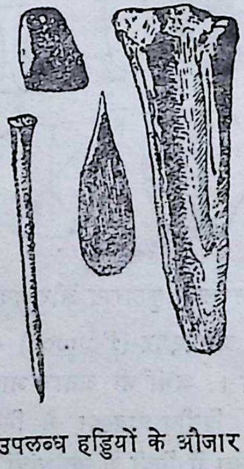

चित्र १३. मेरिम्दे से उपलब्ध हड्डियों के औजार और परशु-तावीज, $\frac{2}{3}$।

१. वही, १९२९, १५६—२४८। २. वही, १९३०, २१—८१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेरिम्दे भांडों में घास-पात मिले रहते थे, परंतु बहुधा लकड़ी की पतली पट्टी जिसका छिलका उतारा जा सके और जो चमकाई जा सके, ऐसी लकड़ी की पट्टी से आच्छादित रहते थे। सर्वप्रथम लाल रंग पसंद किया जाता था, परंतु तृतीय प्रावस्था तक उत्तमता से बने पात्र काले[1] है। साज-सज्जा सर्वदा दुष्प्राप्य था। प्रथम प्रावस्था में केवल वडुलास्थि का नमूना (उत्तरकालीन अमराती पात्रों पर भी उत्कीर्ण

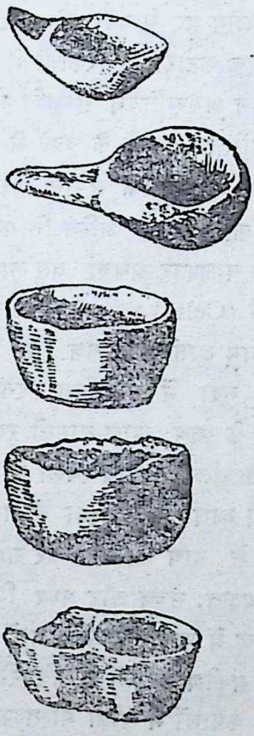

चित्र १४. मेरिम्दे से प्राप्त करछुल, $\frac{२}{७}$, ओर बर्तन, $\frac{१}{७}$, मेघिन के आधार पर।

रचना) क्षैतिज पट्टी पर उत्कीर्ण किया जाता था जो हाल (Rim) के नीचे बिना पालिश के छोड़ दिया जाता था। कुछ आकार तासी आकृतियों (नमूनों) के समान हैं जबकि रुखड़े पेंदीदार कटोरे फायूम के समान यहां भी उपलब्ध होते है। उपरोक्त

१. वही, १९४०, ४—१६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पात्रों में से कुछ में चौरस समकोण चतुर्भुजाकार नींव (तल, Base) पर आश्रित खुले (Open work) गोड़े हैं। नोकाकार नाद समकोण चतुर्भुजाकार फायूमी नादों का स्थान लेते हैं। तासी करछुलों के समान अनेक करछुलों के संभवतः चौड़ी जीभ की तरह मूठें थीं या पश्चिमी यूरोप में पाए जानेवाले करछुलों की तरह मोटी गोल पड़कने योग्य मूठें थीं (चत्र १४,१-२)। परस्पर संपृक्त विभागों वाले युग्म पात्र कुछ अवखंडों द्वारा प्रदर्शित होते हैं (चत्र १४,५)[१] अनेक पात्रों में परिग्रहण और निलंबन (पकड़ने और लटकाने के लिए) कर्ण लोग हुए थे और संभवतः ये ही (कर्ण) वास्तविक मूठों[२] के रूप में विकसित हुए होंगे। एक कटोरी या रिकावी में हाल[२] के भीतर अंगूठे के लिए जेब थी। इस प्रकार उत्तरकालीन अमरातियन संस्कृति मध्य मिस्र का साक्ष्य देती है।

सूती वस्त्र-उद्योग का अस्तित्व तकली के चक्रों से अभिप्रमाणित होता है। रुखड़े रंग पट्ट अप्रत्यक्ष रूप से तासी रंग-पट्टों के समान प्रसाधन सामग्री तैयार करने का कार्य करते होंगे। हाथी दाँत की चूड़ियाँ, अस्थि निर्मित अंगूठियाँ, वन्य शूकरों के दाँत और अस्थि अथवा कर्पर के चक्राकार अथवा वर्तुलाकार मनके आभूषणों के रूप में पहने जाते थे। सूक्ष्म रुखनियाँ (Celts) अथवा लटकाने के लिए छेदी हुई हड्डी की कुल्हाड़ियां तावीजों के रूप में काम आती थीं (चत्र १३)।

मृतक-गृहों में ही शयन मुद्रा में निकुंचित करने और साधारणतः पूर्वाभिमुख करके दफनाए जाते थे। शवों के साथ खाद्य-सामग्री रखने के लिए पात्र नहीं दिये जाते थे। जंकर का मत है कि प्रचलित समाधि-स्थलों के बदले गृहों के मध्य शवाधान ने इस प्रकार की बलियों को व्यर्थ बना दिया होगा क्योंकि प्रेतात्मा अग्नि-कुंड के इर्द-गिर्द अपने वान्धवों के साथ भोजन कर सकता था। अधिकांश कंकाल-स्त्रियों[३] के थे। वे स्त्रियाँ प्रत्यक्षतः उच्च और मध्य मिस्र की उत्तरकालीन स्त्रियों से अधिक लम्बी थीं और डील-डौल में प्रायः तासी स्त्रियों के करीब थीं। वदारियों, अमरातिओं और नतूफियनों के संकीर्ण कपालों के विपरीत दीर्घ कपाल मानव के होते हुए भी तासियनों के समान इन कपालों में चौड़ी मस्तिष्क-मंजूषा है।

नील के पूरब हेलवन (Helwan) के निकट अल उमरी (El Omari) की विस्तृत बस्ती में १९४२ ई० से देबानों[४] (Debono) के उत्खननों के द्वारा ठीक उसी तरह की संस्कृति प्रकाश में लाई गई है। यह स्थान वादी होफ (Wadi Hof) के

---

१. वही, १९३०, I. C. २. वही १९३२, ३६—८८।

३. वही, १९३०, २१—८१।

४. Annales du Service, xliviii, १९४८, ५६१—९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दक्षिणी तट के ऊपर, ठीक उस विंदु के नीचे जहां यह पठार से मैदान में निकलती है, स्थित है और अभी नील के पूर्वीय तट से ४½ मील की दूरी पर है। मेरिम्दे (Merimde) की तरह यहाँ भी मृतक गाँवों के गढों और कमजोर झोपड़ियों में दफनाए जाते थे। परंतु अनुस्थापन पद्धति विभिन्न है। शव, जिसका मस्तक दक्षिण की ओर रहता है, वाम पार्श्व पर पश्चिमाभिमुख होकर लेटा रहता है। और उपलब्ध कंकाल उच्च मिस्र के परिचित प्राग्वंशीय व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक लंबे और महत्तर कपाल वाले लोगों के हैं। ग्रामीणों के भोजन में गेहूँ, जौ, पृथुशिम्बी (Vetch) खजूर, उंगरबकरियाँ, जंगली सुअर, दरिआई घोड़े, कछुआ, हरिन, घोंघे और मछलियाँ संमिलित थीं। परंतु, वे लोग जिस गेहूं का उत्पादन करते थे वह बल्कानी गेहूँ (Triticum monococcum) के रूप में वर्णित है। यह प्रकार स्पष्टतः उत्तरी वर्ग का है जो प्रथमतः तौरुस (Taurus) अथवा अमानुस (Amanus) के दक्षिण में नहीं पाया जाता था। जहाँ तक अन्य वस्तुओं का संबंध है, अनलाश्म के हंसुओं के दांतों, काठीदार चक्कियों, गुल्म के वानकों (१४ के समान), खोखले तल वाले बाणों के सिरों, कर्पर के बने मछली फँसाने के कांटों, नलिकायुक्त पाषाण निर्मित वोडकों, और रगड़कर तीक्ष्ण किए हुए कुठारों (Ground stone axes) का उल्लेख किया जा सकता है। ये साज-समान मेरिम्दियन (Merimdian) उपकरणों के अत्यधिक अनुरूप हैं। परंतु फलक-उपकरणों का अनुपात उच्चतर हैं और कुछ चाकुओं के शुद्धता से धारहीन बनाए गए पृष्ठ और छोटी नोक है। शैल्पिक रूप में अमरियन मृद्भांड मेरिम्दियन मृद्भांडों के समान हैं, परंतु लाल रंग को सर्वदा अधिक मान्यता दी जाती थी। शृंगार बहुत ही दुर्लभ हैं और आकार कुछ भिन्न हैं। ऋजु पार्श्व वाले गमले जिनकी हालें बाहर को उल्टी रहती थीं ऐसे आकार और वर्तुलाकार कुप्पियाँ प्रसिद्ध थीं। मृद्भांडों के अतिरिक्त बसाल्ट (भूरे रंग का पत्थर) के कुछ पात्र, जो प्रायः आयातित थे, गाँवों में व्यवहृत होते थे। लाल समुद्री कर्पर निश्चित रूप से आयात किए गए थे।

मेरिम्दे की तरह चटाइयों अथवा सालों में लपेटे हुए मृतकों को फूलों को छोड़कर अन्य उपहार बहुत कम दिए जाते थे। परंतु एक मकबरे में दोनों छोरों पर उत्कीर्ण एक दंड था जो निम्न मिस्र के ऐतिहासिक काल में राजत्व-चिह्न के रूप में विधृत आमेस (Ames) राजदंड का अनुकरी बताया गया था। प्रायः तब ऊल उमरी पर पहले से ही सामंतों का शासन था। क्या उनमें से अन्यतम को स्वयं को निम्न मिस्र का राजा बनाना अभिप्रेत था?

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्पष्टतः अभी-अभी वर्णित चारों स्थान एक ही संस्कृति का प्रतिनिधित्व नहीं करतेहै। विशेषतया मेरिम्दे और अल उमरी में बस्ती भीतर के शवाधानों एवं तासा और संभवतः फायूमी एवं प्राग्राजवंशोय मिस्र की सभी उत्तरकालीन संस्कृतियों में बस्ती के बाहर के कब्रिस्तानों में शवाधानों के बीच का अंतर विशेषतया अर्थपूर्ण है। फिर भी अनेक सामान्य लक्षण हैं और यूरोप में सुपरिचित उत्तर पाषाणकालीन संस्कृति के नील-घाटी में ज्ञात उत्तम उदाहरणों के रूप में इन चार वर्गों का, अथवा इनमें से[1] किसी एक की सम सामयिकता के प्रश्न की पूर्वधारणा के बिना, एक साथ वर्णन करना सुविधाजनक है। हर हालत में इनके निवासी बहुत अनुकूल वातावरण में रहकर अन्न पैदा करते हैं। इन्होंने नवीन अर्थव्यवस्था और पुरानी आखेट पद्धति के प्रयोग के लिए असाधारण अवसरों द्वारा संभव बनाए गए अपने अवकाश के क्षणों का उपयोग कला अथवा शिल्प के विशदीकरण के लिए किया जो साधारणयता फल संचयी व्यक्तियों में नहीं पाया जाता है। परंतु वे विलास के अलंकरणों को छोड़कर अन्य स्थानीय सामग्रियों से संतुष्ट रहे हैं और इस प्रकार इन्होंने अपनी आत्मनिर्भरता को सुरक्षित रखा है। काल्पनिक आवश्यक वस्तुओं के आयातों पर निर्भर रहने वाली प्रवृत्ति मे इन्हें वाह्य दुनिया के साथ वाणिज्यगत संबंध स्थापित करने के लिए प्रेरित नहीं किया। इस प्रकार का आर्थिक बिलगाव उपर्युक्त स्थानीय विभिन्नताओं की पूर्णतः व्याख्या करता है। और न तो वे, जैसा कि प्रतीत होता है, सर्वसाधारण की उपयोगिता के कार्यों के लिए अपनी शक्तियों को संगठित करने के लिए वाध्य हुए हैं और न तो कृषि में अधिक पूंजी लगाने के लिए ही विवश हुए हैं। अगर उनमें से किसी प्रतिभाशाली व्यक्ति ने पानी बहाने के लिए नालों के निर्माण के विषय में सोचा तो इससे यह भी सूचित होता है कि उसके साथियों ने उसकी योजना की कार्यान्विति के लिए संगठित हुए हैं। वे अपनी बस्तियों के स्थानांतरण और वाहर उपनिवेशों की स्थापना के लिए स्वतंत्र हैं।

परंतु इस सरलता को संभव बनाने वाली परिस्थितियां पहले से ही गुजर रही थीं। फायूम और मेरिम्दे इन दोनों स्थानों में बस्ती (अधिवास) के अवशेष के बीच

---

२. बूमगार्टेल (Baumgartel), कल्चर्स ऑफ प्रीहिस्टॉरिक ईजिप्ट (Cultures of Prehistoric Egypt), आक्सफोर्ड, १९४७, १५-१७, का तर्क है कि फायुम की बस्तियाँ उच्च मिस्र की केवल अमराती परंपरा की समकालीन हैं मेरिम्दे जर्जी परंपरा की। और उत्तरकालीन अमराती व मेरिम्दियन स्थलों के नक्काशीदार परिवारोपयोगी मृद्भांडों के बीच साम्य पर देते हैं; ९५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भरी हुई वालुका राशि के स्तर अतिक्रमणशील मरुस्थल की विभीषिका का निदर्शन करते हैं। परिणाम स्वरूप बस्तियों को छोड़ना पड़ा। वस्तुतः सूखती हुई फायूम झील के चारों तरफ कुछ समय तक पुरानी आबादी के अवशिष्ट व्यक्ति देखे जा सकते हैं। परंतु उनकी संस्कृति ह्रासोन्मुख हो रही है। अनलाश्म के कुठार अब पालिश-दार नहीं होते और पुराने नमूने परत करके फिर से तेज किए गए हैं। उपकरण आकार में छोटे होते है। तथापि छोटे बाण के सिरे नोकीले बनाए जा सकते हैं। अंत में जैसे वादियां सूखती हैं और मरुस्थल आगे बढ़ता है, वैसे वे भी अदृश्य हो जाते हैं। प्राय: अनिश्चित काल की अंतरावधि के बाद अल उमरी का बड़ा गांव भी छोड़ दिया गया, तथापि दूसरी बस्ती, जो कि इस बार अलग कब्रिस्तान से युक्त थी, वादी के ऊपर आधे मील की दूरी पर स्थापित हुई। इसका एक परिणाम यह हुआ कि निम्न मिस्र में संस्कृति क्रम अब भी अपूर्ण है और तुरत वर्णित स्थानों का सापेक्ष युग भी कुछ अंश तक अनिश्चित है। इसके विपरीत मध्य और उच्च मिस्र में पुरातात्विक अभिलेख अखंडित है और तासियन से लेकर आगे तक अव्याहृतक्रम प्रस्तुत करता है।

तासियन नील घाटी में संस्कृतियों की लंबी पंक्ति के शिखर पर अवस्थित हैं। बदारी[1] संस्कृति तासी संस्कृति का केवल विस्तार मानी जा सकती है और यह सर्वप्रथम उत्तरोक्त (संस्कृति) की तरह, मध्य मिस्र में बदारी के निकट कब्रि तानों और बस्तियों में पाई गई थी। यद्यपि दूरतर उत्तर में उपलब्ध नहीं हुई है, तथापि वही संस्कृति उच्च मिस्र में कम-से-कम दक्षिण में अरमंत[2] तक ज्ञात है और १९५० ई० में वादी हम्मामत बेसिन[3] (Hammamat Basin) में भी अभिज्ञात हुई है। नील के दोनों किनारों से देश के अंदर की ओर बहती हुई बादियाँ अब भी समयानुसार फ्रेसट (Freshets) बहा लाती थीं और जबकि वहाँ अब भी जंगली गायों बैलों, गधों, जिराफों और हाथियों तक के पोषण के लिए मरुस्थल में पर्याप्त घास पाता था। क्योंकि अपनी आखेट यात्राओं एवं अपने पशुओं के साथ मौसमी प्रव्रजन के समय पर प्राय बदारियों ने ही पूर्वी मरुस्थल और नील[4] के ठीक पश्चिम में चट्टानों पर इन जानवरों-

---

१. अन्य प्रकार के अनुलिखित दृष्टिकोणों के लिए देखिए ब्रंटन और केटन-थांपसन (Brunton and Caton-Thompson), दी बदारियन सिविलिजेशन (The Badarian Civilization), लंदन, १९२८, मोस्तेगदद्रा, ४३-५९।

२. मांड एंड मायर्स (Mond and Myres), सीमेटरीज ऑफ अरमंत (Cemeteries of Armant) ८।

३. एनाल्स दु सर्विस (Annales du Service) li, १९५१, ७४।

४. विंक्लर (Winckler) रॉक ड्राइंग्स (Rock Drawings) i, २०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के चित्रों को उत्कीर्ण किया है। क्योंकि बदारियन एक ही स्थान पर तासियनों की अपेक्षा अधिक दृढ़ता के साथ नहीं जमे थे। नृतत्व विज्ञान के दृष्टिकोण से वे विभिन्न शारीरिक विशेषताएँ प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि वे लोग केवल ५ से ५½ फीट ऊँचे, नाटे, कृश और कोमलांग हैं तथा निग्ग्रेसम अथवा दक्षिण भारतीम लक्षणों[1] का संकेत करते हैं।

बदारी लोग अब भी मरुस्थल के उभाड़ों पर खेमा डालते थे। आवासों के लिए मेरिम्दियों (Merimdians) की तरह पवनरोधक चटाइयों से ही संतुष्ट थे। पर, वे अपने अनाजों के लिए मिट्टी की परतों वाली खत्तियां बनाते थे। फायूम व

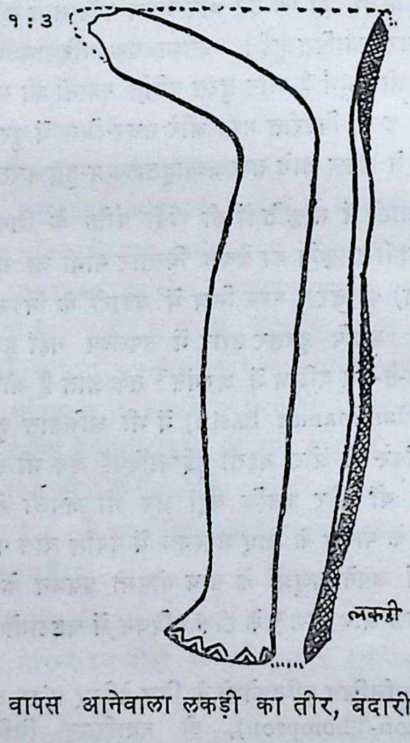

चित्र १५. फिर से वापस आनेवाला लकड़ी का तीर, बदारी, ⅓, ब्रंटन के अनुसार।

मुहाने की तरह यहां भी वे अब निश्चित रूप से जौ व एमर गेहूँ की खेती करते थे। तथापि, हंसिए के लिए उपयुक्त अनलाश्म बहुत ही दुष्प्राप्य हैं। डंगर व भेड़ें पाले

१. बिमेत्रिका (Biometrika), xix, १९२७, ११० आगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाते थे, और कभी-कभी विधिपूर्वक दफनाए जाते थे। पर मरिम्दे में आम तौर पर पाई जानेवाली सुअर की हड्डियों के विषय में सूचना नहीं मिली है। आखेट्य एवं मत्स्य-ग्रहण अब भी महत्वपूर्ण (कार्य) थे। फायूम की तरह बाणों के ऊपर खोखले आधार वाले अनलाश्म सिरे चढ़ाए जाते थे और कुछ पत्राकार प्रकारों से युक्त रहते थे। काठ के फेंके जाने वाले दंड या वापस आने वाले लकड़ी के तीर (चि० १५) भी उपयोग में लाए जाते थे। चित्र ६ की तरह के मछली फंसाने के कांटे अब भी प्रयुक्त होते थे।

न्यूनाधिक रूप में एक प्रकार के सुव्यवस्थित व्यापार को प्रश्रय देने वाली आयातित सामग्रीमूलक प्रारंभिक निर्भरता ने एक नवीन अर्थ व्यवस्थागत तत्त्व को उपस्थित किया। मैलेशाईट (Malachite) हर हालत में नियमित रूप से आखें रंगने में प्रयुक्त होता था, जो निस्संदेह सिनाई (Sinai) या न्यूबिया (Nubia) से लाया गया होगा। लाल सागर से लाई गई खोलियां भी बिल्कुल सर्वसाधारण हैं। और, सीरियाई संबंधों के सूचक देवदार व हपुषा (Juniper) काठ के टुकड़े तथा राल फीरोजा[1] अकीक व काचित सेलखड़ी के दुर्लभ मनकों के साथ पाए गए हैं। साथ ही धात्वीय ताम्र का परिचय प्राप्त होता है। इसकी कुट्टयता का मूल्यांकन पहले ही हो चुका था। पर, द्राव्यता के वास्तविक गुण-धर्म की उत्कृष्टता का परिचय नहीं मिला था। और, नोकाओं के मृद्भांडीय नमूने नौ परिवहन की दिशा में प्रयासों को निर्देशित करते हैं जो पहले ही सामान्य प्रकार के लट्ठों के बड़े की दशा से आगे बढ़ चुका था।

मिट्टी के पात्र, विशेषतः अंत्येष्टि के निमित्त बने पात्र शिल्प की ऐसी पूर्णता को प्रदर्शित करते हैं जिससे उत्कृष्ट नील घाटी में कभी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। बारीक भांड अत्यधिक पतला है, और पाक क्रिया के पूर्व प्रायः मोटे दांत वाले कंघे से उद्भाजित करके पूर्णतया अलंकृत है। यह प्रक्रिया अत्युत्कृष्ट तरंगित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए अपनाई गई हैं, जिसे देखकर हम प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकते (फ० ३ बी)। ये पात्र, जो कभी-कभी एक प्रकार के आयस (Ferruginous). रंग से पुते रहते थे, अक्सर औंधे मुंह पकाए जाते थे जिससे निचला भाग अबाधित वायु के संमुख पड़ता था और परिणामस्वरूप मुर्चाजनक क्रिया से भूरे या लाल रंग का हो जाता था। पर, कोर व भीतरी भाग कार्बन और धुवां भर जाने के कारण और इसके मुर्चाविघातक प्रभाव के फलस्वरूप काले पड़ जाते थे। इस स्थिति में लौह आक्साइड (Ferric oxide) घट कर अयः प्राय (Ferrous) हो जाता था। इस ऊति (Fabric) में निर्मित मुख्य आकारों में कटोरे थे जो अक्सर खड़े किनारे वाले और

---

१. ब्रंटन (Brunton), मतमर (Matmar), १६४८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कभी-कभी छिद्रित होते थे (चि० १६)। गुलाबी रंग के धूसर भांड की कोटि की एक

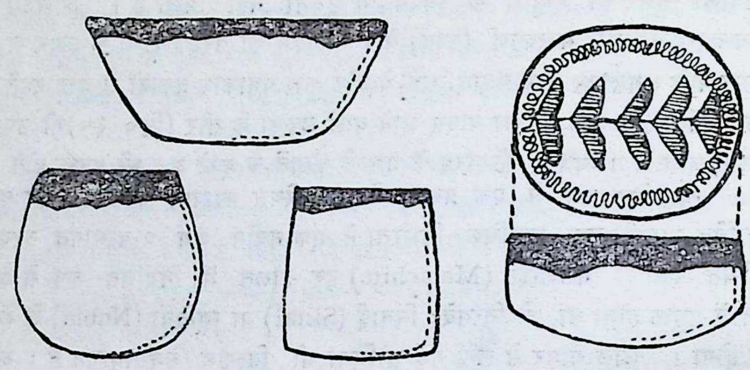

चित्र १६. बदारी मृद्‌भांड, ⅙, एंटीक्वीटी, ३ में, ब्रंटन के अनुसार।

गोल कुप्पी, जिसके बिचले भाग में चार मूठें लगी हैं, बिलकुल अपवादात्मक है और संभवतः परवर्ती तिथि की है।

लगभग आगे की ओर निकले हुए कोरवाले ढोल के आकार के पात्र भूरे

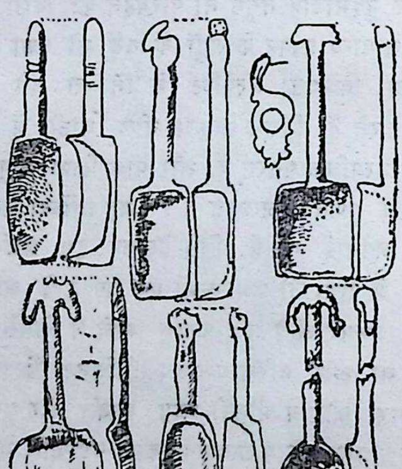

चित्र १७. खोदकर बनाए गए हाथी दांत के करछुल, बदारी, ⅙।

पत्थर को रगड़कर बनाए गए थे। कुप्पे, छोटे वर्तुलाकार पात्र व करछुल हाथी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दांत के बनाए जाते थे। करछुलों की मूठों के छोर पर साधारणतः जंगली बकरे या अन्य जानवरों की मूर्तियां उत्कीर्ण है (चि० १७)।

बदारी लोग खाल के कपड़े पहनते थे। पर, पट्सन की कोटि के किसी पौधे के सूत से भी प्रायः मोटा कपड़ा बुना जाता था। आँखें मालेशाइट (Malachite) से रंगी जाती थीं। यह साधारणतः नतोदर या दांतदार छोर वाले, पर, कभी-कभी सिर्फ आयताकार संकरे सम्कोणीय सिलेटी रंग-पट्ट पर रगड़ा जाता था। उत्कीर्ण पक्षियों की मूर्तियों से आभूषित हाथी दांत के कंघे बालों में धारण किए जाते थे। उसी द्रव्य (हाथी दांत) की बनी वटिकाएं (Pins) या सूइयां जिनमें कभी-कभी नालीदार सिरे रहते थे या कंठ में एक छोटी आंख बनी रहती थी,। प्रायः परिधान के बंधन का काम करती थीं। तांबे की नलिकाएें, काचित बिल्लौर या स्पतीय के मनके, शुतुरमुर्ग के अंडों की खोली को काटकर बनाए गए चक्र, हड्डी के वृत्त-खंडित मनके (चि० १८) व लाल सागर के कड़े छिलके हारों या करधनियों

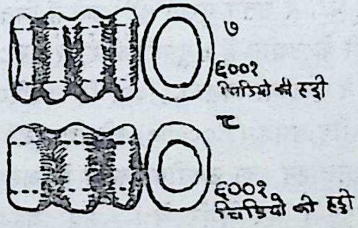

चित्र १८. बदेरियन हड्डी के वृत्तखंडित मनके, मटमर (Matmar) ब्रंटन के अनुसार, $\frac{१}{१}$

के रूप में एक साथ गूँथे जाते थे। हाथी दांत के वलय व मुंदरियां बाजुओं या उंगलियों में पहनी जाती थीं। पत्थर की ठेपियां अलंकरणों के रूप में नाक में धारण की जाती थीं। और, होठ संभवतः मृद्भांडीय ठप्पों से अलंकृत किए जाते थे।

हाथी दांत को खोदकर या मिट्टी को सांचे में ढालकर बनाई गई नारी मूर्तियां कतिपय समाधियों में प्राप्त हुई हैं। ये संभवतः किसी मातृदेवी की मूर्तियां या पत्नियों की स्थानापन्न (मूर्तियां) हैं। हाथी दांत की छोटी मूर्ति (फ० ४ आ) बदेरियन कंकालों द्वारा सूचित शारीरिक प्रकार के अनुरूप नहीं है। अतः प्रायः तासी प्रकार की हो सकती है। अंतर सिर्फ एक हरिन व एक जल-हस्ती की छोटी उत्कीरणाओं द्वारा उपस्थापित होते हैं। बदेरियन निकुंचित या आनत (Crouched)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मुद्रा में खालों से आवेष्टित या बांस की पिटारियों में बंद किए जाकर गर्त-शवाधियां में दफनाए जाते थे। इनमें कभी-कभी चट्टी की परत लगी रहती थी और एक वर्ग में एकत्र रहती थीं जिससे छोटे शवाधिस्थानों का निर्माण होता था। शव का मस्तक साधारणत: पश्चिम की ओर रहता था। पर, पूर्वाभिमुखीकरण के नियम कठोर नहीं थे।

अब मिस्रीय कृषि के उद्भव के प्रश्न का ठोस परीक्षण संभव है। जहां हम इ हें पाते हैं वहाँ क्या नील घाटी की उत्तर-पाषाण-कालीन संस्कृतियां पेरी (Perry) व चेरी (Cherry) द्वारा पूर्ण उद्गारपूर्वक वर्णित अफ्रीकी आहार संचेताओं के अवसरों से लाभ उठाने के उपक्रम से उद्भूत हुईं? उत्तरी अफ्रीका में गेहूँ व जौ के वन्य पूर्वजों का अस्तित्व सत्यता के साथ नहीं प्रमाणित होता हैं। और, मेषों का अस्तित्व भी निश्चित रूप में असंभाव्य है। द्विभागीय शैली समन्वित उत्तर-पाषाण-कालीन अनलाश्मोद्योग न उत्तरी अफ्रीकी कैप्सियन या ओरेनियन फलक परंपरा से और, न तो नील घाटी की सूक्ष्म पाषाणप्राय सेविलियाई (परंपरा) से ही निस्संदिग्ध रूप से व्युत्पादित किए जा सकते हैं। फिर भी, वे उतने पुराने हो सकते हैं जितने उत्तरी अफ्रीकी अतेरी या पूर्व अफ्रीकी स्टिलखाड़ी के उद्योग हैं। दूसरी ओर, १९२८ ई० में केटोन-थोंपसन[1] (Caton-Thompson) ने अपना मंतव्य दिया कि कदेरियन भी २५°N के उत्तर-वर्ती क्षेत्र में स्थित आदि जीव समय (Eocene) की शिलाओं में प्रचुर मात्रा में सुलभ उत्कृष्ट कोटि के चौरस अनलाश्म का उपयोग करने में असफल रहे। पर, उमेरियाईयों की तरह वे सतही गुलमों पर निर्भर थे। अत: वह इस निष्कर्ष पर पहुँची कि उनके पुरखे (इस) क्षेत्र के दक्षिण में रहते थे जहां चौरस अनलाश्म प्राप्य था। इसी तरह ब्रटंन[2], जंकर[3], रिकार्फ[4] व ब्रूम गर्टल ने बदेरियन व मेरिम्दियन संस्कृतियों के भी न्यूबियाई साम्य पर बल दिया है।

१९४५ ई० से, सूडान में आर्कल (Arkell) के अनुसंधान इस उप कल्पना को पुरातात्विक तथ्यों के समक्ष जांचने की स्वीकृति देते हैं। क्योंकि, खारतून (Khartoun) के निकट उसने मिस्रीय उत्तर-पाषाण-कालीन के समान वैशिष्ट्य रखने वाली

---

१. ब्रंटन (Brunton), बदेरियन सिविलिजेशन (Badariau Civilizaton), ७५।
२. मैन (Man), xxv, १९२५,१०३।
३. स्मित-फेस्त फ्रिफ्ट (Schmidt-Festschrift), वियना (Vienna), १९२८, ८६७।
४. Die Altertumerder Vor-und Fruhzelt Agyptens, १९३१, २४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पुरानी संस्कृतियों को प्रकाश में लाया है। प्रारंभिक खारतूम या "खारतूम मध्य-पाषाण[1] संस्कृति" प्रायः निग्रोसम शिकारी-मछुओं की देन है जो उस समय, जब आज-कल की अपेक्षा अधिक वृष्टि होती थी, नील के निकट समय-समय पर अपना पड़ाव डालते थे। वे बर्छियों व तीरों को विल्लौर की सूक्ष्म पाषाणीय अर्धचंद्रों या रियोलिट (Rhyolite) के कुछ बड़े अर्धचंद्रों से सजाते थे और हड्डियों की मजबूत रस्सी लगी बर्छियों से मछली पकड़ते थे। इन बर्छियों में एक नोंक रहती थी या चित्र २२ में प्रदर्शित बर्छियों की तरह होती थीं। वे न तो अनाज उपजाते थे और न पशु ही पालते थे। पर, वे अच्छी तरह पकाए गए उत्तम कोटि के मृद्भांड बनाते थे। इन पात्रों को वे विड़ाल-मत्स्य के मेरुदंड से निष्पादित तरंगित रेखाओं व अन्य प्रतिरूपों से विभूषित करते थे। आर्मेल का सुझाव है कि बदेरियन तरंगित भांड इसी से विकसित हुए होंगे। मृतक शवाधि स्थानों में नहीं दफनाए जाकर स्पष्टतः शिविर स्थल में ही दफनाए जाते थे। ऊपरी कर्तन दंतों (Incisors) को उखाड़ने की प्रथा निश्चित रूप से विद्यमान थी।

यह "मध्य पाषाण" संस्कृति खारतूम उत्तर पाषाण या गूज (Gouge) संस्कृति के रूप में विकसित हुई जो मुख्यतः बहुत छोटे बकरों के अभिजनन द्वारा अन्य से भिन्न है। इसके जनक अब भी अन्न नहीं उपजाते थे, पर, चक्राकार गदा-सिराओं व अर्धचंद्रों से सज्जित बर्छियों से शिकार करते थे तथा कड़ी खोलियों से बने कांटों (नातूफियन की तरह कर्तित) व हड्डी की रस्सा-बंधी बर्छियों से मछली मारते थे। वे शायद जल हस्तियों व हाथियों के मांस काटने के लिए ओपदार धारों वाली हड्डी की कुल्हाड़ियां भी बनाते थे। पर, लकड़ी का काम करने के लिए रियोलाइट (Rhyolite) के वसूलों के सिरे व रुखानियां बनाते थे जिनकी धारों को रगड़कर तेज बनाते थे। इनके भांडों पर के अभिकल्पों को तरंगित रेखाओं से विभूषित भांडों के अभिकल्पों से व्युत्पादित किया जा सकता है। पर, खास इन पात्रों पर मिट्टी की पतली पट्टी लगी रहती थी और कभी-कभी ये आयस (Ferruginous) रंग से पुते रहते थे। इसके बाद इन्हें इस प्रकार पकाया जाता था जिससे कुछ भाग लाल व कुछ अंश काले हैं। वस्तुतः इनके शिल्प व आकार बदेरियन आकारों के निकट हैं। अंत में, ये छाग पालक (Goat herders) शुतुरमुर्ग के अंडों की खोलियों के (बने) मनके पहनते थे और कदाचित् अमेजोनाइट (Amajonite) के भी, जो

१. आर्केल (Arkell), अर्ली खारतूम (Early Khartoum), १९४९, ४०—८४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संभवतः वे उत्तर पाषाण-कालीन फायूमियों की तरह सहारा के तिवेस्ती से या पूर्वी मरुस्थल से प्राप्त करते थे।

उपरले नील की इन असंस्कृत या बहुत ही बर्बर निग्रोसम जन जातियों का बदेरी, तासी या मेरिम्दियन कृषकों के काल्पनिक दक्षिणी पूर्वजों के साथ तादात्म्यीकरण की चेष्टा निःसंदेह आकर्षक है। पर, मिस्र की संस्कृति के साथ इन सूडानीय संस्कृतियों का तैथिक संबंध स्थापित करने के लिए कोई स्तरीय या अन्य प्रकार का साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। वे अमरातियों या जर्जियों की अविकसित सम-सामयिक संस्कृतियों से संबंधित हो सकती हैं क्योंकि ठीक नूबिया में भी प्रथम प्रपात के निचले भाग में ऐतिहासिक फराऊनी सभ्यता के स्थापित होने के बहुत काल बाद तक भी असभ्यता का साम्राज्य रहा। यदि सूडानियों की कालिक प्राथमिकता स्वीकृत की जाय और यह माना जाय कि वे बहाव की दिशा में चलकर तासा या मेरिम्दे में भी आविर्भूत हुए, तो उन्हें अपनी इस लंबी यात्रा में किसी स्थल पर गेहूँ और जौ की खेती व भेड़ों के अभिजनन शुरू करने के लिए बाध्य होना पड़ा होगा। पर, जैसा कि हमने देखा है, उनके संचरण पथ में उनकी कृषि के लिए उन शस्यों के वन्य पूर्वजों का अस्तित्व संदिग्ध है। आदमेज (Adametz) की धारणा है कि मिस्र के प्रारंभिक मेष एशिया से बाब एल-मंदेब (Bab el-Mandeb) के जल-डमरूमध्य होकर अफ्रीका लाए गए थे। और मछली फंसाने के कांटे व गदा के सिरों में समानता के बावजूद अनलाश्म के द्विभागीय कार्य, जो मिस्रीय उत्तर पाषाण-कालीन संस्कृति के विशिष्ट तत्त्व हैं, खारतूम में अनुपस्थित हैं। उसके लिए हमें और भी पश्चिम अतेरी प्रांत की ओर देखना होगा।

अब प्रारंभिक खारतूम से उपलब्ध पात्रों के साथ न्यूनाधिक रूप में साम्य रखने वाले कंकतिकालंकृत (Comb-decorated) व मुद्रांकित भांडों के अस्तित्व की सूचना सहारा के आर-पार के उन स्थलों से मिली है जो एक दूसरे से पूर्णतः पृथक् हैं। खारतूम उत्तर पाषाण की तरह नाइजीरियाई सहारा में ये मृद्भांड हड्डी की रस्सा बंधी बर्छियों और मछली फंसाने के कांटों व पत्थर के फरसों के साथ वस्तुतः संबद्ध हैं तथा खोखले तल वाले बाण सिरों के साथ भी संपृक्त हैं। वूफ्रे (Vaufrey) वस्तुतः मिस्र से (इन) मृद्भांडों व सहारन संस्कृतियों के अन्य विशिष्ट रूप से उत्तर पाषाणीय तत्वों की उत्पत्ति मानने के पक्ष में है। पर, सिद्धांततः क्रम को उलटा जा सकता है, बशर्ते, उदाहरण के रूप में केंद्रीय सहारा के उच्च स्थलों पर (तिबस्ती व तास्सिली) वन्य शस्यों व मेषों का अस्तित्व माना जाय। वहां नव अतेरी परंपरा के उत्तरा-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धिकारियों के रूप में कृषकों व पशुचारकों के अस्तित्व को मानते हुए, उनमें से कुछ अनावृष्टि के कारण नील घाटी में, मिस्र व सूडान इन दोनों स्थानों में, क्रमशः जाने के लिए बाध्य हो सकते थे। पर, तब खारतूम मध्य-पाषाण व उत्तर-पाषाण-संस्कृति उच्च व निम्न मिस्रीय उत्तर-पाषाण-संस्कृति की पूर्वज होने की अपेक्षा उसकी समानांतर होगी।

सूडानीय या सहारन (उत्पत्ति) के सिद्धांतों में से प्रत्येक (हमारी) अज्ञानता से अपेक्षाकृत अधिक की आशा रखता हैं और दोनों के विषय में यह कहा जा सकता है कि वे मिस्रीय कृषि की उत्पत्ति को सिर्फ एक प्रावस्था और पीछे की ओर ले जाते हैं। इस पर्यालोचन ने यह प्रदर्शित किया है कि प्रथम मिस्रीय उत्तर पाषाण संस्कृतियों के विशिष्ट लक्षण बिलकुल प्रारंभिक काल में उत्तरी अफ्रीका के ईर्द-गिर्द श्वेत नील से लेकर चाद झील (Lake Chad) तक विस्तृत रूप से बिखरे हुए थे। उस हद तक इसने तासी-बदेरी व मेरिम्दे-उमरी परंपराओं में भी मूलतः अफ्रीकी स्वरूप को प्रकट किया है। भाषा-शास्त्रीय शब्दों में इसे ऐतिहासिक मिस्र में हामीय तत्त्व के अनुरूप होना चाहिए और जाति विज्ञानानुसार यह प्रारंभिक फराऊनी संस्थाओं या सज्जाओं व आधुनिक नीलीय या सहारन जनजातियों[1] के बीच (विद्यमान) विलक्षण समताओं का कारण बतला सकता है। पर, मिस्र की संस्कृतियों की उत्तर पाषाणीय बनाने वाले तत्वों पर विचार नहीं किया गया है।

अब, कम से कम निम्न मिस्र की उत्तर पाषाण कालीन संस्कृतियों में उत्तरी या एशियाई तत्त्व विद्यमान हैं। अल ओमरी (El omari) में उपजाया जाने वाला बल्कानी गेहूँ (Triticum monococcum) स्वभावतः स्पष्टतम तत्व हैं। पर, यह अकेला नहीं हैं। वहां का व मेरिम्दे का फलक-उद्योग न अतेरी है और न सेबिलियाई है, पर, यह एशियाई हो सकता है। फायूम की रस्सा-बंधी बर्छियों व मेरिम्दे की मछली पकड़ने की बंसियां पैलेस्तीन के नाटूफियन (उद्योग) में आवर्तित होती हैं। और खास नाटूफियन संस्कृति की बाहरी चौकियां सिनाई व हेलवन में भी भिन्न प्रकार के सूक्ष्म पाषाणों के जरिये (पृ० २६) पहचानी गई है। यह बहुत

---

१. तु उ०, सेलिग्मैन (Saligman), ज० रॉ० एन्थ्र्° ईस्टी० (J R A I), xliii, १६२३, ५६७—६८०, हंटिङ्गफोर्ड (Huntingford) एन्श्येंट ईजिप्ट (Ancient Egypt), ii, १६२७, ३६, फोर्ड (Forde) एंश्येंट मैरिनर्स (Ancient Mariners) लंदन, १६२७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पहले ही देखा जा चुका है कि मेरिम्दे के सादे कृष्णमुख मृद्‌भांड व उसके करछुल तथा चर्मपात्रों के विलक्षण समानांतर यूरोप[1] के पश्चिमी उत्तर-पाषाण में आइबेरियाई प्रायद्वीप से लेकर ब्रिटिश टापुओं तक व्याप्त हैं। अब यह ज्ञात हो चुका है कि इस स्थल से प्राप्त संरक्षित पट्टियों में नक़ाशीदार बहुलास्थि के नमूनों से युक्त मृद्‌भांड पैलेस्तिन[2] से प्राप्त कतिपय उत्तर-पाषाण-कालीन पात्रों के साथ अर्थगर्भिता के साथ साम्य रखते हैं। अत: यह असंभव नहीं कि मिस्र में शस्यों व घरेलू जानवरों तथा कुछ उत्तार-पाषाणीय कलाओं की उपस्थापना उसी दिशा से हुई। ऐसा होने पर भी यह एशियाई परंपरा पूर्वस्वीकृत अफ्रीकी अतेरी परंपराओं के साथ निम्न मिस्र में भी मिश्रित हो गई होगी। फिर भी, यह निष्कर्ष निकल सकता है कि कृषि की भावना नील से उठकर प्रथमतः तासा और इसके बाद खारतूम में फैली। पर, तैथिक-क्रमानुसार उसकी संभाव्यता का निर्णय करने के लिए उत्तरोत्तरवर्ती संस्कृति-क्रम का परीक्षण आवश्यक है। निम्न मिस्र के लिए, जहां १९४० तक मेरिम्दे के उत्तर-पाषाण-कालीन ग्राम व मेम्फिस की फराऊसी नगर के बीच की रिक्तता को भरने के लिए कुछ भी (उपलब्ध) नहीं था, अब तक तुलना के योग्य कुछ भी नहीं मिला है। तदनुसार हम अपना सर्वेक्षण उच्च मिस्र से शुरू करेंगे।

---

१. चाइल्ड (Childe) डॉन ऑफ यूरोपियन सिविलिजेशन (Dawn of European civilization), २८०।

२. उदाहरणार्थ, जेरिको (Jericho) के मध्य एवं प्रारंभिक उत्तरपाषाण (काल) में ए० आर्के० एन्थ्रॉ० लि० (LAAA), xxii, १६९, व फलक xliv, १, xxiii, ७७. ८७, ८९, तु० पृ० २२७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चतुर्थ अध्याय

नील के तट पर अफ़्रीक़ी तथा एशियाई

उपरले मिस्र में अम्रतियन[1] संस्कृति बदरियन संस्कृति से उद्भूत मानी जा सकती है, वह उसकी उत्तराधिकारिणी बनाती है और अनेक शवाधि-स्थानों से आ-लिखित चिर-परिचित संस्कृति का सूत्रपात करती है।

इस संस्कृति के वाहक अम्रतियन[2] अपनी उन यत्किंचित् निग्रोसम विशेषताओं को खो चुके थे जो कतिपय बदरियन कंकालों में देखे गये थे। वे कद में लगभग ५$\frac{1}{4}$ फीट ऊँचे थे। शरीर से कृश व हल्के थे। उनकी खोपड़ी लम्बी व छोटी थी। उनके अंग सुकुमार व बाल सीधे थे। प्रत्येक अंश में अभिन्न लगने वाला यह प्रकार आजकल पूर्वी सूडान के बेजा लोगों में देखा जा सकता है। मिट्टी या हाथी दाँत की छोटी मूर्तियाँ संरक्षित शवों द्वारा प्रदत्त सूचना की अनुपूर्ति करती हैं। प्रारंभिक मूर्तियां (फ० V अ व VII अ) ऐसे मनुष्यों को चित्रित करती हैं, जिनके बाल बिल्कुल मुड़े हुए हैं या फिर लम्बी नुकीली दाढ़ियां हैं। उनकी नाम सुग्गे के ठोर की तरह लंबी व ऊँची और ललाट ऊँचा व गुंबद की तरह था। इसके विपरीत स्त्रियाँ प्रायः अपने सिर के बाल मुड़ाती थीं और अलग से मिट्टी की छोटी मूर्तियों के सांचे पर बनाए गए कृत्रिम बाल धारण करती थीं। कृश प्रकार का अतिरिक्त एक अन्य वर्ग है जो कंकालीय अवशेषों व पुरुषों की सूक्ष्म मूर्तियों के अनुरूप हैं और विशिष्ट (Steatopygy) के द्वारा उसकी प्रकृति निर्दिष्ट होती है। पेत्री के मतानुसार ये

---

१. उपरले मिस्र की प्रागैतिहासिक संस्कृतिया के विषय में पेत्री की प्रीहिस्टॉरिक इजिप्ट (Pre historic Egypt), (लंदन, १९१७) अब भी मानक स्रोत के रूप में है। और, तु० स्काफ "Grund Zuge der ag. Vorgeschichte", Morgenland, १२ Leipzig, १९२७, बूमगार्टेल ने नकद १ (अम्रतियन) व II जर्जी—इन नामों का सुझाव दिया था (कल्० प्री० ई०)।

२ बायोमेट्रिका, xix, १९१७, ११० आगे। इलियट स्मिथ, 'दी एंश्येंट ईजिप्सियस, ४९, सेलिग्मैन, ज० रॉ० एन्थ्रॉ० इंस्टी xliii, ६०५, पेत्री, वही, xxxi, २५०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक विजित जाति के उत्तर जीवियों का प्रतिनिधित्व करते थे और इनका ऐक्य उन

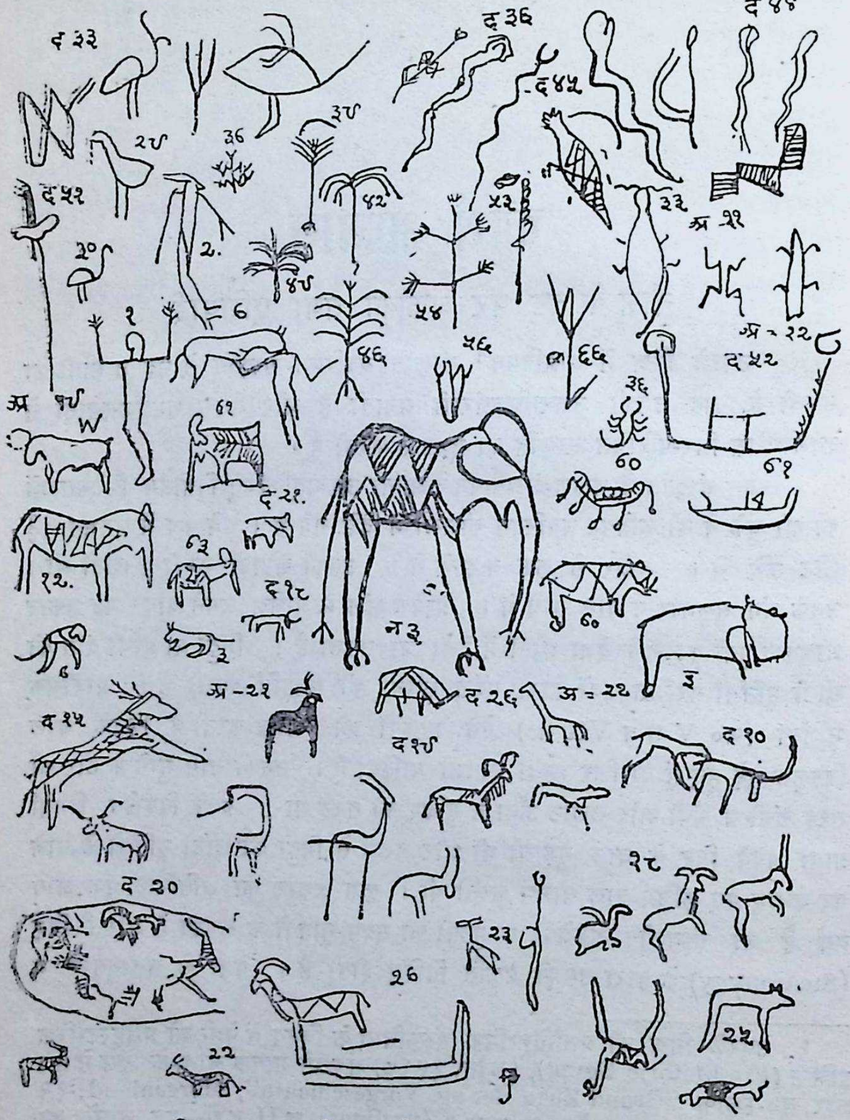

चित्र १६. अम्रातियन बर्तनों पर खुदे हुए अभिकल्प।

यूरफ्रिकन आद्य निग्रोसम लोगों की कल्पित मूल जाति से स्थापित किया जा सकता था. जिनके लिए इस प्रकार की मांसलता सौंदर्य की निशानी थी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नील के तट पर अफ्रीकी तथा एशियाई

अम्रतियनों ने नील के प्राकृतिक रूप से सिंचित जलप्लावित मैदान में क्रमबद्ध कृषि का सूत्रपात किया होगा। क्योंकि मरुस्थलीय वादियां अब मुश्किल से निर्भर रहने योग्य जलापूर्ति कर सकती थीं। तथापि पूर्वीय मरुस्थल में कम-से-कम एक ग्राम-स्थल की सूचना मिलती है। पर, वादी हंमामत (Wadi Hammamat) व्यापार मार्ग के किनारे की तीन बस्तियों व खोलियों के कंगन के उत्पादन के लिए एक निर्माणशाला-स्थल—ये दोनों प्रायः परवर्ती तिथि[1] के हैं। किसी भी स्थिति में अब कृषिकर्म पशुपालन के साथ पूर्वापेक्षया अधिक सुचारु रूप से संतुलित था। पशु दूध व मांस के लिए पाले जाते थे। परंतु अर्थ-व्यवस्था अब भी मिश्रित थी। अर्थात् यह अन्नोत्पादन की नूतन कार्य-पद्धति का और शिकार करने, मछली पकड़ने व फलमूल एकत्र करने के पुराने उद्यम का संमिश्रण था। हसुए के आकार की श्रीपत्र को अम्रतियन नौका के चित्रों के साथ-साथ अन्य पाषाण[2] चित्रों का वितरण निश्चित रूप से शिकार के अनुसरण में अथवा चारागाह के अन्वेषण में किए गए अभियानों को घोषित करता है, क्योंकि शैली में ये चित्र अम्रतियन बर्तनों पर खोदे गए चित्रों के अनुरूप हैं। (चि० १६)।

नीलीय परिवेश के दोनों पार्श्वों में होने वाले प्रयास ने जन्म संख्या के प्रचुर विस्तार को अनुमत व प्रोत्साहित किया। बस्तियों की संख्या में अतिशय वृद्धि हुई और अनेक बस्तियां विशाल ग्रामों के रूप में निश्चित रूप से विकसित हुई होंगी। इनके आकार का अनुमान समाधिस्थानों से किया जा सकता है। इनमें से कुछ कब्रिस्तान पूर्णतया खोदे गए हैं। सभी शवाधिस्थान, जो स्थायी ग्रामों से संबद्ध हैं, अनेक पीढ़ियों तक व्यवहृत होते रहे और अनेक पुरातात्विक अवशेष छोड़ गए हैं। नकद[3] के कब्रिस्तान में दो या तीन कालों की २००० से ऊपर कब्रें थीं। कुछ गांवों की किलाबंदी की गई होगी। डिआस्पालिस पर्वा (Diospolis Parva) से उपलब्ध नमूना दीवाल[4] से घिरे हुए एक शहर को उपस्थापित करता हुआ प्रतीत होता है। पेत्री को नकद की दक्षिणी बस्ती में, जो संभवतः सेथ (Seth) के नगर नूबेत (Nubet) की भूमि थी, एक दीवाल के अवशेष मिले हैं। आवासों का एकमात्र पता जमीन में खोदे गए व गीली मिट्टी की दीवाल से घिरे हुए गोल गढ़ों से लगता

---

१. अनाले दु सर्विस (Annale du Service), ii, ७५।
२. विंकलर (Winckler), रॉक ड्रॉइङ्गस, १६३८, २४—२५।
३. बूमगार्टेल (Baumgartel), सी० पी० ई० (CPE), २६।
४. डियॉस्पॉलिस पर्वा (Diospolis Parva), फ० ६, ब ८३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। ये आवास हंमामिया (Hammamiya) में बदारी[1] के निकट अभिज्ञात हुए हैं और मेम्रिदे की तृतीय अवस्था में अभ्यर्पित आवासों के साथ प्रायः तुलनीय हैं।

अनेक विद्वानों[2] का मत है कि अम्रतियन गांवों में से प्रत्येक उच्च मिस्र की डिका गाँवों की तरह टोटैम खेलों के अधिकार में था। पात्रों पर मगरों, बिच्छुओं व अन्य अपकारी जंतुओं को अगर टोटैम माना जाए, तो इन पात्रों पर इनका प्रदर्शन बोधगम्य होगा। कुछ अम्रतियन प्रतीक ऐतिहासिक युग में नोमेस (Nomes) के चिह्न के रूप में पुनः दृष्टिगोचर होते हैं। इन चित्रों में प्रायः गाय के सिर वाली एक स्त्री और सेथ (Seth) पशु संमिलित हैं। पूर्वोक्त रूप बाद में मातृदेवी हाथर[3] का वेश बन जाता है। परंतु यह अनुमान करना उपयुक्त होगा कि हाथर या सेथ अम्रतियन काल में देवता के रूप में पूजा जाता था। शवाधि-स्थानों से अब तक राजाओं व सामंतों के अस्तित्व के लिए कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिला है। पर इसकाल का एक रंगपट्ट यद्यपि उच्च मिस्र[4] में मिला है, तथापि इस पर लाल मुकुट उत्कीर्ण है। यह लाल मुकुट परवर्ती कालों में निम्न मिस्र पर राजसत्ता के प्रतीक के रूप में फराऊनों द्वारा धारण किया जाता था। दास-प्रथा स्वीकृत रही होगी। जलवाहकों की मूर्तियों, जिनमें सामान्यतः स्त्रियाँ हैं और पीछे की ओर बंधे हाथोंवाले बंदियों की मूर्तियों की व्याख्या इसी प्रकार की गई है। सर्वमान्य जातीय संपत्ति के विपरीत व्यक्तिगत संपत्ति की स्वीकृति का अनुमान बहुधा पात्रों पर उत्कीर्ण स्वामित्व-चिह्नों से किया जा सकता हैं। किसी एक कब्र में उपलब्ध सभी पात्रों पर साधारणतः एक ही चिह्न है।

अम्रतियनों ने बदरियनों द्वारा किए जाने वाले उद्योगों के साथ खोदकर पत्थर निकालने या अनलाश्म के लिए खान खोदने का काम शुरू कर दिया था। क्योंकि वे चिपटे गुल्मों, जिनका निर्माण वस्तुतः अधिक कठिन था, की अपेक्षा अधिकांश में चूना पत्थर से निकाले गए चौरस ठप्पों का प्रयोग करते थे।

वे सब निश्चित रूप से पटुआ की खेती करते थे, जिसे वे प्रायः लंब रूप व सुप्रमाणित क्षैतिज करघों पर बुनते थे। तांबे का प्रयोग छोटे उपकरणों के लिए

१. ब्रंटन व केटन-थॉम्प्सन, दी बदेरियन सिविलिजेशन, ८२—८।

२. इ० जी० केपर्ट (E. G. Capart), प्रीमिटिव आर्ट इन इजिप्ट (Primitive Art in Egypt), १९०५।

३. बूमगार्टल (Bumgartel), कुल० प्री० ई० (CPE), ३१, प्राग्वंशीय मिस्र में मातृदेवी-उपासना के पक्ष में अनेक तर्क प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण हॉर्नब्लोअर का भी है। ज० ई० आर्क० (JEA), xv, १९२९, ३० आगे।

४. ज० ई० आर्क० (JEA), IX, १९२३, २७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

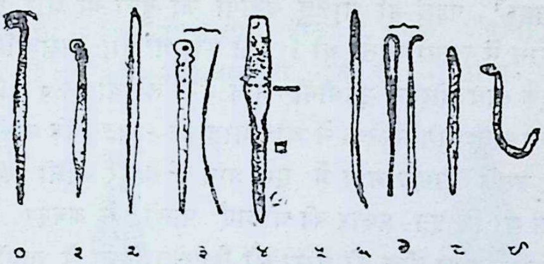

चित्र २०. नक़द से प्राप्त ताम्र के छोटे उपकरण, अम्रतियन पिन १-३, आलपिन व सुई, जर्जियन, ९ मछली पकड़ने का कांटा, प्रारंभिक वंशोय, पेत्री के अनुसार, ½।

होता था। इन उपकरणों में मछली मारने के बर्छे, जो हथौड़ों के द्वारा चद्दर के रूप में परिणत धातु से काट कर बनाए जाते थे, व चित्र २० में प्रदर्शित मोड़कर बनाए गए सिरों वाले शूक (Pins) संमिलित हैं। पर, धातु कभी ढाला नहीं जाता था और प्राकृतिक स्थिति में ही कच्चे धातु को बिना गलाए एकत्र किया जाता था। निपुण संभवतः धातु विज्ञान अब भी अज्ञात था।

खान से निकाले गए अनलाश्म का उपयोग मेलेशाईट (Malachite) तांबा व सोने का संचय और बसाल्ट व सेलखड़ी के पात्रों का निर्माण कुछ हद तक अंतः-सामुदायिक विशिष्टीकरण व उसके अनुसार होने वाले व्यापार का संकेत करते हैं। वादी हंमामत (Hammamat) के तटवर्ती गांवों को यदि वास्तव में अम्रतियन माना जाय तो ये गांव लाल समुद्र की दिशा में जानेवाले सार्थ के मार्ग पर के अवस्थान (Station) रहे होंगे। और वे निश्चित रूप से निर्यात के लिए शिष्ट (Schist) प्रस्तर के कंगनों के निर्माण और पूर्वी मरुस्थल से उपलब्ध मेलेशाईट के वितरण में व्यापृत थे। इससे पूर्व ही तासी व बदेरी कालों में समुद्री खोलियों व मेलेशाईट द्वारा प्रमाणित दूर-व्यापी वाणिज्य के विकास का निदर्शन अब एजियन हिदर एशिया या अधिक संभव अबीसीनिया[1] से ज्वालाकांच (Obsidian) के समय-समय पर होने वाले आयातों, पैलेस्तीन-सीरिया से जुनिपर बेरी (Juniper berries) व कंटीली लकड़ी के, और संभवतः नेक्सस (Naxos) से कुरून पत्थर के आयातों से होता है।

---

१. लूकस (Lucas), अनाले दु सर्विस (Annales du Service) xlviii, १९४७, १२३, वेनराइट (Wainwright) को सुधारता है, एंश्येंट इजिप्ट (Ancient Egypt) १९२७, ८५

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राय: गधा[1] पहले ही पालतू बनाया जा चुका था और इस व्यवसाय में बोझा ढोने के काम में लाया जाता था। जो कुछ भी हो, मिस्रवासियों ने पे-पीरस के लट्ठों को एक साथ जोड़कर उपयोगी नाव बना ली थी (फ० vi ब)। नावों के बिचले भाग में दो चतुष्कोण प्रकोष्ठ थे और सात या आठ जोड़े डांडों द्वारा नाव खेई जाती थी और उसके पिछले भाग में घूमे भाग के सहारे मांझी खड़ा रहता था। पेत्री का विश्वास था कि इस प्रकार की नौकाएँ पालों से अवश्य ही सज्जित रही होंगी। क्योंकि, अन्यथा नील की धारा की विपरीत दिशा में नावों का खेया जाना निष्फल होता। पर, अधिक संभव नावे स्रोत की प्रतिकूल दिशा में रस्सा बाँध कर खींची जातीं थीं। क्योंकि इस तरह को नावें फैली हुई पालों के साथ कभी चित्रित नहीं हुई हैं, जबकि उत्तरकालीन विदेशी नौकायें इस प्रकार प्रदर्शित की गई हैं। इसी व्यापार के साथ उन वर्णमालात्मक संकेतों के विस्तार व दूर-व्यापारी प्रसार को संबद्ध किया जा सकता है, जो हमारे पात्रों पर उत्कीर्ण दीख पड़ते हैं। इन संकेतों के उद्भव अन्तत: पूर्व पाषाणकालीन चिह्नों में खोजना है।

धार्मिक विश्वास की प्रगति अंत्येष्टि संबंधी कर्मकांड के विस्तार द्वारा प्रदर्शित होती है। मरुस्थल के गर्म बालू में शवों का अदभुत संरक्षण नील वासियों की मृत्योपरांत जीवन की वर्तमानता की अस्पष्ट धारणा को सूचित करता है। इससे और दक्षिण, कुछ पत्नियों व दासों की हत्या करके भावी जीवन में सेवा के लिए उनके स्वामी के साथ दफन करने की बर्बरतापूर्ण प्रथा (सती), जिसका पालन नीलीय जनजातियां हाल तक करती थीं, अज्ञात थीं। क्योंकि सादृश्यमूलक जादू (Sympathetic Magic) अपेक्षाकृत अधिक मितव्ययितापूर्ण विकल्प प्रदान करता था। अपने मस्तकों पर जलपात्रों को वहन करने वाली स्त्रियों व नौकरों की मूर्तियां ऐतिहासिक कालों की प्रामाणिक उशब्ती (Ushabeti) मूर्तियों की तरह संभवत: जीवित पत्नियों व सेवकों के स्थानापन्न हैं।

तथापि, मानव का मूक सेवक कुत्ता मृत्यु के उपरांत अपने स्वामी के साथ जाने के लिए बहुधा बाध्य किया जाता था और समाधियों में उसके साथ दफनाया जाता था। पशु जैसे अन्य-धन के स्थान में मिट्टी के प्रतिरूप दिए जाते थे (फलक x a)।

वंशीय मिस्र में समाधि-भित्तियों पर के चित्र मृतक के लिए बलियों के आहरण, दासों के कार्यों व विशिष्ट भोज तथा मृगया के समय उसकी अपनी सुखानुभुतियों का

१. यह एक अम्रतियन भांड पर स्पष्टत: चित्रित है (AZ; lxi, १९२६, १७ व बूमगार्टेल, कल० प्री० ई० ३०), और विंकलर द्वारा वर्णित समसामयिक शिलाचित्रों पर सभवत: उपस्थापित हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चित्रण करते हैं। इस प्रकार के दृश्य मृतात्मा के मात्र नेत्रसुख के लिए ही नहीं, बल्कि, जैसा कि साथ के विवरणों से ज्ञात होता है, उनके अंतर्निहित जादुई गुण के द्वारा उस मृतक को उस तरह की सेवाओं व सुखों का वास्तविक उपभोग कराने के

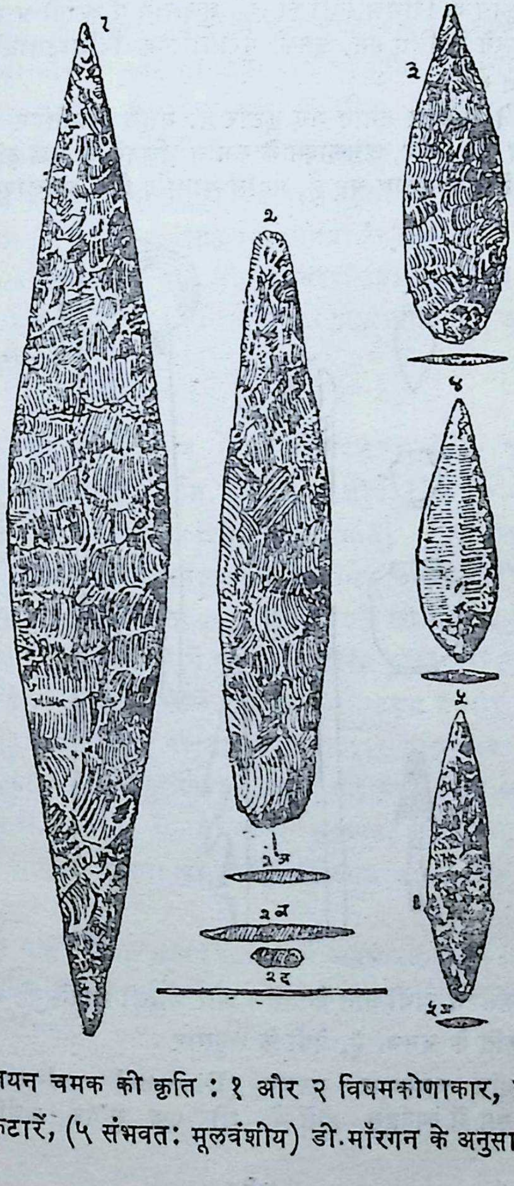

चित्र २१ अम्रतियन चमक की कृति : १ और २ विषमकोणाकार, ३ और ४, 'बाण' की तरह नुकीले कटारें, (५ संभवत: मूलवंशीय) डी. मॉरगन के अनुसार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्मित किए गए थे। प्रागैतिहासिक शवाधि में साधारण गर्त की भित्तियों पर चित्रों के लिए कोई स्थान नहीं था। पर, अंत्येष्टि पात्र व सिलटी रंगपट्ट उन तुलनीय दृश्यों से अलंकृत थे जो उत्तरकालीन स्मारकों की अखंडित शृंखला द्वारा प्राचीनतम चित्रित समाधियों के साथ संबंधित हैं।

इस संस्कृति के विभिन्न संघटकों को सुलझाने व अपनी प्रारंभिक स्थापना का औचित्य सिद्ध करने के लिए हम इसकी पुरातात्त्विक विशिष्टताओं का अब अधिक निकट से परीक्षण करें।

पत्थर को रगड़कर बनाए गए कुठार व वसूले अम्रातियन काल से निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। पर, अनलाश्म के समान जिनमें से कुछ ट्रांचेट (Tranchet) चोट देकर फिर से तेज बनाए गए हैं, पर्याप्त सामान्य हैं। अनलाश्म के अन्य औजारों

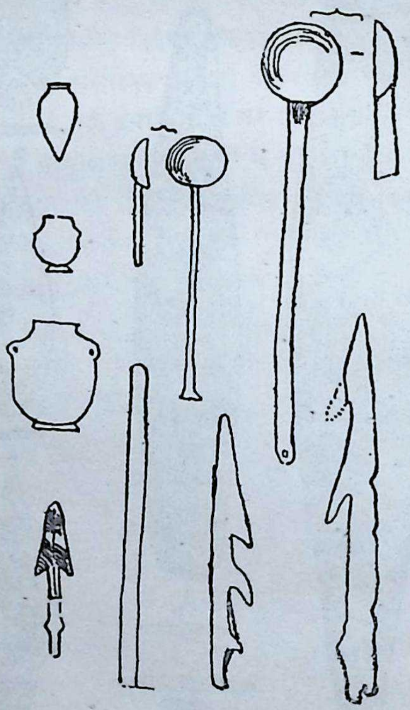

चित्र २२. अम्रातियन हाथी-दांत के बर्तन और मछली मारने की बर्छी तथा जर्जीयन संस्कृति के चमच, हे, पेत्री के अनुसार

में हंसुओं के दांत चक्रवकार खुरचन (Dise-and end-scrapers), उपरोक्त संभवतः छुरों के रूप में व्यवहृत होते थे, और एक सुंदर अर्धविराम चिह्नाकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(Comma-shaped) चाक्रू संमिलत हैं। यह चाकू एक केप्सियन नोक हैं जिसके पूरे एक भाग में दबाव शल्कीकरण[1] (Pressure-blnking) बनाया गया है। बाण के सिरे पर पहले की तरह नतोदर तलवाली या दांतेदार नोकें लगी थीं। पर, कम-से-कम न्यूबिया म, अर्धचन्द्राकार वा समलंबक चतुर्भुजाकार तिरछे वाण के सिरे अब दिखाई[2] पड़ते हैं। उल्लेखनीय प्रकारों में मत्स्यपुच्छाकार (Fish-tailes) फलक (फ० viii अ) जिसकी नोंक को काठ या हाथी दांत की मुठियाँ में लगाकर मूठ बनाई गई है और जो संभवतः विकार का पुट्ठा काटने के लिए प्रयुक्त होता था। और विशाल तिर्यगायत (Shomboid) बर्छा या कटार का फलक (चि० २१) है। इस समय व्यवहृत गदा पर तेज धारवाला पत्थर का चक्र चढ़ा रहता था और कदाचित पत्थर का नोकीला सिरा भी (फ० vii ब, तल)। मछलियाँ रस्सा-बंधो बर्छियों से मारी जाती थीं। ये बर्छियाँ कभी-कभी ताँबे और अक्सरहाँ हड्डो की होती थीं व हमेशा फायूम से प्राप्त बर्छियों से (चित्र २२) अधिक चिपटी होतो थीं। पर खारतूम प्रकारों से अधिक साम्य रखती थीं।

मृद्भांडों के अनेक वर्ग, जो सब उत्तम बदेरियन भांडों से आकृष्ट थे, अब व्यवहृत होते थे। सर्वसाधारण निर्माण, जो कृष्ण शीर्ष (Block-topps) भांड के नाम से अभिहित हैं, लौहाभ रंग (Ferruginouswash) के आंशिक ऑक्सीकरण (Oxidization) के द्वारा इसकी विभूषापद्धति में अधिक ललित बदेरियन प्रकार से साम्य रखता है। पर, इसमें उत्तरोक्त वस्तु (फ० v ब), की सुरुचिपूर्ण तरंगित ओप व सुन्दरता का अभाव है। आकारों में कुप्पियाँ कटोरे, छोटी पेंदी पर स्थित चषक व युग्म पात्र द्रष्टव्य हैं। पर, लंबे-पतले गिलास विशिष्टतम हैं और पूर्णतः आक्सीकारक (Oxidizing) वातावरण में पकाया हुआ ओपदार लाल भांड भूरे पत्थर के रूपांतरीकरण (Reduction) व अनुकरण पर बनाए गए काले भांड के साथ प्रचलित था। फिर भी, उजली व्यत्यस्त रेखाओं वाला मृद्भांड, जो केवल अनुक्रम-तिथि (S. D.) ३१ व ३५ के बीच बनता था, अधिक विलक्षण था। यह तत्त्वतः लाल

१. डिऑस्पॉलिस पवों (Diosplis Parva) में अनलाश्म कर्मके विषय में पेत्री के मूल विवरण की अनुपूर्ति हुजायिन (Huzayyin) के मांड एंड मायर्स, सिमेटरीज ऑफ अमंत, में करनी चाहिए।

२. कम-से-कम न्यूबिया में, आर्क० सर्वे० ऑफ न्यूबिया, रिपोर्ट, १९०७-८, फलक ६२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भांड है जो हल्के उजले रंग के अभिकल्पों से अंलकृत हैं। ये अभिकल्प दो वर्गों से संबंधित हैं। प्रथमत: कुछ पात्र साधारण ऋजुरेख उद्देश्यों से विभूषित हैं। ये उद्देश्य अपने द्वारा विभूषित पात्रों की तरह टोकरियों के मूल रूपों से स्पष्टत: अनुकृत हैं (चि० २३)। दूसरे प्रकार के पात्र मनुष्यों व पशुओं के चित्रों से अलंकृत हैं। इनके

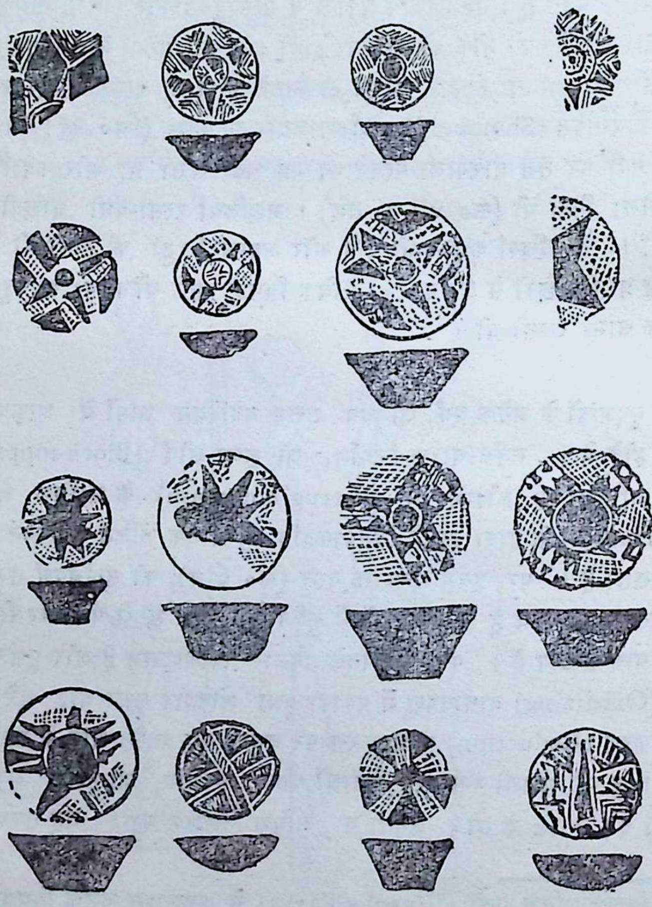

चित्र २३. उजली व्यत्यस्त रेखाओं वाले कटोरे, जो टोकरी के नमूने प्रदर्शित करते हैं, केपर्ट के आधार पर, $\frac{1}{2}$।

विषय में पहले ही जादुई उद्देश्य से युक्त होने का निर्देश किया गया है। स्पष्टतः इन्हें जीवित तुल्य बनाना अभिप्रेत था, पर सदा इनका फल बहुत संतोषजनक नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुआ (फ० vi ब)। इन विचित्र दृश्यों के अपेक्षाकृत अधिक असंस्कृत पूर्वागत रूप लाल ओपदार या काले सिरे के पात्रों पर उत्कीर्ण हैं। कुछ प्रसंगों में मूर्तिकलानुसार (Plastically) निर्मित पशु, साधारणत: हाथी व जलहस्ती, पात्रों के कोट के चारों ओर चक्कर काटते प्रदर्शित किए गए है। ये चित्र और चित्रित जिराफ, उत्तरी अफ्रिका के पुच्छहीन विशाल मेष (Barbary sheep) व बिच्छू नील-घाटी व इसकी निकटस्थ सीमाओं के प्रागैतिहासिक पशु-समूह का जीवंत चित्र हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। उजले व्यत्यस्त रेखान्वित पात्र से संबंध एक दुष्प्राप्य अंत:कृत (Incised) कृष्ण-भांड हैं। यह द्रव्य मुख्यत: न्यूबिया में पाया जाता है। यह शैली में तासी चषकों के समान है। और उन्हीं की तरह फूस के छिक्के में स्थित कद्दू की अनुकृति पर बने कुछ न्यूबियाई पात्रों को छोड़कर (चि० २४) टोकरी के नमूने से प्रेरित हैं।

चित्र २४. अंत:कृत कृष्ण-भांड, ½।

अंत में, अंत:कृत्त बहुलास्थि प्रतिमानों से विभूपित प्रायश: रुक्ष पात्र, जो लगभग प्रारंभिक मेरिम्दे के पात्रों के समान है, अरमंत (Armant) व हंमामिया (Hammamiya) (बदारी) जैसे पारिवारिक स्थलों पर व्यवहृत होते थे।

पात्रों के लिए प्रस्तर का भी सीमित उपयोग होता था। ठीक कोर के नीचे कान की तरह निकली दो मूठों वाले पेंदीदार लंबे अंडाकार चषक व थोड़े

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उदुब्ज पार्श्वों व तिरछे कोरों वाले बेलनाकार घड़े (फ० VI अ) एकमात्र अमराती प्रकार हैं। प्रारंभिक प्राग्वंशीय प्रस्तर-पात्रों के लिए प्रयुक्त द्रव्य में केवल बारीक परतदार शिलाएं, मुख्यतः भूरी चट्टान व सेलखड़ी थीं। अन्य प्रकार के पात्र शुतुर-मुर्ग के अंडे की खोली या हाथी-दांत के बनते थे।

प्रसाधन सामग्री की ओर मुड़ने पर हम पाते हैं कि आँखें अब भी मेलेशाइट (Malachite) से रंगी जाती थीं। यह उन सिलेटी रंग-पट्टों पर घिसा जाता था जो अब या तो तिर्यगायत हैं (फ० VII ब, नीचे दाहिनी ओर) या उनपर पशुओं की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं (चि० २५)।

सामान पुछिल्लों से सजे छोटे थैलों में ढोया जाता था (फ० VIII)। ये पुछिल्ले या तो वास्तविक नोकीले हाथी-दांत, या उसी आकार के हाथी-दांत के सरकन पर सुकृत्त (Well-carved) प्रस्तर प्रतिमान हो सकते हैं। शरीर की त्वचा

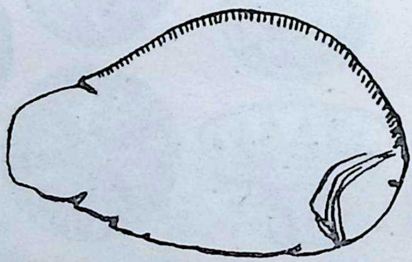

चित्र २५. मत्स्याकार सिलेटी रंगपट्ट, नक़द $\frac{1}{2}$।

पर अनेक प्रकार के प्रतिरूप उत्कीर्ण किए जाते थे। लंबे दांत वाले हाथी-दांत के कंघे बदेरियन कंघे की तरह बाल या कृत्रिम केश में खोंसे जाते थे और हाथी-दांत के चूक उसी तरह धारण किए जाते थे। शुतुरमुर्ग के अंडे की खोली के चक्कों, अकीक, सेलखड़ी स्फतोय (Felsper) या हरे कांचित मनकों व समुद्री खोलियों या मूंगे के हार कंठ में पहने जाते थे। संभवतः टोटेम चिह्नों या जादुई ताबीजों के रूप में स्थित पशुओं, पक्षियों या मछलियों को उपस्थित करने वाले सिलेटी लोलक इनसे संबंधित थे। भुजाएँ खोली, हाथी-दांत या कछुए की खोली के बाजुओं से अलंकृत की जाती थी। छोटी मूर्तियों के आधार पर निर्णयानुसार लीबिआई खोली (Libyan Sheath) या शिश्नावरण (Penistasche) व उनके बाल में लगे पंखों को छोड़कर पुरुष बिल्कुल नंगे रहते थे (फ० VII अ मध्य)। पर, वे घास के बने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चप्पल पहनते थे। स्त्रियाँ पटसन का लबादा पहनती थी और कम-से-कम कभी-कभी कृत्रिम बाल भी धारण करती थी।

कब्रें छिछले अंडाकार गर्तों के रूप में थी जिनमें शव दुहरा दफनाया जाता था। कभी-कभी एक से अधिक शव एक ही कब्र में पाए जाते हैं, और अन्य स्थितियों में अस्थियाँ अस्त-व्यस्त रूप में पाई जाती हैं। जिससे यह आभास होता है कि शवाधान-त्वचा के सड़ जाने पर ही हुआ था।

मृतक को अगामी जीवन के लिए पूर्ववर्णित जादुई उपकरणों के साथ अस्त्र-शस्त्र, अलंकरण व खाद्य पदार्थ उदारतापूर्वक दिए जाते थे। छोटी मूर्तियां विभिन्न वर्गों से संबंधित हैं। प्रथमतः हमें हाथी-दाँत के लंबे नोकीले दांत मिलते हैं जो सिर्फ मस्तक प्रदर्शित करते हैं (फ० V अ)। बाद में हाथी-दाँत ही की बनी पूरी छोटी

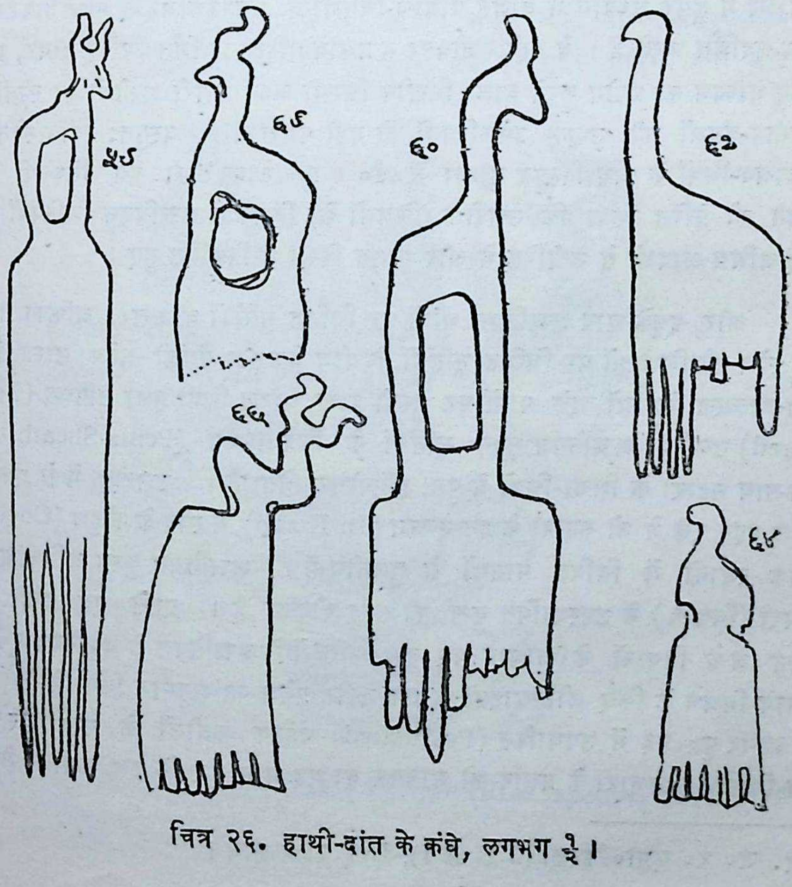

चित्र २६. हाथी-दांत के कंघे, लगभग ½।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मूर्तियों का एक संघात मिलता है। पूर्वोक्त उदाहरण लालित्यपूर्ण हैं व वास्तविकता के साथ उत्कीर्ण हैं। मिट्टी या कादों की बनी छोटी मूर्तियां साधारणतः बहुत रुक्ष हैं। उत्थित व उपविष्ट प्रकार भी पाए जाते हैं और इनकी भुजाएँ ऊपर को ओर उठी हुई या वक्षःस्थल के वृत्ताकार मुड़ी हुई हो सकती हैं (फ० VII व VIII)।

पूर्वगामी विशिष्टताओं द्वारा परिभाषित समष्टि में स्थायी जीवन (Sedeutary Life), और इसको संभव बनाने वाले अनाज व पालतू पशु, उत्कृष्ट अनलाश्मकर्म, कृष्णशीर्ष मृद्भांड, सिलेटी रंगपट्ट, हाथी-दाँत के कंधे व शूक-खोली के कंगन व काचित मनके ये सभी बदेरियनों के आविष्कारों के ठीक विकसित रूप हैं या न्यूनाधिक रूप में उनसे साक्षात उद्भूत हैं। दूसरो ओर, श्वेत व्यत्यस्त रेखाओं वाले पात्रों पर चित्रित या कृष्ण-शीर्ष-पात्रों पर या सिलेटी रंग पट्टों पर अंतःकृत्त दृश्य शैली व मनोवृत्ति में दूसरे अध्याय में वर्णित पाषाण-चित्रणों व उत्कीरणाओं के साथ निकटतम संबंध प्रदर्शित करते हैं। वे वही सजीवता व प्रभाववादिता प्रदर्शित करते हैं। पर, एक नवीन माध्यम का प्रयोग करने वाला मिस्रीय शिल्पी अपने उत्तरी अफ्रीकी या स्पेनीय-व्यवसाय-बंधुओं की उत्कृष्ट उपलब्धियों को नहीं पा सका। वस्तुतः पूर्वीय स्पेनीय शिलाश्रय-चित्रों के साथ विस्तृत तुलना ने ई० एस० टाम्स[1] को इस निष्कर्ष पर पहुँचने को प्रेरित किया कि उत्तरोक्त (चित्रणों के) चित्रकार अम्रतियन शिल्पियों की तरह अभिन्न आदर्शों से उत्प्रेरित थे और समान दिशा में विकसित हुए।

और, इसके बाद अम्रतियन भांडों पर चित्रित मूर्तियों व उत्तरी अफ्रिका तथा पूर्वी स्पेन की शिलाओं पर चित्रित मूर्तियों के बीच वेशभूषा संबंधी अनेक साम्य हैं। श्वेत व्यत्यस्त रेखाओं वाले पात्रों पर पुरुषों द्वारा धारण किया हुआ सपिच्छ (Feathered) उष्णीष अम्रतियन सूक्ष्म मूर्तियों के शिश्नावरण (Penis Sheath) के साथ-साथ सहारा के शिला-चित्रों में पुनः दृष्टिगोचर होता है। उत्तरोक्त में से एक ने पायल पहन रखे थे जो सहारा के इन-एजरन (In-Ezzan), व स्पेन के कोगुल (Cogul) नामक स्थानों में चित्रित पायलों से तुलनीय हैं। अम्रतियन कुत्ता अधिकांश में अलपरा (चित्र ६) में उपस्थापित कुत्ते की तरह दीखता है। इनसे एवं इन्हीं के समान अन्य विचारों के आधार पर कुछ व्यक्तियों ने अम्रतियन के बदेरियन पूर्वजों के साथ मिश्रण के लिए लीबियाइयों के एक नवीन प्रवेश का अनुमान किया है। पर इसी प्रकार पृ० २३ में उपधारित (Postulated) पर्यटक कबीलों के उस विस्तार पर्यंत मिस्रीय भूषाचारों के प्रसार को मानकर या यह मान कर कि इन कबीलों में से

---

१. ज० र० एंथ्रा० ईस्टी (J R A I), Lvi, ३८५ आगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुछ आदितः प्राग्वंशीय मिस्रवासियों के साथ संबद्ध थे-चाहे दोनों ही दूरतर दक्षिण से गए हों अथवा खास सहारा में उत्पन्न हुए हों इन तथ्यों की व्याख्या की जा सकती है।

जर्जी काल ने उच्च मिस्र की ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था के स्वरूप परिवर्तन, नूतन औद्योगिक प्रक्रियाओं की उद्भावना या प्रसार और परिमाण व विस्तार क्षेत्र में 'विदेशीय व्यापार' के विस्तार देखे। इन तत्त्वों ने द्वितीय अर्थ-क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया साथ ही यह एक नई पुरातात्विक संस्कृति से परिभाषित होता है। इस संस्कृति का जन्म मध्य व उच्च मिस्र के अम्रतियन उपकरण पर उन विदेशी परंपराओं की अभिव्यक्ति का अधिरोपण है जिनमें कम-से-कम कुछ स्पष्टतः एशियाई हैं और इससे नूतन जातीय तत्वों का अंतः प्रवेश सूचित होना चाहिए।

अम्रतियन संस्कृति कृषि व आहार संचय की मिश्रित अर्थ-व्यवस्था पर आधारित थी। जर्जी कालों[1] में कृषि कृषक वर्ग का मुख्य आधार बनी और अब

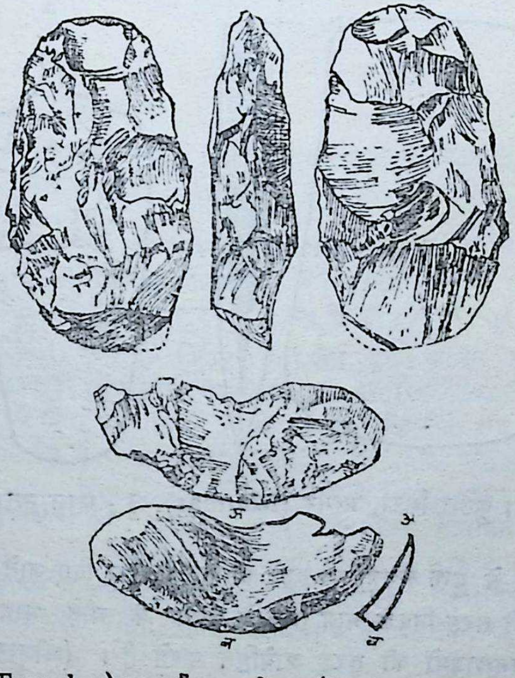

चित्र २७. ट्रन्चेट (Tranchet) कुठार व पुनस्तेजन (Resharpening) शल्क, अरमंत, ३/५।

१. बूमगार्टेल (Baumgartel), कल् प्री० ई० (CPE), ४६

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संभवतः एक प्रकार की कृत्रिम सिंचन व्यवस्था पर आधारित थी। शिकार के हथियार अपेक्षाकृत दुष्प्राप्य हैं और कब्रों में यदाकदा निक्षिप्त किए जाते थे। कुत्ते अपने मालिकों के साथ अब नहीं दफनाए जाते थे।

अनलाश्मकर्म में सांक्षेत्रिक कोरों से चोट देकर बनाए गए फलक दोनों तरफ छांटे गए शल्कों व आंतरिकों से अंधिक्रांत किए बिना सर्वसामान्यतर प्रयोग में लाए गए। पर, दबाव-शल्कन (Pressuee-Flaking) उत्कृष्टता की पराकाष्ठा पर पहुँच गया। कुठार ट्रान्वेट चोट (चि० २७ अ) देकर नियमित रूप से तेज किए जाते थे। अधिक अर्थवत्ता के साथ सुबोध धातु-विज्ञान-संबंधी सिद्धांत ज्ञात व प्रयुक्त होते थे। दुर्लभ होने बावजूद ढाले गए धातु के औजार व हथियार व्यवहार में लाए जाते थे। फैलते हुए फलकों वाले चिपटे कुठार (चि० २८, १) तिर्यंगायत कटार और विशिष्टीकृत चाकू (चि० २८, २) अब ठठेरों द्वारा ढाले जाते थे। कटार

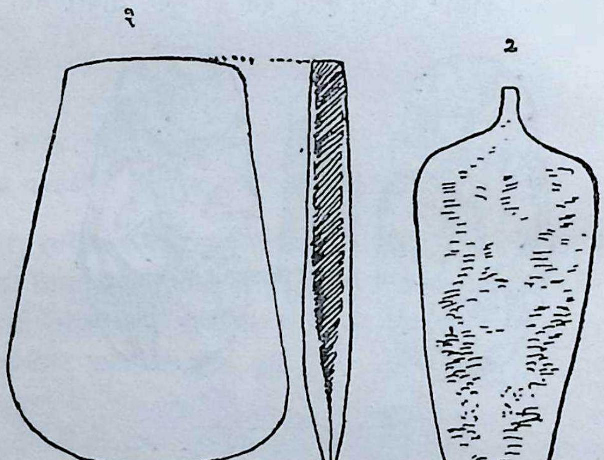

चित्र २८. तांबे का कुठार-सिरा, मतमर (Matmar), $\frac{1}{3}$, खाल उतारने का चाकू $\frac{1}{3}$।

अर्धचंद्राकार तल से युक्त लकड़ी या हड्डी की मूठ में बैठा दिए जाते थे (चि० २९)। दोनों ओर सींग की तरह निकले भाग तांबे के फलक के चौड़े भाग को अप्रतियन मत्स्यपुच्छाकार अनलाश्मों की तरह आवेष्टित करते हैं। (औजार) चढ़ाने की यह पद्धति धातु विज्ञान में मेसोपोटामिया की परंपराओं से मिस्रीय परंपरा को पृथक् करने में सहायता देती है। इस काल के मध्य तक कम-से-कम फलक बीच में ठोस रीढ़

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देकर मजबूत वनाया जाता था और इस काल के अंत में लंवा वनाया जाता था जैसा कि (चि० ३०) में दृष्टिगोचर होता है। गांठदार सिरावाला शूक (चि० २१, १) जो मध्य यूरोप में कांस्य-युगीन शृंखला में सबसे आगे हैं, इस काल[1] में संभवतः व्यवहृत

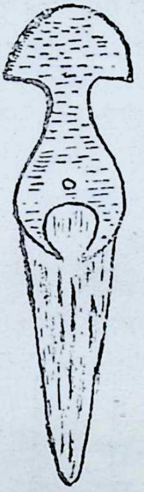

चित्र २९. हाथी-दांत की मूठ वाला जर्जीयन तांवे का कटार (पुनरुद्धृत) अल अम्रा (El Amrah), $\frac{1}{4}$।

होता था। इन उत्पादनों का आविष्कार अवश्य ही पूरे समय काम करने वाले विशेषज्ञों ने किया होगा, यद्यपि प्रायः अब भी वे स्थायी रूप से विभिन्न ग्रामों में बसने के बजाय पर्यटक व्यापारी-धातुकारों के रूप में काम करते थे।

जेस्सो (Gesso) व फायेंस (Fayence) जैसे नूतन कृत्रिम पदार्थ भी बनाए जाते थे। उत्तरोक्त, जो काँच द्वारा एकत्रीकृत बालुकांतरिक (Sand-core) है, पहले ही वदेरियन काल में व्यवहृत काचित प्रस्तर का एक विकसित रूप है। क्योंकि यह मनकों व लोलकों के रूप में ढाला जा सकता था। पर मिस्र, जहाँ पश्चिमी मरुस्थल में वादी नात्रोन (Wadi Natron), अपेक्षित क्षार के निक्षेप प्राप्य हैं, यह सुविधापूर्वक उत्पादित हो सकता था। इसी प्रकार प्रस्तर-पात्रों का उत्पादन बढ़ा, और अब पारफेरी (Porphyry) जैसे कठोरतम पाषाण भी दक्षता के साथ काम में लाए गए। पर ये भी निश्चित रूप से जर्जी कृषकों द्वारा सुविधापूर्वक उत्पादित अतिरिक्त खाद्य पर आश्रित समग्र-कालिक (Full-time) विशेषज्ञों के ही उत्पादन रहे होंगे।

१. ब्रंटन व केटन-थांपसन (Brunton and Caton-Thompson), बदेरियन सिविलिजेशन (Badirian Civilization), फलक liv, v, कब्र से १६, ४, चाइल्ड, डॉन (Childe, Dawn), ११७, व पृ० १५९ तल में।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कच्ची मिट्टी के ठोस ऋजुकोण-घरों ने प्राचीनतर पवनरोधों (Wind-screen) व गोल झोपड़ियों का स्थान लिया। अल-अम्रा (El-Amrah) से प्राप्त एक नमूना एक आवास को उपस्थापित करता है, जिसके २५ फु० × १८ फु० लंबा-चौड़ा होने का अंदाजा लगाया गया है। इसमें एक तरफ के लंबे पार्श्व में स्थित लकड़ी के चौखट वाले द्वार से प्रवेश किया जाता था। कुछ गांवों ने अब तक छोटे नगर के विस्तार

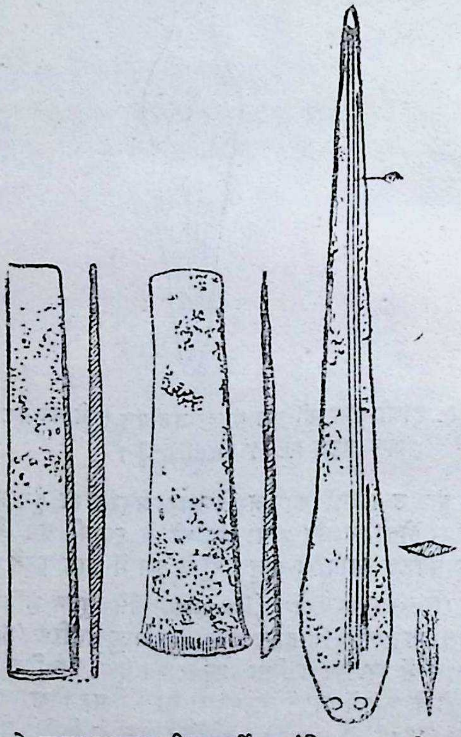

चित्र ३०. नकद से प्राप्त उत्तरकालीन जर्जी प्रारंभिक फराऊनी वसूला व कटार के फलक, ½, पेत्री के अनुसार।

को प्राप्त कर लिया होगा। नकद (Naqad) के अतिरिक्त, जो अब भी समृद्ध था, श्येन नगर (Falcon-town) हेराकान्पोंलिस को (Hierakonpolis), जिसका मलबा तीन चौथाई मील[1] में व्याप्त है, हम इस काल में रख सकते हैं।

१. Brunton in Studies presented to F. Ll. Griffith, London, १९३२, २७२—५.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्वभावतः ताँबे का नियमित उपयोग वास्तविक नील घाटी के बाहर के प्रदेशों के साथ निरंतर संपर्क पर आश्रित था, कच्चा धातु चाहे अनन्य रूप से पूर्वी मरुस्थल में या पहले से ही सिनाई में भी निकाला जाता हो। वादी हमांमत व रेगिस्तान की अन्य पगडंडियों से होकर यातायात निश्चित रूप से कायम था और नदी के एक छोर से दूसरी छोर तक खान से निकाले गए अनलाश्म, प्रस्तर-पात्रों एवं अन्य स्थानीय उत्पादनों के वितरण की निश्चित व्यवस्था की गयी थी। अब दूरव्यापी व्यापार के द्वारा उत्तरी अफ्रिका में एशिया के उत्पादन आने लगे। इसी दिशा में चाँदी, सीसा व नीलोपल (Lapis lazule) आए। यदि यह माना जाय कि नीलोपल उत्तरी अफगानिस्तान के एकमात्र प्रमाणित निक्षेप, बदक्शां (Badaahan) से आया तो प्रस्तर अवश्य ही मेसोपोटेमिया से आया होगा। अतः इसमें कोई आश्चर्य नहीं यदि उस प्रदेश से निर्मित वस्तुएं नील पहुँचीं। वस्तुतः नील-घाटी में उपलब्ध दो वेलन के आकार की मुद्राएं निश्चित रूप से लगभग इस युग के मेसोपोटेमिया में निर्मित जान पड़ती हैं, जबकि इनकी एक स्थानीय प्रतिकृति अनुक्रम तिथि (S.D.) ४६[१] में रखी गई एक जर्जी कब्र से प्राप्त हुई है।

इन आयातित सामग्रियों व प्राप्य वस्तुओं से साक्षीकृत वाणिज्य निस्संदिग्ध रूप से यातायात के लिए गधों के व्यवहार पर निर्भर था। इस पशु की हड्डियां वस्तुतः अरमंत (Armant) के निकट इस काल की बस्तियों में पाई गई थीं। ऊंट का भी उपयोग में लाया जना अधिक संदिग्ध है। अबूसिर एल-मेलेक (Abusir El-Meleq)[१] से उपलब्ध एक छोटा नमूना एक ऊंट की उपस्थापित करता प्रतीत होता है। पर, ऐसा होने पर भी इससे इसे पशु का पालतू बनाया जाना सिद्ध नहीं होता है। और न तो यह पशु आवश्यक रूप से एशियाई ही था, क्योंकि ऊंट की हड्डियों नवतम युगीन (Pleistocene) कालों में उत्तरी अफ्रिका में पायी जाती हैं।

इन औद्योगिक व आर्थिक प्रगतियों ने जर्जी मिस्र की संपत्ति में वृद्धि की। पर, प्रायः इस संपत्ति का वितरण इससे पहले की अपेक्षा अधिक विषमता के साथ हुआ था। कब्रों के विस्तार व उपस्कर में वैषम्य कम से धनिक व निर्धन जनों में विभाजन सूचित करते हैं। अधिकांश जर्जी कब्रें सामान्य अमराती कब्रों की अपेक्षा

१. फ्रैंकफोर्ट, सिलिंडर सील्स, २९३, तु० पृ० १२७ तल।

२. मांड एंड मायर्स, सिमेटरीज ऑफ अरमंत, २५५, स्कार्फ, अबूसिर एल-मेलेक, ४०, फलक २४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अधिक लंबी व अधिकतर ऋजुकोणीय हैं। अनुक्रम तिथि ४० के बाद समृद्धतर उपहारों, विशेषतः खाद्य व पेय के कलशों को जगह देने के लिए इनमें से कुछ को और भी बढ़ाया गया। कुछ स्थितियों में इस प्रकार के उपस्कर को रखने के लिए गर्त के एक भाग में एक टांड (ledge) छोड़ दी गई थी और कुछ में खास गर्त ही अंत्येष्टि उपहारों से भर दिया गया होगा, जबकि शव को रखने के लिए कठोर मरुस्थलीय भूमि को काट कर एक खोह बना ली जाती थी, जिससे एक प्रकार की गर्त गुफा-समाधि बन जाती थी। या फिर यह गर्त के तल [1] में गाड़े हुए सीधे खूंटों के सहारे एक सरपत की दीवार से दो प्रकोष्ठों में विभक्त कर दिया जाता होगा। इस तरह की विषमताओं के बावजूद उपस्कर में विषमता इस प्रकार की नहीं है जिससे कि जर्ज़ी ग्रामों का सरदारों व सर्वसाधारणों के रूप में विभाजन साबित हो सके। जितना हम जानते हैं, इसके आधार पर यही कहा जा सकता है कि वे अब भी जनतांत्रिक टोटेम खेलों के अधिकार में रहे होंगे।

ध्वजों से युक्त नौकाओं के चित्रों वाले अलंकृत पात्र (चि० ३४) वस्तुतः इस काल से संबंधित हैं। अधिकांश नौकाएँ ऐतिहासिक कालों में मिस्र के जातिनामों (Nomes) के प्रतीकों से साम्य रखती हैं, जहाँ दो या इनसे अधिक नौकाएँ एक ही पाल पर चित्रित हैं। इनके विभिन्न चिह्न हमेशा वे ही हैं जो निकटवर्ती जातिनामों[2] के योग्य हैं।

अभी-अभी संक्षेप में वर्णित जर्ज़ी काल की विभेदक विशेषताओं को केवल एक नियमित शिल्प वैज्ञानिक व आर्थिक विकास का द्योतक माना जा सकता है। पर, उपकरणों व अस्त्रों, वेशभूषा या आभूषणों के प्रकारों (Fashions), शवाधान संस्कारों व कलात्मक अभिरुचि में कुछ नवीनताओं की व्याख्या इस प्रकार संभव नहीं है। ये सिर्फ विदेशी परंपराओं का मिश्रण, नवीन जातीय तत्वों का प्रवेश और प्रायः राजनीतिक विजय भी सूचित करती प्रतीत होती हैं। निम्नलिखित लक्षणों से अतीत से संबंध-विच्छेद अत्यधिक स्पष्टता के साथ सूचित होता है। नाशपाती के आकार की गदा चक्राकार प्रकार का स्थान लेती हैं। अ० ति० (अनुक्रम तिथि ४२)। यह प्रकार बाद में सिर्फ पूजा पदार्थ के रूप में रह जाता है। मत्स्य पुच्छाकार फलकों का स्थान (U) के आकार के तल से युक्त व्ही (V) तलवाले अबाबील की पूँछ के

१. अल अम्रा (El Amrah), ७।
२. न्यूबेरी (Newberry), ए० आर्के० एन्थ्रॉ० लिव० (LAAA), i, १८, v, १३४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकार के फलक लेते हैं (अ० ति० ३२) (चि० ३१)। कृपाणाकार चाकू (चि०।३२) अ० ति० ४१ में विराम चिह्नाकार प्रकार को व्यवहार-च्युत कर देते हैं। अनलाश्म

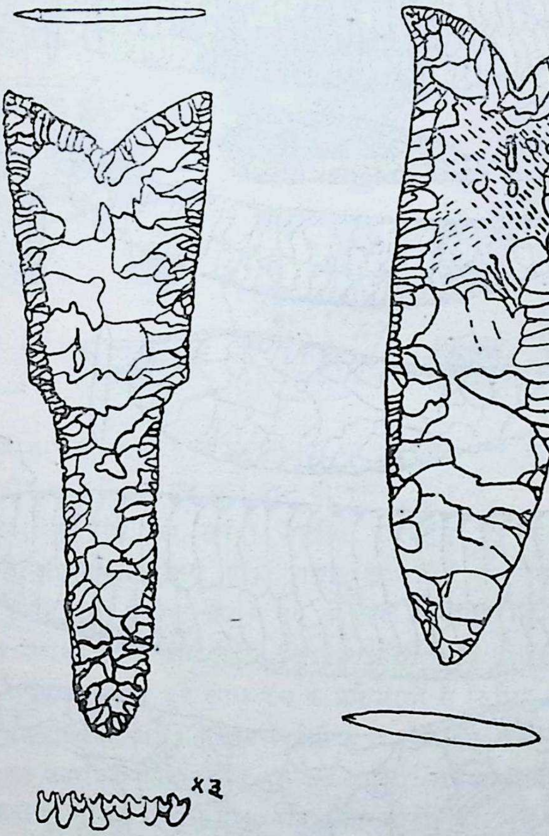

चित्र ३१. व्ही (V) के आकार के तलवाले अनलाश्म के फलक, नकद (Naqada) पेत्री के अनुसार, ½।

के कटार प्रचलित होते हैं और नतोदर तलों वाले वाण सिरे व्यवहार-बहिर्गत ह जाते हैं। पर, छेनी के आकार के फलकों से युक्त वाण मध्य (कालीन) मिस्र में भी समय-समय पर दृष्टिगोचर होता है। अ० ति० ४३ के बाद छोटी मूर्तियाँ अब मिट्टी की नहीं बनती हैं और अ० ति० ४५ के बाद न हाथी दाँत की ही खरीदी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जाती हैं। पर, मिट्टी व पत्थर के बर्तन पशुओं के आकार के बनते हैं, और हाथी-

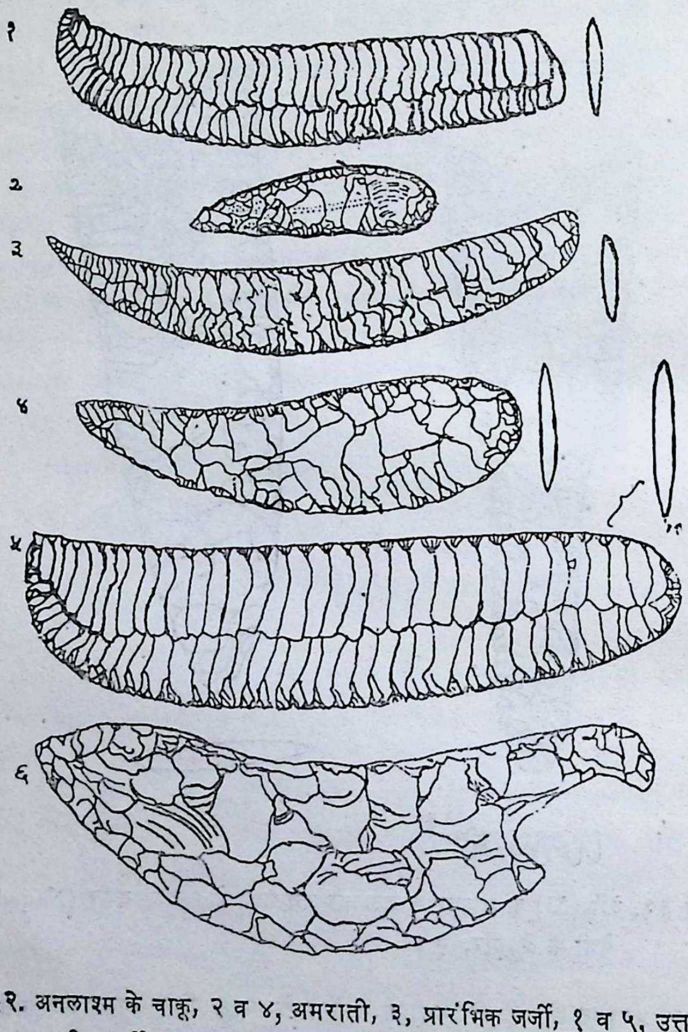

चित्र ३१. अनलाश्म के चाकू, २ व ४, अमराती, ३, प्रारंभिक जर्जी, १ व ५, उत्तर-कालीन जर्जी, ६, प्रारंभिक फराऊनी, $\frac{१}{२}$।

दांत की मूर्ति बनाने वाला अब अपना ध्यान अम्राती संस्कृति में अपरिचित तावीजों व चमचों के निर्माण की ओर केंद्रित करता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

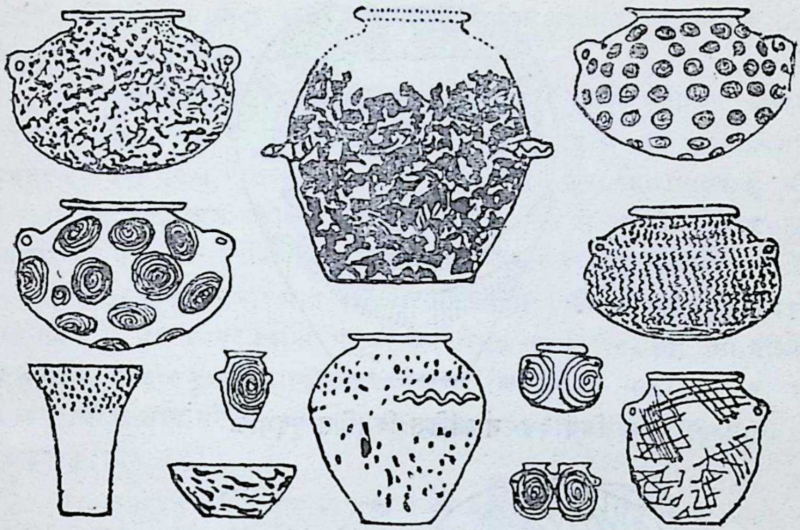

चित्र ३३. आकार व अलंकरण में प्रस्तरपात्रों का अनुकरण करने वाले विभूषित पात्र और मध्य में तरंगित मूठों वाले दो कलश, ¼।

पारिवारिक पात्र, जो सर्वदा जातीय परिवर्तन के अत्यधिक संवेदनशील निदर्शक रहे हैं, आमूल परिवर्तित हैं। यद्यपि कृष्णशीर्ष व लाल ओपदार भांडों का उत्पादन जारी रहता है, पर अब ये नए आकारों के वाहक नहीं रहते है, जबकि श्वेत व्यत्यस्त रेखाओं वाला पात्र पूर्णतः व्यवहार वहिर्गत हो जाता है। आदर्शभूत पात्र के रूप में इसका स्थान भूरे लाल रंग के प्रतिमानों से चित्रित हल्के भूरे रंग की मिट्टी के पात्र, तथाकथित अलंकृत भांड ले लेते हैं। शिल्पतः इस प्रकार की हल्के रंग की वस्तु का उत्पादन सहज-रंजित (Self--coloured) भांडों में निहित परंपराओं से भिन्न परंपराएँ सूचित करता है। विभूषित भांडों की वंश-परंपरा, जैसा कि इनके आकारों, विशेषतः अधःकर्तित (Under cut) किनारों व लंबी नली के आकार को मूठों से पता चलता है, चर्मपात्रों व वंशपात्रों के बदले प्रस्तर-पात्रों में अंवेष्टव्य है। प्राचीनतर पात्रों पर बने प्रतिरूप रुखड़ी परत वाले प्रस्तर पात्रों के बहुरंगी धब्बों या फूस के बने रक्षणात्मक बाहरी आवरणों, जिनमें चियांती कुप्पियाँ या आजकल के अदरख रखने के बरतन (Ginger jars) रखे जाते थे, का अनुकरण करते हैं। और वस्तुतः अनेक शवाधियों में ऐसे प्रस्तर पात्र हैं जो आकारतः अपनी मिट्टी की प्रतिकृतियों से सटीक साम्य रखते हैं और पूर्वतर काल की प्रतिकृतियों से अपने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

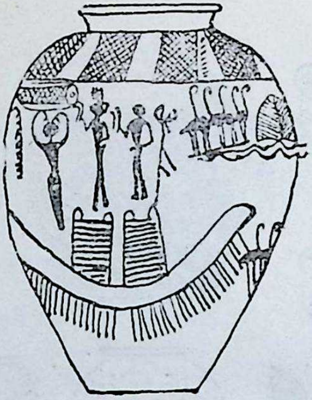

चित्र ३४· नोकांकित विभूषित मृद्‌भांड

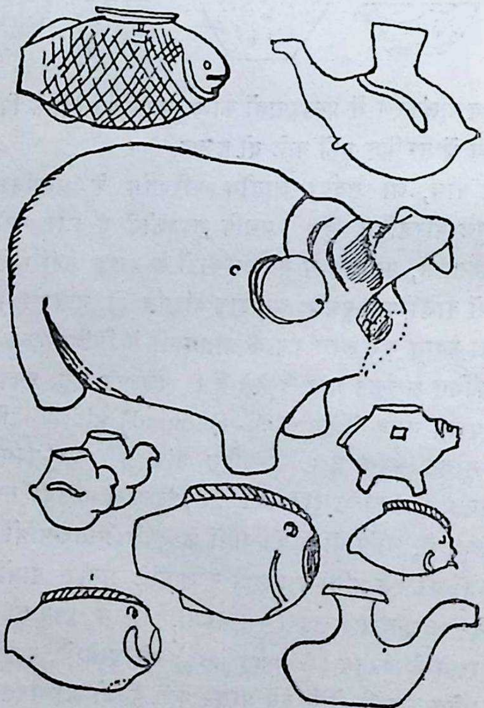

चित्र ३५. पश्वाकार (Theriomorphic) वा टोंटीदार बर्तन, १/४, केपर्ट (Capart) के अनुसार।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकार व चित्र-विचित्र रुखड़ा परतों वाले पत्थरों के लिए पक्षपात इन दोनों के द्वारा पृथक् कृत हैं (फ० IX अ)।

इसके अतिरिक्त हमें तरंगित मूठों वाले घड़े मिले हैं जिनके वृद्धोन्मुख अवहाम ने पैत्री को अनुक्रम-तिथि-निर्धारण के लिए (फ० ix ब) प्रथम आधार प्रदान किया। तदनंतर हमें बड़ी संख्या में रूखड़े मृद्भांड मिलते हैं जिनमें भूसा मिला हुआ है और जो साधारणत: हल्के लाल रंग के हैं और प्राय: नोकीले तल से युक्त हैं। और कुछ टोटीदार घड़े एकाध दो मूठोंवाले बरतन व पशु के आकार के पात्र भी उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार के प्राण्याकार पात्र (Theriomorphic) विदेशी प्रभाव के द्योतक समझे गये हैं। पर, इनपर चित्रित पशुओं में निश्चित रूप से जल-हस्ती जैसा नीलीय वर्ग संमिलित है और कुछ प्राण्याकार रूप ठीक उन चित्र-विचित्र पत्थरों के व उन विलक्षणताओं के साथ बने हैं जो अन्य रूप में मध्य-प्राग्वंशीय-प्रस्तर पात्रों के वैशिष्टय हैं (चित्र ३५)।

अ० ति० ४५ के बाद विभूषित पात्रों पर प्रकृति, पौधों, पशुओं व पोतों से से लिए गए विषय भी चित्रित हैं और प्राचीनतर श्वेत व्यत्यस्त रेखाओं वाले चित्रण की प्राकृतिकता व तारुण्य के विपरीत इन विषयों का उपस्थापन अब अमूर्त व रूढ़िग्रस्त हैं।

वेषभूषा व प्रसाधन की वस्तुओं में कोई कम मौलिक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं होते हैं। अ० ति० ४२ के बाद लंबे दांत वाला कंधा बिल्कुल अदृश्य हो जाता है। इसका स्थान छोटे-छोटे दांत वाले खुरखुरे कंघे या केश-शूकों (Hair-pins) के

चित्र ३६. फलक की मूर्तियां, नकद, १/२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साथ इन के मिलित रूप लेते हैं। अ० ति० ४० में आयाताकार सिलेटी रंग पट्ट अप्रचलित हो जाता है और इसके साथ-साथ मेलैशाइट के विभूषित थैलों को अलंकृत करने वाले अनेक पुछिल्ले व हाथी-दांत के नुकीले सामान भी व्यवहार-बहिर्गत हो जाते हैं। फिर भी, आँखे अब भी मेलैशाइट से रंगो जाती थीं और इसको रगड़ने के लिए पश्वाकार रंग-पट्ट अब भी व्यवहृत होते थे।

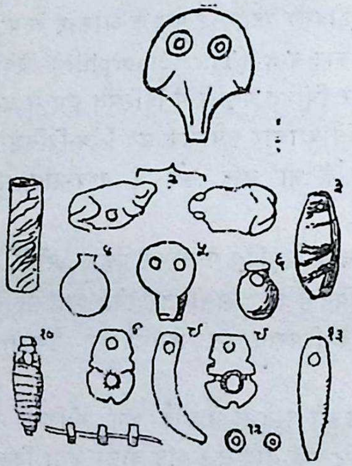

चित्र ३७. तावीजें : १, सांड का सिर; २, मेढ़क; ८, पंजा; वगैरह, अ० ति० ६५, $\frac{3}{4}$, पेत्री के आधार पर।

उपासना व कर्मकांड के क्षेत्र में हाथी-दांत की प्रकृति वादी सूक्ष्म मूर्तियाँ फलक मूर्तियों के रूप में रूढ़िग्रस्त कर दी गयीं (चि० ३६)। यह प्रकार अंत में मिनोवांक्रीट में गृहीत हुआ। मनकों को साड़ी के सिरों (प्रथम तिथित उदाहरण अ० ति० ४६), मक्खियों (अ० ति० ४२) श्येनों, व अन्य प्राणियों (चित्र ३७, ८) के आकार में तावीज के रूप में उत्कीर्ण किया गया, जिससे इनकी जादुई शक्ति बढ़ गई।

शवाधान संस्कारों में आमूल परिवर्तन हुआ। अब नियमित पूर्वाभिमुखता का पालन नहीं किया जाता है। सामूहिक शवाधान बंद हो गए हैं। कुत्ते अब अपने स्वामियों के साथ दफनाए नहीं जाते हैं। मकबरों में हथियार अब पहले की अपेक्षा कम पाए जाते हैं। आभूषण, गमले और बरतन-निक्षेपण के समय जान बूझ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर तोड़ दिए गए हैं—कर्मकांड विधि के अनुसार वध कर दिए गए हैं। खुद कब्र

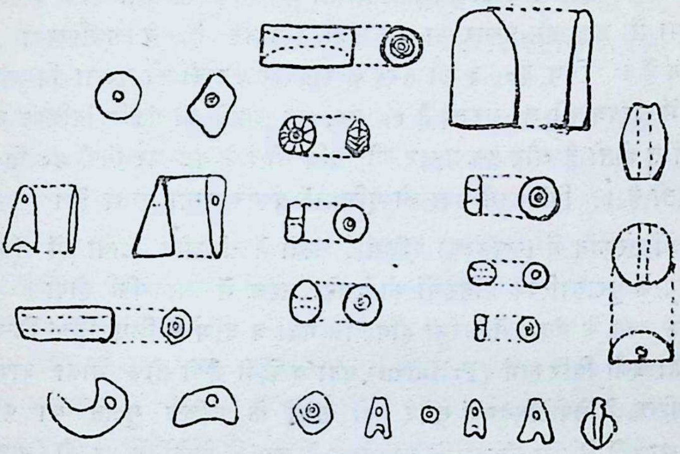

चित्र ३८. प्राग्वंशीय पत्थर के मनके; नोचे की पंक्ति में पंजे व मक्खी के आकार के ताबीज।

नए रूप में परिणत हो गई और जैसा कि पहले कहा गया है— धीरे-धीरे परिवृंहित कर दी गई।

स्वभावत: अम्राती व जर्जी काल के बीच पूर्ण विच्छेद नहीं होता है। उच्च मिस्र में तुरत गिनाई गईं अभिनवताएं क्रमश: पदार्पण करती हैं। उदाहरणार्थं कृष्ण-शीर्ष-भांडों का निर्माण चलता रहता है। फिर भी, अ० ति० ५० के बाद इनमें नवीन आकारों का विकास नहीं होता है। इस हद तक यह कहना समीचीन होगा कि किसी विदेशी संस्कृति ने अम्राती संस्कृति का स्थान ले लिया। इन अभिनवताओं के समीपतम स्रोत के लिए अधिकांश अधिकारी विद्वान उत्तर की ओर दृष्टिपात करते हैं। जर्जी संस्कृति न्यूबिया में, जहाँ अम्राती परंपराएँ बद्धमूल रहीं, कभी प्रविष्ट नहीं हो पाई। इसके विपरीत, निकटतम अम्राती गाँव से लगभग १३० मील उत्तर जर्जह (Gerzeh) व अबूसिर एल-मेलेक (El-meleq) में बिना किसी अभिज्ञातव्य संमिश्रण के यह उपस्थापित होती है। और, अनेक जर्जी अभिनवताओं के प्रसिद्ध लेवांतासइनी सामानांतर उपलब्ध होते हैं। तरंगित मूठोंवाले कलश पेलेस्तीन में विलक्षणता के साथ निकट समानांतर रखते हैं। पर, अब ऐसा प्रतीत होता है कि ये मिस्रीय प्रकार से अर्वाचीन हैं, यद्यपि ये निश्चित रूप से एक उभय-साधारण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उत्तट मूठवाले (ledge-handles) प्राग्रूप से उद्भूत हैं। उल्लेखनीयता के साथ जर्जी (प्रकार) की तरह के टोंटीदार घड़े पेलेस्ती[1] में फिर से प्राप्त होते हैं। पर, मेसोपोटेमिया में, जहाँ इस प्रकार का एक लंबा इतिहास है, ये पूर्वापेक्षया अधिक सर्वसाधारण हैं। चित्र ३०, ३ की तरह के रीढ़दार कटारों की तुलना बिब्लोस में व एशिया में अन्यत्र की जा सकती है। पर, मूठ लगाने की पद्धति विशिष्ट रूप में मिस्रीय प्रतीत होती है और इस प्रकार की तिथि नील के तट पर सिर्फ अ० ति० ६० में रखी जाती है। पिरिफार्म गदा को एशियाई प्रकार माना जाता है।

जर्जी संस्कृति में (उपलब्ध) एशियाई तत्वों में मिस्रीय भाषा में (प्रविष्ट) सामीय तत्व के पुरातात्विक प्रतिरूपों को देखना सहज में आकर्षक होगा। इनका अध्ययन इस तथ्य के संदर्भ में करना होगा कि गदा व वाण के लिए चित्र लिप्यात्मक चिह्न क्रमशः जर्जी पिरिफार्म (Prifarm) गदा व छेनी जैसी नोक वाला वाण थे। इसके अतिरिक्त, मेसोपोटेमिया में सुमेर की तरह के पंकिल मुहाने का पर्यावरण सामाजिक साधनों के उस संकेंद्रण के प्रोत्साहक के रूप में आकलित था जो धातुशोधन विज्ञान व अन्य शैलिपक प्रगतियों के प्रभावपूर्ण विकास के लिए आवश्यक था।

स्पष्टतः निम्न मिस्र से उद्भूत होने वाली जर्जी संस्कृति पर (पड़नेवाले विभिन्न) प्रभावों का एकमात्र ठोस पुरातात्त्विक साक्ष्य जर्जी पात्रों पर चित्रित नौकाओं द्वारा मिलता है। न्यूवेरी (Newberry) ने यह दावा किया है कि अलंकृत पात्रों पर विचित्र १८८ नौकाओं में से १६६ नौकाएँ नील के चंदोवाई मुहाने (Canopic mouth) पर ऐतिहासिक रूप में अवस्थित हार्पून जातिनाम (Harpoon Nome) का चिह्न वहन करती हैं। जबकि ८० अन्य समीपवर्ती पच्छिमी मुहाने के जातिनामों के चिह्नों को धारणा करती हैं। अगर इन चिह्नों[2] का न्यूवेरी द्वारा उपस्थापित अभिज्ञान स्वीकार

१. आलब्राइट (Albright) ए० ए० एस० ओ० आर० (AASOR), xiii, १९३१-२, ३१; BASOR, ६३, १९३६, १३ तु० पृ० २३०, वाद। मिस्र के टोंटीदार पात्र पेत्री के 'रोचक आकार' (Fancy forms) हैं, खासकर F ५८ और R ४३, प्रीहिस्टॉरिक पॉटरी कॉर्पस (Prehistoric Pottery Corpus) में फलक xviii व xxxviii, और तु० ब्रंटन, बदेरियन सिविलिजेशन (Badarian Civilization), फ० xxxviii, व स्कार्फ (Scharf), अबूसिर एल-मेलेक, १९२६, फलक २३, २०७। वे चित्र ५१, २ की तरह धातु की सुराहियों का अनुकरण करते हैं।

२. अधिकांश 'हार्पून' चिन्हों के अभिज्ञान पर बूमगार्टेल द्वारा युक्तियुक्त रीति से संदेह व्यक्त किया गया है, सी० पी० ई० (CPE), ११-१२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

किया जाय तो भी प्रस्तुत पात्र उच्च मिस्र में अपेक्षाकृत बाद के जर्जी काल में पहुँचे। अत: इनमें से एक भी अ० ति० ४५[१] से प्राक्कालीन नहीं हो सकता है। अत: यह तर्क जर्जी संस्कृति के उद्भव के लिए उत्तरकालीन रीढ़दार कटारों के लिए लेवांताइनी समानांतरों की अपेक्षा अधिक संगत नहीं है।

और अब न तो यही तर्क प्रभावशाली हो सकता है कि जर्जी संस्कृति का प्रसार मुहाने से आनेवाले होरस के अनुयायियों द्वारा उच्च मिस्र की विजय व किसी हेलियोपालिटन राज्य (Heliopolitan kingdom) में इसके अंतर्विन (Incorporation) को उल्लिखित करता है। यदि अम्राती रंगपट्ट पर (अंकित) लाल मुकुट व अल उपरी से प्राप्त राजदंड निम्न मिस्र में एक प्राक्तन राज्य का संकेत करें तो भी वहां संस्कृति अज्ञात है। यह वस्तुतः जर्जेह व अबूसिर एल-मेलेक में उपलब्ध अम्रातियन की अपेक्षा दूर तक उत्तर में, पायी जाती है। पर, खास निम्न मिस्र में यह अब भी अप्राप्य है। वस्तुतः खास मुहाने में सभी बस्तियाँ-जर्जी या अन्य-नील के अधःपाद में गहरी गड़ी पड़ी है। पर, मुहाने के छोर पर हेलियोपोलिस[२] में और फिर तुराह[3] (Turah) व मादी[४] में काहिरा से ठीक दक्षिण ऐसी कब्रें व बस्तियाँ ज्ञात हैं जो निश्चित रूप से प्राग्वंशीय होने पर भी मेरिम्दे या अल उमरी से अर्वाचीन हैं। फिर भी इनमें कोई भी स्पष्टतः जर्जी लक्षण नहीं हैं।

मादी की बस्ती ४५ एकड़ मरुपृष्ठीय भूमि में व्याप्त थी। इसके साथ इससे बाहर बाढ़ से बने समतल की ओर ढलान पर एक शवाधि-स्थान था। अंडाकार या घोड़े की नाल के आकार के सामान्य अनगढ़ आवासों के अतिरिक्त अन्न रखने के सभी प्रकार के खत्ते व गढ़े तथा आंशिक आयताकार व विस्तारित पद्धति के विस्तृत प्रकोष्ठ कठोर उपभूमि में दो या तीन मीटर की गहराई तक काटकर बनाए जाते थे। इनकी लम्बे बल खड़ी दीवालों पर चटाइयां लटका दी जाती थीं या वैकल्पिक क्रम में पत्थर

१. कैंटर (Cantor) जे० एन० ई० एस०(JNES) में iii, १९४४, ११९।

२. डेबोना (Debono), क्रॉनिक द इजिप्ट (Chronique d' Egypt), १९५०, २३३-६

३. जंकर (Junker), तुराह (Turah), Denkschr. d. k. Akad. in Wien, philhist. K'l, lvi, १९१२, २ आगे, तु Schmidt-Festschrift, ८७३-९।

४. मुस्तफा अमेर व मेंघिन (Mustafa Amer and Menghin) दी एक्सकेवेसंस ऑफ दी ईजिप्सियन युनिवर्सिटी ऐट मादी, मिस्रीय विश्वविद्यालय के कला-अधिकाय का प्रकाशन, १९, १९३२। निम्नलिखित विवरण जूरिच (Jurich) में १९५० में प्राक् तथा प्रारंभिक ऐतिहासिक विज्ञान के तृतीय अंतर्राष्ट्रीय अधिवेशन में पठित पत्र पर, और प्राध्यापक अमेर व डॉ रिजकाना (Rizkana) के सौजन्य से किए गए स्थल निरीक्षण पर अधिकांशतः आधारित है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

या मिट्टी की ईंट की परत लगा दी जाती थी। एक भाग में मजबूत खंभे संभवतः ढालुई छत को थामे रहते थे। पर एक प्रकोष्ठ उपभूमि में खोदकर वनाए गए एक निम्न पूरक गृह द्वारा बढाया गया था।

औद्योगिक उपकरण एल उमरी व जर्जियों से प्राप्त उपकरणों से पूर्णतया भिन्न है। पत्थर के कुठार अप्राप्य हैं। लकड़ी के खंभों के चरम विंदु तक कुशलता के साथ वनाए जाने के समय से उनका स्थान निश्चित रूप में तांवे की कुल्हाड़ियों ने ले लिया होगा। वास्तविक धातु के औजारों में से सिर्फ एक ठोस कुठार या वसूला और कुछ सूजे बचे रहते हैं। पर, एक अधूरी ढलाई से सावित होता है कि ताम्र निर्माण क्रिया गांव में होती थी। सहस्त्रों अनलाश्म (वस्तुओ) में दो विखरे वाण-सिरे प्राप्य हैं और ये एकमात्र उभय-पार्श्वीय औजार हैं। फलकों या हंसुओं के दांत नियमित रूप से बनाएं जाते थे। पर, विशिष्टतम औजार खान से निकाले गए चौकोर अनलाश्म के व्यजनाकार (Fassshaped) खुरचन व महीन सूजे हैं। चक्राकार गदाएं एकमात्र स्वीकृत हथियार हैं। ठीक उच्च मिस्र के जर्जियनों के समान मादी (Madians) मुख्यत: कृषि भोजनोपयोगी पशुओं, जिनमें सुअर प्रमुख थे, पर अवश्य हीं निर्भर रहे होंगे।

अधिकांश मृद्‌भांड भूसा मिले द्रव्य का वना है जो सरकनदार और कभी कभी ओपदार भी जैसा कि एल उमरी में पाया जाता हैं, बनता था। पर, अव प्रिय रंग काला था। वृहदाकार भांडारीय पात्रों के अतिरिक्त बाहर को मुड़े हुए कोरोंवाले गोलाकार या अंडाकार भांड सार्वजनिक हैं। इनके पेंदे अक्सर गोल या लगभग नोकीले हैं। पर, गावदुमी चक्करनुमा तला (Splayedring foot) अत्यधिक विलक्षण हैं। सीधी गरदनों वाले पात्रों के अपेक्षाकृत एक छोटे वर्ग व एक या दो मूठों का निवृत्त वहुलास्यि अलंकरण से युक्ति कतिपय भांड खंडों की तरह पैलेस्तीन या सीरिया के साथ स्पष्ट संवंध है। एक या दो उभाड़दार मूठ वाले कलश उस नमूने का निदर्शन कर सकते हैं, जिससे जर्जी व पैलेस्तीनी तरंगित मूठवाले कलश उद्‌भूत हुए। अंततः दो चित्रित भांड-खंड जर्जी अलंकृत पात्रों की तरह ही प्रारंभक पैलेस्तीनी भांडों से साम्य रखते हैं।

वरतन, आवश्यक रूप से फायूम या पूर्वीय मरुस्थल से आयात किए जाने वाले चूना पत्थर (Calcite) और अधिकार भूरा पत्थर (Basalt) के भी संभवतः स्थानीय रूप से, बनते थे। उसी द्रव्य के बने चपटी पेंदीवाले चषक या अंडाकार प्याले भी कुछ कब्रों में उपस्यापित हैं। पर, इनके सटीक समानांतर सुमेर के इरेक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में उत्तरकालीन उरुक जम्देत नस्र प्रावस्था के मंदिर निक्षेप में पाए जा सकते हैं। अंत में चपटे-चौड़े पार्श्व वाले शंक्वाकार पात्र लीवियाई समुद्रतट[1] से प्राप्त कुछ पात्रों से साम्य रखते हैं। इसी स्थल में कंघे व मनके भी बनाए जाते थे। अगर खास पात्र नहीं तो प्रस्तर-पात्रों के लिए कच्चे समान, तांबा व अन्य कच्चे समान सामुद्रिक खोलियों की तरह अवश्य ही आयात किए जाते थे।

मृतक बस्ती के बाहर एक कब्रिस्तान में दफनाए जाते थे। पर मादी में इन्हें बहुत कम उपस्कर दिए जाते थे। हेलियोपोलिस में, जहां अब तक सिर्फ कब्रिस्तान का ही पता लगा है, अन्त्येष्टि उपहार कुछ बढ़े हैं और पूर्वाभिमुखीकरण अधिक नियमित हो गया है। मरतक दक्षिण की ओर पूर्वाभिमुख है। शवों को खालों या श्रीपत्र की चट्टियों से ढंक दिया जाता था। मृग व कुत्ते भी कब्रिस्तान में दफनाए जाते थे। दोनों स्थितियों में कंकाल उच्च मिस्र के प्राग्वंशीय निवासियों की अपेक्षा अधिक लंबे व पुष्ट व्यक्तियों के हैं। पर, हेलियोपोलिस के कपाल एक विशिष्ट प्रकार की उद्गतहनुत्व (Prognathism) प्रदर्शित करते हैं जो सामान्यतया निग्रोसम वैशिष्ट्य माना जाता है, जबकि मादी तक से उपलब्ध कपाल अन्य प्राग्वंशीय कर्परों की भांति पंचभुजाकार हैं। अतः कोई भी स्थल प्रारंभिक फराऊनी व प्राचीन राज्य कब्रों में प्रमुख (स्थान रखने वाला) गीजा (Giza) प्रकार नहीं प्रदर्शित करता है।

हेलियोपोलिस में जेबेल अहमेर (Jebel Ahmer) से आए हुए धारावाहिक जलप्लावनों द्वारा न्यस्त तीन आयासित शर्करिल स्तरों में (Superimposed) gravels) खोदी गई कब्रों के तीन स्तरों को पृथक् किया जा सकता है। मादी भी एक से अधिक बार जलप्रवाहों से आप्लावित हुआ था। अतः दोनों ही स्थल पर्याप्त कालावधि में व्याप्त हैं। पर दक्षिण के लिए विहित अनुक्रम तिथियों की प्रणाली में इनका अनुकूलन असंभव है। इनमें से कुछ पात्र तुराह व अन्य स्थानों में प्रारंभिक फराऊनी कब्रिस्तानों से प्राप्त रुखड़े प्रकारों के वास्तविक पूर्वगामी हो सकते हैं। पर, मृद्भांडों, अनलाश्म वस्तुओं, प्रस्तर-पात्रों, रंग-पट्टों या आभूषणों के वास्तविक प्रारंभिक फराऊनी प्रकार पूर्णतया अनुपलब्ध हैं। तुराह व हेलवान के निकट विशाल शवाधिस्थानों की समीपवर्तिता पर विचार करते हुए यह अवश्य समझा जा सकता है कि मेम्फिस की स्थापना के पूर्व ही मादी का परित्याग किया जा चुका था। जर्जी

---

१. मर्सा मत्रु (Mersa Matruh), हार्वर्ड अफ्रिकन स्टडीज (Harvard African Studies), viii, १९२७, १३८-१४०, और फलक २७, ८। अंडाकार प्यालों के लिए ब्रूमगार्टेल, सी० पी० ई० (CPE), १०७, दे०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रकार समान रूप से अप्राप्य हैं। दूसरी ओर, भूरे पत्थर के पात्र और चक्राकार गदा-सिरे अम्राती परपंरानुसार बने हैं और इस प्रकार ये प्राचीन तिथि के हो सकते हैं। फिर भी, मृद्भांडों में एकाध स्मारक पदार्थों के वावजूद मादी का अल उमरी का साक्षात् उत्तराधिकारी होना कठिन है। इसलिए इस सब के वावदूज यह उच्च मिस्र की जर्जी का आंशिक रूप में समकालीन अवश्य होगा।

तब क्या मादी (परंपरा) अनुमानिक प्राग्वंशीय संयुक्त-राज्य की संस्कृति को उपस्थापित करती है? क्या हेलियोपोलिटन कब्रें इसकी उपधारित राजधानी के कब्रिस्तान के अंश हैं? बचे हुए अवशेषों में होरस के चिह्न नहीं हैं। इसके विपरीत अनलाश्मकृति व मृद्भांड इन दोनों में ही एशियाई तत्त्व स्पष्ट हैं और ये (तत्त्व) जर्जियन में उपलब्ध तत्त्वों से भिन्न व प्राचीनतर प्रतीत होते हैं। पर इन सबों के वावजूद काहिरा क्षेत्र में इस प्रकार के तत्त्व सिर्फ पुरातन संवंद्ध वस्तुओं के पुन:प्रकटीभाव को ही सूचित करते हैं। मध्य पाषाण युग में हेलवन एक नतूफियन चौकी था और अल उमरी से प्राप्त वल्कानी गेहूँ (Triticum monococcum) स्थानीय उत्तर पाषाण में उत्तरी तत्त्व की श्रेणी में अवश्य ही रखा जाना चाहिए। तब यदि निम्न मिस्र द्वारा दक्षिण पर आरोपित माने जाने वाले संघ का कोई पुरातात्त्विक प्रतिरूप हो तो वह जर्जी संस्कृति में नहीं पाया जा सकता है। किंतु यह उपेक्षित रूखड़े व अर्वाचीन पात्रों में छिपा रह सकता है जो उच्च मिस्र तक में मादी परंपरा को अस्तिमंत रख सकता है। पर इनका पूर्ण अध्ययन कभी नहीं हुआ है।

जहां तक जर्जी (संस्कृति) का प्रश्न है, इसका उद्भव प्राय: उत्तरी मध्य मिस्र में पूर्वीय मरुस्थल के परवर्ती एशिया से प्राप्त प्रेरणाओं से हुआ होगा। इन सबके वावजूद पैत्री[1] ने पहले यह धारणा व्यक्त की थी कि जर्जी प्रस्तर-पात्र उन शिखा-धारी व्यक्तियों के उत्पादन थे जिन्होने आद्यतम ऐतिहासिक काल में उस प्रदेश को आवाद किया था। और, वूमगार्टेल[2] ने हाल ही में यह मत व्यक्त किया था कि जर्जी लोग पृ० ७२ में वर्णित "विदेशी नौका" के साथ वादी हंमामत के निचले भू-भाग में पहुँचे थे। किसी भी दशा में यह जर्जी बर्बरता ही रही होगी जिसका स्थान फराऊनी सभ्यता ने लिया। चाहे पुरातात्त्विक अभिलेख की अपेक्षाकृत अधिक पूर्णता ही कारण रही हो, फिर भी सिर्फ उच्च मिस्र में ही फराऊनी राजतंत्र के उत्थान की खोज की जा सकती हैं।

---

१. ज० र० एंथ्रा० ईस्टि० (JRAI), xxxi, १९११, २५०।
२. कल्० प्री० ई० (CPE), ४४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पंचम अध्याय

फराऊनों का उत्थान

जर्जी कृषकों द्वारा इस प्रकार पूर्णतः उपयोग में लाई गई नील घाटी की भूमि ने तत्काल किसानों की पारिवारिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त बचत दी होगी। यह निस्संदिग्ध रूप से विशिष्टताप्राप्त शिल्पियों व व्यापारियों के जीवन-निर्वाहार्थं

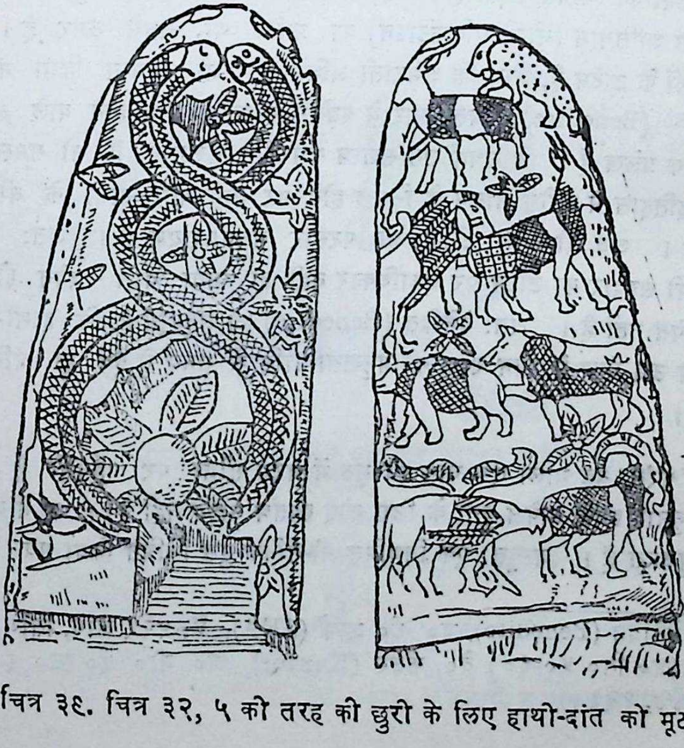

चित्र ३९. चित्र ३२, ५ की तरह की छुरी के लिए हाथी-दांत की मूठ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

योगदान के लिए आंशिक रूप से उपयोग में लाई जाती थी। वस्तुतः जर्जी-काल ने, जैसा कि उच्च मिस्र के शवाधि-स्थानों से प्रदर्शित होता है-शवाधि-सामग्री के प्रगुणीकरण व शवाधियों के परिवृहण में प्रतिफलित होनेवाली संपत्ति की अतिशय वृद्धि व सम-सामयिक शवाधियों के आकार-प्रकार व धन में पाई जानेवाली विषमताओं से संकेतिक होने वाली इस संपत्ति के वितरण में बढ़ती हुई असमानता भी देखी। पर यह आंतरिक विस्तार की शांतिपूर्ण पद्धति के रूप में द्रष्टव्य नहीं है। चौपायों, लूट के धन व भूमि-अर्जन के लिए (होने वाले) युद्ध के पुरातात्विक प्रलेख में कुछ निश्चित संकेत मिलते हैं। नगरों व ग्रामों की निश्चित रूप से किलाबन्दी की गई थी। कुछ क्रमिक शल्की-कृत उत्तरकालीन जर्जी अनलाश्म के चाकुओं की, जैसा कि चि० सं० ३२, ५ में देखा जाता है) हार्थी-दांत की मूठों पर उत्कीर्ण दृश्य इसी दिशा में संकेत करते हैं (चित्र ३९)।

हाथी-दांत[1] की वस्तुओं की समग्रमाला सर्वदा एक ही क्रम में रखे गए जंतुओं की पंक्तियों को चित्रित करती है। इस क्रम में हाथी, जो इतिहासानुसार उच्च मिस्र का प्रथम जातिनाम (नोम, एलिफेंटाइन) का प्रतीक था, सबसे ऊपर है। अतः, जंतु खैलों के टोटेम हैं, जैसा कि अमराती अभिलेखों से भी अनुमान किया गया है। बेनेदित[2] (Benedite) के मतानुसार ये पड़ोसी खैलों के मध्य होने वाले संघर्षों के चित्रात्मक प्रलेख हैं। ये संघर्ष उन सशस्त्र संघर्षों से तुलनीय हैं जो समस्त मिस्र-देशीय इतिहास में केंद्रीय शासन के निर्बल होने पर समीपवर्ती ग्रामों के बीच हुआ करते थे। अब भी रेखैल टोटेम ही परस्पर संघर्षपरायण हैं। अतः अब तक किसी भी सरदार का टोटेम पर एकाधिकार नहीं हो पाया था। श्येन होरस भी उपस्थापित नहीं है। अतः बेनेदित (Benedite) का अनुमान है कि हाथी-दांत के उपकरण उच्च मिस्र में श्येन खैल की प्रमुखता-प्राप्ति के समय से पूर्व ही अस्तित्व में आए हैं।

परंतु, यह माला एक चाकू की मूठ में चरम सीमा पर पहुँचती है (प्रकार-विज्ञानानुसार इनके सापेक्ष युगों के लिए कोई स्वतंत्र साक्ष्य नहीं है)। इसमें वास्तविक मानव युद्धरत हैं। वस्तुतः एक नियमित नौ-सैनिक-युद्ध चित्रित किया गया है। यह

---

१. बेनेदित (Benedite), ज० ई० आर्क (JEA), V, २२५ आगे, तिथि निर्धारण के लिए (अ० ति० ५०-६०) दे० कैंटर (Kantor), ज० नी० ई० स्ट० (JNES), iii, १९४४, १२५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रलेख[२] गेबेल एल-अरक (Gebel el-Arak) में अर्थवत्तापूर्वक ठीक उन स्थानों पर पाया गया है, जहां से लाल सागर से वादी हमामत होकर आने वाला मार्ग नील घाटी में निकलता है। एक भाग जल व स्थल पर युद्ध के दृश्यों को चित्रित करता है। एक योद्धा पीठ पर एक लटकता हुआ लबादा व एक पगड़ी पहने और पर्वत के शिखर पर दो सिंहों को सहारा दिए हुए है (—dompting two lions on a rocky peak), जब कि दो कुत्ते उसकी ओर एक टक देख रहे हैं। उत्कीरण का संपादन विशुद्धतः मिस्रीय है, पर इसके प्रतिपाद्य विषय स्पष्टतः एशियाई हैं। नौ-सैनिक-युद्ध में प्राचीन नील की पेपिरस (Papyrus) की नौका ऐसी अन्य नौकाओं के साथ युद्धरत हैं जिनके अगले व पिछले हिस्से ऊंचे हैं। उत्तरोक्त प्रकार पूर्वीय मरुस्थल[२] में शैल-चित्रों में बहुधा वर्णित होने पर भी नील के तट पर विदेशी प्रतीत होता है (चि० ४०) परंतु, अरुक[३] काल से प्राप्त मेसोपोटेमिया की मुद्राओं पर चित्रित तरणियों के अनुरूप हैं। फिर, दूसरे पृष्ठ पर (चित्रित) कुत्ते प्राचीनतम मिस्र के

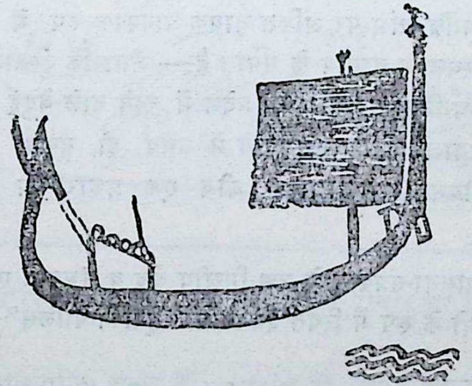

चित्र ४०. उत्तरकालीन विभूषित पात्र पर चित्रित विदेशी पोत।

१. उदाहरणस्वरूप, फ्रैंकफर्ट में अंकित, स्डीज, i, और पेत्री में, दी मेकिंग ऑफ ईजिप्ट (The Making of Egypt), १९३९।

२. विंकलर (Winckler), रॉक ड्राइंग्स, i, २६, आगे, ii, १८, नील के पश्चिम सिर्फ हॉस में जो अब भी घाटी में है, प्राप्त।

३. फ्रैंकफर्ट, सिलिंडर सील्स, फ० iii, डी०; तु अनाले दु सर्विस में एमरी, xlv, १९४७, तु० यहां फलक xxc।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिकारी कुत्तों से भिन्न हैं तथा मेसोपोटेमिया[1] के शिकारी के कुत्तों के करीब अनुरूप हैं। उन के ऊपर का परस्पर-विरोधी वर्ग एक ऐसा उद्देश्य है जो नील के तट[2] पर कभी जनप्रिय नहीं रहा, पर तिग्रो फराती घाटी में पूर्णतः परिचित था। नायक भी घनी दाढ़ी पगड़ी व लटकते हुए लबादा में मिस्रीय होने की अपेक्षा अधिकतर एशियाई ही जान पड़ता है। इसी प्रकार का व्यक्ति उसी तरह के परिधान में सुमेरीय इरेक में जम्देत-नस्र प्रावस्था के एक निक्षेप में उपलब्ध एक बसाल्ट के समाधि-स्तंभ पर उत्कीर्ण है, जो छेनी जैसी नोंक वाले तीरों से एक सिंह को वेध रहा है (फलक XIII)।

स्कार्फ का वस्तुतः यह अनुमान था कि मिस्र के हाथी-दांत पर नकाशी करने वाले संस्मारकीय मूर्तिकला के सुमेरीय संप्रदाय के उत्पादनों का सूक्ष्म रूप में अनुकरण कर रहे थे। हर हालत में इरेक का समाधि स्तंभ मिस्र व तिग्रो-फराती मुहाने की उदीयमान सभ्यता के बीच चाकू की मूठ पर अंकित अन्य उद्देश्यों एवं जर्जी संस्कृति[3] की दूसरी अवस्थाओं से अनुमित होने वाले संपर्क को पुष्ट करता है। परंतु यह संपर्क आवश्यक रूप में प्रत्यक्ष नहीं रहा होगा। गेबेल एल-अरक की चाकू की मूठ पर व इरेक के समाधि-स्तंभ पर अंकित नायक आवश्यक रूप में सुमेरीय नहीं है। वह अधिकतर मरुस्थल के सामीय के समान है— जैसा कि दुससाउद ने संकेत[4] किया है। दोनों नदी-घाटियों पर मध्यवर्ती प्रदेश में रहने वाले बेदुई कबीलों का प्रभाव इन पर्यवेक्षित घटनाओं की व्याख्या करने में समर्थ हो सकता है। परंतु प्रत्येक दशा में दोनों उदीयमान सभ्यताओं के बीच एक प्रकार का संपर्क स्थापित हो चुका था।

होरस उपासना-संप्रदाय के उच्च मिस्रीय केंद्र व संभवतः एक समय में होरस रेवैल की राजधानी के रूप में स्थित श्येन-नगर हेराकोन्पोलिस[5] (Heirakonpolis)

---

१. वह व अन्य पहलू प्रथमतः फ्रैंकफर्ट द्वारा अंकित किए गए; स्टडीज, i, ११७-१३५

२. प्रथम राजवंश के पश्चात् यह केवल उच्च मिस्र में कुसा (Cusae) के चिन्ह में अधिजीवित रहा, तु० स्कार्फ "Die Fri, nhkulturen Agyptens and Mesopotamiens Der Alte orient xli, १९४१, २६।

३. जम्देत-नस्र प्रावस्था के मेसोपोटेमियाई उत्पादन माने जाने वाले एक बेलन का विवरण अ० ति० ४६-५० की एक जर्जी कब्र से मिलता है।

४. सीरिया, xvi, १९३५-३२२।

५. क्विबेल (Quibel), हेराकॉन्पॉलिस में सभी पहली बार प्रकाशित उसके बाद बहुधा, उदाहरणार्थ, केपर्ट, प्रीमिटिव आर्ट इन ईजिप्ट (Primltive Art in Egypt)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से प्राप्त प्रलेखों से यह निष्कर्ष उत्तम रीति से निकाला गया है। वहां क्विवेल (Quibell) ने एक ऐसा मकबरा[1] पाया जिसको विकास की चरमोन्नति का द्योतक समझा जा सकता है। ठट्टर की दीवारें कच्ची ईंटों से पाट दी गई हैं और एल अम्रा (El Amrah) के टाट के संविभाग के स्थान में कच्ची मिट्टी की ईंट की दीवाल लगा दी गई है। इसकी वास्तुकला एक प्रभावशाली रवैल के कम से कम नायक के पद पर उन्नयन का संकेत करती है। इसके अतिरिक्त मिट्टी की दीवारों पर पलस्तर कर दिया गया था और विभूषित पात्रों की शैली में वह दृश्य चित्रित किया गया था जो गेबेल अल-अरक के चाकू की मूठ (चि० ४१) के विभिन्न प्रतिपाद्य विषयों को बड़े

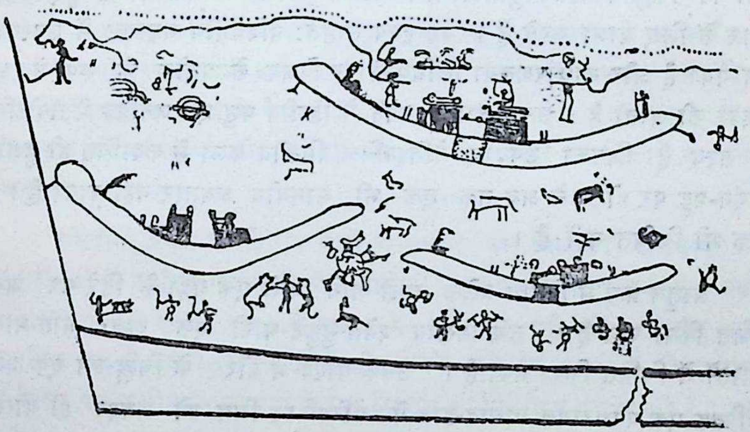

चि० ४१, हीरा कोन्पालिस में एक समाधि की दीवार पर चित्रित दृश्य।

पैमाने पर फिर से उपस्थापित करता है। पूर्वोक्त दो प्रकार की नौकाओं के साथ नौ-सैनिक-युद्ध का पुनरुपस्थापन संभवतया इस घटना के ऐतिहासिक महत्त्व का साक्ष्य देता है। सिंहों को दोनों भुजाओं पर सहारा देने वाले (—dompting lions) नायक का परस्पर विरोधी वर्ग नृत्य, आखेटानुसरण एवं संघर्ष के दृश्यों के साथ पुनः दृष्टिगोचर होता है।

---

१. रीजनर द्वारा वंश ० में तिथित मकबरा, कटर द्वारा (ज० नी० ई० स्ट० iii ।।।) उसमें निहित भांडों के आधार पर अ० ति० ५०-६० में रखा गया है। पर, यह अनावश्यक रूप से उसकी श्मशानीय प्रकृति पर संदेह करते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तदनंतर, जर्जी प्रसाधन-सामग्री के सुंदर रूपांतरों के रूप में स्थित संस्मारकीय रंग-पट्टों की एक माला व होरस के पूजा-गृह से उपलब्ध विशाल पिरिफार्म (Piri-form) के गदा-सिरे होरस खैल की उपलब्धियों को अभिलिखित करते हैं। प्रकार-विज्ञान के अनुसार सिंहाखेट रंग-पट्ट (फलक XII) प्रथम है। इस पर का दृश्य हाथी-दांत के पदार्थों पर बने दृश्यों के समान ही विशुद्ध रूप में "पौराणिक" है। परंतु, यहाँ शिकारी मानवों के रूप में चित्रित हैं और उनके आगे धारण किए हुए ध्वजदंड पर श्येन होरस (Falcon Horus) बैठा है। खैल जन टोटेम ध्वज को आगे करके और छेनी जैसे नोंक वाले बाणों से सज्जित होकर यष्टियों (? चित्र १५ के बदेरियन नमूनों की तरह) व नलिकायुक्त पाषाण निर्मित गदाओं का प्रक्षेप करते हुए सिंहों के शिकार के लिए यात्रा करते हैं। यह दृश्य स्पष्टत: पश्चिमीय मरुस्थल में उपस्थापित किया गया है और साधारणतया लिबियनों पर विजय के प्रतीक के रूप में इसकी व्याख्या की जाती है। ऊपर दाहिने कोने में द्विशीर्ष पशु एक जनप्रिय मेसोपोटेमियाई प्रेरक तत्त्व है जिसका उपयोग ऐतिहासिक मिस्रीय कला में कदाचित् ही हुआ है। इस रंग-पट्ट पर होरस ने अब तक एक भी मानवीय अवतार नहीं पाया है। कोई नायक भी चित्रित नहीं है।

प्रस्तुत क्रम में द्वितीय प्रलेख समझे जाने वाले एक गदा के सिरे पर अवतार प्रदर्शित किया गया है। उच्च मिस्रीय श्वेत-मुकुट-धारी एक राजा अति-मानवीय अनुपातों में चित्रित किया गया है। उसके पार्श्व में होरस के चिह्न-रूप एक श्येन से अधिष्ठित एक परंपरागत प्रासाद-द्वार में संन्निविष्ट चित्र को अवश्य ही वास्तविक चित्रालेख मानना चाहिए। यह किसी राजा के, जिसका प्रतिलेख हम केवल "राजा वृश्चिक" के रूप में कर सकते हैं, नाम लिखने का प्रथम प्रयास है। यह उसका "होरस नाम" है, क्योंकि उसके ऊपर बैठा हुआ श्येन देवताके साथ उसके तादात्म्यको प्रतीकित करता है। उसने खैल टोटेम पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया है। गदा प्रजातीय चिह्नों से संकेतित उच्च मिस्रीय नोमाओं (Nomes) के एक दल विशेष को विदेशी व निम्न मिस्रीय खैलों पर (क्रमश: धनुषों व टिटिहिरियों—Lapurings—द्वारा प्रदर्शित) विजय और साथ ही राजा वृश्चिक द्वारा कुछ उत्पादक और शांतिपूर्ण उद्योगों के सूत्रपात का चित्रात्मक रीति से स्मरणोत्सव मनाती है। वह कुदाल धारण किए हुए है और सिंचाई के लिए नहर की पहली मिट्टी को समारोह के साथ काट रहा है, अथवा कृषि-यज्ञ का उद्घाटन कर रहा है। राजा वृश्चिक "का" नामक एक अन्य राजा के साथ मेनेस (Menes) के अव्यवहित पूर्ववर्ती के रूप में राजवंश मेंरखा गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हेरांकॉन्पोलिस से प्राप्त एक अन्य प्रलेख रोत्यात्मक क्रम में तत्र मेनेस द्वारा मिस्र के एकीकरण को प्रदर्शित करेगा। यह दूसरा विशाल रंग-पट्ट है जो अब दोनों तरफ उत्कीर्ण है। एक तरफ राजा वृश्चिक की तरह, श्वेत मुकुट धारण किए हुए है, पर दूसरी तरफ निम्न मिस्र पर राजसत्ता के सूचक लाल मुकुट को धारण किए हुए हैं (प्रथम राजवंश का पांचवां राजा अदिमु पहला व्यक्ति है जो लाल व श्वेत मुकुटों को एक साथ धारण करता हुआ चित्रित है)। होरस (Horus) के साथ इसका तादात्म्य श्येन (Falcon) के नीचे प्रासाद के द्वार पर एक अन्य प्रतीक के साथ उत्कीर्ण नर-मत्स्य (Nar fish) के चित्र द्वारा प्रतीकित होता है। प्रतीकों को हम यों पढ़ते हैं "होरसनरमेर" जो मेनेस (Menes) अथवा उसके प्रथम उत्तराधिकारी[1] का "होरस नाम" था। चाकू की मूठें और रंग-पट्ट उच्च मिस्र में राजसत्ता के अविर्भाव, दोनों भू-भागों के एकीकरण व जर्जी बर्बरता से प्रारंभिक फराऊनी सभ्यता की दिशा में संक्रमण के चित्रात्मक प्रलेख के रूप में उपस्थित किए गए हैं। समाधि मूलक प्रलेख इस व्याख्या की अभिपुष्टि और अंकित अभिलेखों के आधार पर निकाले गए निष्कर्षों की अनुपूर्ति करता है।

अबिदोस, प्रथम व द्वितीय वंशों के अधीन उच्च मिस्र की राजधानी प्राचीन थीस (This) में आदिम फराऊनों की समाधियों[2] का पता लगाया गया है। यद्यपि ये समाधियां पहले ही प्राचीन राज्य के समय में लूट ली गई थीं, तथापि अब भी ऐतिहासिक क्रम में सजाई जा सकती हैं और अपने बचे हुए उपस्करों की सहायता से नील के तट पर प्राचीनतम सभ्यता के द्रुत विकास को निर्देशित कर सकती हैं। उत्कीर्ण शवाधिस्तंभ, कलशमुद्राएं या लकड़ी के नामफलक (Label) (१) नरमेर (बी १०), (२) अहा (बी० १९), (३) जेर (०), (४) जेत, (५) उदिमु, (६) अनजिब, (७) समरखत् और (८) कया की समाधियों का प्रथम वंशीय फराऊनों की उत्तर-कालीन सूचियों में अभिलिखित नामों के साथ तादात्म्य स्थापित करने में हमारी सहायता करते हैं। शवाधिस्थान में द्वितीय वंशीय राजाओं की समाधियां भी थीं।

१. एमरी (Emery) ने रीजनर की तरह (डेवेलोपमेंट ऑफ ईजिप्सियन टुब ९-१३) पेत्री द्वारा प्रस्तुत अहा व मेनेस के मौलिक तादात्म्यीकरण को स्वीकार किया। एडवर्डस (Edwards) नारमेर के साथ मेनेस के एकीकरण के विषय में पेजी के नूतन दृष्टिकोण का अनुसरण करते हैं।

२. पेजी, रॉयल टुम्बस, ii, १९०२, प्रारंभिक फराऊनों के नामों की वर्तनी के विषय में किन्हीं भी दो अधिकारी विद्वानों में मतैक्य नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इनमें एक प्रथम वंशीय रानी मरनीथ (Merneith) की थी और एक वंश ०—का (च० ४२) के एक राजे की थी।

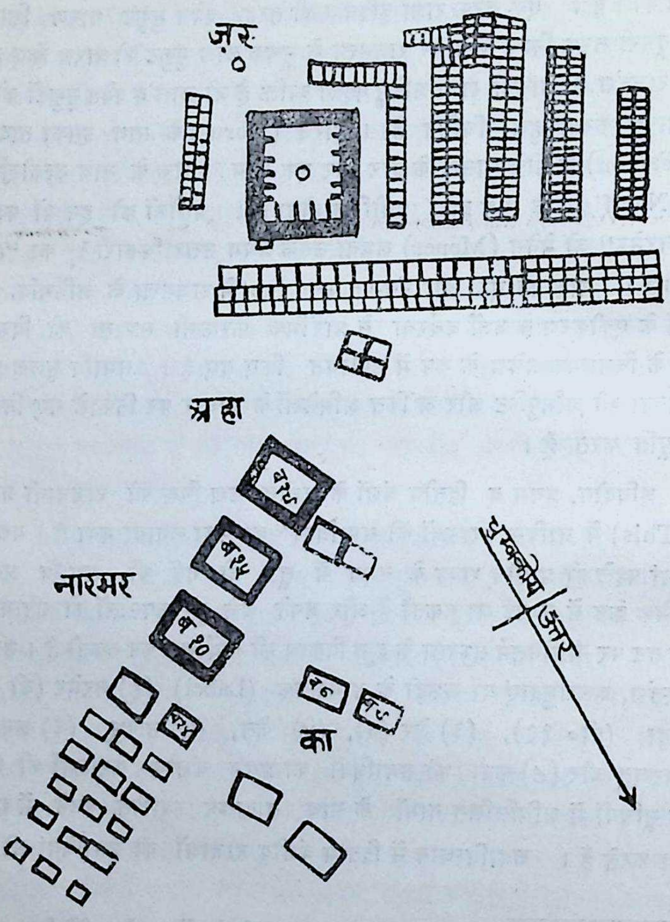

चित्र ४२. अबिदोस में शाही शवाधिस्थान का एक अंश, पेत्री के अनुसार

शाही समाधियां पृ० ६५ पर वर्णित जर्जी माला के स्वाभाविक विकास के रूप में समझी जा सकती हैं। पर, ये समाधियां प्रथमतः सामान्य खैलजनों की समाधियों से उनके आकार व प्रकार की दृष्टि से भिन्न हैं। नारमेर का मकबरा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(बी० १९) पहले ही एक बड़ा गढा था जिसकी दीवार में ईंट की परत थी और इसकी गहराई १० फुट ६ ईंच थी। इसका क्षेत्र ३६×१६ फुट था। इसके तल में संभवतः लकड़ी का एक प्रकोष्ठ था जो वस्तुतः शवाधान-गृह था। बाद के सात राजाओं के शासनों के क्रम में गढे को बड़ा व गहरा कर दिया गया और जर (Zer) के शासन काल में आकर इस गर्त को विभाजिक भित्तियों द्वारा शवाधान-भवन व भांडार-गृहों के रूप में विभाजित कर दिया गया और उदिभु के शासनकाल में और उसके भी बाद तक शवाधान-गृह[1] में प्रवेश के लिए एक सोपान की आवश्यकता हुई।

शाही शवाधान के अनुगत कृत्य कुछ कम उल्लेखनीय नहीं थे। स्वभावतः, राजाओं के साथ दफनाए गए उपस्कर किसी भी निजी शवाधि के उपस्कर की अपेक्षा अत्यधिक मूल्यवान थे। वेश्याएं, कर्मचारी, भृत्य व शिल्पी जैसे मानवीय यज्ञपशु भी अपने राजेश्वरों का अनुगमन करते थे। नारमेर की अंत्येष्टि में इस प्रकार के सिर्फ ३३ व्यक्तियों के दफनाए जाने की जानकारी है। पर, जर (Zer) की समाधि के चारों ओर (चि० ४२, ०) सहवर्ती शवाधियों में २७५ अंतः पुरांगनाओं और राजपरिवार के ४३ अन्य सदस्यों को स्थान मिला था, जबकि एक मील दूर और २६९ परिवार या सभासद उस चत्वर के चारों ओर दफनाए गए थे जिसमें उसी फराओ[2] का कोई स्मारक रहा होगा।

अबिदोस कब्रिस्तान में समाधियों के स्थलों को सूचित करने के लिए एक भी ऊपरी रचना नहीं बची है। पर अहा जर और रानी मरनीथ और संभवतः अवशिष्ट थिनाई फराऊनों में से प्रत्येक का उच्च व निम्न मिस्र के मध्यवर्ती सीमांत पर मेनेस (Menes) द्वारा स्थापित उत्तरी राजधानी मेम्फिस के शवाधिस्थान, सकारा[3] में एक

१. विकास के विस्तृत विवरण के लिए देखिए रीजनर (Reisner), डेवेलोपमेंट, ९ आ०, और एमरी, ग्रेट टुंबस ऑफ दी फर्स्ट डाइनेस्टी, १९४९, १-१२।

२. पेत्रो, टुंब्स ऑफ दो कोर्टियर्स, १९२५, १-३, इस स्थल पर जेत व मरनीथ (Marneith) लुप्त स्मारकों के चारों ओर सती शवाधानों के इसी प्रकार के चत्वर हैं। रीजनर, डेवेलोपमेंट, (१०९-१२५) का सुझाव है कि सती शवाधानों के ये चत्वर एक प्रकार के प्रतिरूपात्मक मस्तबा (Dummy Mastaba), जो सकार व गीजा में स्थित परवर्ती मंदिरों से तुलनीय, एक 'घाटी-मंदिरों' के रूप में था, को घेरे हुए थे।

३. एमरी, होर-अहा (सकारा के उत्खनन, १९३७-३८), काहिरा, १९३९। दोनों मकबरों में से प्रत्येक समान रूप से प्रचुरता के साथ उपस्कृत था। पर, इनमें से सिर्फ एक में ही राजकीय शव रहा होगा। इनमें से कौन-सा स्मारक था इस विषय में कोइ निर्णायक साक्ष्य या मतैक्य नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दूसरा मकबरा भी था। इनमें से प्रत्येक के ऊपर एक मस्तबा नाम की स्मारकीय संरचना खड़ी थी। राज्य के उच्च उत्तराधिकारियों और कई प्रांतीय रईसों या राजपुत्रों के मकबरे भी इसी तरह के थे। पश्चिम में मेम्फिस की झांकी लेने वाली रेगिस्तानी चट्टानों के तट पर भव्य मस्तबाओं की एक कतार खड़ी थी। घाटी से देखने पर ये अंग्रेजी कछार के किनारे पर स्थित लंबे शवाधिस्तूप की तरह क्षितिज के समानांतर खड़े रहे होंगे।

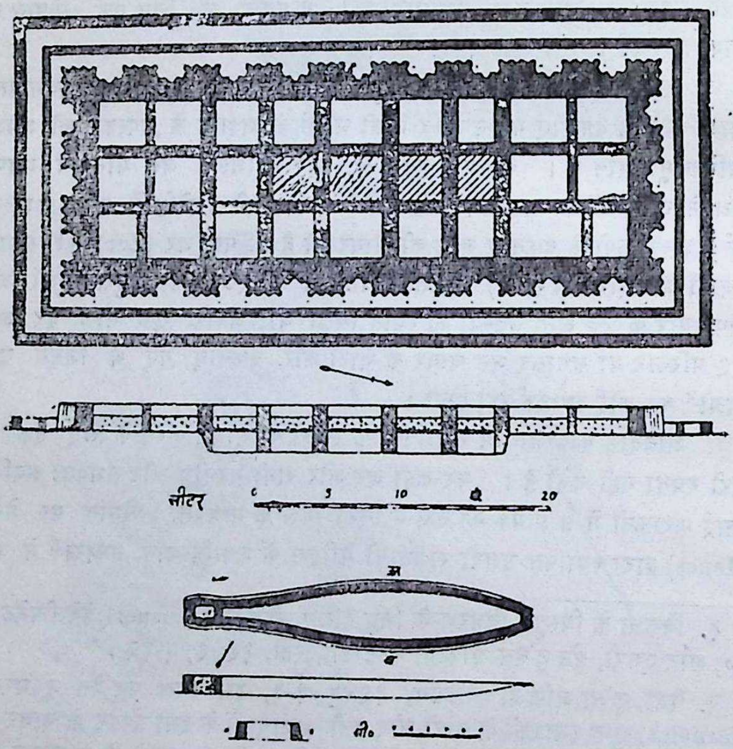

चित्र ४३. सकारा में होर-अहा का मस्तबा, समीपस्थ नौका-शवाधि, एमरी के अनुसार, (शवाधि-बिल गहरे रंग से रंगा है)।

मस्तबा कच्ची ईंट की एक विशाल आयताकार रचना है। यह प्रायः दारुमय प्रासाद की अपेक्षा अधिक स्थायी उपादान (चि० ४३) का बना है। बाहरी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाग छिद्रों के रूप में परिणत होने वाले पोश्तों व आलों के विस्तृत विकल्प द्वारा अलंकृत है। यह विधान सम-सामयिक प्रासादों के वाह्य मुख-भाग के रूप में परिणत होने वाले व बीच में लटकती हुई चट्टियों से युक्त [1] काठ के खंभों [2] का अनुकरण करते प्रतीत होते हैं। तथापि, वंश II के अधीन अबिदोस में निर्मित "दुर्गों" या पवित्र आवेष्टनों को घेरने वाली कच्ची ईंट की दीवारों पर इसी तरह का, पर कम विशद छिद्रयण पाया जाता है और हीराकॉन्पोलिस के रंग-पट्टों पर अंकित शहर की चहारदीवारियों पर इसका संकेत मिलता है। मस्तवा में कोई वास्तविक मार्ग अखंडित ईंट की दीवाल में प्रवेश नहीं करता था। फिर भी, एक आले को "मिथ्या द्वारा" (False door) के रूप में समझा जा सकता है, जिसके सामने बलि-पदार्थ रखे जाते होंगे। और नतो 'प्रासाद-मुखभाग' का उद्देश्य मृतक की आंखों को प्रभावित करना था। क्योंकि पूरी रचना ईंट की एक या दो मजबूत दीवारों से घिरी थी। इसका आंतरिक माग मस्तवामुख भाग से सिर्फ एक गलियारे के जरिए पृथक कर दिया गया था। यह गलियारा कभी-कभी सिर्फ ७५ मी० चौड़ा रहता था मस्तबा-के मुखभाग का पिछला हिस्सा आड़ी तिरछी दीवारों द्वारा ऐसे अनेक प्रखंडों में विभाजित था जो अविभाजितावस्था में अनाज, शराब व तेल से भरे घड़ों, प्रस्तर-पात्रों, धातु की पेटियों, औजारों और आभूषणों, उपस्करों व अन्य संपदाओं के उपहारों से परिपूर्ण पाए गए हैं।

खास शवाधान प्रकोष्ठ उपभूमि में खोदे गए गर्त में स्थित इन कमरों के नीचे था। अबिदोस की भांति ही सकारा में इसका विकास हुआ। अहा के मकबरे में कच्ची ईंट की परतों से युक्त गर्त पहले ही आड़ो तिरछी दींवारों से पांच खंडों में विभाजित था और लकड़ी की बड़ी धरनों पर इसकी छत टिकी थी। तदंतर, अदिमु के शासन काल से सोपान श्रेणो, जिसके नीचे शव ले जाया जाता था, एक प्रकार के सुरंग से होकर मस्तबो की दीवाल के नीचे से जाती थी, पर यह एक या दो ऊपर से नीचे की ओर आने वाले-फाटकनुमा पत्थरों से, जो अंत्येष्टि के बाद उस स्थान पर सरका दिए जाते थे, बंद कर दी जाती थी। तब, उस वंश की समाप्ति के पहले भी, गर्त और भी अधिक गहरा बनाया जाने लगा और अंत्येष्टि प्रकोष्ठ भूमि के नीचे कोमल चट्टान को छेदकर बनाया जाता था।

---

१. क्विबेल, टुंब ऑफ हेजी (Tomb of Hasy), सकारा में उत्खनन, १९११-१२, १९१३।

२. आयर्टन व करेली (Ayrton and Currelly), अबिदोस, iii, १९०४, cii।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देवी राजे या राजपुत्र का शव अंतिम समाधि के स्थल पर एक शवाधानीय नौका में शायद ले जाया जाता था। किसी भी हालत में इस तरह की नौकाएँ बहुसंख्यक मस्तबाओं[1] के इर्द-गिर्द कर्मकांडानुसार दफन की गई पाई गई हैं। अहा की नौ-शवाधि उसके मस्तबा में ३५ मी० उत्तर में बनाई गई थी और इसकी लंबाई १९.३ मी० और मध्यभाग में चौड़ाई ३.२ मी० थी (चि० ४३ बी)।

मस्तबाओं में शवाधान फराऊनों तक ही सीमित नहीं था। यह विशेषाधिकार उच्च राज्य मंत्रियों व प्रदेश शासकों या प्रांतीय शवाधि-स्थानों में जर्जी गर्त-शवाधि से राजपुत्रों को भी प्राप्त था। कतिपय उदिमुकालीन[2] सोपानबद्ध समाधि के रूप में या नगण्य गर्त-शवाधियों के ऊपर बने कच्ची ईंट के उपहार घरों से (चि० ४४) प्रसादाकार मस्तबा[3] के रूप में विकास को निर्देशित करने के लिए

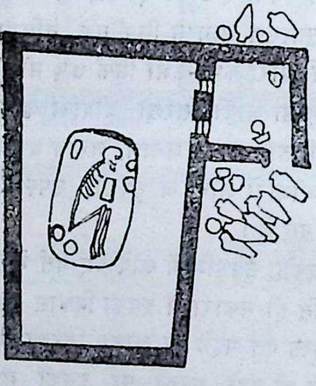

चित्र ४४. छोटा मस्तवा, तार्खन (Tarkhan)।

समाधियों को प्रकारात्मक मालाओं में सजाया जा सकता है। फिर भी यह बहुत संभव जान पड़ता है कि इस भांति निर्देशित विकास शाही शवोपासना की

---

१. एमरी, होर-अहा, १८।

२. तु० मेकाइवर (Maciver), अल अम्राह (El Amrah), १९०२, ७, गार्स्टंग (Garstang), दी थर्ड ईजिप्सियन डाइनेस्टी, रीजनर, नागा एद-दर (Naga ed-Der), ii, १४, iii, ६।

३. पेत्री और अन्य (et al), तार्खन (Tarkhan), ii, १९१३, रीजनर, डिवलोपमेंट, २४०)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आवश्यकताओं से उत्प्रेरित हुए थे और वाद में ग्रामीण क्षेत्रों में इनका सिर्फ अनुकरण किया गया था। प्रकारतः (चि० ४४) की तरह की "प्रारंभिक" समाधियाँ प्रसादीय मुखभाग-युक्त मस्तबाओं से समय की दृष्टि से प्रदर्शनीयता के साथ नहीं हैं।

फिर भी, प्रादेशिक शवाधिस्थान कभी-कभी इस तरह के विकासों को

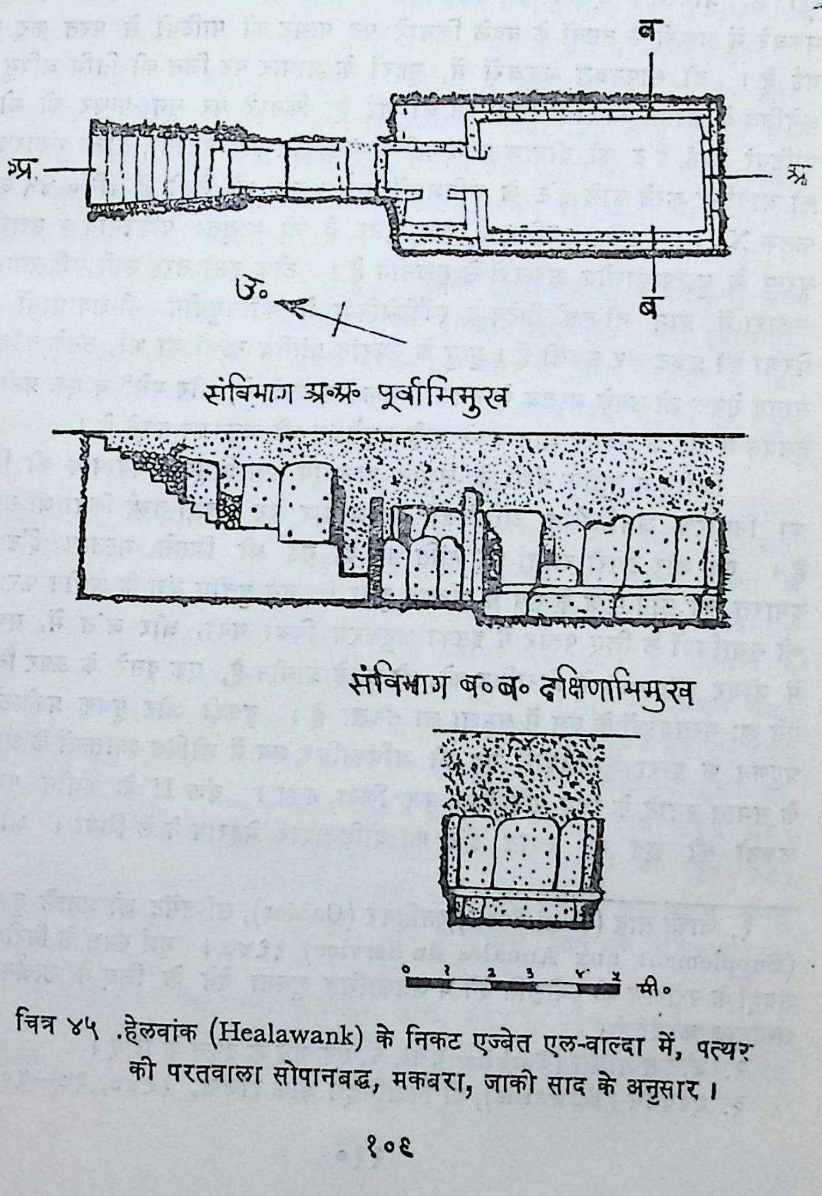

चित्र ४५ .हेलवांक (Healawank) के निकट एज्बेत एल-वाल्दा में, पत्थर की परतवाला सोपानबद्ध, मकबरा, जाकी साद के अनुसार।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निर्देशित करते हैं जो अब तक राजकीय मकबरों में नहीं देखे गए हैं। विशेषतया, हेलवान के निकट एजवेत अल-वाल्दा (Ezbet el-Walda) के कब्रिस्तानों ने, जो अभी महामहिम राजा फारूक के लिए जाकी-साद[1] (Zaki Saad) द्वारा खोदा जा रहा है, प्रारंभिक प्रस्तर के समाधिगत स्थापत्य को प्रकट किया है। एक गर्त मकबरे में लकड़ी के तख्तों के बदले किनारे पर पत्थर की पाटियों से परत कर दी गई है। दो सोपनबद्ध मकबरों में, मुहरों के आधार पर जिन की तिथि अदिमु व अनेजिव के शासन कालों में निर्धारित की गई है, किनारे पर चूना-पत्थर की मोटी पाटियां सिर्फ ईंट की दीवाल वाले गर्त को परतदार नहीं बनातीं, बल्कि भंडारघरों को आवेष्टित करने वाले ईंट के संविभागों का स्थान भी लेती हैं (चि० ४५ और फलक XV)। इसका परिणाम कुछ ऐसा है जो वस्तुतः पश्चिमीय व उत्तरीय यूरोप के बृहत्पाषाणीय मकबरों से तुलनीय है। ठीक इसी तरह उसी कब्रिस्तान व सकारा में प्राप्त नौ-कब्रें ब्रिटेन व स्कैंडिनेविया में कांस्ययुगीन नौ-शवाधानों की प्रेरणा को प्रकट कर सकती हैं। मृत्यु के उपरांत प्रांतीय रईसों का भी, उनके कतिपय मानव सेवक जो उनके मस्तव के बगल में दफनाए जाते थे, और गधे[2] व एक प्रसंग में हेलवन में ऊंट के अवयव जान पड़ने वाले पशुसेवक भी अनुसरण करते थे।

द्वितीय व तृतीय वंशों के अधीन राजकीय समाधिमूलक स्थापत्य की तिथि का निर्धारण अंतर्लिखित अभिलेखों[3] के आधार पर अच्छी तरह किया जा सकता है। एक ओर ऊपरी रचना इस भांति भर दी गई थी जिससे मस्तबा ईंट की इमारत को ठोस पुंज के रूप में परिणत हुआ। तब तृतीय वंश के अधीन फराउनों की समाधियों के लिए पत्थर में इसका अनुकरण किया गया, और अंत में, सकारा में जोजर (Zoser) के पिरामिड को, जो सबसे प्राचीन है, एक दूसरे के ऊपर निहित ऐसे छः मस्तबाओं के रूप में समझा जा सकता है। दूसरी ओर पृथक प्रकोष्ठों के प्रगुणन के द्वारा भूम्यंतर्वर्ती गृह को अधिकाधिक रूप में जीवित व्यक्तियों के आवास के समान बनाने के लिए परिवर्द्धित कर किया गया। वंश II के अधीन पूर्ववर्ती लकड़ी की छत का स्थान ईंट का घोड़ियादार मेहराब ने ले लिया। और यह

---

१. जाकी साद (Zaki Saad), काहियर (Cahier), सप्लिमेंट ओ अनाले दु सर्विस (Supplement aux Annales du Service) १९४७। मुझे स्थल के निरीक्षण व संग्रहों के परीक्षण की स्वीकृति देने व अप्रकाशित सूचना देने के लिए में उत्खनक का धन्यवाद करता हूं।

२. ओर तु तार्खन (Tarkhan), ii, ६, एक गधे के दफन के लिए।

३. एडवर्डस (Edwards), दी पिरामिड्स ऑफ ईजिप्ट, १९४७, ३७—५०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

'विकास सहज व सुव्यवस्थित रूप से हुआ होगा। वंश III के शासन काल में छत की यह पद्धति भी निरर्थक हो गई, क्योंकि अब प्रकोष्ठ संपूर्ण रूप से कड़ी चट्टान को काट कर बनाए जाते थे। यह सम्यक् तिथि-निर्धारित-माला प्राविधिक प्रगतियों और शवाधि के लिए पूर्वपेक्षया अधिक स्थायित्व प्राप्त करने व समाधि-लुंठकों से अधिकाधिक सुरक्षा पाने में विभिन्न अवस्थाओं-इन दोनों के तर्क-संगत अनुक्रम से साम्य रखती है।

उत्तरोक्त फल नहीं प्राप्त हुआ। लुटेरों ने चट्टान में सुरंग बनाकर उतनी ही सफलता के साथ पत्थर की पाटियों को अलग कर दिया जिस तरह उन्होंने कच्ची मिट्टी की ईंटों में छेद करके लकड़ी के तख्तों को तोड़ डाला था। पर स्वभावत: वे ईंट या पत्थर की इमारत में आग लगाने व उन भयंकर अग्निकांडों की पुनरावृत्ति करने में असफल रहे जिन्होंने लकड़ी की छतों व परतों वाले प्राचीनतर मकबरों की सामग्री को अत्यधिक क्षतिग्रस्त किया है। उनके क्रिया-कलापों ने फराऊनी अर्थ-व्यवस्था को कायम रखने में निस्संदेह समर्थ योगदान दिया है। पर, (साथ ही) आधुनिक पुरातत्व-वेत्ताओं को प्रारंभिक फराऊनी सभ्यता के विशद विवरण के लिए उन प्रांतीय मकबरों के उपस्करों पर निर्भर करने को बाध्य किया है, जो कम समृद्ध थे और इसलिए पूरी तरह नहीं लूटे जा सके थे।

दोनों भू-भागों की संघबद्धता के सामाजिक व आर्थिक परिणाम वस्तुत: क्रांतिकारी थे। अबिदोस में केवल जर (Zer) के ही परिवार का जर्जी व अमराती अवस्थाओं की अवधि में एक पूरे कब्रिस्तान में खोदी गई कब्रों की आधी संख्या से अधिक पर अधिकार था। एक अकेले शाही मकबरे में समस्त प्राग्वंशीय कब्रिस्तान की अपेक्षा अधिक प्रस्तर-पात्र विद्यमान थे। जोसर (Zoser) के भांडारों से (Mafa-zines) १०००० पात्र अक्षुण्ण रूप में प्राप्त हुए थे। हाल में एन्जिल बेच[1] (Enge blach) ने यह संकेत किया है कि आंतरिक शांति की दशा में एक-एक कृषक परिवार मिस्र की उर्वर भूमि से, यदि इसका उपयोग विवेकपूर्ण पद्धति से हुआ हो, पारिवारिक उपयोग के लिए अपेक्षित अन्न से तीन गुना ज्यादा उपजा सकता था। फराऊनों ने मिस्र के एकीकरण द्वारा परस्पर संहारक संघर्षों को (पृ० ७८) समाप्त कर दिया। अपने सामंतों की सहायता से उन्होंने कृषकों को सक्षम बचत उत्पन्न करने को प्रेरित किया। फिर भी, उनके प्रीतिभोज कितने भी अमितव्ययिता-

१. 'दी डाइनेस्टिक रेस' अनाले दु सर्विस, xlii, १९४३, २११—१२ उनका तर्क है कि विजेताओं के आभिजाल ने प्राग्वंशीय कृषक वर्ग को अतिरिक्त उत्पादन के लिए बाध्य किया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पूर्ण और उनकी समाधियों में दफन किए गए सुरक्षित द्रव्य कितने भी मूल्यवान रहे हों, पर वे समस्त धन का उपयोग नहीं कर सकते थे। अतः मजदूरों से लेकर किरानियों तक के कृषकेतर व्यक्तियों की नई आबादी के भरण-पोषण के लिए एक पर्याप्त परिमाण का पुनर्वितरण किया गया और कुछ राशि का आयातित कच्चे सामानों के भुगतान के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यवहार किया गया। इस प्रकार एक नूतन नागरिक अर्थव्यवस्था का जन्म हुआ, जिसमें मौलिक उत्पादन के साथ उद्योग व व्यापार को संबंधित कर दिया गया।

व्यापार को निश्चित रूप से विस्तृत व नियमित कर दिया गया। प्राग्वंशीय कालों में आयातित रजत, वेदूर्य व पूर्वापेक्षया अधिक मात्राओं में आयातित होने वाले

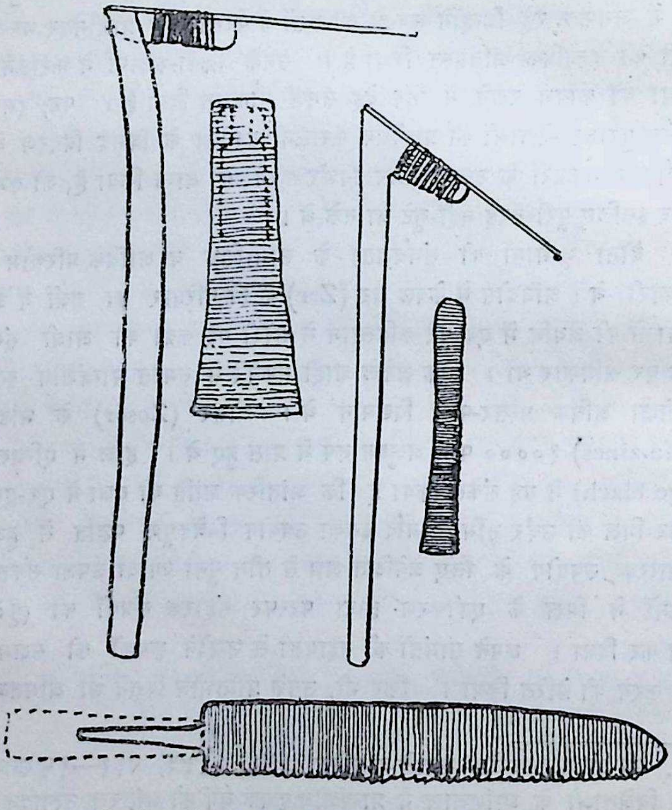

चित्र ४६. लकड़ी की मूठों-वाले तांबे के वसूले और आरा, हेमाका का मकबरा, एमरी के अनुसार, $\frac{1}{6}$।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्ध-बहुमूल्य प्रस्तर जैसे विलासिता के सामानों के अतिरिक्त लकड़ी व धातु की आपूर्तियों को प्रभावपूर्ण रीति से संघटित किया गया। भवनों व समाधियों के लिए अपेक्षित धरन लेबानन से बिबलोस होकर समुद्र मार्ग से प्राप्त किए जाते थे। वहाँ आद्यवंशीय काल में एक प्रकार के मिस्रीय उपनिवेश की स्थापना हुई थी। सिनाई में खास खोदकर ताँबा व फीरोजा निकालने के लिए फराओं स्वयं समय पर अभियात्रियों (Expeditions) को भेजते थे, और वहां की चट्टानों पर उन्होंने अपने अंतर्लेख भी खुदवाए थे। इसलिए अब शिल्पियों को औजार, शाही सेना को हथियार, देवताओं व सभ्यों को पात्र और समृद्धिशाली कृषकों को छोटे आभूषण तक प्रदान करने के लिए धातु पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थी।

विशिष्टता-प्राप्त ताम्रकारों ने विशिष्ट मिस्रीय प्रकारों[1] की एक माला को मानक का रूप दिया। इनमें ये उल्लेखनीय है :—(१) छेनियों के रूप में, गोले कुंडों वाली संकरी चपती कुल्हाड़ियां (चित्र ४६, २)[2], हैं (२) काटनेवाले छोर को बिना संकरा बनाए चपटा-चौड़ा कुठार और वसूला (चित्र ४६, १)[2], (३) कुंदे[3] के बीच

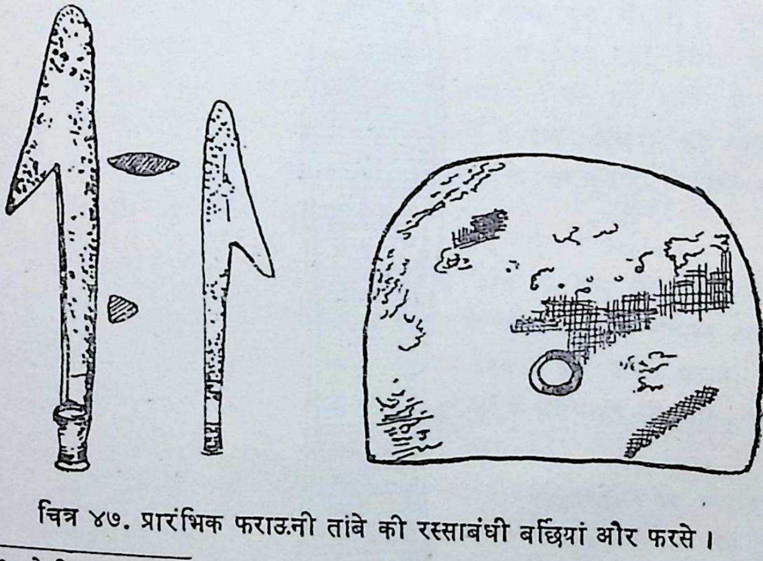

चित्र ४७. प्रारंभिक फराऊनी तांबे की रस्साबंधी बर्छियां और फरसे।

१. पेत्री, टूल्स एंड वेपन्स, १९१७, अन्यथा अनुल्लिखित विषयों के लिए।
२. एमरी, ग्रेट टुंव्स, १९४९, २१—३३।
३. तार्खन (Tarkhan) से प्राप्त अकेला नमूना बचा है, पर अविदोस के राजकीय मकबरों से प्राप्त एक राजदंड सिरे से तहदार छेद का सिद्धांत निर्देशित होता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

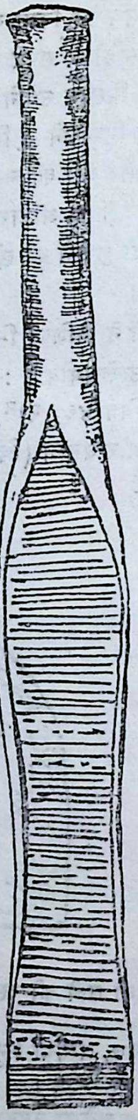

चित्र ४८. चीओप्स (Cheops) की माँ हेतेप-हेरेस (Hetep-heres) की समाधि से प्राप्त "यैले" फलक वाली तांबे की छेनी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से निकलते हुए हांथी-दांत वाली आरियां (सिर्फ वंश ६ से दांत पृष्ठस्थ-रेखा को अविच्छिन्न रखता है, चि० ४६, ३), (४) दोहरी धार वाले चपटे चाकू, जो चित्र २८ से कम चौड़े हैं, एक कांटा वाली मोटी रस्सावंधी वर्छियां (चि० ४७, १, २) तार के बने मछली फंसाने के कांटे, जो साधारणत: बिना कांटे के हैं, (७) कील के छेदों से युक्त राढ़दार कटार (चि० ३०, ३ की भांति), (८) एक चौड़ेचपटे दांत[१] को दोहरा कर बनाए गए एक छिद्र से युक्त बर्छों के सिरे, (९) उन्नतोदर फलक वाले चपटे फरसे जो विशिष्ट प्रकार के कान वाले कुठार के रूप में विकसित हुए (चित्र ४७, ३)। एक आद्यवंशीय प्रस्तर-पात्र पर पिछले भाग में घुमावदार अर्धचंद्राकार कुठार (तु० चि० ९१) चित्रित है, पर आयातत: "लीबियाई खोली"[१] धारण किए हुए एक विदेशी इसे वहन कर रहा है, (१०) दोहरा कर मोड़ो हुई तांवे की चद्दर के एक टुकड़े से बनी छोटी चिमटियां।

मिस्र के धातु-विशेषज्ञ त्रपुमिश्रित कांस्य[२] का व्यवहार करते नहीं जान पड़ते हैं। इस हद तक प्रारंभिक फराऊनी सभ्यता अब भी ताम्र युग में थी। कुठार शीर्षों को हमारे कुठारे शीर्षों की तरह कभी दंड-छिद्रों से समन्वित नहीं किया गया था। पर, बर्छी के सिरों व राजदंड-शोर्षों को एक चपटे दांते की तह करके बनाए गए छिद्र से सज्जित कर दिया गया था, जबकि वंश III में आकर छेनियों को यूरोपो की फैले-किनारों वाली कुल्हाड़ियों की तरह दोनों तरफ के उभाड़दार किनारों को (चि० ४८)[३] हथौड़े से पोटकर मजबूत बनाया गया था।

पर किसी भी हालत में धातु ने औद्योगिक उपादान के रूप में प्रस्तर क व्यवहारच्युत नहीं किया था, और विशेपत: अनलाश्म के उत्तम कोटि के सामान बनते थे। कृपकवर्ग को संभवत: धातु के उपकरण एकदम उपलब्ध नहीं थे। प्रत्युत, ये बहुत संभव प्रस्तर-फलकों से सज्जित काष्ठ-निर्मित कुदालों व अनलाश्म के दांत चढ़े

---

१. केपर्ट प्रिमिटिव आर्ट इन ईजिप्ट, चि० ७०, स्कार्फ, आल्तरतुमेर दर वोर-उंद फ्रूजित आजिप्तां (Altertumer der Vor-und Fruhzeit Agyptens), ii, १९२९ ७९, फ० २२, १०८।

२. फॉर्विस (Forbis), मेटालर्जी इन एंटिक्विटी (Metallurgy in Antiquity), लीडेन (Leiden), १९५०, ३२५—३४२, तु० ल्यूकस, ज० ई० आक (JEA) xiv, १९२८, ९७।

३. बोस्टन ललितकला संग्रहालय, बुलेटिन, xxv, अनुपूरक, १९२७, २६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काठ के हसुए से संतुष्ट थे। ये हसुए "संतुलित हसुआ"[1] नाम से अभिहित कार्यक्षम प्रकार के थे। शिल्पी भी प्रस्तर-पात्रों में खोल बनाने के लिए उपयुक्त अनलाश्म के अर्धचंद्राकार वेधकों, अनेक सूजों और संभवतः बसूलों जैसे प्रस्तर के अनेक उपकरणों

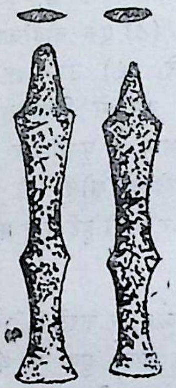

चित्र ४९. छेनी की तरह की नोंकवाले बर्छी-सिरे, जर राजा का मकबरा $\frac{1}{2}$।

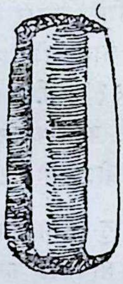

चित्र ५०. अनलाश्म का छुरा $\frac{1}{2}$।

का व्यवहार करते थे। राजकीय सेना छेनी जैसी नोंक वाले या दांतदार वाण-सिरों चि० ४९ की तरह के फलक चढ़ी बर्छियों पिरिफार्म (Piriform) गदाओं व प्रक्षेपण-पट्टियों से सज्जित थी। सिहाखेट रंगपट्ट पर चित्रित शस्त्र दोहरा कुठार नहीं होकर एक नालीदार पत्थर है जो चारों तरफ से एक चर्म-रज्जु से बंधा है। यह प्रायः अल उमरी के "बोडको" से उद्भूत है। शाही समाधियों और मंदिरों तक में हम भव्यतापूर्वक बने वर्तक चाकू, जिनके दांत अनलाश्म के एक फलक से बने हैं (चि० ३२,६), और कुशलतापूर्वक गोलाकार (चि० ५०) या चतुष्कोण बनाए गए किनारों वाले छोटे फलकों से युक्त अनलाश्म के छुरे पाते हैं। चिओप्स[2] (Cheops) की माँ हेतेप-हेरेस की समाधियो में इस तरह के अनलाश्म अधिक भड़कीलों पर कम उपयोगी स्वर्णानुकृतियों के साथ-साथ प्राप्त हुए थे।

---

१. एमरी, टुंब्स ऑफ हेमाका (सकारा में उत्खनन) १९३८, तु० आस्पेक्ट्स ऑफ आर्कियोलॉजी, ओ० जी० एस० ग्राफोर्ड को अर्पित निबंध, लंदन, १९५१, ४१।
२. बोस्टन ललितकला संग्रहालय, बुलेटिन, xxv, अनुपूरक, १९२७, २६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तांबा या बहुमूल्य धातु के पात्र भी बनते थे। कील के जरिए लगाई गई टोंटी वाली मिट्टी की सुराही (चि० ५१) हमें पहले ही जर्जी समाधियों में मिल चुकी हैं और नारमेर के रंग-पट्ट पर एक सेवक इसे वहन किए हुए है। पीतल की चद्दर से

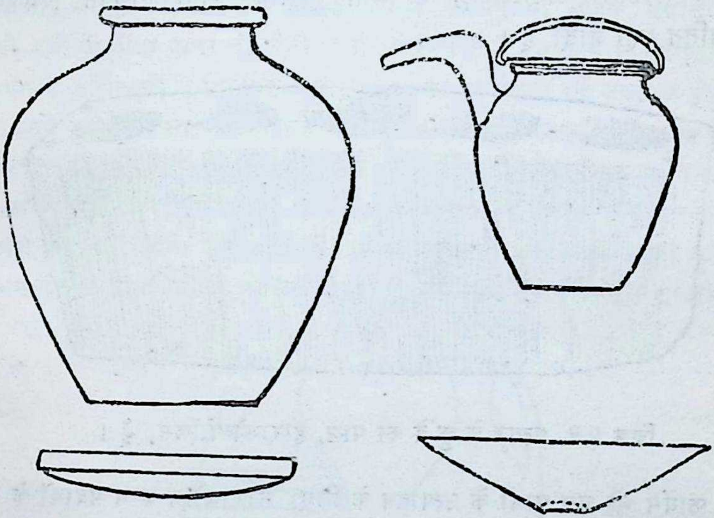

चित्र ५१. सकरा में प्रथम वंशीय समाधि से प्राप्त, तांबे के वर्तन, ⅛, एमरी के अनुसार।

जोड़ी हुई एक खुली टोंटी वाला प्रकार लगभग बाद में प्रचलित हुआ जान पड़ता है, पर, वंश III[1] तक परिचित हो चुका है। कटोरों के स्थायित्व को कभी-कभी बाहर से एक छोटे कूटोत्य (Omphalos) को हथौड़े से ठोककर बढ़ाया जाता था, जिससे इनका तला थोड़ा नतोदर हो गया है।

प्रस्तर-पात्र अब बड़े पैमाने पर बनाए जाते थे, पर सामान्यतया जर्जियों द्वारा अभिमानित चित्र विचित्र प्रस्तरों की अपेक्षा, अम्राती व मादी संस्कृतियों की भांति अधिकांश में सेलखड़ी या भूरी-चट्टान के बनते थे। शाही पात्रों के लिए स्फटिक-शिला, ज्वालाकांच व वेदूर्य तक का उपयोग होता था। व्यवहारतः धातु या मिट्टी के बने सभी आकारों का प्रस्तर में कुशलतापूर्वक पुनरुत्पादित हुए, यहां तक कि टोंटीदार सुराहियां भी। सेलखड़ी के एक समानांतर आकार को खोद कर बनाए

१. Boston Museum of Fine Arts, Bull., vxv, Suppl. १९२७, २६.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गए दो या तीन प्यालों वाले कुंदे के पात्र[1] जो ढक्कन बांधने के लिए ऊपरी किनारे पर छिद्रित हैं—दुर्लभ हैं और स्पष्टतः आद्यवंशोय युग के प्रारंभिक काल में प्रसीमित हैं (चि० ५२)। यह प्रकार सुमेर, इलाभ व कीट में लोकप्रिय था और अबूसिर एल-मेलेक (Abusir el-Meleq) से प्राप्त मिस्रीय नमूना एजियन (Aegean) से आयातित कहा जाता है।

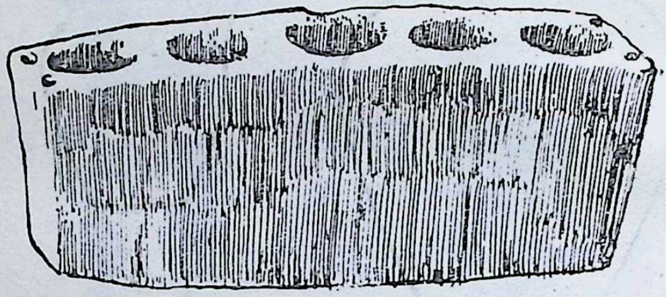

चित्र ५२. पत्थर के कुंदे का पात्र, होराकोन्पोलिस, ½।

फायेंस भी अब पात्रों के उत्पादन के लिए, नौकाओं व अन्य पदार्थों के प्रतिमानों और मनकों व तावीजों के लिए व्यवहृत होता था।

अब मृद्भांडो का भी उत्पादन बड़े पैमाने पर होता था, पर इसमें वास्तविक तीव्रगामी चाक की सहायता नहीं ली जाती थी। अधिकांश पात्र रूखड़े भूसा मिले हुए और लाल या हल्के भूरे रंग के हैं। इन रूखड़े आकारों में से अनेक का पूर्वाभास मादी प्रकारों में उपलब्ध होता है। पर चि० ६२,१ की तरह के एक तिर्यक[2] पार्श्व-वाले रूखड़े कटोरे के मेसोपोटेमियाई समानांतर मिलते हैं। स्वभावतः अब संपन्न व्यक्ति धातु या प्रस्तर के पात्रों का व्यवहार करते थे। पर राजकीय समाधियों तक में हमें उत्तम कोटि की लाल मिट्टी के पात्र मिलते हैं। इन पात्रों में पदीदार कटोरे वंश III के अधीन और चारो ओर से विभूपित संकीर्ण मुखयुक्त अथवा स्पेन व

---

१. क्विवेल, हिराकॉन्पोलिस (Hierakonpolis), i, pl. xxxi, ३-४; Scharff, Abusir el-Meleq. ४१

२. पेत्री, कॉर्पस ऑफ प्रीहिस्टॉरिक पॉटरी (Corpus of Prehistoric Pottery), R—प्रकार २४, तिथि, अ० ति० ६३—४, वहुत ऊंची हो सकती है। क्योंकि यह प्रकार प्रायः वंश VI तक कायम रहता है (ब्रंटन क्वो ऐंड वदेरी II, फ० lxxvi, ६ E तु० एमरी, हेमाका, फ० २७, १७।)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ब्रिटिश टापुओं में वृहत्पाषाणीय समाधियों से प्राप्त पात्रों का स्मरण दिलाने वाला बहुत छोटी गरदनवाला[1] गोल पेंदीदार छिद्रित मृदभांड सम्मिलित हैं।

प्रारंभिक फराऊनी मृदभांड शायद ही कभी विभूषित किया जाता था। पर प्रथम वंशीय युग के कतिपाय भांड विशुद्ध रूप में काचित थे, जबकि अवशिष्ट भांड अब भी जर्जी विभूषित पात्रों की शैली [2] में चित्रित किये जाते थे। तदनंतर चमकीले रंग के अभिकल्पों से विभूषित मूठदार घड़ों का एक छोटा वर्ग उपलब्ध होता है।[3] यद्यपि इनमें कुछ निश्चित रूप में बने थे, पर अधिकांश निश्चय ही या तो सीरिया पैलस्तीन से आयात किए गए होंगे या मिस्र में सीरियाई कुम्हारों द्वारा बनाए गए होंगे, क्योंकि वहां आरंभिक कांस्य II में इनके आकार व शिल्प के समानांतर पाए जा सकते हैं। इसी भांति कड़े लाल "धात्वीय" द्रव्य की बनी लंबी पतली कुप्पियां[4] जो प्रथम वंशीय समाधियों में भी पाई जाती हैं, सीरिया या पैलेस्तीन से आयातित

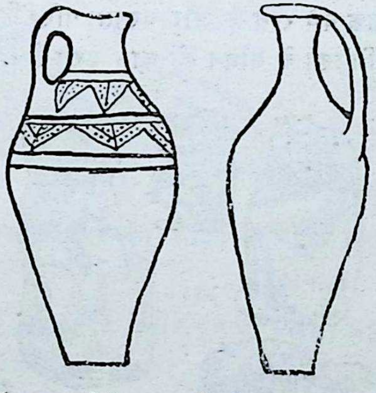

चित्र ५३. अबिदोस में प्रथम वंशीय समाधि से उपलब्ध (उदिमु) आयातित (?) सीरियाई घड़े, $\frac{१}{४}$।

---

१. हेतेपहेरेस की समाधि से प्राप्त, अबतक अप्रकाशित।

२. अनाले दु सर्विस, xxxix, १९३९, ७७० (अबिदोस), उदिमु के शासन काल के काचित भांड (पेत्री, राजकीय समाधियां, ii, ३६)।

३. एमरी, ग्रेट टुंब्स, १२१, बॉनेट, Ein fruhgeschichtliche Graberfeld bei Abusir, १९२८, पेत्री, रॉयल टुंब्स. ii, ९, जर की समाधि।

४. पेत्री ने इस द्रव्य के विदेशी स्वरूप को स्वीकार किया, पर इसे 'एजियन' की संज्ञा दी। इसका वास्तविक स्रोत फ्रैंकफर्ट द्वारा अभिज्ञात हुआ था, स्टडीज, i,१०७-८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जान पड़ती हैं। इनका व्यवहार निस्संदेह जैतून का तेल रखने के लिए होता था। अबिदोस के कब्रिस्तान में खंडित रूप में प्राप्त कंकतित द्रव्य के पात्र इसी प्रकार के थे। अंत में हल्की गुलाबी रंग की मिट्टी के कुछ पात्र, जो आंशिक रूप में लाल रंग के लेप से लिप्त हैं और तब उद्भ्राजक उपकरण[1] से निष्पादित झिलमिल प्रतिमानों से विभूषित हैं, पैलेस्तीन या फोनीसिया में निर्मित जान पड़ते हैं, जहां इसी प्रकार का "झिलमिल" उद्भ्राजित भांड, प्रारंभिक कांस्य २ में वहुत लोकप्रिय था।

अब तांबे के उपकरणों से सज्जित वढ़इयों द्वारा निर्मित उत्पादनों में सूत्कीर्ण वृषापादो[2] पर खड़ी चारपाइयों का उल्लेख करना पर्याप्त है। यह विधा अ० ति० ६६ में ही या वंश० के शासन-काल में दृष्टिगोचर होती है।

प्रसाधन-सामग्री, जवाहरात व जंतरों की निरतिशय संपदा में से स्थानाभाव के कारण केवल एक वंश का उल्लेख किया जा सकता है।

पशुओं के आकार के सिलेटी रंग-पट्ट जो साधारणतः पूर्ण रूप में रूढ़िग्रस्त हैं, वंशीय काल के प्रारंभ तक बचे रहते हैं और वस्तुतः परिवृंहित रूपांतर में श्एनरवैल और उसके सामंतो के अभिलेखो के साधन का काम करते हैं। पर आ० ति० ७० के

चित्र ५४. प्रस्तर व फायेंस की कपिमूर्तियां, लगभग ३/४।

१. पेत्री, तारखन, i, १९१३, १७, फ० XVI, ४।
२. पेत्री, प्रीहिस्टॉरिक ईजिप्ट, १०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाद के सामान्य प्रकार से आयताकार हैं। पर आभूषणों में प्रस्तर के चक्राकार मनके जिनपर सोने की पालिश लगी हुई है, अ० ति० ६५ व ७२[1] के बीच मिलते है, और इसी प्रकार लोहे के मनके[2] अ० ति० ७२ में तिथित हैं। प्रथम वंश के शासन काल में फाएंस बिल्कुल सर्वसामान्य हो जाता है और चक्राकार रूप में उन्नतोदर लंबा वेलनाकार मनका (फलक XIb) वहुत ही विलक्षण है। इसका मूलरूप चक्करदार सोने के तार से बना है जिसका अनुकरण वेदूर्य पर की उत्कीरण द्वारा किया गया है। प्रचुर संख्या में पशु, जिनमें कपि व सिंह उल्लेखनीय हैं, (चि० ५४, ५५), लोलकों, ताबीजों व क्रीड़ा-पदार्थों[3] के रूप में प्रकाश में आते है। अंत में, प्रस्तर, हाथी-दांत या फाएंस के उत्कीर्ण बेलन, जो जर्जी युग में भी छिटपुट रूप में अस्तित्व में आए थे, प्रथम फरऊनों के शासन-काल में सामान्य हो गए। पर अव ठीक मेसोपोटेमिया की तरह पात्र में निहित वस्तुओं के स्वामित्व को सूचित करने के लिए

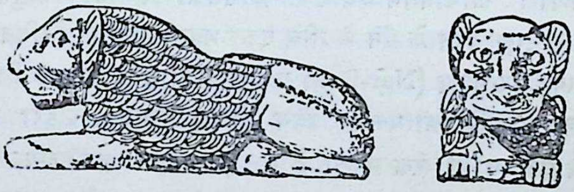

चित्र ५५. राजकीय शवाधिस्थान, अबिदोस से प्राप्त एक क्रीड़ा पदार्थ।

इनको मिट्टी के मुहरदार घड़ों पर लपेट कर चढ़ा दिया जाता है, क्योंकि इन पर स्वामी का नाम अंतर्लिखित है।

वस्तुतः नूतन पुञ्जी-कृत समाजगत बचत द्वारा पोषित पूर्णकालिक विशिष्टीकृत व्यक्तियों में लिपिक किसी भी दशा में कम महत्त्वपूर्ण नहीं थे। लाल न काली स्याही के लिए अलग खानों वाला एक लिपिक का रंग-पट्ट वस्तुतः एक पारिवारिक समाधि में पाया गया था। प्रस्तुत समाधि एक मस्तबा[4] से संबंधित थी। और इनके

१. यूनिवर्सिटी कॉलेज, लंदन में तिथित नमूने (उपलब्ध है)।
२. पेत्री, आदि, दी लेबिरिंथ जर्जेह (Gerzeh), १९११, १५।
३. पेत्री, प्रीहिस्टॉरिक ईजिप्ट, १०।
४. पेत्री, गिजेह ऐंड रिफेह (Gizeh and Refeh), ५ व फलक III अ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शिल्पमूलक उत्पादन प्रचुर हैं। इस संयुक्त राज्य के लिपिकों के सिर्फ अभिलेखों को सुरक्षित रखने का या लिखित रूप में मंतरों को जादू-मंतरों को कायम रखने का कार्य ही नहीं सौंपा गया होगा, बल्कि आवश्यक रूप में विचारों के संप्रेषण के लिए एक सामान्य परंपरा स्थापित करने का भार भी दिया गया होगा। स्वभावत: इसका वाहन-चित्र-लिप्यात्मक था। वस्तुत: मिस्र की चित्रलिपियाँ (Hieoglyphs) सुमेर व इलाम के समनांतर चित्रलेखों की अपेक्षा कम सरलीकृत व अधिक सुविधापूर्वक अभिज्ञातव्य चित्र हैं। फिर भी, वंश० के अभिलेखों में भी ये आकार में पहले से ही रूढ़ीकृत हैं और भावाभिलेखों के रूप में रूढ़ अर्थों से समन्वित हैं।

नियमानुसार शैली के लिए ये लिपिक पहले से हाथी-दांत की नकाशी करनेवालों व पात्र-विभूषकों द्वारा विशदीकृत समुत्कीरणात्मक व विंदु-रेखिक कलामूलक रूढ़ियों से प्रेरणा ले सकते थे। चित्रों के प्रतीकात्मक व्यवहार के लिए परंपरानुसार, एक प्रदेश व उनके निवासियों के लिए प्रयुक्त नोमाओं (Nomes) के चिह्नों ने एक आदर्श प्रदान किया। प्राचीनतम अवशिष्ट अभिलेखों की लिपि वस्तुत: अधिकांश में चित्रात्मक है। एक श्येन के डैने के नीचे एक भवन द्वार पर चित्रित एक राजा का 'नाम'-वृश्चिक, नर-मत्स्य (Nar-fish) व एक योद्धा उसी हद तक चित्रालेखात्मक है जिस हद तक भावाभिलेखात्मक। श्येन (होरस) वस्तुत: दोहरा मुकुट धारण कर सकता है या एक फावड़ा रख सकता है। वृश्चिक या नर-मत्स्य सिर्फ उपाधि न होकर राजा का वस्तुत: व्यक्तिगत रक्षक तत्त्व हो सकता है। इस स्थिति में चित्रात्मक लिपि की उद्भावना कथ्य भाषा[1] की ध्वनि के साथ इस प्रकार के चित्र के समीकरण के तुल्य होगी। इस तत्त्व का निश्चित रूप में उदाहरण नर-मत्स्य चित्र में उस चिह्न के संबंध में मिलता है जिसका मेनेप (नार मेर) के व्यक्तित्ववर्णन के रूप में कोई भावाभिलेखात्मक अर्थ नहीं रहा होगा। पर, जो संभवत: उसके नाम में उच्चारित म्० र्० (M. R.) शब्दांशों को उपस्थापित करने का काम करता था।

अंत में मिस्रीय लिपिकों ने स्वत: व्याख्यात प्रतीकों द्वारा नहीं सूचित होनेवाले 'मंत्री' 'उन्नीत' जैसे नामों या अवधारणाओं के लिए प्रयुक्त विशुद्धतर रूढ़िग्रस्त प्रतीकों की उद्भावना के बदले वस्तु विशेष के उच्चारित नाम की ध्वनि (या प्रारंभिक ध्वनि) के लिए ध्वन्यात्मक रूप में उपयोग के लिए चित्रों का प्रयोग किया

---

१. परवर्ती लिपि में अक्षर के रूप में व्यवहृत एक चिन्ह अ० ति० ६अ-६३ के रूप में तिथित एक पश्चात्कालीन जर्जी रङ्गपट्ट पर मिलता है (Maclver—मेकाइवर), अम्राह, फलक VII, 2, पर यह किसी खेल या देवता का चिह्न भी हो सकता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और[1] इस प्रकार यथार्थतः उच्चारित शब्द की वर्तनी को उपस्थापित किया। नारमेर के शासन काल में यह क्रम उपस्थित हुआ जान पड़ता है। पर, इससे पूर्व[2] इसका साक्ष्य नहीं मिलता है। बहुत धीरे-धीरे प्रथम व द्वितीय वंशों के अधीन वर्ण-विचार का मानकीकरण किया गया, और तदनंतर व्यावहारिक उपयोग के निमित्त चित्राभिलेखों का रूढ़िमूलक प्रवाही-लिपि, सानुक्रम लिपि (Hieratic) के रूप में सरलीकरण हुआ। पर कर्मकांडी व अंत्येष्टिमूलक अंतर्लेखों के लिए विस्तृत व वास्तविक चित्रलिप्यात्मक अक्षरों को कायम रखा गया और दोनों ही लिपियों में भावाभिलेखों का व्यवहार अनुक्रमोच्चारित शब्दों के साथ-साथ होता रहा।

यह पूर्ण संभव है कि चित्राभिलेखात्मक रूढ़ियों का मानकीकरण अधिकांशतः निम्न व मध्य मिस्र में कार्यान्वित हुआ, क्योंकि राजाओं व महान व्यक्तियों से संबंधित मस्तबा समाधियां अबिदोस या दक्षिण के अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिकतर सक़ारा, गीजा, तारखन व अन्य उत्तरी शवाधि-स्थानों में दृष्टिगोचर होती हैं। यह भी संभव है कि लेखन-कला का विकास दक्षिण की अपेक्षा उत्तर भी द्रुततर गति में हुआ। पर निम्न मिस्र से उपलब्ध होने वाले लेखन कला के प्राचीनतम नमूने तुराव हेलवान से प्राप्त पात्र हैं, जिनपर क्रमशः उच्च मिस्र[2] के राजाओं वृश्चिक व का (Ka) के नाम हैं। इस कल्पना का कोई आधार नहीं है कि मिस्र में चित्रलिपि का प्रचलन बाहर से हुआ। फराऊनी भौतिक संस्कृति के अवशिष्ट तत्त्वों के विषय में यही नियम लागू हो सकता है।

मिस्र की सभ्यता के उत्थान की एक स्वतःपूर्ण प्रक्रिया के रूप में उपस्थित करना संभव है, जैसा कि हमने अभी किया है। पर प्राग्वंशीय व प्रारंभिक फराऊनी संस्कृतियों के प्रथम वर्णन के क्रम में डे मार्गन (De Morgan) ने यह माना है कि परोक्त को धातु-विज्ञान व लेखन कला जैसी सुमेरीय कलाओं के अधिकारी एशियाई आक्रमकों ने मिस्र में प्रचलित किया। इसी तरह पेत्री ने एक "वंशीय प्रजाति" को स्वीकार किया है और विजय को कायम रखने के लिए एक सिमेनियाई काल (Semainain) व उनसे उद्भूत सिमेनियाई संस्कृति को व्यक्त किया है। पर पुरातात्विक प्रलेख जर्जी व वंश O के बीच, हेराकोन्पोलिस की चित्रित समाधि और "का" की समाधि के बीच या मादी व तुराह के कब्रिस्तानों के बीच किसी कालांतर के अस्तित्व

१. गार्डिनर, ज० ई० आक० मैं०, ii, १९१५, ६१—७५।

२. जुङ्कर, तुराह, १९१२, ७, जाकी साद, काहियर (Cahier), ३, १११ (समाधि १२२७)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

का अवसर, जैसा कि कुमारी कैंटर ने सविस्तार[1] प्रदर्शित किया है, नहीं देता है। और न तो यह किसी ऐसी संस्कृति को ही प्रकाश में लाता है जो अब न जर्जी हो और न मादी और न फराऊनी ही है।

और न तो मिस्र के बाहर हम किसी ऐसी संस्कृति का संकेत कर सकते हैं जो शैल्पिक व आर्थिक दृष्टिकोण से जर्जी या मादी संस्कृति के समकक्ष हो और साथ ही प्रथम वंश के अधीन अनुभूत क्षमताओं से परिपूर्ण हो। दूसरी ओर डा० डेरी[2] ने नृतात्विक परिवेश में प्रथमतः तृतीय वंशीय समाधियों में और हाल में हेलवन के निकट कुछ प्राचीनतर समाधियों में भी एक नूतन प्रजातीय प्रकार—गीजा-प्रकार को पहचाना है, जो अपेक्षाकृत अधिक-लंबे आकार और संकीर्ण पंचकोणात्मक कपाल के बदले विस्तृत, अंडाकार कपाल के द्वारा, परिचित प्राग्वंशीय जनों से भिन्न है। पर लंबा शरीर-संस्थान और संभवतः अडाकार कपाल भी अब उत्तर-पाषाण-कालीन मेरिम्दे व अल उमरी में अभिज्ञात हुए हैं। अतः डेरी अब "वंशीय" का "प्राग्वंशीय" प्रजाति के साथ प्रभेद दिखाने की अपेक्षा "उत्तरी" का "दक्षिणी प्रजाति" के साथ भेद प्रदर्शित करना अधिक पसंद करते हैं।

जर्जी काल की अवधि में और उसके बाद घाटी के बाहर से नूतन जातीय तत्त्वों ने प्रवेश किया होगा। उन्होंने मिस्र के एकीकरण में योगदान दिया होगा, पर उन तत्त्वों ने निश्चय ही किसी ऐसी परिपक्व संस्कृति को उपस्थापित नहीं किया जो प्राग्वंशीय संस्कृति से उत्कृष्ट रही हो। दूसरी ओर, पुरातात्विक अभिलेख स्पष्टतः विदेशीय स्थलों के साथ ऐसा संबंध प्रकट करता है जिसकी परिणति विदेशी विचारों व उद्भावनाओं से प्रेरणा के रूप में हुई होगी। नील घाटी की प्राकृतिक अक्षमताओं

१. जर्जी या सेमेनी (Gerzean or Semainian), ज० नी० ई० स्ट० (JNES), iii, १९४४, ११०—१३६।

२. काहियर (Cahier) ३, सप्लिमां ओ अनाले दु सर्विस (Supplement aux Annales du Service), १९४७, २५० आगे। तुरा में O से II वंशों तक में रखी गई शवाधियों से प्राप्त कपाल अविदोस प्राप्त दासों के कपालों की भांति 'प्राग्वंशीय प्रजाति' से संबंधित थे। पर जुङ्कर के अनुसार (Rassen u. Reichen in der Urzeit Agyptens; Anzeiger Akad de. Wissen, Wien, phil-hist—Kl, १९४९, ४८५—४९०)। गीजा प्रकार पहले ही वंश I के अधीन हेलवान, सकारा व अविदोस में और अल उमरी की 'उत्तर पाषाण युगीन' कब्रों में भी उपस्थापित हुआ है। पर, मादी के कपाल मुझे पंचकोणात्मक दीख पड़ते हैं, और हेलियोपॉलिस से प्राप्त कपाल 'निग्रोसम' कहे जाते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के कारण मिस्र को लकड़ी, धातुओं व विलासिता की सामग्री का आयात करना पड़ता था। साइक्लेडिक संगमरमर (Cycladic marble) जैतून के तेल, और प्रायः विदेशी पात्रों में विदेशी सुरा, चांदी, वैदूर्य और "ज्वालाकांच आदि का स्पष्टतया आयात होता था। इसके बदले मिस्र में प्रारंभिक फराऊनों के शासन काल में खरादे गये प्रस्तर के पात्र बिब्लोस व आई के मंदिरों में अर्पित किए जाते थे। प्रारंभिक फराऊनी प्रस्तर-पात्र क्रीट तक भी पहुंचे थे, और विभूषित पात्रों पर नौकाओं द्वारा वहन किया जाने वाला मीन-ध्वज (Fish standard) साइक्लेडिक पोतों पर भी दृष्टिगोचर होता है।

आयातित द्रव्यों व उत्पादित पदार्थों के साथ एक भिन्न वातावरण द्वारा प्रेरित विधाओं व अन्य ऐतिहासिक परिस्थितियों द्वारा प्रोत्साहित विचारों का आगमन हुआ। इस समय तक कम से कम वेदूर्य संभवतः मेसोपोटेमिया होकर मिस्र आया। और वहां इस अवधि में सुमेरीय समाज वर्बरता से सभ्यता की ओर अग्रसर हो रहा था। दो उद्भूयमान सभ्यताओं के बीच विचारों का उर्वर आदान-प्रदान पूर्णतः युक्ति युक्त और वस्तुतः संभव भी है। पहले ही हमने जर्जी काल में (१) कतिपय टोंटीदार पात्रों व (२) वेलनाकार मुद्राओं के मेसोपोटेमियाई सामानांतरों का परिचय पाया है। अंतिम जर्जी व आद्य-वंशीय (कालों) में इनके साथ (३) विदेशी नौकाओं, (४) एक "नायक" के परिधान, (५) कुत्ते की एक नई नस्ल, (६) अभिनंदनात्मक व भक्तिमूलक उत्कीरणाओं के साधन के रूप में गदा सिरों के उपयोग, (७) अनेक कलामूलक विधित्साओं, उल्लेनीय रूप में परस्पर विरोधी वर्ग और द्विशीर्ष पशु एवं परस्पर आश्लिष्ट ग्रीवाओं वाले दानवों को समन्वित किया गया। वंश I के अधीन (८) ईंट के छिद्रित स्थापत्य, (९) तिर्यक्-पार्श्व कटोरों व पात्राधारों जैसे अनेक मृच्छिल्पीय आकारों, और (१०) चित्राभिलेखात्मक लिपियों के ध्वन्यात्मक प्रयोग के द्वारा इन समताओं की पूरी माला पूर्ण हो जाती हैं।

किसी भी स्थिति में यह निश्चित नहीं है कि ये सभी सामान्य लक्षण सुमेर से उद्भूत हुए। सुमेरीय व मिस्रीय लिपियां वस्तुतः चित्राभिलेखों के रूप में शुरू हुईं, पर उनके निजी चिह्न उतने ही भिन्न हैं, जितने कि वे हो सकते थे। एकमात्र ठोस साम्य का आधार ध्वन्याभिलेखों के रूप में कतिपय चित्राभिलेखों का प्रयोग है। इनमें से प्रत्येक के प्रसंग में, व्यक्तिगत नामों को उपस्थित करने का प्रायः यह प्रथम प्रयास था। मस्तबाओं की ईंट की ताखदार इमारत लकड़ी के बने महल के बाहरी मुखभाग की ईंटों में अनुकृति के रूप में पूर्णतया व्याख्येय है। नील के तट पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चेलनाकार मुद्राएं भी संभवतः उत्कीर्ण नलिकाकार मनकों[1] से या अधिक समीचीनता के साथ उत्कीर्ण बांसुरियों (reeds) से विकसित हुई होगी। अविकसित मिस्र में पूर्व प्रौढ़ सुमेर से सभ्यता के प्रचार का प्रश्न नहीं उठता है। प्रत्युत्, सुमेरीय तैथिकी इस भांति विध्मात कर दी गई है कि उर की शाही समाधियों का साम्य अविदोस कब्रिस्तान के साथ न करके हेलेप-हेरेस की कब्र के साथ या पंचम वंशीय शवाधियों के साथ किया जाना चाहिए। मिस्र की सभ्यता सम सामयिक प्रारंभिक वंशीय सुमेरीय सभ्यता से समृद्धतर जान पड़ती है।

ऐसा होने के वावजूद कुछ अंशों में सुमेर शैल्पिक श्रेष्ठता का दावा कर सकता था। उदाहरण के रूप में, सचक्र शकट व कुलाल चक्र (Potter's Wheel) वहां मिस्र[2] से वहुत पहले प्रचलित थे। मिस्र के धातु के औजार व हथियार सुमेरीय सामानों से बिल्कुल सुविधापूर्वक पृथक् किए जाने योग्य हैं। अतः एकतरफा अनुकरण की संभावना नहीं है। एक प्रकार की अन्योन्य उर्वरकता निश्चित रूप से घटित हुई, पर संबंध कठिनता से एकतरफा थे। इनमें से प्रत्येक भागदार के अपने योगदानों को आंकने के लिए और प्रसार के विरुद्ध स्वतंत्र विकास के दावों की सामर्थ्य का पता लगाने के लिए तिग्रीफराती घाटी में सभ्यता के उद्भव की परीक्षण करना होगा।

---

१. स्कार्फ, Altertumer der vor—und Fruh-Zeit, ii, १९२९, ९६।

२. नवीन राज्य के समय तक मिस्र में सचक्र यानों का उपयोग नहीं होता था; और वंश III तक अधिकांश पात्र निश्चित रूप से चाक की सहायता के बिना ही बनते थे। पर, मायर्स (Myres, सिमेटरीज् आफ अरमंत, १७७) जर्जी भांडों पर चाक के चिन्ह देखने का दावा करते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

षष्ठ अध्याय

मेसोपोटामिया का उपनिवेशीकरण

दजला फ़रात की घाटी में नील घाटी की अपेक्षा न्यूनतर एकरूपता है। खास वेबिलोन, स्थूल रूप में वगदाद के तल से लेकर फारस की खाड़ी तक के इसके निम्नतर विस्तार, आर्थिक दृष्टि से वस्तुतः नदियों पर निर्भर हैं। उनका ही जल प्राकृतिक जल-प्लावन या नहरी सिंचाई के द्वारा इन क्षेत्रों में स्थायी जीवन को संभव वनाता है। आर्थिक एकरूपता को अंततः राजनैतिक अभिव्यक्ति प्राप्त करनी थी, जैसी कि अंत में हंमुराबी (Hammurabi) के अंदर हुई। पर और उत्तर निम्न समतल में अन्य धाराएं वहती हैं। दियाला व दो जाव (Zabs) तिग्री में वहती हैं, और खावर व वालिख फरात की सहायक नदियां हैं। इनमें से प्रत्येक आर्थिक दृ टि से स्वतंत्र प्रणाली थी। और यहां भी असीरिया व सीरियां में ये नदियां जिस क्षेत्र में प्रवहमान हैं वहां अव भी अतलांतिक से आनिवाले शिशिरकालीन झंझावात सिंचाई के विना हीं अन्न की खेती को थोड़ी अनिश्चितता के वावजूद संभव वनाने में पर्याप्त हैं।

जलवायु में और भी वैषम्य है और, इसके फलस्वरूप वनस्पति समुदाय में भी वेबिलोनिया के दक्षिणी भाग, सुमेर में शिशिर ऋतु कुछ मृदु रहती है और यहां खजूर के वृक्ष आसानी से पाए जाते हैं। उत्तरी वेबिलोनिया प्राचीन अक्कद (Akkad) में भी शिशिर में कड़ाके की ठंढ पड़ती है और प्रत्येक रात प्रचुर तुषारपात होता है। असीरिया व सीरिया में भी हिमपात हो सकता है। यहां मानव को भूमि से आवद्ध करने के लिए खजूर के वृक्षों की जगह अंगूर व अन्य फल वृक्ष उगते थे जो कम समर्थ नहीं हैं।

मेसोपोटेमिया में भौगोलिक दृष्टि से मिस्र की अपेक्षा सिर्फ वहुत कम एक-रूपता ही नहीं है, अपितु यह अधिकांश में अरक्षित भी है। मरुस्थल से घिरा रहने के कारण मिस्र सुविधापूर्वक रक्षा करने योग्य है और ऐतिहासिक काल के प्रारंभ से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकर हिक्सस (Hyksos) उपास्थान की तरह की अल्पकालिक घटनाओं को छोड़कर इसने २,००० वर्षों तक आक्रामकों से अपने द्वार को सफलतापूर्वक बंद रखा। तिग्री से पूरब जाग्रोस पर्वतों की घाटियां व इरानी पठार है और उत्तर में खुर्दिस्तान व अर्मेनिया हैं जो एक वृद्ध्युन्मुख जन-समुदाय के भरण-पोषण के लिए पूर्ण उर्वर है। घाटी में इस प्रकार (के जन समुदाय) का प्रवाह आसान है, और मेसोपोटेमिया का इतिहास इलाभ गुतियम (Gutium) अबन, खत्तियों (Hittite) असीरियनों व चाल्दियनों (Chaldeans) के आक्रमणों व आधिपत्यपूर्ण कालों से चिह्नित है। कोई प्राकृतिक सीमा-गुल्म बेबिलोन को अरबी रेगिस्तान से पृथक् नहो करता है। और वहां भ्रमणशील व युद्धप्रिय जनसमुदाय पर्यटन करता रहता है जो अनावृष्टि के कारण सिंचित भू-भागों में जाने को सर्वदा बाध्य रहता है। कतिपय अधिकारी विद्वान इसी दिशा से अक्कदियों व अमरातियों (Amorates) के प्रकट होने के पक्ष में हैं।

तीसरे, बेबिलोन मिस्र की अपेक्षा और भी कम आत्म-निर्भर है। नदियों के दोनों तटों पर वनस्पति विहीन कछार मीलों तक फैला हुआ है। पर, यहां चूना-पत्थर की चट्टानें हैं जिनसे चर्ट (Chert) व मकान बनाने का घटिया पत्थर मिलता है। पर, मेसोपोटेमिया के मरुस्थल ने अनलाश्म-गुल्म नहीं मिलते हैं और न तो मिस्र की तरह सुगम वादियों में उत्तम कोटि के अनलाश्म की प्रचुर आपूर्ति ही उपलभ्य है। अतः मकान बनाने के लिए केवल लकड़ी (ताल वृक्षों को छोड़कर) व अच्छे पत्थर का ही नहीं, साधारणतम उपकरणों के निर्माणार्थ भी सामग्री का आयात करना पड़ता था। इस प्रकार की स्थिति वाणिज्याश्रित व औद्योगिक सभ्यता के उद्‌भव में सहायक होती है। साथ ही, जहां उपकरण-निर्माण के लिए अच्छे पत्थर तक का भी आयात करना पड़ता था, वहां तांबे की श्रेष्ठता जल्द ही समझी गई होगी। इसके बृहत्तर स्थायित्व की दृष्टि से यह अनलाश्म व ज्वालाकांच, जिनसे एक बार प्रयोग में लाने के लिए उतना ही तेज औजार बनता है, की अपेक्षा अधिक सस्ता पाया गया।

बचे हुए पुरातात्विक अभिलेख में ऐसे जलवायवीय परिवर्तनों का साक्ष्य नहीं मिलता जिनकी तुलना तासा व फायूम में हुए आविष्करणों से सूचित परिवर्तनों से की जा सके। प्राच्यतम (प्राचीनतम) उल्लिखित स्मारकों पर चित्रित वनस्पति व प्राणि-वर्ग आजकल की तरह ही शुष्क जलवायु के अनुकूल हैं। वृष्टि काल द्वारा मेसोपोटेमिया की प्रदत्त सुविधाएं सुवर्णित अभिलेख के प्रारंभ होने के पहले ही अस्तित्वहीन हो चुकी थीं। फिर भी इसका प्रारंभ घाटी में आद्यतम बस्ती के बहुत बाद हुआ। हर हालत में ऐतिहासिक कालों में इस भूमि में पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। दो नदियों का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

निक्षेप अब भी फारस की खाड़ी के सिरे पर इतनी द्रुतगति से मिट्टी जमा करता हैं कि एक ही अंकन में तट-रेखा (Coast line) एक शतक में लगभग १½ मील बढ़ जाती है। सातवें शतक ख़ृ० पू० में कर्खा (Karkha) जो अब बस्रा (Basra) के ऊपर बालुओं व दलदलों में लुप्त है, साक्षात फारस की खाड़ी में निकला हुआ था। इसके मुहाने तक पहुंचने के लिए सेनचिरिब (Sennacherib) को फरात के मुहाने से १६० कि० मी० नाव से यात्रा करनी पड़ी थी। ऐतिहासिक काल के प्रारंभ में पूरानीत पंकों की परंपरा ने अंतःस्थल को लगभग चूना-पत्थर की चट्टान की उस तलहटी तक फैला दिया जहां सुमेरीय परंपरा के प्रथम राजनगर एरिदु के भग्नावशेष विद्यमान हैं। सुमेरीय भू-भाग अवश्य ही पंकिल प्रदेश रहा होगा जैसा कि आजकल बस्रा (Basra) के इर्द-गिर्द है। वहां खजूर के पेड़ अपने आप उगते थे। उस समय से जल-प्लावन द्वारा छोड़ा गया निक्षेप आजकल इस भू-भाग के स्तर को स्थिर गति से ऊपर उठाता रहा है। किश तक में समतल की सतह अकृष्ट भूमि के २५ फु० ऊपर है।

स्पष्टतः मेसोपोटेमिया की नवीनतम भूमि में ही लिखित इतिहास का प्रारंभ हुआ। यहीं पर सुमेरी नामक उस विशिष्ट सभ्यता का निर्माण हुआ सामाजिक, धार्मिक व विधिक विचारों, शिलालेख मूलक व कलात्मक रूढ़ियां जिनके दोनों नदियों की समग्र घाटी में तीन सहस्राब्दियों तक प्रमुख रहीं। जिस सांस्कृतिक प्रासाद का निर्माण सुमेर-वासियों ने किया था वह उनके राष्ट्रीय ऐक्य के नष्ट होने व उनकी भाषा के मृत होने के चिर काल बाद तक हिदर एशिया में उनके विजेताओं व प्रतिवेशियों पर अधिरोपित हुआ और अंत में उनके द्वारा अपना लिया गया। यह ठीक उसी तरह हुआ जिस प्रकार रूमानी विचारों, प्रविधि व भाषा को समस्त मध्य कालीन यूरोप ने स्वीकार किया। पर सुमेर किसी भी दशा में उत्तरपाषाण-कालीन क्रांति का स्थल नहीं रहा होगा। इस नवीन भू-भाग में प्राचीन प्रस्तर-युग के साथ किसी संबंध की संभावना नहीं की जा सकती है। इसके प्रथम निवासी अवश्य ही अलग से, प्राचीनतर भू-भाग से, प्रायः उस पश्चिमोत्तरवर्ती शुष्क भूमि अथवा इसके पूर्वांचलीय उन पर्वतों से आए होंगे जहां अरियल भेंड़ (Urial) पुच्छविहीन वन्य मेष व जंगली बकरे विचरण करते हैं और प्रसिद्ध पुरःसर अन्न सहज ही उपजते हैं। अब सुमेर के आद्यतम कृषक उपनिवेशियों की संस्कृति असीरिया की निम्न पहाड़ियों से पश्चिम की ओर शुष्क स्थल के आरपार फरात तक के अनेक कृषक ग्रामों में प्रतिरूपायित होती है। पर, उत्तर में ये ग्राम उन प्राचीनतर बस्तियों के स्थलों पर व्याप्त हैं जो एक ऐसी संस्कृति को प्रकट करती हैं जो सुमेर की प्राचीनतम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संस्कृति को यदि पूर्वज न भी हो तो समय के आधार पर संभवतः उसकी पूर्ववर्त्तिनी है। तदनुसार, यह न्यायसंगत होगा कि हम असीरिया व सीरिया में मेसोपोटेमियन स्रोतों का सर्वेक्षण प्रारंभ करें। वह प्रदेश कम-से-कम पशु-पालन व कृषि का संभावित उद्भव-स्थल हैं। पांचवी व चौथी सहस्राब्दियों में यह निश्चिय ही मरुस्थल नहीं था और न तो वृक्ष-विहीन शुष्क स्थल ही, पर यह लगभग एक तृणस्थल था। द्वितीय सहस्राब्दी में भी वहां बहुत से पेड़ उगते थे। स्थायी सोते व निर्झर अपेक्षाकृत अधिक थे, पर, समशीतोष्ण यूरोप की तरह असीमित नहीं। अतः स्थायी बस्तियां परिसीमित थीं और प्रागैतिहासिक काल से लेकर ऐतिहासिक काल तक लगातार आबाद रहीं।

फिर भी, सर्वप्रथम आद्यतम कृषक ग्रामों को प्रायः खास समतल पर न खोजकर उन पठारों व उभाड़ों पर खोजना चाहिए जहां से इसकी झांकी मिलती है। ब्रेडवूड[1] (Braidwood) ने तिग्री की सहायक नदी तूक ची (Touq Chae) की घाटी के ऊपर कुर्दिश उच्च भूमि (Kurdish uplands) के कलात जर्मो (Qalat Jarmo) नामक उभाड़ पर १९५० में अध्यासित ग्रामों की एक पंक्ति का उत्खनन प्रारंभ किया जो खाद्योत्पादन की प्रारंभिक स्थिति के बहुत निकट जान पड़ती है। ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था ने इस स्थल में स्थायी अधिवास को संभव बनाया। गेहूं या जौ के दाने, जांत व हसिए के दांत कृषि (के अस्तित्व) को सिद्ध करते हैं जबकि ९५ प्रतिशत प्राणियों की हड्डियां भेंड़ (बकरा) बैल, सुअर व कुत्ते जैसे पालतू अथवा पालतू बनाने योग्य वर्ग से संबंधित हैं।

ध्रुवांतों पर चिपिट प्रस्तर गदा के सिरे हो सकते हैं। पर, उत्खनक इन्हें खननयष्टियों (Digging-sticks) के लिए भारदायकों (Weights) के रूप में समझते हैं। और अन्य अवशेष निस्संदिग्ध रूप से अस्त्रों के रूप में व्यवहृत नहीं होते थे। किसान संश्लषित मृत्तिका (Pise) के साधारण घर बनाते थे जिनकी छतें सरकंडों की होती थीं। इनके भग्नावशेषों ने अंत में लगभग ५ मी० ऊँचे एक छोटे टीले का निर्माण किया जिसमें आठ स्तर पहचाने गए।

रगड़ कर तेज की गई पत्थरको कुल्हाड़ियों का व्यवहार कुठार व बसूले के फलकों के रूप में होता था। चर्ट (Chert) या ज्वालाकांच के फलक, जो विस्तार

---

१. एंटिक्वीटी (Antiquity), xxiv, १९५०, १९०—६; तु० अ० ज० आर्के० (AJA), liii, १९४९, ५०—१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

में अधिकांशत: "सूक्ष्मपाषाणीय" थे, पर शायद ही सुधारे जाते थे, चाकुओं व हसुओं के दांतों का काम करते थे या संभवत: छोटी बर्छियों या बाणों को सज्जित करते थे। भूसा मिले खपटे सिर्फ ऊपरी स्तर पर मिले थे। इससे पहले मिट्टी के पात्र अज्ञात थे। पर, पोपले तल वाली मिट्टी की धारियों से युक्त नादों को उनमें आग जलाकर मृद्भांडों का आंतरिक वर्ण दिया जाता था (तु० पृ० २२७)। दूसरी ओर, इससे पहले ही चित्र विचित्र प्रस्तरों के पात्र बनाए जाते थे। अंत में, पशुओं व एक बैठी हुई नारी की छोटी मूर्तियां मिट्टी की बनी थीं। पर, इनमें से एक तिहाई से कम ही पकाई गई थीं।

अनलाश्म-कर्म जर्मो को सिर्फ पंद्रह मील दूर जर्जी की खोह में उपस्थापित प्रारंभिक पूर्वपाषाणकालीन ग्रावेतियन से या पश्चिमीय नातूफियन से सबंधित करने वाला नहीं कहा गया है। और इसलिए न तो यह (यहां के) निवासियों की उत्पत्ति या उनके यहां आने की आदिम तिथि के विषय में ही कोई सूत्र प्रदान करता है। इसके विपरीत सबसे ऊपरी स्तर से प्राप्त मृद्भांड का इस घाटी के परिज्ञात स्तर वाले भांडों में से किसी एक के साथ भी अब तक समीकरण नहीं हो पाया है। अत: कोई पुरातत्त्ववेत्ता यह नहीं कह सकता कि जर्मो मेसोपोटेमिया की संस्कृतियों के स्थिर अनुक्रम की आरंभिक बिंदु को प्रगट करता है या न तो यही कह सकता है कि यह हस्सुना (Hassuna) या समारा (Samarra) से प्राचीन है। सैद्धांतिक रूप से यह शायद समतल की हलाफियन संस्कृति का सम-सामयिक विलंबित पठार रहा होगा। दूसरी ओर, जर्मो से प्राप्त एक खोली में संचित क्षर-किरण कार्बन (Radio-active carbon) (सी १४) की मात्रा अधिवास के लिए ५००० ख्रि० पू० के आस-पास निरपेक्ष तिथि की ओर संकेत करती है।

अत: विशुद्ध अर्थ में मेसोपोटेमिया की भूमि के आदिम कृषकों की १९५० में जानकारी दजला के पश्चिम असीरिया में एकांतत: लगभग हस्सुना[1] से मिलती है। वहां एक समतल में, पर, दो स्थायी सोतों के संगम-स्थल पर, जहां अतलांतिक से आने वाले बादल आजकल भी कुर्दिश गांवों की फसलों को पर्याप्त रूप से सींचते हैं, प्रथम अभिज्ञात कृषक बस गए थे या कम-से-कम उन्होंने पड़ाव डाला था। घरों का कुछ भी अवशेष नहीं बचा है। पर, बड़े व खुरदरे मृतकलश, जिनमें पर्याप्त भूसा मिला था और जो अपूर्ण रूप से हलके गुलाबी रंग में पके थे, संभवत: आहार संचय के लिए अकृष्ट भूमि

१. सेटन ल्वायड (Seton Lloyd) व फ्वाद सफर (Fwad Safar) ज० नी० ई० (JNES); IV, १९४५, २५७—२८०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

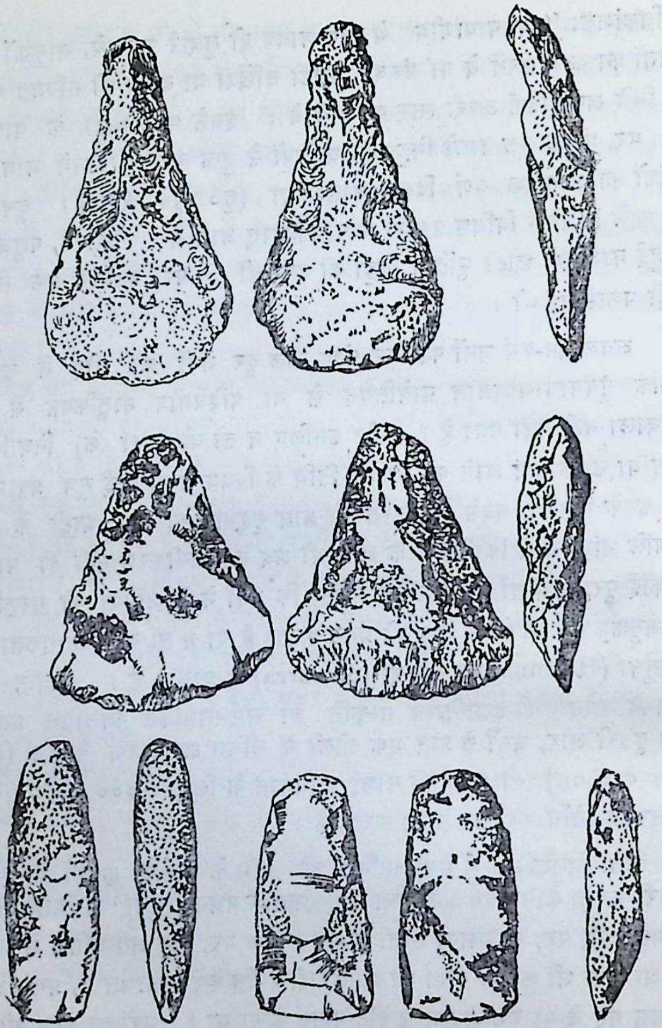

चित्र ५६. शल्कीकृत प्रस्तर के कुदाल-फलक व पत्थर को रगड़कर बनाई गई कुल्हाड़ियां, हस्सुना, ल्वायड व सफर के अनुसार।

में गाड़ दिए गए थे। काठीदार चक्कियों के प्रकाश में आने से उनमें अनाज रखे जाने का अनुमान किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त क्वार्जाइट (Quartzite) व चूना पत्थर के (चि० ५६, १-२) भारी व शल्कीकृत उपकरणों का उपयोग संभवतः भूमि

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जोतने के लिए कुदाल-फलकों के रूप में होता रहा होगा। वे किसी प्रकार रात की सहायता से चढ़ा दिए जाते थे, पर वस्तुतः वे बसूले रहे होंगे। डंगरों, भेड़ों या बकरों की हड्डियां संभवतः पालतू स्कंध-संबंधित थी। मृगों, गदहों या संभवतः गोरखरों का शिकार किया जाता था शिकारी का सामान्य हथियार ढ़ेलवांस था जिसके लिए गोला बारूद के रूप में मानक आकार की मिट्टी की गोलियां थीं और जो हजारों साल बाद कांच की गोलियों के रूप में परिचित थीं पर ज्वालाकांच की सुंदरता के साथ बनी ६ सें० मी० या इससे अधिक लंबी कतिपय नोकों का उपयोग सरकंडे की बर्छियों को सज्जित करने में होता रहा होगा। प्रकारभूत बाण के सिरे स्पष्टतः अविद्यमान थे। काष्ठ-कला के लिए ओपदार धारोंवाली बारीक परतदार पत्थर की कुल्हाड़ियां कुल्हड़ों या शायद सिर्फ बसूलों के रूप में (च० ५६) व्यवहृत होती थीं। बस्ती इस दृष्टि से प्रकारतः उत्तरपाषाणकालीन पड़ती है कि उसके सभी आवश्यक उपकरणों की आपूर्ति स्थानीय उपादानों से हो सकती थी। पर, वस्तुतः पहले से ही ज्वालाकांच का आयात आर्मेनिया या अबतक अज्ञात स्थान वाले किसी निकटतर सूत्र से होता था।

यह पहली और अपाततः अस्थायी बस्ती१ अ वस्तुतः खाद्योत्पादन की दिशा में बिल्कुल प्रथम प्रयास को ही निर्देशित नहीं करती फिर भी निश्चित रूप से तिग्री फराती घाटी में अब तक ज्ञात किसी भी वस्तु की अपेक्षा इसके अधिक निकट है। पर, यह समीचीन रूप से पूर्णतः निवादी कृषक ग्रामों के उस वांशिक पूर्वगामी को उपस्थापित करती होगी जिसने उसी स्थल पर इसका स्थान लिया। ठोस आवासीय घरों वाले छः अध्यासित गांव, जिनमें से १ व से II तक को "पुरातन" व III से V तक को "मानक" नाम दिए गए हैं, हस्सुना १ अ के "उत्तरषाणकालीन" पड़ाव के ऊपर स्थित हैं। वे आवश्यक रूप से एक ऐसी लंबी अवधि को उपस्थापित करते हैं जिसमें यह स्थल लगातार इस रूप में आबाद रहा जिससे उनके निवासियों ने भूमि को उर्वरता को सुरक्षित रखने के लिए खेत तैयार करने की किसी पद्धति का अवश्य ही विकास किया होगा।

जबकि प्राचीनतम ग्राम से टेढ़ी दीवारों के केवल संखंड ही बचे है, स्तर II इससे पहले ही आपाततः अनेक प्रकोष्ठों में विभाजित ऋजुकोण गृहों का दावा करता है। मानव ग्रामों में तीन या चार छोटे कमरे संभवतः एक प्रांगण के चारों ओर रहते थे (चि० ५७) घरों के लकड़ी के द्वार समस्त ऐतिहासिक युग में प्रचलित पद्धति से खांचदार पत्थर के चूलों में लगा दिए जाते थे। रोटी सेंकने के लिए मिट्टी के गोलाकार तंदुर प्रांगणों या कभी-कभी घरों के भीतर रहते थे। अनाज संविभक्त

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खत्तियों में रखा जाता था। ये प्रथमतः उत्तरपाषाणीय कलशों के आकार की बनती थीं। पर अब पुआल मिली कच्ची मिट्टी की बनती थीं और ऊपर से राल का पलस्तर कर दिया जाता था।

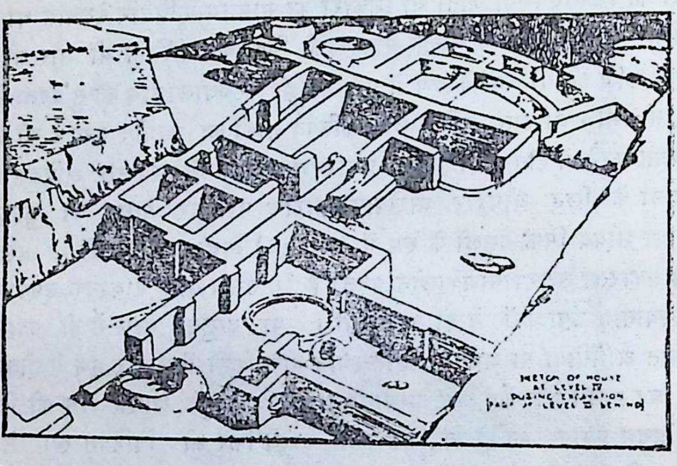

चित्र ५७. हस्सुना के समान विस्तार वाले मानक क्षेत्रगृह का दृश्य, ल्वायड व सफर के अनुसार।

फसल लकड़ी की तिरछी हसियों से काटी जाती थी। इनमें राल के जरिए अनलाश्म के छोटे-मोटे शल्क इस प्रकार से लगा दिए जाते थे जिससे एक का किनारा दूसरे पर चढ़ा रहता था। चट्ट के कुदाल उत्तरपाषाणकालीन (कुदालों) की अपेक्षा कम सावधानी के साथ बनाए गए थे। पर, रगड़ कर बनाई गई पत्थर की कुल्हाड़ियां व ज्वालाकांच के फलक अब भी व्यवहृत होते थे। पर, बारीकी के साथ बने बर्छियों के सिरे अनुपलब्ध हैं। वस्तुतः एकमात्र साक्षीकृत हथियार ढ़ेलवांस है। अच्छी तरह पकाए गए चित्रित भांडों का उत्पादन इस युग की विशिष्टतम नवीनता है। अब भांड साधारणतः भूसे की अपेक्षा बालू के कणों से मिश्रित रहता है और पीले भूरे रंग का पकाया जाता है। पात्र सामान्यतः चपटे तलों वाले होते हैं, पर उदाहरणभूत आकार छोटी-सीधी गरदनवाले छोटे गोलाकार पात्र व खुले कटोरे हैं जो रचना में कभी-कभी अंडाकार भी हैं। मिट्टी की सादी सतह पर जो कभी-कभी सरकनदार या उदभ्राजित रहती थी, गहरे काले रंग के सादे ऋजु रेख प्रतिमान चित्रित किए जाते थे। तब मानक भांडों में चित्रित धब्बे उत्कीर्ण रेखाओं बहुलास्यि प्रतिमानों या त्रिकोणों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से मिश्रित कर दिए जाते थे या समस्त अभिकल्प चित्रित विभूषा के बिना ही पीली व गीली मिट्टी पर निकृत्त कर दिया जाता था (फ० XIV)। हस्सुना के मानक पात्रों के साथ-साथ अन्य शैली व उपादान से कुछ पात्र मिलते हैं जो अधिक विस्तृत क्षेत्र में पाए जाते हैं और जिस स्थल पर सर्वप्रथम परिज्ञात हुए उस स्थल के नाम पर रूढ़ितः समारा भांड के रूप में ज्ञात हैं[1]। समारा मृद्भांड हमेशा सरकनदार होते हैं व पीले गुलाबी या बहुधा हलके हरे रंग में पकाए जाते हैं तथा वंश-पात्रीय प्रतिमानों से विभूषित हैं, अर्थात इस प्रकार के हैं जिस तरह के रंगीन तिनकों को विनने पर आसानी से बन सकते थे। विभिन्न क्षेत्रों में प्रतिमानों का विन्यास इसी प्रकार के वंश-पात्रों के अनुकूल हैं और फलक XVIII ब के "चषक" की तरह के आकार भी, जो मिस्र में इससे पहले ही उपलब्ध हो चुके हैं, उसी कला से प्रेरित हैं। ज्यामितिक वंशपात्रीय प्रतिमानों के साथ प्राणियों की विनोदपूर्ण मूर्तियां संवलित हैं जो सविमर्ष रूढ़िग्रस्त हैं व सकोण वंश-पात्रीय आकारों में अनुकृत हैं (चि० ५८)। फरात के के पश्चिम साक्शेगोज़ू (Sakche Gozu) से असीरिया तिग्रो के पार तक के प्रदेश में पाए जाने के बावजूद समारा भांड[2] सर्वदा विशिष्ट स्थानीय उपादानों से मिश्रित प्रतीत होता है और इसलिए किसी संस्कृति को परिभाषित करने के लिए इसका उपयोग नहीं किया जा सकता है।

इसका कोई प्रमाण नहीं है कि हस्सुना के ग्रामीण तांबे का उपयोग किसी रूप में करते थे। फिर भी, ल्वायड व सफर ने इस अवस्था का "आद्यताम्र कांस्यीय" नाम रखा है। पर वे ज्वालाकांच के अतिरिक्त फीरोजा व संभवतः वैदूर्य का आयात करते थे और उनको तथा अन्य प्रस्तरों को मनकों के रूप में व्यवहारार्थ छिद्रित करते थे। अन्य प्रारंभिक कृषक समाजों की तरह हस्सुना के लोग मिट्टी की नारी मूर्तियां बनाते थे। हस्सुना में शिशु-घरों के भीतर दफनाए जाते थे, पर समारा में आंकुचित व प्रसारित कंकालों का नियमित शवधि-स्थान था।

यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि असीरिया में हस्सुना की संस्कृति परिपक्वावस्था में लाई गई। वहां उस अनुकूल वातावरण में यह तब विकसित हुई होगी जब आदिम कृषकों ने निषादी ग्राम्य जीवन के अनुकूल ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था

---

१. Herzcfeld, Die vorgeschiechtlichen Topfereien von Samarra, बर्लिन, १९३०। ध्यान दें कि यहां वर्णित ताम्र व लौह पदार्थों को बाद में उत्खनकों ने इस्लामी घुसपैठ मानकर अमान्य कर दिया हैं (Herzfeld, oteinzeitlicher Hugel bei Persepolis', Iranische Denkmaler, i. १९३२)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

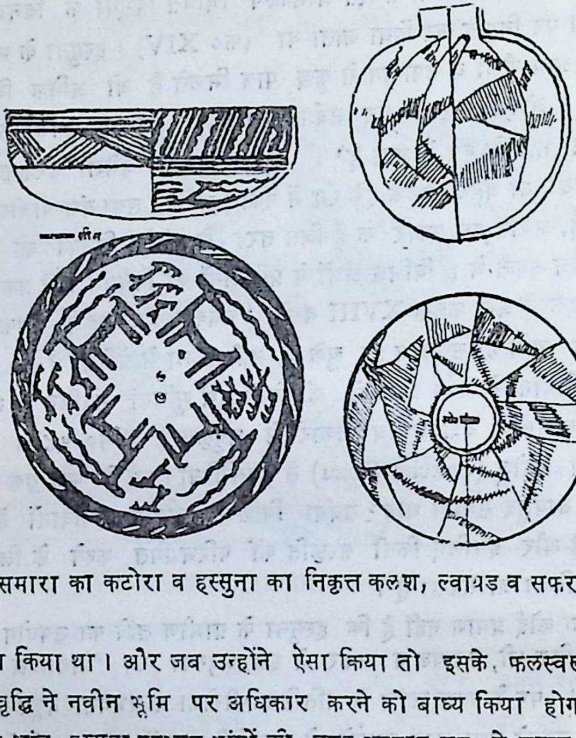

चित्र ५८. समारा का कटोरा व हस्सुना का निकृत्त कलश, ल्वायड व सफर के अनुसार।

का निर्माण किया था। और जब उन्होंने ऐसा किया तो इसके फलस्वरूप होनेवाली जनसंख्या-वृद्धि ने नवीन भूमि पर अधिकार करने को बाध्य किया होगा यह सत्य हैं कि चित्रित भांड हस्सुना-पुरातन-भांडों की तरह अस्पष्ट रूप से फरात की घाटी से पश्चिम सकशो गोजू (Sakche gozu) व मर्सिन तक में और फिर पेलेस्तीन में उलपब्ध होते हैं, जबकि मानक भांडों के निकृत्त बहुलास्थि प्रतिमान हमें मेरिम्दे तक का स्मरण दिलाते हैं। इसके विपरीत, हस्सुना में उन काले उद्भ्राजित भांडों के कुछ खंड मिले हैं जो शिल्पतः सकशोगोजू व मार्सिन के केवल अवर उत्तरपाषाणकालीन स्तरों में उपलब्ध पर वहां परवर्ती अवस्थाओं में विद्यमान, भांडों के समान हैं। सहज में इसका यह अर्थ नहीं है कि पूर्व भूमध्य सागरीय तटों (Levant Coasts) की उत्तर-पाषाण-कालीन संस्कृति जलप्रपात के पूर्वांचल के कृषि-जीवन के मूल में स्थित है। पर, सादे व चित्रित भांडों के विस्तृत वितरण का यह अर्थ है कि हस्सुना की संस्कृतियां पूर्व व पश्चिम से समान रूप में संबंधित हैं। यदि असीरिया में दमित न भी हुए हों, तो भी इनके अन्नों व भेड़ों के अमानस (Amanus) या कार्मेल से या इरानी पठार से आने की समान रूप से संभावना है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हस्सुना में छठे स्तर से प्राप्त मृद्‌भांड पुरातन परंपराओं से संबंध-विच्छेद का संकेत करते हैं। और अंत में यह गांव उस स्थल के पश्चिमी पार्श्व में स्थानांतरित कर दिया गया जो असुविधापूर्ण ऊंचे टीले के रूप में परिणत हो रहा था। नई संस्कृति मृदभांडों द्वारा परिभाषित होती है और खाबर पर स्थित तेल हलाफ[2] के, अनुसार, जहां ये मृदभांड सर्वप्रथम पाए गए थे, हलाफियन कही जाती है। और इस प्रकार परिभाषित होने के कारण यह तिग्री के पूरब पहाड़ी इलाकों से लेकर ठीक तृणस्थलीय स्टेप्स के आर-पार और विभाजक रेखा के पार भूमध्य सागर के तट तक भी फैली हुई है।

सर्वांगीण प्रगति स्पष्ट है। एमर गेहूं व जौ[3] की खेती निश्चित रूप से होती थी और डंगर की दो नस्लों व भेड़ों, बकरों व सुअरों[4] को पाला जाता था। शिकार का आर्थिक महत्त्व अक्षुण्ण रहा पर ढ़ेलदांस एकमात्र प्रमाणित हथियार है। तकु'-चक्रिकाएं (Spindle whorls) एक प्रकार के वस्त्रोद्योग को निर्दशित करती हैं। पर, इस पर प्रकाश नहीं डालतीं कि उन पर ऊन वा पटसन काता जाता था। धत्वीय तांबे[5] के छोटे मनके अब उपलब्ध होते हैं, पर ये सभवत. देशी धातु के बनते थे। ज्वालाकांच व चर्ट चाकुओं व हसुओं के दांतों के लिए सामान्य द्रव्य थे। सकोण डंडों (Knee shafts) में बैठाई गई पत्थर को रगड़ कर बनी कुल्हाड़ियां वसूलों का काम[6] देती थीं। चर्ट (Chert) पहले ही की तरह भारी कुदाल-फलकों के लिए अब भी शल्कीकृत होते थे। पर, फलक XIX में प्रदर्शित पात्र पर अंकित दृश्य से धातु के औद्योगिक व्यवहार का परंपरया अनुमान किया जा सकता है, यदि यह वस्तुतः सचक्र यान को उपस्थापित करता हो। क्योंकि धातु की आरी के बिना

---

१. क्रिश्चियन ने (Christian), Altertumskunde der Zweistromlander, ९२, विपरीत रूप में 'सक्शेगोजू संस्कृति' से, जो वस्तुतः मेसोपोटेमिया के लिए विदेशी है, समस्त मेसोपोटेमिया अनुक्रम को शुरू करना चाहा।

२. वॉन ऑपेन्हम (Von Oppenheim), दर तेल हलाफ (Der Tell Halaf), बर्लिन, १९४३। अन्यथा अनुल्लिखित संकेतों के लिए दे० पर्किन्स, कॉ० आर्क० अ० मेसो० (CAEM)।

३. इराक, ii, १५।

४. इराक, viii, १२४।

५. इराक, iii, २६।

६. मलोवॉ (Mallowan)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चक्का शायद ही बनाया जा सकता है। पर, यह व्याख्या असंभाव्य है। हलाफियन कुम्हार चक्के का प्रयोग नहीं करते थे और आरों वाले चक्के २००० खृ० पू० से पहले अन्यथा अज्ञात थे।

फिर भी वस्तुतः सुंदर व उत्कृष्ट मृद्भांड इस संस्कृति व काल के विशिष्ट उत्पादन हैं। भांड ललित, पीत-पांडु सरकनदार व सामान्यतः ओपदार हैं। पात्र, लाल व गहरे-काले रंग के विस्तृत प्रतिमानों से अलंकृत हैं। ये यदा-कदा ऊपर से श्वेत रंग मिश्रित व वास्तविक काचित रंग में हैं। इसकी चमक का कारण सिलिकेट क्षार का संमिश्रण है। विभिन्न आकार मिट्टी की क्षमता के प्रौढ़ ज्ञान को प्रकट करते हैं। पात्रों के सामान्यतः चपटे और कभी-कभी नतोदर तले भी हैं, पर कुछ खोखले पेंदों पर खड़े हैं। सकोण रीढ़दार आकार लोकप्रिय थे, जिनमें सुंदर अरपचिया (Arpachiya) दूध का कटोरा, जो पीटकर बनाई गई धातु की तस्तरी की प्रतिकृति की तरह दीखता है, उल्लेखनीय है। विंदूत्कीरण (Stippling) प्रिय विभूषक शिल्प थी। चार खाने व अनुमाप प्रतिमान और तस्तरियों के मध्य में पुष्पस्त बकोत्कीरण या माल्तसे (Maltese) चतुष्कोण सर्वसामान्य अभिप्राय थे (फ० XVI अ)। पर, थे ज्यामितिक विषय रूढ़िग्रस्त वृषभशीर्षों, बुक्रेनिया (Bucrania) या समारा भांड की तरह की रूढ़िकृत समानांतर व केंद्रवर्ती (Equids and cervids) रेखाओं से संमिश्रित हैं। स्वभावतः आकारों का यह समृद्ध व विभिन्न समवाय एकाएक नहीं उपलब्ध हुआ था। मलोवां अरपचिया में पांच या छः अध्यासित आवास स्थलों में एक ऐसे विकास-क्रम का पता लगा सका जो सबसे ऊपरी स्तर की समुज्ज्वल बहुरंगी कला के रूप में पराकाष्ठा पर पहुंचा।

स्वभावतः ये प्रशंसनीय मृद्भांड उपयुक्त भट्ठियों में, जिनके संखंडात्मक अवशेष अरपचिया व कर्शमिश[1] में पाए गए हैं— पकाए जाते थे। कभी-कभी १२०० ऊंचा पाककारी तापमान प्राप्त होता था। वस्तुतः हलाफियन मृद्भांडों की प्राविधिक व कलात्मक पूर्णता इस तरह की है कि कुछ लोग यह सोचते हैं कि इनका निर्माण निश्चित रूप से व्यावसायिक शिल्पियों द्वारा हुआ होगा। प्रायः ये अधिकारी आधुनिक कृषक समाजों के बीच कसीदागरी जैसी घरेलू कलाओं व शिल्पों में उपलब्ध उच्चस्तर का अवकलन करते हैं और इससे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि "फारस की लोइयां" उन पूर्णकालिक विशेषज्ञों द्वारा बनायी जाती थीं जो अपना खाद्य पदार्थ दुकानों से

१. ईराक, १, १९३४, १४८, तापमान के लिए देखिए टॉब्लर, गावरा, ii, १६०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खरीदते थे। फिर भी अरपचिया (Arpachiya) में सबसे बाद के हलफियन स्तर में एक मकान को जिसे उत्खनक कुम्हार का कारखाना समझता है, अन्य मकानों की अपेक्षा प्रचुरतर रूप में सामानों से उपस्कृत किया गया है।

हलाफियन, पात्रों और मनकों व तावीजों के निर्माण के लिए भी ज्वालाकांच व अन्य कठोर प्रस्तरों के कार्य में कुशल थे। तावीजों में वृषभ शीर्ष, पक्षी, युग्म कुठार, अर्धचंद्र, एक त्रिकोण घर की छत व नातूफियन पंखदार मनकों के पाषाणीय प्रतिरूप संमिलित हैं (चि० १०५)। ये सभी अत्यधिक कौशल से उत्कीर्ण हैं, और सहज में निलंबनार्थ छिद्रित हैं व इस काल के अंत में ज्वालाकांच के भी बनाए गए हैं, पर प्रथमतः प्रायः सिर्फ कोमल प्रस्तर या खोली के ही बनते थे। साथ ही अपेक्षाकृत साधारण लोलकों पर ज्यामितिक अभिकल्प उत्कीर्ण थे, जो पात्रों पर उत्कीर्ण अभिकल्पों के समान थे और तब "मुद्राओं" के रूप में व्यवहृत होते थे। उत्कीर्ण लोलक को कोमल मृत्पिंड पर मुद्रित करके इस प्रतिमान को प्रगुणित कर दिया जाता था। ये प्रतिमान निस्संदेह जादुई शक्ति संपन्न प्रतीक थे। फिर भी, ऐतिहासिक कालों में मिस्र की तरह मेसोपोटेमिया में कलश-पिधानी (Jar-stopper) या बंडल को बांधने वाली रस्सी से संलग्न मृत्तिपड पर मुद्रा का अंकन वस्तुओं की मुद्रा-स्वामी की संपत्ति होने का संकेत करता था। अतः हलाफियन काल में भी जादुई प्रतिमान का इस प्रकार की मृंमुद्रा में अंतरण का वस्तुओं पर "एक निषेध स्थापक" प्रभाव रहा होगा और इसलिए उनमें "स्वामित्व अधिकारों" की स्वीकृति प्रदान करना रहा होगा। यदि ऐसा रहा हो तो "संपत्ति" अर्जन व समानों का विनिमय व्यावहारिक एवं सामाजिक रूप में प्रशंसनीय कृत्य रहे होंगे।

बिरादरियों के बीच वस्तुओं का विनिमय अर्थात् वाह्य व्यापार निश्चय में केवल सभी हलाफियन ग्रामों में ज्वालाकांच के व्यापक व्यवहार से ही नहीं, बल्कि खाबर पर छागर बाजार[1] में फारस की खाड़ी से वहां लाई गई साइप्री वितेलस (Cyproea Vitellus) की खोलो के आविष्कार से अत्यधिक विलक्षणतापूर्वक निदर्शित होता है। वस्तुतः अंतःसामुदायिक विशिष्टीकरण की कुछ मात्रा का अनुमान बॉन[2] झील के निकट शमीरा मालती में खान से ज्वालाकांच निकालने में लगी प्रसिद्ध्यनुसार एक हलाफियन बिरादरी से किया जा सकता है।

---

१. इराक, iii, १०।
२. बु० अ० स्कू० ओ० रि० (BASOR), ७८, १९४०, ३२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

हलाफियन गृह-निर्माण कला या नगर परिकल्पना के संबंध में कुछ भी विवरण उपलब्ध नहीं हैं। पर अरपचिया के घरों की मिलानेवाली पत्थर के चौकोर टुकड़ों से पाटी हुई गलियों द्वारा संघटित सामुदायिक कार्यों का निदर्शन मिलता है। यहां और गावरा XX व भी बहुत अवनत मेहराबी छतवाले विचित्र वृत्ताकार मकान बनते थे जो साधारणतया थोलोई (Tholoi) कहे जाते थे। इनमें से कई एक में आयताकार प्रकोष्ठ संलग्न हैं। घाम में सुखाई गई ईंटों की दीवारों व छत की नीवें कभी-कभी पत्थर की रहती थीं, कभी पत्थर व मिट्टी की और कभी-कभी सिर्फ धूप में पकी ईंटों की ही रहती थीं पर, थोलोई आंतरिक व्यास में ४ मी० से ६.५ मी० तक का वैभिन्न्य प्रदर्शित करते हैं। मलोवां व बाद के अधिकांश लेखक थोलोई का कुछ अज्ञात कर्मकांडीय क्रिया-कलाप अभ्यर्पित करते हैं, पर भांडार-गृहों या अन्नागारों के रूप में इसका व्यवहार सिद्धांततः संभव प्रतीत होगा।

अपेक्षाकृत अधिक प्रत्यायकतापूर्वक कर्मकांडीय के रूप में वे नारी-मूर्तियां वर्गीकृत हैं जो अपने हस्सुनाई पूर्वगामियों व मिस्र के मेरिम्दियनों और बदेरियनों की तरह हलाफियनों ने मिट्टी की बनाई थीं, और इस काल के अंत में मुलायम पत्थर में भी उत्कीर्ण की थीं। जंतुओं के खुरदरे नमूने भी इसी श्रेणी में आ सकते हैं। अंततः मृतक सामान्यतया प्रसारित मुद्रा में गांवों के बाहर नियमित कब्रिस्तानों की अपेक्षा स्पष्टतः घरों के बीच में ही दफनाए जाते थे।

असीरिया में हलाफियन उद्योग व कला के विकास को अनेक स्तरीय व प्रकारीय अवस्थाओं में आद्योपांत पाया जा सकता है। खाबर-बालिख घाटी में इस प्रकार का विकास उतनी स्पष्टतापूर्वक उल्लिखित नहीं है। फरात के पार हमा या उगरित में बिल्कुल भिन्न सहज रंग-युक्त मृद्भांडों, व ढ़ेल-बांसों के बदले धनुषों तथा बाणों से परिलक्षित होने वाली संस्कृतियों का स्थान लेने या उनसे मिश्रित होने के लिए हलाफियन संस्कृति पूर्णतः निर्मित व परिपक्व होकर उपस्थित होती जान पड़ती है। इरान में हमें कोई निकट साहश्य नहीं मिलता है, तथापि हमें इसी प्रकार के कुछ विभूषणात्मक उद्देश्य कम-से-कम सुमेर में प्राप्त होंगे। अतः डा० पार्किन्स प्रभावपूर्ण युक्तियों से इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि हलाफियन संस्कृति असीरिया में विकसित हुई। पर वहां भी मृच्छिल्प कला में बहुरंगात्मक (Polychrome) अवस्था में परिणति होने वाले दीर्घ विकास के बाद अंत में इस संस्कृति का स्थान सुमेर में अल उबेद के नाम पर अभिहित दूसरी संस्कृति ने ले लिया। यह संस्कृति सौंदर्य व स्थापत्य की दृष्टि से कमजोर प्रतीत होती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटामिया का उपनिवेशीकरण

इस प्रकार उत्तरी मेसोपोटेमिया में उबेद संस्कृति हलाफियन परंपरा से केवल विच्छेद ही नहीं, बल्कि एक प्रकार का ह्रास भी सूचित करती है। यह विशिष्ट भांड अब सरकनवाला या ओपदार नहीं पाया जाता है और इतना अधिक पकाया गया है कि सतह साधारणतः हरी जैसी हो गई है। यह अब भी चित्रित प्रतिमानों से अलंकृत किया जाता है, पर अब अनेक रंगों से विभूषित नहीं किया जाता हैं, जबकि चित्रित्साओं का आधार अपेक्षाकृत निम्न है और खास प्रतिमान भी कम रोचक हैं। फिर, सरकंडों की झोपड़ियां निनेविह (Nineveh) व कई अन्य स्थानों में धाम में पकी ईंटों के मकानों का स्थान लेती हुई जान पड़ती है।

पर इन क्षेत्रों में भी व उत्तर में ह्रास का अनुमान बिल्कुल भ्रामक है। उबेद के कुम्हारों ने अपनी सामग्री पर हलाफियनों की अपेक्षा पूर्णतर अधिकार प्रदर्शित किया और आकारों के अपेक्षाकृत अधिक विस्तृत प्रकारों का निर्माण किया। इन आकारों में टोंटियों या मूठोंवाले पात्र और चकरोदार पेंदों पर खड़े बहुतेरे बरतन सम्मिलित हैं। स्थापत्य में यद्यपि सरपतों का व्यवहार होता था, फिर भी मिट्टी की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी। प्रत्युत अब इसको भूसे में मिलाकर सांचे में डालकर ईंटे बनायी जाती थीं। और इन सुविधापूर्ण इकाइयों से वस्तुतः संस्मारकीय भवनों का निर्माण शीघ्र ही हुआ। और, उत्तरी उबेद असीरिया तक में उस संस्कृति की मात्र विलंबित व प्रांतीय प्रतिकृति जान पड़ती है जो सुमेर में उस स्थान पर, जहां यह सर्वप्रथम अभिज्ञात हुई, अत्यधिक विलक्षणता के साथ व संभवतः सबसे पहले प्रकट हुई।

वहां पर यह उबेद-संस्कृति असीरिया व सीरिया में अभिव्यक्त संस्कृति से प्रायः भिन्न रूप धारण किए हुए हैं। अब तक पता लगे प्राचीनतम आवास एरिड्ड में, जो सुमेरीय परंपरा में प्रथम राजधानी थी, प्राचीनतम मृद्भांड दक्षिणी बेबिलोनीय स्तर से भी भिन्न है और इसके विभूषणात्मक प्रतिपान अधिकांशतः हलाफियन कला[1] के संस्मारक हैं। केवल स्तर-XIII में आकार (अर्थात् ऊपर) गणना करने पर XIII में) प्रतिष्ठित "दक्षिणीय" उबेद शैली अधोवर्ती पांच स्तरों में प्रचलित आद्य उबेद या एरिड्ड भांड का स्थान लेती है। उत्तरी व दक्षिणी उबेद के बीच मृच्छिल्पीय व अन्य विषमताएं केवल युगगत भिन्नताओं के कारण ही नहीं बल्कि अपेक्षाकृत अधिक स्पर्धारित उस परिवेश के कारण भी हैं जिनका उत्तरवर्ती (द० उबेद) एक जवाब हैं।

दजला फरात द्वारा फारस की खाड़ी के सिरे पर न्यस्त नूतन भूमि, जहां उबेद संस्कृति का सर्वप्रथम पता उग सकता है, वस्तुतः अत्यधिक उर्वर थी और बाढ़ द्वारा लाई गई मिट्टी से प्रतिवर्ष इसकी उर्वरता का पुनर्नवीकरण होता था। अनेक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सोते व कच्छ मछलियों से परिपूर्ण थे। वन्य-पक्षी व शिकार सरकंडे की झाड़ियों मे जमा थे और खजूर के पेड़ पर अपने-आप उगते थे। पर, इस नैसर्गिक स्वर्ग, आदिम आनंदपूर्ण उद्यान (Original Eden) के पूर्ण उपयोग के लिए प्रबल परिश्रम व मानवों के विशाल समुदाय के संघटित सहयोग की आवश्यकता थी। जल से स्थल के "पृथक्करण (Separation) द्वारा दलदलों व बालुकाराशियों की अस्त-व्यस्तता से कृषि-योग्य भूमि का निर्माण करना था। पंकों को हटाना था, बाढ़ों को नियंत्रित करना था और कृत्रिम नहरों द्वारा वृष्टिहीन मरुस्थल में जीवनदायक जल को ले जाना था।

अपेक्षित सामाजिक दृढ़ता स्पष्टतः किसी पौराणिक टोटेमिक पूर्वज से सर्वजनीन उदभव में विश्वास द्वारा उतनी मात्रा में प्रतिश्रुत नहीं थी जितनी मात्रा में अपेक्षाकृत अधिक वैयक्तिक देवता पर निर्भरता की भावना से थी। ऐतिहासिक कालों की तरह सुमेर के प्रथम उपनिवेशियों का प्रत्येक वर्ग अपने को उस देव की "जनता" सेवक या प्रायः संतान मानते थे जिसकी निरंतर कृपा पर उनकी समुन्नति निर्भर थी। किसी भी स्थिति में सुमेर की भूमि में अब तक प्रकाश में लाया गया प्राचीनतम भवन इरिडू का एक देवालय है जो उत्तरकालीन पावन प्रासादों की पंक्ति में उस स्थल पर स्थित है जो तृतीय सहस्राब्द ख़ृ० पू० के पूर्वार्ध में एंकी (Enki) की अर्पित एक यथार्थ मुख्यत: देवालय से सज्जित था। प्रथम कृषक या वासियों ने इरिडू में एंकी (Enki) के निमित्त एक चतुष्कोण उपासनालय (का मंदिर (XVI) निर्माण किया जो लगभग ३ मी० वर्ग मात्र था और समुद्र के निकटस्थ कछार में एक बलुई चट्टान पर लंबी संक्षेत्राकार मिट्टी को ईटों मे बना था। इनके इस धार्मिक-स्मारक के अतिरिक्त प्रथम उपनिवेशियों के मृद्‌भांडों व मिट्टी के कुछ मनको को छोड़कर अबतक और कुछ भी ज्ञात नहीं है। अपने पर्यावरण के पर्याप्त उपयोग में उनकी सफलता और इसके परिणामस्वरूप इनकी संख्या में वृद्धि का अनुमान सतत वृहत्तर पैमाने पर उपासनालय के उत्तरोत्तर पुनर्निमाणों से करना है। सातवें पुनर्निर्माण (के समय) तक यह उपासना गृह विस्तृत मंदिर के रूप में (मंदिर-xi) परिणत हो गया। यह १५ मी० से अधिक लंबा हो गया और बाढ़ों से ऊपर रखने वाले व साथ ही प्राचीनतर चैत्यों के पूजित अवशेषों को अंतर्विष्ट करने वाले एक कृत्रिम मंच पर स्थित था। पर, जैसा कि सुमेर में अनेक स्थलों से ज्ञात होता है इसके एक उपस्कर इससे पहले ही पूर्णतः विकसित उबेद संस्कृति जो इरिडू में पहले ही मंदिर १३ में शुरू हो जाती है, से संबद्ध हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटामिया का उपनिवेशीकरण

नूतन दजला-फराती मुहाना भूमि के अग्रणी कृषक कठिनता से आदिवासी शिकारी मछुओं का दल, (ज्ञात मध्य पाषाण अवशेषों से अनुपस्थापित) हो सकते हैं जिन्होंने उस स्थल पर उन पशुओं व वनस्पतियों का पालन व दमन प्रारंभ किया था, जिनका अस्तित्व उस प्रतिवेश में साक्ष्य रहित है। ये उपनिवेशी निश्चय ही खेतिहरों के रूप में यहां आए और इन्होंने अपने साथ अपनी संस्कृति के कम-से-कम मूल तत्व लाए। ल्वायड व सफर और एन पार्किन्सं[1] उनके भांडों से अनुमान करते है कि ये किसान तिग्री के पूर्वी पठारों से यहां आए। सुमेरियनों की डिलमन (Dilmun) में कहीं फारस के खात पर उनकी उत्पत्ति की अपनी परंपराओं की दृष्टि से उनकी प्रस्थान-सीमा को प्रायः और दक्षिण में रखना होगा। उनके पात्रों पर हलाफियन व समारा प्रतिमानों के साथ मान्य समताएं सिर्फ इतना ही सूचित कर सकती हैं कि तीनों वर्ग त्रितय साधारण पूर्वजीय आधार से उद्भूत हुए हैं। यद्यपि उत्खनक इरिडु में xviii से-xiv के मंदिरों के निर्माताओं को उनके उवेद उत्तराधिकारियों से पृथक् सिद्ध करते है, फिर भी यह बिलकुल संभव जान पड़ता है कि उवेंद सस्कृति के विशिष्ट लक्षण सिर्फ आयातित "इरिडु संस्कृति" के मुहाने[2] की विलक्षण दशाओं के साथ अनुकूलनों को उपस्थापित करते है।

उत्तरो घास-स्थल के ठीक आर-पार फैली रहने के बावजूद उवेद संस्कृति भी निम्न मेसोपोटेमिया के वातावरण के साथ पूर्णतम अनुकूल प्रदर्शित करती है। उनके द्वारा बनाई गई इमारतों के विशाल आकार से यह अनुमान किया जा सकता है कि सुमेर में उवेद किसानों ने सिंचाई पर आधारित ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का विधान किया था। यह (अर्थ-व्यवस्था) वर्धन ग्रामीण जनता के निर्वाहार्थ पर्याप्त अन्न उपजाने में समर्थ और अनुत्पादक कार्यों व व्यापार के लिए व्यवहार में लाने योग्य सामाजिक बचत प्रदान करने वाली भी थी। पर, इनकी इस सफलता ने प्रभावपूर्ण जन्म-अनुपात में इस प्रकार की वृद्धि को प्रोत्साहित किया होगा जिससे नवयुवकों को नूतन बिना जोती भूमि में पूर्वजीय शिल्प-विधानों के प्रयोग के लिए उत्प्रवास करना पड़ा होगा। नोकाएं उपलब्ध थीं जिन पर दूरस्थ क्षेत्रों का उत्पादन मुहाने को काटने वाले बहुसंख्यक जलभागों के किनारे के किसी एक आवास केंद्र में तुरत पहुंचाया जा

---

१. कॉम्पे० आर्कें० अ० मेसो० (CAEM), ७४, ८१।

२. पर्किन्स ने सुमेर IV के प्रकाश में आने के पहले 'इरिडु संस्कृति' की व्याख्या उवेद के ठीक प्राचीनतम रूपान्तर के रूप में की थी, और १९५० ई० में मलोवां का यही दृष्टिकोण था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सकता था। वस्तुतः नोकाओं को प्रणोदित करने के लिए हवा का उपयोग पहले से ही होता था। इरिड्डू में उवेद की एक परवर्त्ती शवाधि में १९५० ई० में संसार के किसी भी भाग में ज्ञात प्राचीनतम पालदार नोका[3] का एक नमूना रक्खा था।

स्थानीय सामग्री का कुशलतापूर्वक पूर्ण उपयोग किया जाता था। मुहाने की नई मिट्टी से चाकू या कुठार-फलकों के लिए न पत्थर मिलता था या न तो मकान बनाने के लिए अच्छी लकड़ी ही। अतः सकोण हसुए व कांटे सख्त-पकी मिट्टी के बनाए जाते थे जो सुमेर में उवेद संस्कृति के सर्व सामान्यतम अवशेषों में अन्यतम थे। कछारों के लंबे सरकंडे उपयोगी आश्रयों के रूप में परिवर्तित किए जा सकते हैं, क्योंकि वे जब बढ़ते हैं औ काटे जाने पर पुल्लियों में बांधे या चट्टियों के रूप में गूंथे जाते हैं तो उनसे उपयुक्त आवासों व चौपायों के बाड़ों के लिए सामग्री मिलती है। पर, उवेद काल में आकर लोग ईंटें बनाने के लिए लकड़ी के सांचों में मृत्पिडों को ढालने की विधि में शिक्षित जान पड़ते हैं और इस तरह वे छोटी-छोटी इकाइयों को एकत्र करके निर्माण के एक अपेक्षाकृति स्वतंत्र प्रकार को प्रवृत्त कर सकते थे। असीरिया के उवेद ग्रामों में सरकंडों की झोपड़ियां पहले ही मिल चुकी हैं। पर, इरिड्डू में एक संश्लिष्ट सरकंडों की रचना कच्ची मिट्टी की ईंटों के एक घर में संसक्त कर दी गई थी। ऐसा स्पष्टतः वाह्य-गृहों का एक वर्ग बनाने के लिए किया गया था, क्योंकि एक कमरे में २ मी० व्यास वाला एक चूल्हा था।

अनुसंगिक रूप से सुमेर में भी किसानों ने काटने के औजारों के निर्माण के लिए प्रस्तर प्राप्त करने का प्रबंध किया। उत्तरी मेसोपोटेमिया की तरह वहां पत्थर को घिस कर बनाई गई कुल्हाड़ियां अब भी कुठार या बसूले के फलकों के रूप में व्यवहृत होती थीं और चर्ट के आंतरिक "कुदाल-फलक" (चि० ५९) बनाने के लिए शल्कित (Flaked) किए जाते थे। ये फलक हस्सुना से प्राप्त कुदाल-फलकों की अपेक्षा कुछ अधिक खुरदरे होते थे। और ज्वालाकांच व चर्ट के चाकू व हसियों के दांत बनते थे। पर सुमेर में इन सामग्रियों का आयात करना पड़ता था और सामाजिक बचत से उसका भुगतान किया जाता था। ऐसी परिस्थिति में तांबे के औजार, जो जीर्ण होने पर फिर से तेज किए व पिघलाए जा सकते हैं, अंत में सस्ते साबित होंगे। पर, तांबा, अगर प्रचलित रहा हो, इतना दुष्प्राप्य था और इसलिए इतनी सावधानी के साथ पुनः उपयोग के लिए सुरक्षित किया जाता था कि धातु के

१. सुमेर, IV, Pl. V.।
२. सुमेर, VI, १९५०, ३०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पदार्थ का सिर्फ एक जोड़ा बचा[1] है, इनमें उर से प्राप्त एक ठोस रस्सा-बंधी बर्छी व अरपचिया से उपलब्ध एक कुठार है। संभवतः दोनों ही बहुत बाद के हैं। इसके सुबोध उपयोग का अनुमान तिरछे फलकों वाले तांबे के दंड-छिद्र-युक्त कुठारों के मिट्टी के उन बहुसंख्यक प्रतिमानों से किया जा सकता है जो तांबे के सिर्फ ढाले गए प्रारूपों

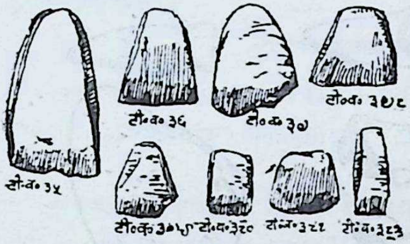

चित्र ५९. अल, उबेद से प्राप्त पत्थर की कुल्हाड़ियां, १/४।

(चि० ६०) के ही अनुकरण कर सकते हैं। मिट्टी के अन्य प्रतिमान इस प्रकार के "सामरिक कुठारों"[2] को उपस्थापित करते हैं जो यूरोप व पश्चिमी अनातोलिया में शीघ्र ही धातु में उत्पन्न हुआ, पर प्रस्तर में अधिक परिचित है। उत्तरोक्त की गणना आवश्यक रूप से हथियारों में होगी, और इसके अतिरिक्त, मिट्टी की ढ़ेलवांस की गोलियां अब भी बनती थीं।

किसी भी उबेद स्थल पर आवासी धातु कर्मियों का साक्ष्य नहीं है। धातु के भांडों का निर्माण व वितरण संभवतः पर्यटक धातु कर्मियों द्वारा होता था। पर, ज्वालाकांच के उपयोग की तरह वह भी घाटी के बहिर्गत प्रदेशों के साथ व्यापार को सूचित करता है। पर, विलासिता की वस्तुओं, जिनके स्रोतों को पहिचाना जा सकता है, में व्यापार के कुछ भी प्रमाण नहीं मिलते। उर से अमेजोनाइट के मनकों की सूचना मिलती है। और उबेद संस्कृति की समुन्नति के समय में भी असीरिया में वेदूर्य का आयात होता था। पर यह स्थिति सिर्फ गावरा—XII जो और भी दक्षिण उरूक अवस्था की सम-सामयिक होगी, में ही थी।

---

१. एंटि० ज० (Ant. J.) x, ३३८; ईराक, ii, १०४।

२. उत्तम कोटि के T. उकेयर से प्राप्त होते हैं, ज० नी० ई० स्ट०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मृद्भांड सभी हाथ के बने हैं इरेक xviii से प्राप्त पात्रों के चाक पर बनाए जाने के विवरण संभवत:[१] गलत हैं और साधारणत: हल्के हरे रंग में पके हैं।

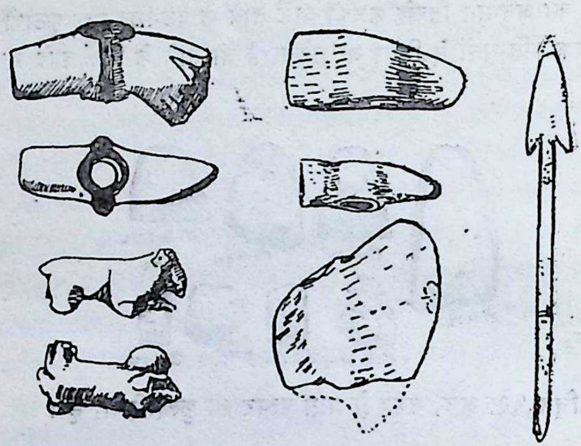

चित्र ६०. मिट्टी की छोटी मूर्ति, उकेयर, उवेद संस्कृति के मिट्टी के सामरिक कुठार, 'उकेयर व उर' उत्तरकालीन उवेद की तांबे की रस्साबंधी बर्छी, उर, $\frac{1}{4}$।

इसकी अनुद्भ्राजित सतह पर थोड़े चमकीले रंग में ज्यामितिक अभिकल्प चित्रित थे। उकेयर को छोड़कर अक्कद में व और भी उत्तर[२] परवर्ती स्तरों में अभिज्ञातव्य वर्णनात्मक अभिकल्प अप्राप्य हैं। पर कतिपय ज्यामितिक प्रारूप अपने आप में पक्षियों, जंतुओं या दिव्य प्रतीकों के रूढ़ उपस्थापन हो सकते हैं। आकारों में पुन: सामान्यत: टोंटीदार बरतनों की विशेषत: सुमेर में इरिडू के अपेक्षाकृत बाद के उवेद मंदिर VIII में और असीरिया[3] में गावरा XIX से XVII के प्राचीनतम उवेद मंदिरों में उपलब्ध अत्यधिक विशिष्टी कृत अभिषेक पात्र की (चि० ६१ स) लोकप्रियता का उल्लेख किया जा सकता है।

१. यू० व्ही० वी० (UVB), IV, १९३२, ३३ पर्किन्स, कम्पे० आर्कं० अ० मेसो० (CAEM), ७८।

२. ज० नी० ई० स्ट० (JNES), ii, फ० xix; टॉब्लर, गावरा ii, १४६-८।

३. पर्किन्स, कंपे० आर्कं अ० मेसो० (CAEM), ४८, ९५; सुमेर IV, ११९ व फलक vii; गावरा ii, फलक cxx iii, १३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

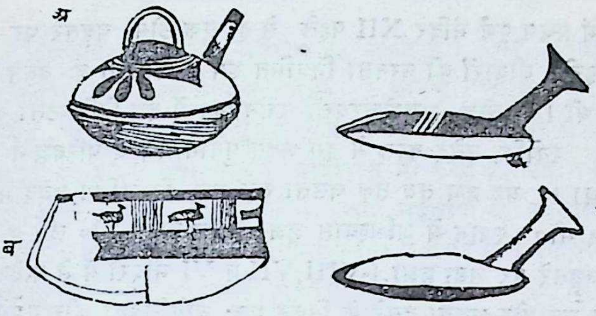

चि० ६१. उर से प्राप्त डेगची, गावरा XVIII से प्राप्त अभिषेक पात्र, और उकेयर से उपलब्ध चित्रित पक्षियोंवाला कटोरा, $\frac{1}{8}$ ।

बरतन, प्राय: मुख्यतया कर्मकांडीय उद्देश्यों के लिए पत्थर तराशकर भी बनाए जाते थे। ज्वालाकांच को भी रगड़कर फलक VI अ, १ में प्रदर्शित अमराती आकार का किसी अंश तक अनुकरण करने वाले व एक छोटे बटन के आकार पेंदे वाले भव्य पान-पात्र (गिलास) बनाए जाते थे, जबकि चित्र संख्या ६१ अ की तरह की अनुकृति चूना-पत्थर[1] में बनाई जाती थी।

अवर मेसोपोटेमिया में उवेद काल की महान उपलब्धि मुहाने के योग्य ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का निर्माण व उसके कुशल दोहन के लिए लाभजनक सामाजिक रचना-रीति व विचार-धारा थी। इतिहास के प्रारंभ में प्रत्येक बिरादरी की अधिकांश भूमि किसी देव मंदिर के अधीन थी। और देवता के लिए उसके सेवकों-पुजारियों[2] के अधीक्षण में काश्तकारों, बटाईदारों या दैनिक कर्मकरों द्वारा जोती जाती थी। तद्द्वारा नहरों के धारण और भूमि और जल के विवेकपूर्ण उपयोग की निश्चितता हुई। यह पद्धति आवश्यक रूप से उवेद काल में बद्धमूल रही होगी। क्योंकि, पहले ही हम इस गांव को एक विशाल मंदिर के प्रभाव क्षेत्र में पाते है।

---

१. प्रस्तर-पात्र के दोनों प्रकार इरेक में उरूक काल के अनु जिगुरत (Anu ziggurat) के ढ़प्पन से उत्तम रीति में उल्लिखित होते हैं। अत: बूमगार्टेल (Baumgartel) कल० प्री० ई० (CPE), १०६ का तर्क है कि वे भी उरूक (काल के) हैं। पर, दोनों आकारों के मिट्टी के प्रतिरूप उवेद स्तरों में सुपरिज्ञात हैं, और ढ़प्पन की मिट्टी में अनेक अन्य उवेद प्रकार निहित हैं, तु० पर्किन्स, कम्पे० आर्कै० अ० मेसो० (CAEM), ८६।

२. डीमेल (Deimel), Sumerische Tempelwirtschaftzur Zeit Urukaginas, Analecta Orientalia, ii, रोम, १९३१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इरिडू में प्रथम पूर्ण मंदिर XII पहले से ही एक ठोस चबूतरे पर स्थित था और इसकी बाहरी दीवारों की नग्नता नियमित रूप से अंतरित व बढ़ते हुए पोश्तों से हटा दी गई थी। प्रत्येक उत्तरोत्तरवर्त्ती रचनाक्रम में इस विशिष्टता की आवृत्ति की जाती थी। क्योंकि, उवेद काल में इस भवन पुनर्निर्माण व परिवर्द्धन कम-से-कम छः बार हुआ था। यह क्रम तब तक चलता रहा जब कि अंतिम उवेद मंदिर VI[1] २३.५×१२.५ मी० स्थान में अभिव्याप्त हुआ और २६.५ मी० लंबे व कम-से-कम १६मी० चौड़ चबूतरे पर खड़ा हुआ।-VIII, VII व VI मंदिरों में से प्रत्येक एक छोर पर एक वेदो व एक पीठ अथवा दूसरे के निकट एक बलिवेदिका और गर्भगृह के दोनों ओर समरूता के साथ पंक्तिबद्ध तिरछे प्रकोष्ठों के साथ एक लंबे तहखाने के रूप में था। इस प्रकार मेसोपोटेमिया में प्राचीनतम मंदिर के परंपरागत स्थल पर हम उवेद काल के मध्य तक प्रतिष्ठापित सुमेरीय मंदिर की मानक योजना को पाते हैं।

ऐसी स्थिति में यह अनुमान करना तर्क-संगत प्रतीत होता है कि इस समय में वह मंदिर पहले से ही बिरादरी की अर्थ-व्यवस्था में उस प्रमुख कृत्य का संपादन करता था जो प्राचीनतम लिखित अभिलेखों द्वारा अभिप्रमाणित होता है। यह अवश्य ही एक भांडार रहा होगा जहां इस समुदाय की सामाजिक बचत पुंजीभूत होती थी। और संभवतः देवता के व्यावसायिक सहकारियों द्वारा इसके निर्माण की योजना व निर्देशन होता था, साथ ही उपासना-संप्रदाय के उत्सवों का संचालन व देवी परिवार का शासन-प्रबंध किया जाता था। अर्थात्, हम उन पूर्वकालिक विशिष्टीकृत पुरोहितों के एक निकाय की कल्पना कर सकते है जो अपने आहार के उत्पादन के कठोर परिश्रम से मुक्त थे और समाज के दैवी संरक्षक के निरंतर वरदान के निश्चयी-करण के अत्यावश्यक कृत्य संपादन के निमित्त बिरादरी द्वारा संपोषित थे। इसके अतिरिक्त, कई स्थानों से प्राप्त उवेद पात्र उन प्रतीकों से चित्रित हैं जो बाद में स्थानीय देवता से संबंधित हुए। इस तरह, अर्द्ध चंद्र उर[2] में, जहां सोम देवता नन्नर (Nannar) संरक्षक के रूप में आसनासीन था, घटित होता है।

इस स्थिति में यदि "सुमेरीय" से हमारा तात्पर्य ऐतिहासिक सुमेर की विशिष्ट राजनीति व धर्म के निर्माताओं से हो, तो हम सुरक्षित रूप से फ्रेंकफर्ट का अनुसरण

१. सुमेर, iii, १९४७, १०३—८।
२. एंटि० ज० (Ant. J.), x, १९३० फ० xlv।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कर सकते हैं और उवेद कृषकों को सुमेरीय कह सकते हैं। पर, अबतक उनके द्वारा बोली जाने वाली भाषा का ज्ञान नहीं रहने के कारण "आद्य सुमेरीय" विशेषण अधिक सुरक्षित होगा। साथ ही चूंकि इरिडू में उवेद मंदिर भी थे जो प्राचीनतम चैत्यों की नीवों पर बने हैं और उनको आवेष्टित भी करते हैं, अत: आवास के मूल से लेकर धार्मिक परंपरा अविच्छिन्न रही। अत: मृद्भांडों में परिवर्तनों के बावजूद आबादी की भी प्रवर्तमान्यता की कल्पना करना व सुमेर के प्रथम उपनिवेशियों को "आय द्सुमेरीय" नाम प्रदान करना न्यायसंगत होगा।

इसके अतिरिक्त इरिडू में एकदम दक्षिणी छोर पर पता लगे एक लंबे केंद्रवर्ती तहखाने, जो दोनों किनारों पर पार्श्वस्थ प्रकोष्ठों से युक्त है, की विलक्षण योजना दुहराई गई है। पर, यह प्रक्रिया कुछ छोटे पैमाने पर हुई है। उत्तर में गावरा-XIX के प्राचीनतम अभिज्ञातव्य मंदिर की कुल लंबाई ८.१५ मी० है। अत: असीरिया में भी उवेद उपनिवेशियों को आद्य सुमेरीय कहना चाहिए। दूसरी ओर, जबकि उनकी संस्कृति सामान्यत: वही है जो सुमेर की हैं, मृच्छिल्पीय वैशिष्ट्य, सोल्लेखत: चि० ६१, स का टोंटीदार अभिषेक पात्र, यह सूचित करते हैं कि गावरा-(XIX) में प्राचीनतम उवेद मंदिर कालिक दृष्टि से सिर्फ सुमेर में इरिडू VIII द्वारा उपस्थापित अंतिम अवस्था का समकालिक है। तब ऐसा जान पड़ता है कि प्राय: आद्य सुमेरीय तृण-घासीय शुष्क-स्थल में धीरे-धीरे ही फैले और मुहाने के पंकिल भू-भाग पर उस समय में निश्चय ही बस चुके होंगे जबकि उत्तर में अब भी हलाफियन संस्कृति उन्नति परायण थी। इरिडू की तरह गावरा में भी उवेद मंदिर का पुनर्निर्माण व परिवर्धन हुआ। गावरा-XIII[1] में आकर मंदिर संश्लेष विशालता में सुमेर के किसी भी उवेद मंदिर से बढ़ गया और भवन के बाहरी मुख भाग सुमेर के उरूक मंदिरों की तरह ही (चि० ६३) ताखेदार पोश्तों व आलों से अलंकृत हैं। यह व अन्य तथ्य जिनमें वैदूर्य का आयात संमिलित है, यह सूचित करते हैं कि समय की दृष्टि से गावरा-XII की उवेद संस्कृति सुमेर में उपयुक्त रीति से परिभाषित उरूक-काल से संबंधित है।

देवताओं की सार्वजनिक पूजा के साथ-साथ अपेक्षाकृत अधिक व्यक्तिगत जादू टोने का अनुमान अन्य प्रारंभिक कृषकों की तरह आद्यमसुमेरवासियों द्वारा निर्मित छोटी मूर्तियों से किया जा सकता है। वे उवेद काल के भूषाचारों का भी संकेत करती

१. टॉब्लर, गावरा, ii, ३०—५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं। प्राग्वंशीय मिस्र की नारियों की तरह स्त्रियां (फ० XVIII स) कृत्रिम बाल धारण करती थीं। ये बाल अलग से राल के जरिए बनाए जाकर चिपका दिए जाते थे। कंधों व ऊपरी बाजुओं पर काले धब्बों व मिट्टी की गोलियां की व्याख्या गोदना के चिन्हों[1] के रूप में की गई हैं। पर, इनको व्रण-चिह्न मानना अधिक समीचीन विश्लेषण होगा। कुछ स्त्रियां शिशुओं को दूध पिला रही हैं, और इस प्रकार कूरोत्रोफस (Kourotrophos) नाम से अभिहित एक पूर्ण व्यापक प्रकार को उपस्थापित करती हैं। पर, अब पुरुषों को आकृतियां भी मिलती हैं।[2] पुरुष पीठ पर चूड़ा के रूप में अपने बालों को संवारते थे और यदा-कदा भेड़ों की खाल पहनते थे। अतः वे ठीक वही प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो आकाश के नीचे कुष्ण रूपायित एक आधुनिक कुर्द।

तचीजों को आकृतियों के रूप में नहीं उत्कीर्ण किया जाता था। उत्तर में हलाफ़ियन प्रकार के मुद्रा-लोलक उबेद कालों में अब भी व्यवहृत होते थे। पर, गावरा में प्राचीनतम उबेद स्तरों में पहले से ही वास्तविक अंकन-मुद्राएं प्रचलित थीं। और इस तरह की मुद्राएं दक्षिण में भी, यद्यपि दुर्लभता के साथ, इरिडू व लगाश[3] में मिलती हैं। इनमें से अधिकांश पिछले भाग में एक निलंबन फंदे के साथ बटन के आकार की हैं, जबकि इनका अगला भाग, जो चिपटा या उन्नतोदर है, ज्यामितिक प्रतिमान, सामान्यतम रूप में चित्र० ७७, १-२ की तरह की भरी हुई व्यत्यस्त रेखा के साथ उत्कृत्त है। गावरा के उत्तरकालीन स्तरों XIII व XII में, जो समय की दृष्टि से उरूक अवस्था से संबंधित हैं, कुछ मुद्राएं सूच्याकार या पिरामिड के आकार की हैं, और उन पर पक्षियों, सर्पों, मछलियों, जंगली बकरों या अन्य चौपायों की सजीव मूर्तियां खुदी हैं। उत्कीर्ण हलाफियन लोलकों की तरह ये उबेद मुद्राएं मिट्टी पर छाप दी जाती थीं और संभवतः उन्हीं जादुई व आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति करती थीं। हर हालत में, भरित व्यत्यस्त रेखा वाली सूच्याकार व बटन के आकार की मुद्राएं उस परिवार के अपेक्षाकृत प्राचीनतम तिथित सदस्य हैं, जो पूरब में समस्त ईरान में व पश्चिम में अनातोलियाई पठार से लेकर यूनान तक फैला था। उसके बाद बाल्कन व मध्य यूरोप में मिट्टी में इसका अनुकरण किया गया। यूरोप में समान रूप से अभिन्यास वे चक्राकार लोलक थे जो असीरिया[4] में उबेद काल में प्रचलित हुए।

---

१. वूली (Woolley), एंटी० ज० (Ant. J.), x, १९३०, ३३८।
२. यू० व्ही० बी (UVB), iii।
३. पर्किन्स (Perkins), कंम्पे० आर्के० अ० मेसो० (CAEM), ६३—४, ८७।
४. टॉब्लर, गावरा, ii, फ० clxiii, ४१—२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटामिया का उपनिवेशीकरण

उवेद काल में समग्र सुमेर में सामान्य शवाधान संस्कार प्रसारित मुद्रा[1] में शवाधान था। प्रारंभिक कृषक-समाजों में एक अनन्य साधारण प्रथा थी। युवकों को आवास स्थल के बाहर नियमित कब्रिस्तानों में दफनाया जाता था, पर बच्चे घरों के बीच दफनाए जाते होंगे। इरिडू का कब्रिस्तान, जो उसी परवर्ती अवस्था से संबंधित है जिससे मंदिर-VII व VI हैं, एक हजार कब्रों से समन्वित समझा जाता है। इनमें ईटों के चबूतरे से घिरो ईंट को शव-पेटिकाएं थो। कभी-कभी दूसरी बार शवाधान किया गया है और समय-समय पर कुत्ते अपने स्वामियों के साथ दफनाए जाते थे। पर, असीरिया में अरपचिया की कब्र में एक दूसरे के भुजपाश में आवद्ध एक नर व एक नारी को साथ-साथ दफनाया गया है।

उवेद काल अवश्य ही चिरस्थायी रहा होगा। यथार्थतः उपकरणों की दृष्टि से उत्तर-पाषाणीय साधारण किसानों के समुदाय द्वारा हरेक पीढ़ी में, शायद प्रत्येक शतक भी एक "नए पूजा-गृह" के बनाए जाने की अणुमात्र भी संभावना नहीं है। नहीं है। इसके अतिरिक्त डिलूजा[2] (Delougaz) ने इस धारणा के लिए अनिर्णायक होने के बावजूद कुछ ठोस साक्ष्य उपस्थापित किया है कि उत्तरकालीन व सम्यक्तर रीति से सज्जित साक्षर जन-समुदाय १०० या १४० वर्षों तक भी एक ही मंदिर में पूजा-कार्य से संतुष्ट थे। अब इरिडू में "आद्य-उवेद" चैत्यों के अतिरिक्त छः उत्तरोत्तरवर्त्ती मंदिरों का निर्माण हुआ। इसमें छः से आठ शताब्दियां लगनी चाहिए गावरा में उवेद के सात स्तर उत्तर के लिए इसी क्रम के अंक प्रदान करते हैं, फिर भी वहां अंतिम चार या पांच शताब्दियां उवेद काल के बाहर पड़ सकती हैं। अतः अनुदार प्राक्कलन के आधार पर भी ३०० से ४०० वर्ष सुमेर में उवेद काल की न्यूनतम अवधि जान पड़ते हैं।

इस अवधि में आद्य सुमेरियनों ने अपनी ग्राम्य अर्थ-व्यवस्था को परिपूर्ण बनाया और इस अर्थ-व्यवस्था द्वारा प्रदत्त उदार अन्न-आपूर्ति के फलस्वरूप प्रायः बड़ी तीव्र गति से उनकी जनसंख्या वृद्धि हुई। उत्तरकालीन इरिडू शवाधिस्थान की शवाधियां व उसी समय में संपादित जनकार्यों की विशालता जनसंख्या के इस

---

१. सुमेर, IV, ११७—१८ (इरिडू), एंटी० ज० (Ant. J), x, ३३७ (उर); ईराक ii, (अरपचिया); पर गावरा में अकुंचित या निकुञ्चित शवाधान सामान्यतर था (गावरा, ii, ११३)।

२. 'दियाला धर्म के प्राक्-सारगोपनीय मंदिर', ऑ० इंस्टी० पव० (OIP), lviii, १९४२, १२६—१३३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विस्तार को उल्लिखित करती हैं। पर, उस समग्रकाल में आद्य सुमेरीय जीविका के वैकल्पिक साधनों से रहित कृषक मात्र रहे। क्योंकि, आबादी की सिर्फ नगण्य संख्या ही व्यावसायिक पुरोहित धातु-कर्मी या कुम्हार भी होने की आकांक्षा कर सकती थी। अतः प्रसारशील जनसंख्या के लिए एकमात्र निर्गम का आधार होगा नूतन भूमि का उद्घाटन और वर्तमान यातायात सुविधाओं के साथ, उसका अर्थ होगा शीघ्र ही नई बस्तियों की स्थापना। प्रायः वही आवश्यकता ठीक मेसोपोटेमिया से लेकर भूमध्य-सागरीय तटों तक उबेद कृषकों के क्रमिक प्रसार का कारण बताती है। (तथापि, यह स्मरण रखना चाहिए कि १९५० ई० में सुमेर व असीरिया के बीच में सिर्फ एक ही उबेद बस्ती T उकेयर ज्ञात है।) हर हालत में, इरिडू से गावरा व कर्शमिश तक की सभी ज्ञात उबेद बस्तियां गांवों के रूप में ही रहती हैं। न विस्तार में या न तो कार्यात्मिक वैभिन्य में ही जनसंख्या के ये समुदाय नगरों के नाम के योग्य हैं। यह स्थिति कुछ बस्तियों ने उरूक काल में पाई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सप्तम अध्याय

मेसोपोटेमिया में नगर-क्रांति

अरूक काल इरेके में ए० अन्ना में प्रागैतिहासिक चूना-पत्थर के मंदिर (-V) के प्रांगण में प्राप्त स्तर-विभाजित आवास के सखंड (Debris) में लगभग २० मील तक गड़े एक परीक्षण गर्त के स्तर—XIV में सादे लाल सरकनदार व घूसर भांडों की उपस्थिति द्वारा परंपरानुसार परिभाषित हुआ है। ये सादे, कृष्णमुख भांड समान रूप से सादे हल्के भूरे रंग के भांडों के साथ-साथ उवेद भांडों का स्थान लेते हैं और पुरातन मृच्छिल्प-परंपरा से एक प्रकार के विच्छेद का संकेत देते हैं। उसी स्तर में समान रूप से विदेशी जान पड़ने वाली मूठों (चि० ६२) से युक्त प्याले व घड़े प्रकाश में आते हैं। एक संकीर्ण परीक्षण गर्त्त द्वारा प्रदत्त सीमित सामग्री के आधार पर इसका निर्णय नहीं हो सकता कि अरूक काल में निश्चय रूप में दृष्टिगोचर होने वाले धनुष के प्रयोग जैसी अन्य नवीनताएं किस हद तक मृद्भांडगत परिवर्तन के साथ

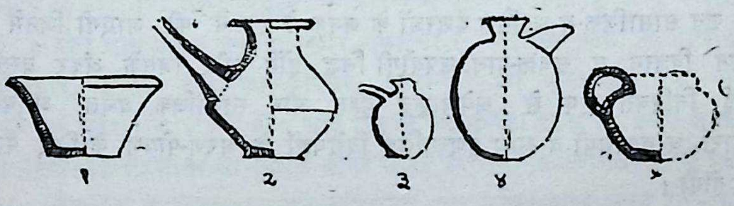

चित्र ६२. इरेक में एन्ना-VII-V से प्राप्त अरूक भांड, $\frac{1}{10}$।

१. यू० व्ही० बी० (UVB), III, १९३२, ३० IV, ३६, पर्किन्स, कांपे० आर्कॅ० अ० मेसी (CAEM), ९७ आ०, "अरुक काल', इस शब्द को इरेक के ए० अन्ना में-XIV से VI के स्तरों की वस्तुओं के लिए सीमित रखने के पक्ष में हैं और डिलूजा का अनुसरण करके उत्तरवर्त्ती स्तरों को जम्देत नस्र के साथ 'आद्य-साक्षर' काल में रखता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संपतित होती हैं। नूतन मृच्छिल्पीय आकार व शिल्पविधान सुमेर की संस्कृति पर प्रचुर विदेशी प्रभाव सिद्ध करने में यथेष्ट हैं और अधिक संभवत: इस तत्त्व की व्याख्या एक नवीन जगतीय तत्त्व के वास्तविक प्रवेश द्वारा को जा सकती है। चूंकि लाल व धूसर भांड व मूठदार बरतन उत्तरी सीरिया व पेलेस्तीन में चिरकाल से लोकप्रिय थे, अत: नूतन प्रेरणा अधिकांशत: अधिक संभव पश्चिम या उत्तर-पश्चिम से आई। यदि आप्रवासियों की कल्पना की जाय तो सामीय सर्वाधिक अधिक संभावित उम्मीदवार होंगे।

तो क्या "विदेशी उत्कृष्ट शैल्पिक विधाओं की उपस्थापना व अधिक उन्नत सामाजिक व्यवस्था के जनक हैं ? इरेक-XIV व एरिडू-V[1] से प्राप्त प्राचीनतम अरूक मृद्भांडों तक में चाक पर बने पात्र सम्मिलित हैं। मान्यतापूर्वक कुलाल चक्र अपने आप में सिर्फ युग प्रवर्तक उद्भावना ही नहीं है पर यह स्पष्टतर अर्थ-व्यवस्था, धातु के उपकरणों के व्यवहार और इसके परिणाम स्वरूप व्यावसायिक धातु कर्मियों (के अस्तित्व) को भी सूचित करता है और लगभग हमेशा सचक्रयानों के साथ संबधित हैं। तथापि, इससे यह नहीं सिद्ध होता है कि इनमें से सभी या कुछ प्रगतियां नई मृच्छिल्पीय अभिरूचियों व विधाओं के साथ-साथ अरूक काल के प्रारंभ में सुमेर में उपस्थित हुईं। इसके विपरीत, उबेद काल में धातु के व्यवहार के पक्ष में अप्रत्यक्ष साक्ष्य पहले ही उद्धृत किया गया है। ऐसी कोई भी संस्कृति ज्ञात नहीं है; पश्चिम में तो और भी कम संभावना है, जो प्रदर्शनीयता के साथ सुमेर की उबेद संस्कृति जैसी पुरानी हो, और साथ ही शैल्पिक या सामाजिक दृष्टि से इससे बढ़ी-चढ़ी होने की संभावना रखती हो। दूसरी ओर, तिग्री-फराती मुहाने के पूर्ण उपयोग की गणना ठीक उन सामाजिक व आर्थिक दशाओं के जनक के रूप में की जाएगी जिनमें धातु-शोधन विज्ञान व सचक्र-यान उपयोगी सिद्ध होंगे और जिसके अंदर बस्ती की इकाई निश्चित रूप से अपेक्षाकृत वृहत और सामाजिक बचत व्यावसायिक कुम्हारों, धातुकर्मियों व अन्य पूर्णकालिक विशेषज्ञों के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त हो सकी होंगी।

---

१. इलियट ने एम्स० मेसो० वे० ई० (EMWE) ८ में समान परिसीमन का प्रस्ताव किया और ए० अत्र—VII से ।।। तक को वह जम्देत नस्र को भी प्रारंभिक वंशीय-I नाम दिया। मैं अरुक के ल्वायड द्वारा प्रस्तावित प्रारंभिक व उत्तर कालों में विभाजन के साथ फ्रैंकफर्ट (ए० एस० पी०, १९३२, १६—१८) के मत का अनुसरण करता हूं, सुमेर, IV, १९४८, ३९, ५१।

१. यू० व्ही० पी, IV, १९३२, ३७, सुमेर, IV, ४५—७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटामिया में नगर-क्रांति

निस्संदेह एक विभिन्न प्रकार के पश्चिमीय पर्यावरण से अनुप्रेरित विदेशी परंपराओं के अंत:प्रवेश ने पंकिल भूमि-निवासी कृषक-समाजों के सांस्कृतिक दाय को उर्वर बनाया। कुछ भी यह सिद्ध नहीं करता कि उत्तरोक्त पर एक "उच्चतर" संस्कृति बाहर से उपारोपित हुई। अरूक काल में कृषक-ग्राम आवश्यक रूप में पुरोहित नगरों (Cathedral cities) के रूप में बढ़े, पर यह दावा करना न्यायसंगत होगा कि सुमेर की दृष्ट उपलब्धियों को बाहर के किसी अज्ञात प्रदेश से निर्मितावस्था में यहां उपस्थित किया गया। पुरातात्त्विक अभिलेख से तर्कसंगत रूप में हम जिन तत्वों का अनुमान कर सकते हैं वे विशेषज्ञों के नवीन वर्गों के नियोजन व भरण-पोषण के योग्य अर्थ-व्यवस्था का विकास, नूतन उत्पादक शिल्पों व विधाओं का प्रयोग और इनके फलस्वरूप जनसंख्या की वृद्धि है।

इन सबों का स्पष्टतम प्रतिबिंब मंदिर वास्तुकला में मिलता है। और ऐसा उचित ही है यदि, जैसा कि ऐतिहासिक कालों की तरह, मंदिर व्यक्ति कृषक परिवारों द्वारा उत्पादित व पारिवारिक आवश्यकताओं से अवशिष्ट अनाज या दूध अथवा मत्स्य के, व्यावसायिक शिल्पियों के भरण-पोषण व आयातित सामग्री के भुगतान के निमित्त, बचाए व एकत्र किए जाने का केंद्र रहा हो। इरिडू (-V व IV)[1] में प्रारंभिक अरूक मंदिर उन उबेद मंदिरों की परंपराओं को प्रवृत्त रखते हैं जिनका वे स्थान लेते हैं। पर ये मंदिर अपेक्षाकृत अधिक व्ययसाध्य पैमाने पर व सतत पूर्वापेक्षया उच्चतर व अधिक विस्तृत चबूतरों पर बनाए गए थे। पर मंदिर III का चबूतरा अंत में चूना-पत्थर के फलकों से आवृत्त कर दिया गया था।

इरेक में उत्तरवर्ती अरूक अवस्था के प्रारंभ में एक वास्तविक पूजालय केआधारों में उसी विदेशी सामग्री का उपयोग किया गया था। वहां ए० अन्ना में प्राचीनतम संरक्षित मंदिर, इन्निन देवी का परिसर, स्तर-V[2] का चूना-पत्थर का मंदिर अवश्य ही ७६ मी० लंबे व ३० मी० चौड़े क्षेत्र में व्याप्त रहा होगा। इसमें ताखदार दीवालों वाला एक तहखाना था जिसके दोनों छोरों पर सममित निर्मित तिरछे प्रकोष्ठ खड़े थे। स्तर-IV ब में इसका स्थान अपेक्षाकृत एक अधिक भव्य भवन स्तभं-मंदिर (Pillar Temple) ने लिया। यह कच्ची ईंट के चबूतरे पर खड़ा था और स्पष्टत: इसमें, स्वतंत्र रूप से खड़े मिट्टी के चार स्तंभों की, जो प्रत्येक व्यास में २.६ मी० थे

---

१. सुमेर, iii, १९४७, १०६—८।

२. यू० व्ही० बी० (UVB), ii, ४८, iii, १६; vii, ८; इलियट, एक्स० वेस्ट० नेस्ट, ई० (ENWE), ४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और मंदिर की दीवार के चार अर्ध स्तंभों के बराबर थे—दो कतारों वाली एक प्रकार की बरसाती से प्रवेश किया जाता था। खंभों, दीवारों व चबूतरों के आकार को पक्की मिट्टी के शंकुओं को कूटकर बनाए गए पंकाभ पलस्तर की पच्चीकारी के जरिए सबल व अलंकृत किया गया था। शंकुओं के अनावृत छोर लाल, सफेद या काले रंग में रंगे हुए हैं और जो संभवतः इन खंभों द्वारा अनुकृत ताड़ के तनों को सूचित करने वाले वर्छी व त्रिकोण के आकार के प्रतिमानों और उनके बीच में लटकती हुई चटाईयों व लोइयों के निर्माण के लिए सजाए गए हैं।

क्रमशः (स)-स्तंभ मंदिर का स्थान अरूक काल में अन्य (मंदिरों) ने ले लिया। स्तर IV अ में मंदिर ब ने चूना-पत्थर के मंदिर की योजना को दुहराया पर विहसित पोश्तों व आलोंवाले व मिस्र में प्रथमवंशीय मस्तबा (Mastaba) की तरह ही विशद वाह्यमुख-भाग प्रस्तुत करता था।

इस बीच इरेक में अन्य भाग में अनु देवता के संमान में क्रमागत मंदिरों की एक समानांतर माला का निर्माण किया गया था। सात भवनों के आधार, जो क्रमशः एक्स, जी० एफ० ई० डी० सी० व बी० के नाम से अभिहित हैं, यहां अध्यासित (Superimposed) हैं। इनमें से प्रत्येक एक उत्थापित चत्वर पर खड़ा था। यह चत्वर प्रत्येक पुनर्निर्माण के समय में एक साथ अंदर ६ मी० की ऊंचाई से बी में १३ मी० की ऊंचाई तक ऊंचा कर दिया गया था और साथ ही साथ उस समय तक इसका विस्तार होता रहा जबकि समस्त अंश को कच्ची ईंट के एक विशाल ऋजुकोण सम्पुंज ने (Massive), जो क्रमानुसार संप्रति लुप्त आठवें मंदिर का आवश्यक रूप से आधार रहा होगा, ढ़क लिया। सर्वाधिक सुरक्षित मंदिर बी०(B), जो अपनी सफेदीदार दीवारों के कारण श्वेत मंदिर (White Temple) इस उपनाम से अभिहित है, ७०×६६ मी० लंबे-चौड़े व १३ मी० ऊंचे चबूतरे पर खड़ा था। इसकी अच्छी तरह पीटकर बनाई गई दीवारों को समस्थानिक पोश्तों द्वारा मजबूत बनाया गया था और मिट्टी की कुप्पियों की क्षैतिज पट्टी के जरिए अवलंबन किया गया था। इन दीवारों की जड़ों को भिन्न अवस्था में ही पीटकर कच्ची ईंट व पलस्तर के रूप में परिणत कर दिया गया था। एक २.५ मी० चौड़ा सोपान शिखर तक, जिसपर तहखाने व पार्श्ववर्ती प्रकोष्ठों (चि० ६३) के आर-पार सिर्फ १७.५ मी० लंबा व २२ मी० चौड़ा मंदिर अधिष्ठित था, जाने का मार्ग प्रशस्त करता था।

योजना की दृष्टि से श्वेत मंदिर (White Temple) इरिडू उवेदकालीन मंदिर-IV के साथ निकट सादृश्य प्रदर्शित करता है। पर, पार्श्ववर्ती दो प्रकोष्ठों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

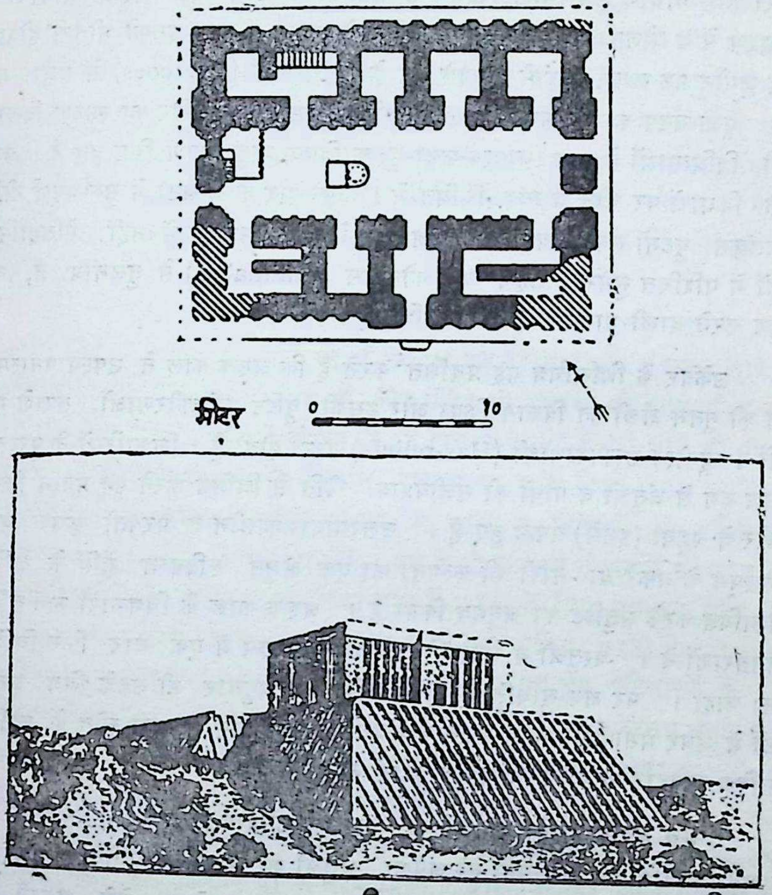

चित्र ६३. इरेक में श्वेत मंदिर की योजना व पुनर्निर्माण।

से निकलने वाले सोपान दूसरे तल्ले पर पहुंचाते थे। तथापि, श्वेत मंदिर के प्रकोष्ठों को भरने वाली जिगुरत अ (Ziggurrat) की मिट्टी में उवेद की छोटी मूर्तियों व पत्थर के टूटे-फूटे बर्तनों के पाए जाने के बावजूद इस मंदिर का उत्तरवर्ती अरूक अवस्था की अपेक्षा अधिक पुराना हो सकना कठिन है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उसी समय के आस-पास उकेयर व अक्कदद[1] में लगभग समान रूप से भव्य मंदिरों का निर्माण हुआ था। इनमें से द्वितीय विस्तार में, बाहरी दीवारों के सच्छिद्रण में व योजना में इरेक के श्वेत मंदिर के समान हैं। पर इसकी भीतरी दीवारें सफेद जमीन पर लाल, नारंगी व काले रंग के भित्तिचित्रों (Trescoes) से सजाई गई थीं। पूजा-मंडप का पुरोभाग (Front) इरेक में (स)-स्तंभ मंदिर का स्मरण दिलाने वाली त्रिधित्साओं से युक्त स्थापत्य-कला-मूलक विषय वस्तु धारण किए हुए हैं। पर, इसके किनारों पर चीते व सांड़ चित्रित थे। एक द्वार के चौखटों में सुरुचिपूर्ण रीति से अलंकृत घुटनों तक के घघरों, जो आकार में, पर उपादान में नहीं, ऐतिहासिक कालों में परिचित सुमेरीय लहंगे या कोनाकस (Kaunakes) से तुलनीय हैं, को धारण करने वाली मानव-आकृतियां चित्रित हैं।

उकेयर के भित्तिचित्र यह प्रदर्शित करते हैं कि अरूक काल ने उपस्थापनात्मक कला की नूतन शैली का विकास किया और इसकी पुष्टि मुद्रोत्कीरणाओं, तराशे गए पात्रों व न्यूनोत्थ उत्कीराणाओं (Has-reliefs) द्वारा होती है। शिकारियों ने पुरातन पाषाण युग से जंतुओं व पौधों को सजीवप्राय रीति से चित्रित करने का प्रयत्न किया है और वे बहुधा (इसमें) सफल हुए हैं। उत्तरपाषाणकालीन व परवर्ती कृषक वर्गों ने आल्प्स के बकरे या नारी की कल्पना का एक अमूर्त रूढ़िग्रस्त मूर्ति के जरिए प्रतीकायित करके संतुष्टि का अनुभव किया है। अरूक काल के चित्रकारों उत्कर्त्तकों व संगतराशों ने। वस्तुओं व व्यक्तियों को यथादृष्ट रूप में एक बार फिर चित्रित करना चाहा। पर अब सुचिंतित कृत्रिम रूढ़ियों के अनुसार ही उनके चित्र अरूक कालों में अवर मेसोपोटेमिया के उपकरण संबधी हमारे ज्ञान के मुख्य स्रोत हैं, क्योंकि सांसारिक व्यवहार के योग्य वास्तविक पदार्थ नहीं बचे हैं।

समस्त अवधि में अंक मुद्राओं का सामान्य उपयोग होता था। पर इन पर अब अमूर्त ज्यामितिक प्रतिमानों को अपेक्षा जंतुओं की आदमकद मूर्तियां उत्कीर्ण की जाती हैं। पर उत्तरवर्त्ती अरूक कालों में उनका स्थान वेलन लेने लगा[2], जो मेसोपोटेमिया में समग्र उत्तर कालों में प्रचलित व पहले ही परवर्ती जर्जी मिस्र में प्राप्त एक प्रकार की मुद्रा है। अधिकांश प्रारंभिक वंशीय उदाहरणों की तरह कई अरूक व जम्देत नस्र मुद्राएं लंबे बल छिद्रित नहीं है, पर एक छोर पर

---

१. ज० न्यू० ई० स्ट० (JNES), ii, १९४३, १३७—१४५।
२. फ्रैङ्कफर्ट, सिलिंडर सील्स (Cylinder Seals), १५—१९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(फ० XX, स) तिर्यक छिद्रित प्रक्षेप से युक्त हैं। प्राचीनतम वेलन की छापें इनन्ना में-V व IV स्तरों से इरेक के संस्मारकीय मंदिरों और श्वेत मंदिर से प्राप्त होती है। पर, इनकी तुलना संग्रहालयों व निजी संग्रहों में वेलनों की अधिकता से की जा सकती है। शिल्प व कला की दृष्टि से वे श्रेष्ठ रचनाएं हैं। इनकी विषय-वस्तुएं संभवतः उन दृश्यों का सूक्ष्म रूप में फिर से उपस्थापित करती हैं जो अन्य माध्यमों में वृहत्तर पैमाने पर चित्रित हैं और उकेयर के भित्तिचित्रों के द्वारा व एक संस्मारकीय पात्र व सिंह आखेट (Lion Hunt) (फ० XII) को चित्रित करने वाले भूरे पत्थर के एक समाधि-स्तंभ[1] दोनों इरेक में जम्देत नस्र स्तर में प्राप्त, पर शैली में स्पष्टत अरुक द्वारा निर्दशित हैं।

सूचना का एक तृतीय स्रोत प्राप्य है। इरेक IV के सबसे बाद के अरुक मंदिरों में मिट्टी की गुटिकाएं[2] पाई गईं हैं जिनपर रूढ़्यानुसार अंक व अक्षर खोदे हुए है। ये प्राचीनतम लिखित अभिलेख है और मंदिर की लेखाओं को उपस्थापित करते हैं। पुरोहितों के निगम, जिन्होंने अवश्य ही इन विशाल-भवनों में पूजा-कार्य का संपादन व देवता संबंधी समान रूप से विशाल राजस्व का प्रबंध किया होगा, अपने सभी सदस्यों के लिए बोधगम्य प्रतीकों के माध्यम से प्राप्ति व वितरणों को अभिलिखित करने के लिए अवश्य ही बाध्य हुए होंगे। एक से नो तक की संख्याओं को उपस्थापन इकाई के संकेत (D) को दुहरा कर किया गया है। १० के लिए एक नया शून्य (O) रखा जाता था। इसकी पुनरावृत्ति २०,३० आदि को सूचित करती है। १०० पर साधारणतः एक तीसरा शून्य (बड़ा D) रखा जाता था, पर कुछ परिमाणों के लिए यह नूतन चिह्न ६० के लिए आता है। यह पहले से ही वह षष्टितम अंकन है जो ऐतिहासिक काल में मेसोपोटेमिया में व्यापक रूप से व्यवहृत होता था ओ हम समय व कोणों के विभाजन के लिए जिसके ऋणी हैं।

इस लिपि के अधिकांश अक्षर पदार्थों के आशुलिपिक चित्र हैं, पर अपने आप में ये संख्याएं कुछ भी सूचित नहीं करती हैं और निस्संदेह इनके रूढ़िगत अर्थ रहे होंगे। चित्रात्मक संकेत व चित्रलिपियां भी प्रभावीकृत रूढ़ि के अनुसार अंकित की जाती हैं और निस्संदेह उनमें से अधिकांस के समान रूप से रूढ़िगत अर्थ होंगे। यद्यपि

१. यू० व्ही० बी० (UVB), v, १९३३, ii, तिथि के लिए तुलनीय वास्मची (Basmachi), सुमेर, v, १९४९, ८७—९०।

२. फॉकेंस्टीन (Falkenstein), 'Archaishe Texte ans uruk', (ADFU—w, 2, १९३६)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हम इस लिपि को चित्रलिप्यात्मक कहते हैं, पर यह निस्संदिग्ध रूप से भावलिप्यात्मक भी होगी और प्रत्येक चिह्न अवश्य ही किसी भाव या शब्द तक के लिए प्रयुक्त होता था। उत्तरवर्ती जम्देत नस्र अवस्था में आकर इसका साक्ष्य मिलता है कि कुछ संकेत ध्वन्यभिलेखों के रूप में भी व्यवहृत हो सकते थे।

समाजशास्त्री लेखन-कला का उपयोग सभ्यता को बर्बरता से पृथक करने के लिए एक सुविधाजनक निकष के रूप में करते हैं। अतः हम दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि मेसोपोटेमिया में सभ्यता का निर्माण अरूक काल में हुआ। अब हम अपेक्षाकृत बड़ी बस्तियों-इरिडू, इरेक, उर, लगाश व उकेयर को नगरों के नाम दे सकते हैं और बड़े मंदिरों की तुलना गिरिजाघरों से कर सकते हैं।

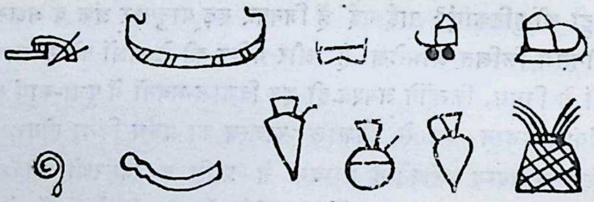

चित्र ६४.अरुण गुटिकाओं से प्राप्त चित्र-लिप्यात्मक-संकेत।

अब नागरिक स्वभावतः मछली पकड़ने, खेती व शिकार के उत्पादनों पर अवलंबित थे। कृषक अब अपने खेतों को जोतने के लिए निश्चित रूप से हलों का (चि० ६४, १) व अपनी फसलें काटने के लिए संभवतः धातु की हंसियों का व्यवहार (चि० ६४, ७) करते थे व दूध के लिए गायें, बकरे व दो प्रकार के भेड़े (फ० xx व) जिनमें से एक मिस्रीय प्रकार की तरह बालों वाला व दूसरा ऊर्णामय रोमयुक्त (Woolly fleece) था, पोसते थे। शिकारी लोग अब धनुषों व धातु चढ़े भालों का व्यवहार करते थे। चर्ट या ज्वालाकांच के बाण के सिरे कभी छेनी जैसी नोक-वाले और कभी शायद पत्ते के आकार के होते थे।

प्राथमिक उत्पादन का अतिरिक्तांश धातुकर्मियों संगतराशों बढ़इयों मोचियों व कुम्हारों जैसे विशिष्टता प्राप्त शिल्पियों को जीविका प्रदान करता था। ठठेरों ने

१. Helzheimer, in Helnrich, 'Kleimfunde (ADFU—w, i,१९३६, ४८—५४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्रवणांक को कम करने के लिए तांबे में सीसा[1] मिलाना सीखा था। वे इसे सूक्ष्म रूप में ढाल सकते थे (could cast cire perdue) परंतु त्रपुमिश्रित कांस्य का साक्ष्य नहीं मिलता है। लेकिन चांदी की प्रायः निश्चित जानकारी थी। अनातोलिया में तौरस (Taurus) से अधिक संभव पहले से ही चांदी व सीसे का आयात होता था। व्यापार ने सुमेर को तांबे, सोने, कटीली लकड़ी[2] व वैदूर्य की भी नियमित आपूर्ति प्रदान की। ये वस्तुएं संभवतः बदकशां से प्राप्त होती थीं।

जल यातायात ऊंचे अगले व पिछले हिस्सों वाली नाव के जरिए होता था। ये नावें उत्तरकालीन जार्जी मिस्र के 'विदेशी जहाजों' की तरह थीं (चि० ६४, २)। और स्थल पर बिना पहिए की गाड़ियां व पहिएदार छकड़ों (चि० ६४, ४-५) द्वारा होता था। गाड़ियां निस्संदेह बैलों द्वारा खींची जाती थीं। पर शायद एशियाई गधा या गोरखर अतिरिक्त पशु (draft animal) के रूप में कार्य करने के लिए पहले ही पालतू बनाया जा चुका था।

शवाधियों के अभाव व उत्खनन के मंदिरों तक संकेंद्रित रहने के कारण इस काल के शिल्पोपकरण व हथियार प्रायः नहीं ज्ञात हैं। लकड़ी पत्थर व कड़ी पकी मिट्टी का व्यवहार अब भी धातु के साथ-साथ होता था। मृच्छिल्पोद्योग का उत्तरवर्ती ऊरूक काल में पूर्णतया उद्योगीकरण किया गया। उत्खनन विवरणों में बहुसंख्यक आंवों का उल्लेख है, पर इनका कभी पूर्ण विवरण नहीं किया गया है। व्यावसायिक कुम्हार चाक पर पर्याप्त संख्या में पात्र बनाते थे पर बारीक लाल व धूसर भांड उत्तरवर्ती ऊरूक कालों में या कम से कम मंदिरों में दुष्प्राप्य हैं। हल्के भूरे रंग के पात्रों की प्रधानता है। मुड़ी टोंटियों वाले घड़े (चि० ६२, ३-४) व अंतर्नत्त कोरों वाले उपासना मूलक कटोरे (चि० ६२, १) बड़े विलक्षण हैं। परंतु लाल पट्टीदार भांड अब भी बनाए[3] जाते हैं।

उपासनात्मक उद्देश्यों के निमित्त मृद्भांडों का स्थान अधिकांशतः धातु या प्रस्तर के पात्रों ने ले लिया। मुड़ी टोंटी वाली सुराही जैसे मृद्भांडीय आकार शायद धात्वीय नमूनों का अनुकरण करते हैं। संगतराश पात्रों पर उभड़ी नकाशी में सिर्फ

१. Heinrich, 'Kleinfunde aus den archaischen Tempelschichten in Uruk' (A D F U—W, I, 19367, 47); ९ प्रतिशत सीसा मिलाया जाता था।
२. यू व्ही० बी० (UVB), viii, १९३६, ३२।
३. यू० व्ही० बी० (UVB), IV, १९३२, ३७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मूर्त अभिकल्प ही उत्कीर्ण नहीं करते थे (फ० XX) वल्कि टोंटीदार बरतन जैसे परंपरागत मृच्छिल्पीय आकारों का, विभिन्न भागों का पृथक निर्माण व उनको ठीक-ठीक[1] बैठाकर, कुशलतापूर्वक पुनर्निर्माण भी करते थे। शैल्पिक कौशल व कलात्मक अभिरुचि में उनके उत्पादन प्रारंभिक मिस्र में उत्पादित किसी भी प्रस्तर पात्र से सुतुलनीय हैं। तावीजों या बाटों के रूप में पशुओं को उपस्थापित करने के लिए पत्थर को भी खुदाई होती थी। और इसी प्रकार की सूक्ष्म मूर्तियां धातुमें भी ढ़ाली जाती थीं।

रचनात्मक क्रियाकलापों के साथ-साथ सुमेर में सभ्यता का उदय संघटित नरहत्या के प्रथम प्रत्यक्ष साक्ष्य के साथ मेल खाता है। जबकि अधिकांश ऊरूक मुद्राएं पूजा दृश्यों, कार्यरत शिल्पियों या जंतुओं के पूर्वजीय वर्गों को चित्रित करती हैं, इरेक से एं-अन्ना-IV से प्राप्त कुछ मुद्राएं "युद्धस्थल[2] में राजा" को उपस्थापित करती हैं। एक सामरिक रथ के साथ वंदियों को स्पष्टतः उपस्थापित किया गया है। साथ ही पिरिफार्म (Piriform) गदा सिरे युद्धास्त्र समझे जा सकते हैं। बद्ध बंदियों को दास-प्रथा के साक्ष्य के रूप में माना जा सकता है। रथ सैनिक संयंत्र के रूप में नियोजित नूतन सचक्रयान को प्रदर्शित करता है। यह सूचित करने के लिए कि "राजत्त्व स्वर्ग से अवतीर्ण हुआ" प्रासाद या शाही समाधि जैसा कोई अन्य साक्ष्य नहीं है। अतः जैसा कि जैकॉब्सन[3] ने संकेत किया है, युद्ध का नायक स्थायी वंशपरंपरागत शासक न रहकर एक निर्वाचित पदाधिकारी रहा होगा।

ऊरूककालीन सभ्यता सुमेर में केवल इरिडु, इरेक, लागाश व उर और अक्कद में उकेयर से ज्ञात होता है। मृद्भांड किशव खफाजे में सम-सामयिक बस्तियों का संकेत देता है। कुछ इसी प्रकार के सामान की संभावना मारी में की जा सकती है और इसका साक्ष्य इलाम के सूसा में मिलता है। उत्तरी मेसोपोटेमिया में यद्यपि धूसर भांड व कुछ ऊरूक मृच्छिल्पीय आकार सिजर में ग्रेरेस व कतिपय ऊरूक स्थलों में पाए जाते हैं। पर अब तक यहां नगर अस्तित्त्व में नहीं आए थे। वस्तुतः कई गांवों में उवेद संस्कृति, जैसा कि सुमेर में वितरण मिलता है, ऊरूक काल तक अच्छी तरह स्थिर रही।

उत्तर ऊरूक काल तक उत्तर जर्जी व प्रारंभिक फराउनी मिस्र में (पृ० ७२,१००) अभिज्ञात करीब सभी मेसोपोटेमियाई वैशिष्ट्यों का समानांतर सुमेर में पाया जा

---

१. हेनरिक (Heinrich), 'Kleinfunde' ३६।

२. फङ्कफर्ट, सिलिंडर सील्स २१-५; यू० व्ही० वी०, iv, २९; v, ४६।

३. In Frankfort et al, Before Philosophy, London, १९४९, १४०-२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सकता है। दोनों देशों के बीच समता का विलक्षणतम अभिलेख इरेक[1] से प्राप्त सिंहाखेट (Lion Hunt) समाधि-स्तंभ है। ए-अन्ना में एक-III मंदिर में पाए जाने के बावजूद यह युक्तितः एक प्राचीनतर ऊरूक शरण-स्थान से सुरक्षित एक भक्तिमूलक उपहार समझा जाता है। सिंहाखेटकों का परिधान गेबेल-एल-अरक की चाकू की मूठ पर चित्रित सिंह-धारक (Lion-dompter) के परिधान की पुनरावृत्ति करता है और उनका अस्त्र-शस्त्र सिंहाखेट- (दृश्ययुक्त) रंग-पट्ट पर के धनुर्धरों के शस्त्रास्त्रों को दुहराता है। (फ० XII)। उसी हाथी-दांत की विदेशी नौका उन ऊरूक अंकन-मुद्राओं पर चित्रित नौकाओं के समान है जिन पर का परस्पर विरोधी वर्ग भी एक प्रिय विषयवस्तु है। वर्त्तुलाकार मुद्रा का संभवतः अबतक नियमित व्यवहार होता था, जबकि मुड़ी हुई टोंटी वाले घड़े का उत्तरकालीन ऊरुक प्रकार ठीक वही है जो कि जर्जी अंत्येष्टि संबंधी मृद्भांडों में पाया गया है तथा नारमेर (Narmer) रंगपट्ट पर चित्रित है। यदि ये समताएं उत्तरकालीन ऊरूक व उत्तरकालीन जर्जी के बीच एक प्रकार के संबंध को सूचित करती हैं, तब अवशिष्ट उभय साधारण वैशिष्ट्य मिस्र अपेक्षा सुमेर में प्राचीनतर होंगे। प्रारंभिक फराउनी मस्तबाओं के छिद्रित वाह्य-मुखभागों के निकटतम समानांतर इरेक के श्वेत मंदिर व सम-सामयिक अन्य भवनों द्वारा वास्तविक रूप से उपस्थापित होते हैं। पर, उत्तरोक्त के वाह्य मुखभाग इरिडू में प्रारंभिक उवेद (XII) मंदिर (पृ० ११९) की योशतेदार दीवारों के मात्र परिवर्द्धित रूप हैं। इसी तरह, पुलिंदों पर मुहर लगाने के ठप्पों का प्रयोग उवेद कालों तक पीछे जाता है। दूसरी ओर, लगभग उसी समय में सुमेरीय व मिस्रीय लिपिकों द्वारा वैयक्तिक नाम लिखने के लिए ध्वनिलिपियों के रूप में भावाभिलेखों के प्रयोग का निर्णायक कदम उठाया गया होगा। इरेक के समाधि-स्तंभ व मिस्र की चाकू मूठ पर चित्रित नायक स्पष्टतः सुमेरीय नहीं हैं। वेलन उत्तर ऊरूक काल का अभिनवत्त्व था और संभवतः मंदिर में प्रबंधकों की आवश्यकता पूर्ति के लिए सुमेरीय संगतराशों द्वारा अनुकूलित एवं उत्कीर्ण काष्ठ या सरपत के वेलनों का एक रूपांतर था। यह संकेत किया गया है कि प्रारंभिक ऊरूक काल की मृच्छिल्पीय विलक्षणताओं व भवन-निर्माण-कार्य में प्रस्तर के उपयोग का भी प्रोत्साहन पश्चिम से सामीय तत्त्व के प्रवेश द्वारा मिला। सिंहाखेट युक्त समाधि-स्तंभ निश्चय ही इस मत का समर्थन करता है। मध्यवर्ती अरब प्रदेश में उत्पन्न सामियों ने तब मिस्र में मेसोपोटेमिया की विधाओं व सुमेर में कई धनुष व स्वाभाविक रंग युक्त मृद्भांडों जैसी पश्चिमीय रीतियों के संप्रेषण में उभेयमध्यस्थों का काम किया होगा। चूंकि दोनों प्रदेश कम-से-कम एक

१. UVB, v, pl. १२-१३

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आयातित पदार्थ वेदूर्य के संबंध में व्यापार में हकदार थे, अतः विचारों के आदान-प्रदान का अवसर निस्संदिग्ध रूप से वर्तमान था। दूसरी ओर, ऊरूक व जर्जी कालों के बीच सम-सामयिकता के आधार पर सुमेर व मिस्र की सम-सामयिक संस्कृतियों की तुलना यह प्रदर्शित करती है कि उत्तरोक्त (मिस्र) सुमेर पर एक उच्चतर संस्कृति लादने की स्थिति में नहीं था।

अरूक काल में सामीय प्रभाव के सिद्धांत के विरोध में सूसा में, जहां सामीयों के लिए कोई साहित्यिक साक्ष्य नहीं हैं, बहुत समान मृद्भांडों, समुत्कीरणा व लिपि तक के अस्तित्व को अवश्य ही उपस्थापित करना चाहिए। दस्तुतः स्पीजर[1] ने १९३९ में यह तर्क प्रस्तुत किया था कि सुमेरियों ने ही आप को तिग्री-फराती मुहाने का स्वामी बनाया था और लेखन-कला, वर्तुलाकार मुद्रा, संगतराशी व संस्मारकीय वास्तु-विद्या को प्रवर्तित किया था। इरिडू में होने वाले अनुवर्ती आविष्कारों ने उसके अधिकांश तर्कों का खंडन कर दिया है। और सुमेरीय (संस्कृति) तादात्म्यीकरण के साथ उबेद संस्कृति के लिए १९३२ ई० में फ्रेंकफर्ट[2] द्वारा अग्रसारित तर्कों की पूर्ण रूप से अनुपूर्ति की है। कर्मकांड व स्थापत्य में उबेद व अरूक के मध्य की अविच्छिन्नता-पूर्ण सिद्ध हुई है और उत्तरकाल की कोई भी उपलब्धि ऐसी नहीं है जिसका श्रेय युक्तिपूर्ण आद्य-सुमेरवासियों के बुद्धि-वैभव वधार्मिकता को नहीं दिया जा सके। विभिन्न पर्यावरणों द्वारा आमंत्रित विदेशी परंपराओं के उत्साहजनक प्रवेश ने उनके विकास निःसंदेह वेग वृद्धि की। पर, इससे आवश्यक रूप से जनता की किसी प्रकार की परिवर्त्तनीयता नहीं सूचित होती है। इसके विपरीत, निर्मित-भवनों के विस्तार से एक प्रकार की निरतिशय वृद्धि का अनुमान किया जा सकता है। फांकेन्सटीन[3] की गणना के अनुसर इरेक में मंदिर की एक बलभी (Terrace) के निर्माण के लिए प्रतिदिन दस घंटे काम करने वाले १,५०० आदमियों को पांच वर्ष लगे होंगे।

अरूक काल अवश्य ही अनेक शताब्दियों में व्याप्त रहा होगा। विशाल मंदिरों का पुनर्निर्माण इरेक में कम-से-कम छः बार इरिडू में पांच बार और उकेयर में तीन बार हुआ। यह बाहर से, आकार लोगों के बस जाने के कारण होने वाली वृद्धियों से बिल्कुल भिन्न जनसंख्या के पर्याप्त विस्तार के लिए समय प्रदान करता है। उत्तर-

१. जे० ए० ओ० एस्० (JAOS), पूरक, ४, १९३९, २९—३१।

२. 'आर्केयोलॉजी ऐंड दी सूमेरियन प्रॉब्लेम,' ओ० इ० स्ट० (OIS), ४, १९३२, १८—२३।

३. यू० व्ही० बी० (UVB), x, १९३९, २४, सं० २।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कालीन जम्देत नस्र प्रावस्था में आकार शुरुप्पक (फारा),[1] जम्देत नस्र[2] व मारी[3] में नए नगर बनाए गए थे, जबकि अन्य बस्तियां किशव खफाजे में नगर की स्थिति में आईं। यह काल मृच्छिल्पीय व समुत्कीरणामूलक शैलियों द्वारा परिभाषित होता है।

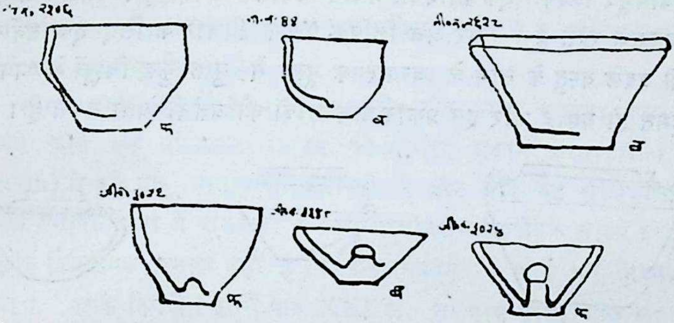

चित्र ६५. जम्देत नस्र से प्राप्त कटोरे व ढक्कन, ⅙ मैक्के के अनुसार।

मृद्भांड[4] कला में चित्रित सज्जा का पुनः प्रचलन हुआ। फिर भी, सामान्य हल्के भूरे रंग के भांड व अनेक अरूक आकार कायम रहे (चि० ६६)। भीतरी भाग में मूठदार अधोमुखीन शंकु के रूप में स्थित डट्टा एक उल्लेखनीय अभिनवत्व है (चित्र ६५, तल)[5], क्योंकि यह भारत में भी उपलब्ध होता है। चित्रण वस्तुतः लंबी पेंदीदार कलसे तक सीमित है (फ० XXI)। पात्र की सतह, संरक्षित चौखंडों को छोड़कर, जो काले रंग के अभिकल्पों से स्थूल-रूपायित व भूरे हुए थे, या तो अंगूरी लाल रंग (Plum red) सरकन से आवृत थी या रूप-रेखा बनाने के बाद चौखंडों को हल्के हरे रंग की मिट्टी में सीधे प्रयुक्त काले रंग के अभिकल्पों से भर दिया गया था।

---

१. म्यू० ज० (Mus. J.) xxii, १९३१, २११ अ०।

२. फील्ड म्यूजियम एन्थ्रापोलाजी मेम्वायर्स (Field Museum Anthropology Memoirs), i, सं० ३।

३. सीरिया, xviii, १९३७—९।

४. फील्ड, अ० ज० आर्के (AJA), xxxix, १९३५, ३१०-३२०, हार्डेन (Harden), ईराक, i, १९३४, ३०-४४: ईलियट, एक्स० मेमो० वेस्ट० ईस्ट० (EMWI) की तरह ही अरूक से प्रारंभवंशीय तक अविच्छिन्नता पर बल देता है, सर्वत्र (Passim)।

५. फील्ड म्यूजियम एन्थ्रापोलाजी, १, सं० ३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चित्र ७८ के सदृश जंत्वाकार ठप्पों के साथ अंकन-मुद्राएं अब भी व्यवहृत होती थीं, पर बेलनों पर अरूक शैली के प्राणवान दृश्यों के विपरीत कठोर व रूढ़िगत पशुओं, मत्स्यों तथा पक्षियों की पंक्तियां उत्कीर्ण है। समुत्कीरणा के सौंदर्य-मूल के ह्रास के बावजूद लिपि[1] एक निश्चित प्रगति प्रदर्शित करती है। अक्षर अधिकांशतः चित्रलिप्यात्मक रहते हैं। पर अब लिपिक प्रत्येक विचार के लिए एक नवीन संकेत विधान के बदले वस्तु के नाम के ध्वन्यात्मक मूल्य से युक्त कुछ चिह्नों के व्यवहार, के लिए सहमत हो गए हैं और इस प्रकार अब शब्दों की वर्तनी बता सकते हैं। चूंकि

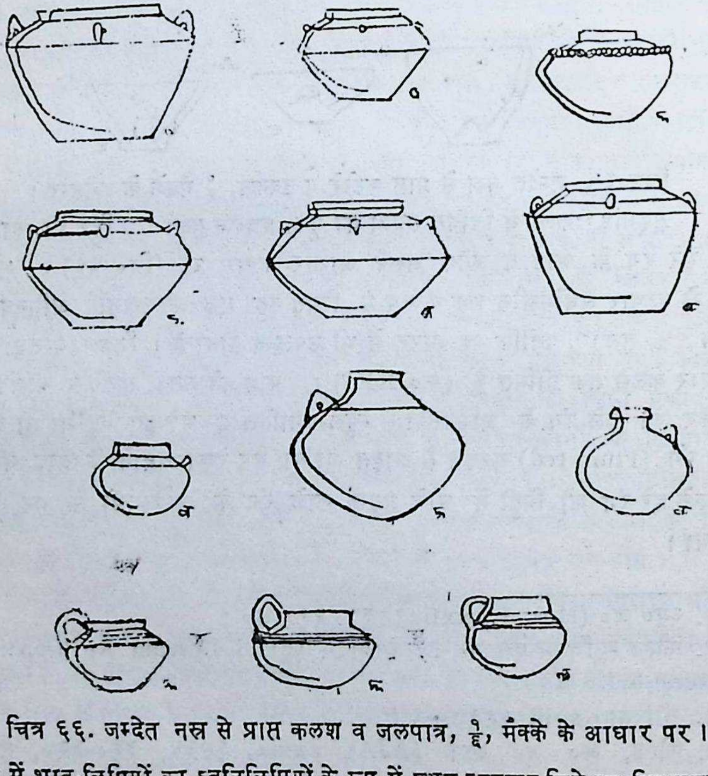

चित्र ६६. जम्देत नस्र से प्राप्त कलश व जलपात्र, १/६, मैक्के के आधार पर।

मिस्र में भाव-लिपियों का ध्वनिलिपियों के रूप में प्रथम व्यवहार जिसे हम विश्वासपूर्वक पहचान सकते हैं, वैयक्तिक नामों का लेखन है, अतः बाण के लिए (प्रयुक्त) प्रतीक,

१. Cf. Hooke, in *Antiquity*, xi 1937, 270-३.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो सुमेरीय में 'ति' कहा जाता है, "एनलिलति"—एनलिल अधिवासार्थ प्रेरित करता है (Enlil-makes to live), इस नाम में शब्द खंड "ति" को सूचित करने के लिए प्रयुक्त होता है। पर इस व अन्य साधनों के जरिए चिह्नों के विषय में मितव्ययिता संभव हुई। अरूक काल में भेड़ों के लिए प्रयुक्त चिह्न के इकतीस रूपांतर रहें जो संभवतः विभिन्न नस्लें, अवस्थाएं व जातियां सूचित करते थे। जंम्देत नस्र गुटिकाओं पर सिर्फ चार रूपांतर मिलते हैं।

खास[1] जम्देत नस्र में ३०० × २०० मी० क्षेत्र वाला चबूतरा कुल ९२ × ४८ मी० लंबे चौड़े एक संश्लिष्ट मकान को आधार प्रदान करता था। लैंगडॉन (Langdon) ने इसे एक प्रासाद की संज्ञा दी है और यदि यह अभिधान समीचीन हो तो यह मेसोपोटेमिया में राजसत्ता के लिए प्राचीनतम निर्णायक साक्ष्य होगा। पर, इसका कोई निश्चायक प्रमाण नहीं है कि इस मकान में कोई धर्म-निरपेक्ष शासक रहता था। इसके विपरीत इसमें फ० XXI अ का पात्र पाया गया था जो देवता के लिए प्रयुक्त सुमेरीय भावाभिलेखात्मक तारक से अंकित था। अन्य स्थलों पर मंदिर, चिरप्रतिष्ठित परंपरा को कायम रखते हैं। खफाजे[2] में प्रथम चंद्र-मंदिर (Temple of Sin) पार्श्ववर्ती प्रकोष्ठों वाले एक लवे केंद्रीय तहखाने का एक उत्तम उदाहरण है। पर, प्रकोष्ठ छोटे आकार के हैं। "पावन कुटीर" इस समय तक इरेक, खफाजे व लागांश के मंदिरों में (चि० १०५, १) छोटे प्रस्तर प्रतिमानों द्वारा उपस्थापित एक रूढ़िग्रस्त कुटीर-प्रतीक बन गया था।

शवाधानीय संस्कारों को अब उर के उस शवाधिस्थान द्वारा निदर्शित किया जा सकता है जिसे वूलीने[3] जम्देत नस्र अवस्था में रखा है पर जो संभवतः उसके लिखने के समय में अनभिज्ञात ऊरूक काल तक पीछे जाता है। प्रसारित उबेद शवधानों व प्रारंभिक वंशीय कब्रों में सामान्य निकुंचित मुद्रा के विपरीत मृतक विशुद्धतः आंकुचित मुद्रा में दफनाए जाते थे।

उत्पादन के औजारों के रूप में मिट्टी के हंसुवे, चट्ट के कुदाल, ज्वालाकांच के चाकू व पत्थर के अन्य उपकरण अब भी व्यवहृत होते थे। धातु की वस्तुओं में एक कंटीली मछली फंसाने की बंसी (चि० ६७), प्रारंभिक फराउनी छेनियों[4] की तरह

---

१. Langdon, Der Alte Orient, 26, 1928, 67-75; Eliot, EMWI 10.
२. Delougaz, 'Presargonid Temples', OIP., lviii.
३. Ant. J. x, 327.
४. Field Museum Anthropology Memoirs, i, No. 3.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोल कठरे वाली एक छेनी व दांत[1] के रूप में एक छोर की ओर पतली होने वाली चिपटी कटारी बची है। पर मिट्टी के ममूनों से यह सूचित होता है कि तांबा सच्छिद्र दंड वाले कुठारों के लिए प्रयुक्त होता था। तांवे, सीसे व चांदी के बर्तनों की सूचना कब्रों या मंदिर के राशिपातों से मिली है। जम्देत नस्र काल में आकर एशियाई धातु वैज्ञानिकों ने सीसे[2] से चांदी को पृथक करने की संश्लिष्ट पद्धति पर स्पष्टतः अधिकार पा लिया था। बरतन फायेंस के भी बनते थे। ये उस नये उद्योग के उत्पादन थे जो

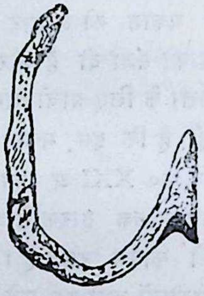

चित्र ६७. तांवे की वंशी, जम्देत नस्र, $\frac{3}{3}$।

व्यक्तिगत अलंकारों का भी निर्माण करता था। प्रस्तर-पात्र आनुषंगिक रूप से अब भी बनाए जाते व कभी-कभी उत्कीर्ण भी किए जाते थे, पर अब पहले की अपेक्षा कम सुरुचिपूर्ण रूप में। पीठ पर एक छेद या गढ़े वाला सेलखड़ी का वराह (फ० XX अ) अरूक काल की कृति से तुलनीय हैं। और इरेक से प्राप्त उत्कृष्ट सेतखली का मस्तक (फ० XXXVI) सभ्य प्रकृतिवाद व बर्बर रूढ़ि के बीच विरोध के आदर्शभूत उदाहरण का कार्य कर सकता है।

व्यक्तिगत अलंकरणों में छिद्रित डंडों वाले हड्डी के शूक, जो प्रारंभिक वंशीय कीलदार पिनों के (Toggle-pin) पूर्वगामी हैं, मनके, फायेंस, लकड़ी, खोली, मुलायम पत्थर, अकीक, व वैदूर्य के आंतरक (Spacers) व अनेक लोलक सम्मिलित हैं। इनमें मनुष्यों, पडुकियों, मछलियों, पशुओं व अंगूठियों के प्रतिमान शामिल हैं। इनसे चार

---

१. म्यूत OJ, xxii, १९३१ २११-आगे।

२. तु० फार्बिस (Forbes), मिटालजी इन एँटिक्विटी (Metallurgy in Antiquity), लीडेऩ (Leiden), १९५०, २९०—२१८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छेददार फंदे निकलते हैं जो प्रायः यूरोपीय प्रागितहास के चक्राकार लोलकों से संवंधित है। पर, इनके मिस्रीय समानांतर भी अनुपलब्ध नहीं हैं।

यद्यपि इसने खफाजे में चद्र मंदिर (Sin Temple) के चार पुनर्निर्माण, उकेयर में दो निर्माण अवस्थाएं, और इरेक में, ए-अन्ना में अनेक उत्साहपूर्ण पुनर्निर्माण देखे। फिर भी जम्देत नस्र अवस्था एक प्रकार की संक्रमण-कालीन प्रकृति प्रदर्शित करती है। अरूक कालों से अनेक मृच्छिल्पीय आकार व वास्तुकलामूलक विधाएं बची हैं। इनमें से वहुतों को प्रारंभिक वंशीय प्रथम तक प्रवृत्त रखा गया। तथापि, शुरुप्पक व इरेक में "प्लावनिक निक्षेप" (Flood deposits) जम्देत नस्र के प्रारंभिक वंशीय स्तरों के बीच में पड़ते हैं। ये अन्य स्रोतों के समान ही सुमेरीय परंपरा के जलप्रलय को उपस्थापित करने का अच्छा दावा रखते है।

सूसियाना में नगर क्रांति

इस विन्दु पर सुसियाना (Susiana) में सभ्यता के समानांतर विकास को रेखा-चित्रित करने के लिए विषयांतर को अंतर्विष्ट करना सुविधापूर्ण है। क्योंकि इलाम का यह भाग भौगोलिक दृष्टि से निम्न मेसोपोटेमिया से संबंधित है और सिर्फ एक बहुत अवनत विभाजक रेखा द्वारा तिग्री स्रोत से पृथक्कृत हैं। ऐतिहासिक कालों में सूसा व सुमेर के बीच निकट संपर्क था और पारस्परिक प्रभाव प्रचुर था। प्रागैतिहासिक कालों में पुरातात्विक संस्कृतियों की समानताएं उसी तरह के उभयपक्षीय संवंधों में विश्वास को स्थिर करने के लिए पूर्णरूपेण निकट हैं।

सूसा की भूमि कर्खा (Karkha) के जलोढ़ समतल में निकलनेवाली कंकड़ीली मिट्टी भी एक नीची प्रक्षेप रेखा है। निसर्गतः सामान्य जल-प्लावनों (की सतह) से ऊपर उठा हुआ, पर उर्वर मैदान के दोहन के लिए सुविधापूर्ण स्थिति में विद्यमान सूसा शीघ्र ही एक जनसंकुल केंद्र बन गया। अध्यारोपित ग्रामों व नगरों के भग्नावशेष, तीन शिखरों वाले एक विशाल टीले के रूप में परिणत हुए। इनमें से प्रत्येक शिखर क्रमशः दुर्ग से व अकेमेनो (Achaemenid) व ससानी सम्राटों के अपाडाना (Apadana) व राजकीय ग्राम्यगृह से युक्त था। १८९७ ई० से एक फ्रांसीसी दल भग्नावशेषों के अंवेषण कर रहा था। उन लोगों ने दो प्राचीन स्तरों- सूसा I व सूसा II को जो उत्कृष्ट कोटि के चित्रित मृदभांडों की विभिन्न शैलियों द्वारा परिलक्षित थे, अलग किया। और १९२८ ई० तक इस अनुक्रम का उपयोग १९१९ ई० के बाद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेसोपोटेमिया में प्रकाश में आई चित्रित मृदभांडों वाली संस्कृतियों के वर्गीकरणार्थ एक मानक के रूप में होता था।

अंत में यह प्रतीत हुआ है कि सूसा I व सूसा II विभिन्न स्वरूप के मकबरों, गैहिक भग्नावशेषों व स्मृति-चिह्नों के ११.२ मी० निक्षेपों द्वारा एक दूसरे से वियोजित हैं। फिर भी, उत्खनन व प्रकाशन के तरीके, जिनमें समाधिवर्गों का वर्णन कभी भी समग्र रूप में नहीं हुआ है और स्मृति-चिह्नों का वर्गीकरण अनुचित रूप से परिभाषित "सूसा II" क्षितिज के नीचे की सिर्फ गहराई भर से किया जाता है, सभ्यता की ओर प्रगति के क्रमों का ठीक-ठीक पता लगाने के लिए कोई अवसर प्रदान नहीं करते हैं। एक अस्थायी संस्कृति का अनुक्रम निर्धारित किया जा सकता है, जिसका श्रेय केवल सुमेर के साथ निकट समानांतर को दिया जायगा।

प्राचीनतम अभिज्ञातव्य आवास, सूसा I (अ)[1] अवश्य ही एक जनाकीर्ण ग्राम रहा होगा किंतु, इसकी जानकारी अनुमानतः २००० से ऊपर कब्रों वाले इसके कब्रिस्तान से मिलती है। डी० मार्गन के अनुसार शव कभी प्रसारित मुद्रा में और कभी-कभी निकुंचित मुद्रा में दफनाए जाते थे, पर डे मेक्नम[2] (de Mecquenem) के अनुसार हड्डियों से मांस के गल जाने के बाद ही यह कार्य संपन्न किया जाता था। शवाधि उपस्कर व गैहिक स्मृतिशेष उस संस्कृति का साक्ष्य देते हैं जो शैल्पिक रूप में सुमेर में ज्ञात प्राचीनतम संस्कृति से बढ़ी-चढ़ी थी। यद्यपि रगड़ कर बनायी गयी पत्थर को कुल्हाड़ियों, पत्थर के अर्धचंद्राकार चाकुओं, ज्वालाकांच के मनकों, छिद्रित पत्थर के पिरिफार्म (Piriform) या नुकीले अंडाकार गदा-सिरों और प्रायः सामरिक कुठारों[3] तथा बारीकी से संवारे गए चट के पत्राकार व दांतदार वाण के सिरों तक का भी व्यवहार होता था (चि० ६८), परंतु चपटे कुठारों, छेनियों सूक्ष्म-छिद्रोंवाली सुइयों १६ से० मी० व्यास वाले दर्पणों तक के निर्माण के लिए तांबा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था। तांबे व ज्वालाकांच के साथ वेदूर्य का भी आयात होता था। मनकों के उत्पादनार्थ फायेंस का भी व्यवहार होता था। अतः विशिष्टता प्राप्त शिल्पियों के निर्वाह के लिए सामाजिक बचत अवश्य ही पर्याप्त रही होगी। मृद्भांड भी इतना बारीक है कि चाक के व्यवहार नहीं होने के बावजूद इसका निर्माण निश्चय ही

---

१. मे० डी० प० (M D P), i १७, xxv, १८३, ०२४, xxx, १६३-८।
२. मे० डी० प० (MDP), xxix, ५।
३. मे० डी० प०, xxx, १६५, चि० सिर्फ कुंद बचा हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

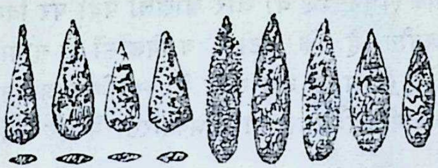

चित्र ६८ अनलाश्म के बाण-सिरे, सूसा।

पूर्णकालिक विशेषज्ञों द्वारा हुआ होगा। ६.१ व ११.२ से० मी० के बीच की गहराई में पाए गए आंवें,[1] यदि वे बाद के स्तर में नहीं खोदे गए हों, अत्यधिक कृत्रिम प्रकार के हैं।

अंत्येष्टि-मूलक भांडों में से अधिकांशतः बहुत पतले व झरझरे हैं और रंग में हल्के भूरे व गुलाबी हैं। पर उद्भाजित काले या लाल सरकनदार द्रव्यों का भी उल्लेख[2] मिलता है और कई अंत्येष्टि संबंधी पात्र भी लाल सरकनदार सतह पर काले रंग से चित्रित किए गए थे। फिर भी, विलक्षण अंत्येष्टि संबंधी पात्र[3] स्पष्ट व झरझरे पदार्थ के बने हैं। मुख्य आकार ये हैं:—(१) चौड़े खुले कटोरे (फ०XXII)

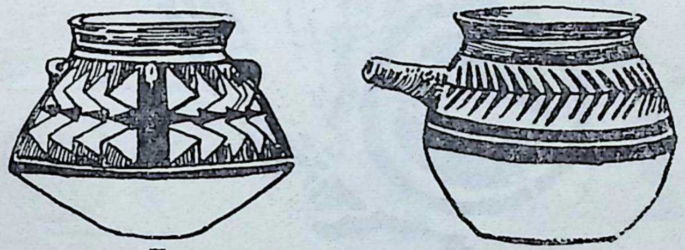

चित्र ६९. झरझरा मृद्भांड व टोंटीदार जलपात्र, ⅓ सूसा १।

(२) लंबे गिलास (फ० XXIII), (३) बाहर की ओर उलटी हुई गरदनों वाले अंडाकार कलश, और (४) कंधे पर कानों वाले चपटे छिद्रित भांड (चि० ६९ अ) और

१. मे० डीप०, (MDP) xxv, २०४।
२. मे० डी० प०, xxx, १८३ फ्रङ्कफर्ट, स्टडीज I ३८।
३— फ्रैंकफर्ट, स्टडीज, i, २५ आगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यदा कदा टोंटीदार भांड (चित्र ६९ ब) और खोखली पेंदी पर बिना कंढल के छिछले प्याले। यह उल्लेखनीय है कि कटोरों व गिलासों को सामान्यत: एक आरंभिक चक्करनुमा पेंदे के जरिए (जैसा कि अल उवेद में) स्थायित्व प्रदान किया गया है। यह विशुद्धत: एक मृच्छिल्पीय क्रिया है जो कुंभकारिता में एक लंबी प्रथा को सूचित करती हैं।

पात्र सुंदर अभिकल्पों से विभूषित हैं। ये अभिकल्प नियमत: सरकन के बिना ही मिट्टी में सीधे प्रयुक्त गहरे काले रंग में बनाए गए हैं। प्रतिमान जो अंतर्वस्तु के आधार पर निस्संदेह "जादुई" हैं, स्वस्तिको, सभुज व्यत्यस्त-रेखाओं, माल्तसे चतुष्कोणों (फ० XXII, २) सोपान प्रतिमानों (Step patterns) क्रमानुसारी त्रिकोणों, दोहरे कुठारों और पक्षियों सांड़ो, आल्प्स के वकरों, कुत्तों और प्राय: एक घोड़े, अधिक दुष्प्राप्यता के साथ मनुष्यों (चि० ७०) तरकसों व भाले के चित्रों जैसे ज्यामितिक उद्देश्यों या प्रतीकों के संमिश्रण हैं। पर, यहां उपस्थापित प्राकृतिक

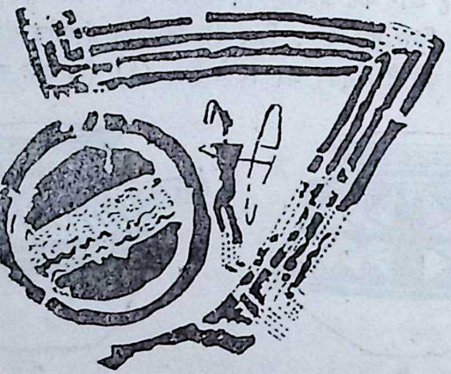

चित्र ७०· सूसा १ से, प्राप्त मानव आकृतियों को चित्रित करने वाले खपरें।

पदार्थ इस तरह रूढ़िग्रस्त हैं कि वे विशुद्ध विभूषक अभिकल्प बन गए हैं। फ्रेंकफर्ट इस निरूपण को "अमूर्त" की संज्ञा देता है और इसको कलाकार की अमूर्त मन:स्थिति का द्योतक मानता है। पर डब्ल्यू ब्रेमर[1] ने (W. Bremer) हाल में विस्तार के साथ यह दिखाया है कि रूढ़िबद्धता का समुचित आकार टोकरी रचना द्वारा नियंत्रित

१. P.Z xvi, 1925; २२

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

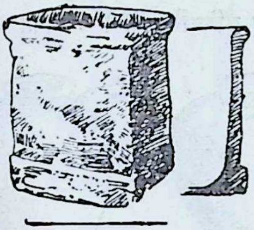

चित्र ७१. सेतखली का चतुष्कोण पात्र, सूसा १ डी मार्गन के अनुसार।

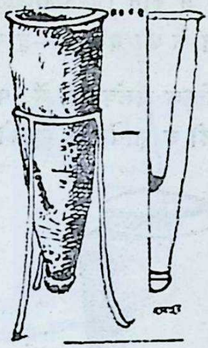

चित्र७२. तुरहीके आकार के पत्थर का रंगपात्र, सूसा, डी मार्गन के अनुसार।

है जबकि भांडों के अधिकांश आकारों को टोकरियों की अनुकृतियों के रूप में समझा जा सकता है (जैसा कि उवेद में)। अन्य शब्दों में सूसा का कुम्हार टोकरी के

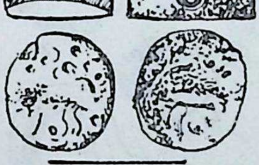

चित्र ७३. मनकाकार मुद्रा, सूसा १, कब्रिस्तान।

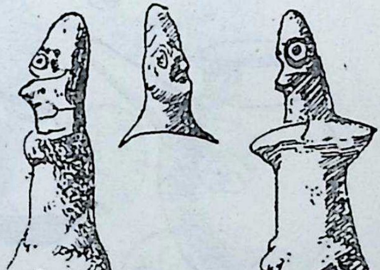

चित्र ७४. छोटी नारी मूर्ति, सूसा १।

प्रतिमानों का अनुकरण करता है और उसके द्वारा जंतुओं को दिए गए विचित्र आकार फूस गूंथने की आवश्यक परिस्थितियों से समुत्पन्न हैं। आधुनिक मानव-जाति-वृत्तात्मक समानांतर, जिनपर ब्रे भर निर्भर करता है, अर्थवत्ता के साथ दक्षिण पश्चिमीय राज्यों के उन शुष्क प्रदेशों से लिए गए हैं जो जलवायु की दृष्टि से इलाम के निकट हैं। साथ ही, ज्यामितिक प्रतीकों के साथ-साथ पक्षी बाद में मुद्राओं पर उत्कीर्ण और अंत में कभी लेखन तत्त्वों के रूप में परिवर्तित देवी या जादुई संकेतों के पूर्वगामी हैं। पत्थर के बर्तन कब्रिस्तान (चि० ७१) से उपलब्ध कहे जाने वाले एक चतुष्कोण पात्र

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और फ्रेंच में अ कोर्न (a' Cornet) कहे जाने वाले अनेक छोटे रंग पात्रों-(चि० ७२) जो सिलाजीत के भी बने हैं—द्वारा उपस्थापित होते हैं।

वैयक्तिक अलंकरणों में फायंस के अंतरकों (Spacers) द्वारा संबंधित वैदूर्य अकोक, खोली व फायेंस के मनको की लड़ियां सम्मिलित हैं। मनका व वटन दोनों

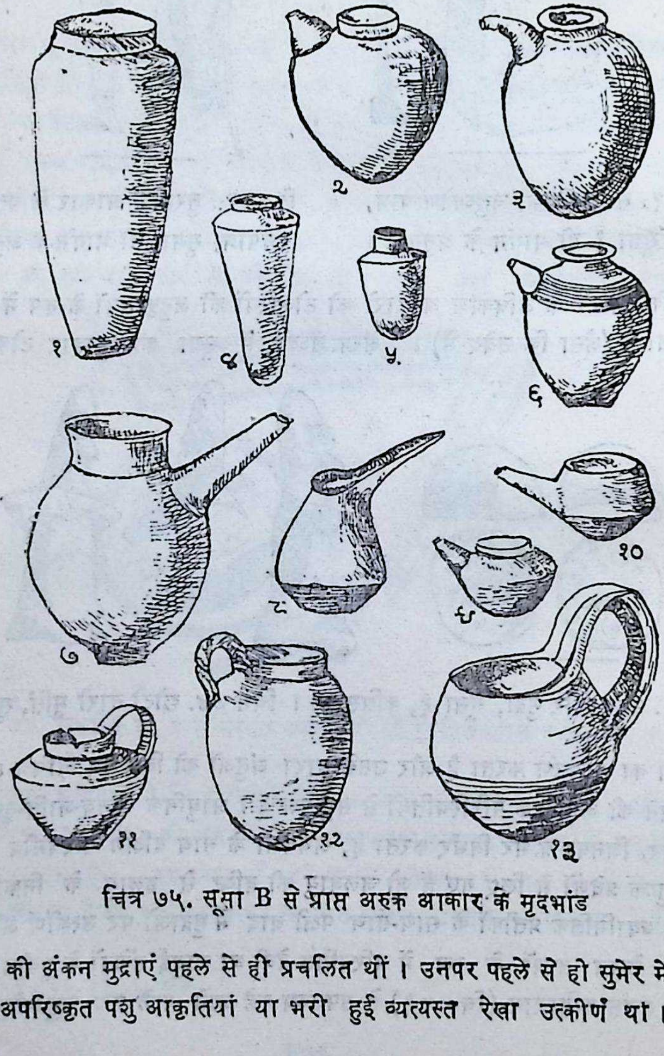

चित्र ७५. सूसा B से प्राप्त अरुक आकार के मृदभांड

प्रकार की अंकन मुद्राएं पहले से ही प्रचलित थीं। उनपर पहले से हो सुमेर में परिचित प्रायः अपरिष्कृत पशु आकृतियां या भरी हुई व्यत्यस्त रेखा उत्कीर्ण था। अंततः

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

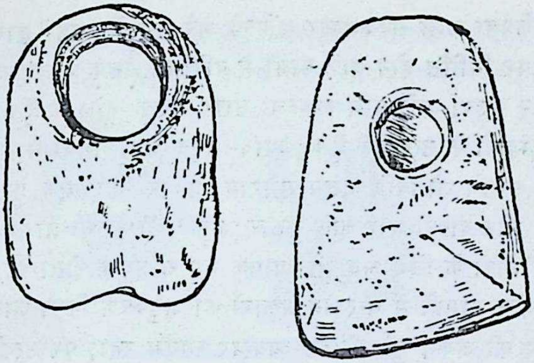

चित्र ७६. दंड-छिद्रयुक्त तांबे व पत्थर के बसूले. सूमा ब, $\frac{1}{2}$ ।

नारियों, गायों, पक्षियों व सांपों की छोटी मूर्तियां मिट्टी की बनती थीं (चि० ७४)।

सूमा १ (अ) के परवर्ती स्तरों में खाबर पर ब्राक में आइ मंदिर (Eye Temple) (नेत्र मंदिर) के नीचे व गावरा-XII में प्राप्त पात्रों के समान कुछ बरतन लाल रंग की

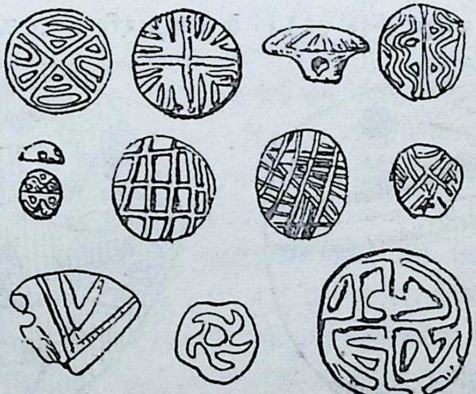

चित्र ७७. बटन व मनके के आकार की मुद्राए, सूसा ब, $\frac{1}{4}$ ।

जमीन पर काले रंग चित्रित-संखंड २ मी० राशिपात के उपरांत चित्रित भांड पूर्णतया व्यवहार वहिर्गत हों गये और एक नूतन सांस्कृतिक अवस्था, B शुरू[1] हुई । इस

१. सूसा I व II के बीच के स्तरों के विषय दिए गए अनेक विवरणों को संबधित करने के प्रयास मेक्काउन व ईलियट द्वारा हुए हैं। पूर्ववर्ती कॉम्पे० स्टं० अ० ई० (CSEI) ४३-६, ब को तीन प्रावस्थाओं में अनुविभाजित करते हैं और स (C), जो जम्देत नस्र है, गुटिकाओं के अस्तित्व को नहीं स्वीकार करता है। ईलियट, एक्स० मेसो० वे० ई० (EMEI), २३-३०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवस्था की विशेषता लाल सरकनदार व हल्के भूरे रंग के पात्रों द्वारा प्रदर्शित होती है। अब चाक पर निर्मित होने वाले पात्रों में परिचित अरूक प्रकार सम्मिलित हैं। चित्र ७५ के ३ व १२ संख्या वाले पात्र स्पष्टतः उत्तर अरूक काल के हैं। सभी स्पष्टतया व्यावसायिक कुम्हारों के उत्पादन हैं। व्यावसायिक धातुकर्मियों ने लगभग इसी समय में चित्र ७६ के समान जो विशिष्टतम सुमेरीय प्रकार का एक पुरातन रूपांतर है, तिरछे फारसे[2] और दोहरी धार वाले कुठार तक[1] भी ढलना प्रारंभ कर दिया था। किंतु, पत्थर औजारों के लिए अब भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होता था और इस अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन सामग्री में धात्वीय प्रकारों का अनुकरण किया जाता था (चि० ७६) वटन के आकार की अंकन मुद्राओं का व्यवहार कायम रहा, पर उत्कीर्ण अग्रभाग अब चपटा न होकर, जैसा सामान्यतः सूसा A[1] में है, साधारणतया उन्नतोदर है। चित्र ७७।

तदनंतर दूसरी अवस्था, स में (C) इरेक के ए-अन्ना में जम्देत नस्र संग्रह से प्राप्त मुद्राओं जैसी प्राणियों के आकारों में मुद्राऐं (जंतुरूपात्मक मुद्राऐं-(Heniomorphic seals) (चि० ७८) प्रचलित हुईं और इसके भी बाद वेलनाकार मुद्राएं, जो प्रथमतः प्राकृतिक अरूक शैली में उत्कीर्ण थीं। सेतखली के युग्म-पात्रों को इसी अवस्था के होना चाहिए (चि० ७९)। ये पात्र प्रारंभिक फराऊनी मिस्र व प्रारंभिक

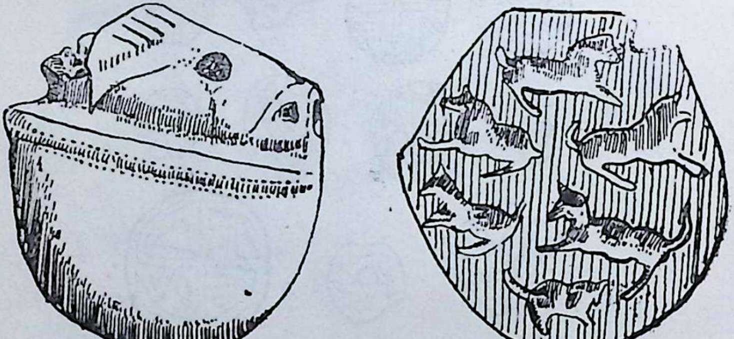

चित्र ७८. जंतुरूपात्मक मुद्रा, सूसा स।

वंशीय सुमेर के लट्ठों के पात्रों व सीसे के उन पात्रों से संबंधित हैं जो उर की जम्देत नस्र कब्रों से उपलब्ध सीसे के कटोरों की संश्लिष्ट धातु विज्ञानमूलक प्रक्रियायों पर अधिकार निर्दशित करते हैं। अंततः समग्र मेसोपोटेमिया व ओरोंटस (Orontes)

१. रिव्यू द 'एसीरियोलॉजी (Reviewd' Assyriologie), xxvii १९३९ १८९, मेइ डी ह प३ (MDP), xx, १७४, xxv, १८१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घाटी तक प्राप्त (चि० १०५) कुटीर प्रतीकों के समान प्रस्तर के "कुटीर प्रतीक" सूसा स व सुमेर में जम्देत नस्र काल के बीच आंशिक समसायिकता की पुष्टि करते है।

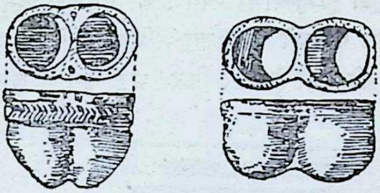

चित्र ७९. सेतखड़ी के युग्म पात्र, सूसा स या द (C or D,) ¼।

पर सूसा स (C) की अवधि में नगर-क्रांति ने पूर्णता प्राप्त की। सभ्यता की दिशा में संक्रमण प्रथम लिखित अभिलेखों, गणना-गुटिकाओं द्वारा, जैसा कि सुमेर में सूचित होता है। ये तथाकथित "आद्य इलामीय" गुटिकाएं इरेक व जम्देत नस्र से प्राप्त गुटिकाओं की लिपि से तुलनीय एक चित्रलेखात्मक लिपि में अंतर्लिखित हैं। पर (इनके) अक्षर एकदम असमान हैं। वस्तुतः एक ही पदार्थ, जैसा कि हल, विभिन्न आशुलिप्यात्मक रीतियों द्वारा उपस्थापित किया गया है। संख्या-प्रणाली भी आद्य सुमेरीय से भिन्न है। आद्य इलामीय लिपि कम-से-कम अगांदे के साम्राज्य (के समय) तक व्यवहृत होती रही, पर उर के साम्राज्य के अंदर अंततः इसका स्थान स्थानीय भाषा[1] के अनुकूल बनाई गई मेसोपोटेमियाई वाणमुखलिपि ने (Cuneiform) ले लिया। अपने प्रचलन की पूरी अवधि में यह विशुद्ध रूप में भावालिप्यात्मक रही। संभवतः लिपिकों ने विद्यमान संकेतों को सपरिवर्तित करके नए चिह्न जोड़कर नए विचारों को पृथक करने का प्रबंध किया। अतः इस प्रकार अभिव्यक्त भाषा को अंजमाइट (Anzamite) सुस्पष्टाक्षर परवर्ती पाठों की भाषा कहना केवल अनुमान ही है। यह संकेत करना समान रूप से अनुमानात्मक होगा कि पुरोहितों का निगम ने ही बही-खाते की उस विस्तृत अवस्था का उपाय किया जिसका निदर्शन गुटिकाओं व उनमें प्रयुक्त रूढ़ प्रतीकों द्वारा होता है। अनुसंगतः उस स्थल पर शुशीनक (Shushinak) का एक महत्त्वपूर्ण मंदिर था। साथ ही, जैसा कि हम देखेंगे, आद्य-इलामीय गुटिकाएं सुदूर उत्तर में सियालक तक उस बस्ती में पाई जाती हैं जो कठिनता से नागरिक स्थिति का दावा कर सकती है। इस स्थिति में वहां इनकी उपस्थिति का

१. कंटेनो (Contenau), "एपिग्राफी प्रोटो-इलामाइट" (Epigraphie Proto-e'lamite), एम० डी० पी०, xxxi हल, ४४५२—४५०१, फ० lvii पर है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संबंध निश्चय ही उस उत्तर-दक्षिणीय व्यापार के साथ स्थापित किया जा सकता है जिसके लिए सूसा समीचीन रूप से अवस्थित है।

उत्तरवर्ती अवस्था, डी (D) पात्र चित्रण के पुनरूज्जीवन द्वारा सुविधापूर्वक परिभाषित होती है। चाक पर बने घड़े उन अभिकल्पों के चौखंडों से अलंकृत है जिनकी रूप-रेखा काले रंग की बनी है और फिर भद्दे ढंग से लगाए गए लाल रंग से

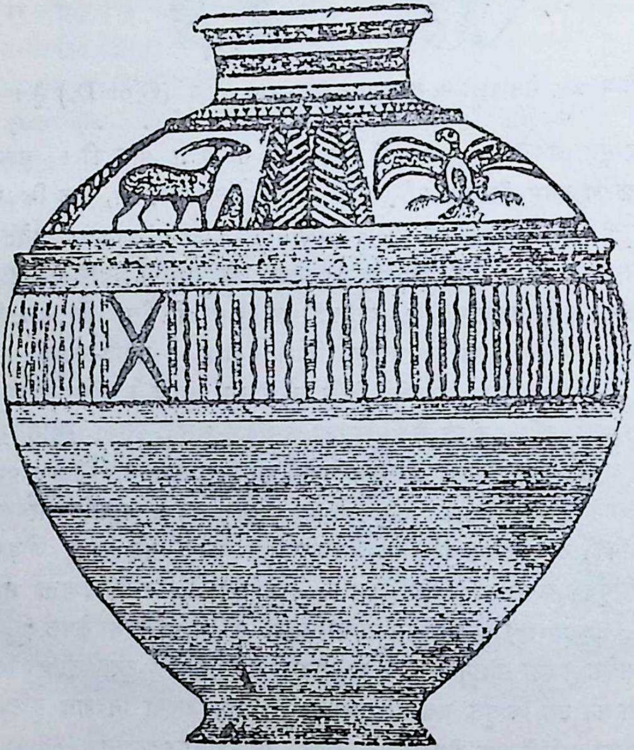

चित्र ८०. लाल व काले रंग में चित्रित कलश, तेप अली अबद, मुस्यन, १/४।

भर दी गई है। आकार को छोड़कर विद्या, रचना व शैली-इन सबों में यह भांड तिग्री-फराती घाटी में प्रारभिक वंशीय I की विशेषता प्रदर्शित करने वाले कुसुंभी रंग के भांड (Scarlet ware) से यथार्थ साम्य रखता है। साथ ही, बहुरंगी पात्रों के

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वैधिक व शैल्यात्मक समानांतर-पूर्व में बलूचिस्तान की कुल्ली संस्कृति में हैं, और कभी-कभी इनपर भारतीय ककुदधारी चौपायों[1] के चित्र अंकित पाए जाते हैं। अतः ये मृद्भांड एक साथ पूरब व पश्चिम के साथ संबंधों का अभिलेख प्रस्तुत करते हैं। पश्चिम के साथ समताएं केवल मृच्छिल्पीय क्षेत्र तक ही सीमित नहीं हैं। बहुरंगी पात्र, सूसा १ के पात्रों जैसे, बहुधा समाधियों से उपलब्ध होते हैं। सूसा में उत्खनक[2] इन समाधियों के आकार निर्धारण में असफल रहे। पर मेसोपोटेमियाई सीमांत पर प्रादेशिक बस्तियों मुस्यन[3] (Musyan) के निकटस्थ तेय अली अबद (Tepe Aly Abad) व अन्य टीलों में उन मेहराबीनुमा (False-vaulted) प्रकोष्ठों में (चित्र ८२) प्रसारित कंकालों के साथ समान प्रकार के पात्र पाए जाते हैं, जिस प्रकार कि प्रारंभिक-

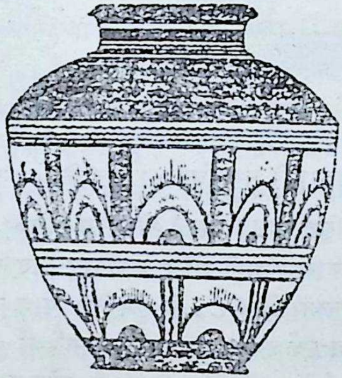

चित्र ८१. लाल व काले रंग में चित्रित घड़ा। तेप अली अबद, मुस्यन, $\frac{1}{८}$।

वंशीय१ से प्राप्त व मेसोपोटेमिया में "राजकीय समाधियों" के रूप में व्यवहृत होने वाले (प्रकोष्ठ) अग्रिम अध्यायमें मिलेंगे। मुस्यन समाधियां वस्तुतः चिपटी छेनियों, दंडछिद्र-युक्त कुठारों, बर्छी सिरों, वाण के कुंदों व वैदूर्य के सिरों वाले शुकों जैसे धात्वीय सामानों (चि० ८३) तथा वहां प्रारंभिक वंशीय काल के पूर्वार्द्ध की विशेषता प्रदर्शित करने वाले मिट्टी के जटित बलिपात्रों (Offering stands) से उपस्कृत थीं।

---

१. मे० डे० प० (MDP). xx, १०५, तु० फ्रैंङ्कफर्ट, आ० सु० प्रॉ० (ASP), ७१।

२. Failure frankly admitted in M. D. P. xxix, 156, but analogies to Musvan tombs snggested ib; xxv, 218.

३. मे० डी० प० (MDP), viii, पर पृष्ठ संख्या १५६ चि० २७० के प्रकारतः प्रारम्भिक वंशीय I गिलास को भी (जो समाधि से नहीं मिला है) उट्टङ्कित कर लें।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

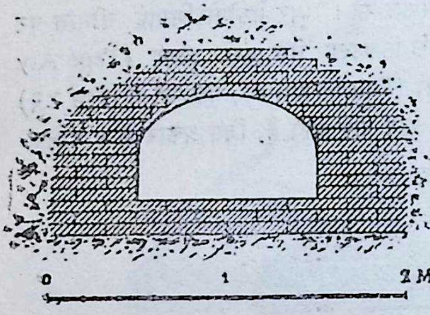

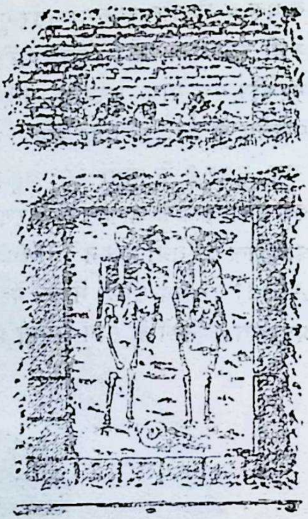

चित्र ८२. ईंट की मेहराबी समाधियां, मुस्यन के निकट तेप अली अवद में।

इस समय में खास सूसा समृद्ध शावाधान[1] के साथ चि० ८० की तरह का एक कलश दिया गया था जो काले व भद्दी रीति से लगाए गए लाल रंग में चित्रित था। इसपर चित्रित दृश्य की तुलना चि० ८४ के सुमेरीय पात्र पर चित्रित दृश्य से की जा सकती है। पर अब यान पूर्व प्रकार के कील जड़े पहियों पर खीचे जाने के बावजूद घोड़ों के बदले ककुदधारी बैलों द्वारा खींचा जाता है, और इसके हाशिये पर त्रितलात्मक मीनार पर यूनानी मोदमन्डली (Symposium) के स्थान पर एक देवता का चित्र है।

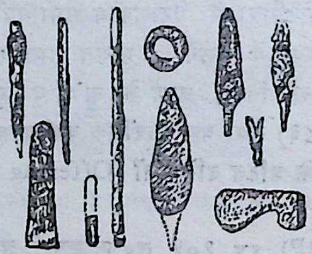

चित्र ८३. तांबे का शूक, कुल्हाड़ी, सूई, नालियां, चकरी, भाले का सिरा, बाण के सिरे, बाण का कुंदा व कुठार, मुस्यन के नजदीक की समाधियों से, ½।

१. Rev. Ass. xxxiv, 1937, 150-3; MDP. xxxi. 103.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इस समृद्ध शवाधान से लगभग ८ फुट हटकर, पर संभवतः उसी मकबरे में, धातु की नथों के साथ दो वैलों व उसके चारक के कंकाल पड़े थे और उनके साथ कुछेक छोटे उपहार भी दिए गए थे। ये दोनों वर्ग निश्चित रूप से एक राजकीय समाधि का निर्माण करते हैं, जो किश Y की "रथात्मक शवाधियों से पृ० १४९) तुलनीय हैं। यदि यह स्थिति हो, तब ये तत्त्व सुमेर की तरह समाजगत बचत को एकत्र करने व पुनरुत्पादनात्मक या सैनिक उद्देश्यों के पूंजी के रूप में निष्पादन के लिए, इसका उपयोग करने के लिए, एक पार्थिव शासक के उद्भव के द्योतक हैं।

राजत्व का यह अवतरण दोनों प्रदेशों के लगभग एक ही समय में घटित हुआ जान पड़ता है, क्योंकि, सूसा में अवस्था D व प्रारंभिक वंशीय I के बीच साम्य सम-सामयिकता का औचित्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त रूप से निकट हैं। साम्य को इस सीमा तक आगे बढ़ाया जा सकता है कि सूसा II सारगोनिक काल तक स्थित रहता है। इसका एकरंगा चित्रित मृद्भांड वस्तुतः ईरान के लिए विलक्षण है। पर धात्वीय सामग्री समग्रकाल में अग्रिम अध्याय में वर्णित सभी प्रारंभिक वंशीय सुमेरीय प्रकारों का हूबहू अनुकरण करती है। एकमात्र अर्थगर्भित अभिनवत्व कांटेदार दांतवाल[1] एक भाले का सिरा है जो यदि विशुद्ध रूप से इस क्षितिज को अभ्यर्पित हो, उस प्रकार का प्रथम तिथित उदाहरण है जिसे हम तृतीय सहस्राब्द के अंत में दूर तक फैला हुआ पाएंगे। सुमेर में प्रारंभिक वंशीय I के साथ समीकृत सूसा D से पीछे की ओर अन्वेषण करने पर (सूसा) C से उपलब्ध जंतुरूपात्मक मुद्राएं व कुटीर प्रतीक उस अवस्था व जम्देत नस्र के बीच एक प्रकार की सम सामयिकता स्थापित करते हैं। सूसा B से प्राप्त मृद्भांडीय आकार इरेक व इरिडू में परिभाषित उत्तरकालीन अरूक आकारों के साथ साम्य स्थापित करने में समर्थ हैं। तब सूसा I (A) में तांवे का प्राचुर्य, धनुष, वैदूर्य, फायेंस व लाल मृद्भांडों का उपयोग अरूक[2] काल के साथ समयमूलक पूर्ण अतिच्छाद का संकेत कर सकता है। इस स्थिति में सूसा I इरिडू में उवेद बस्ती जैसी पुरानी नहीं हो सकती हैं।

तदनुसार, सूसा १ को संप्रति किसी भी अर्थ में सुमेर की संस्कृति के साथ जनकत्व संबंध में स्थित नहीं माना जा सकता है। अतः इसके निवासियों का पूर्वज सुमेरी होना, यदि उवेद की जनता इस अभिधान की अधिकारी हो भी, आवश्यक

१. मे० डी० प० (MDP), xxv, १९२।

२. Rutten, Rev. Ass xliv 1950 frankly synchroni sed Susa (A) with 'the first part of the Uruk period' (our Early Uruk).

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं है। पर इसकी संस्कृति समीचीनतापूर्वक एक समानांतर व उवेद संस्कृति की तरह एक ही दक्षिण इरानीय स्कंध से निःसृत रही होगी। सूसा I संस्कृति ऊरूक की संस्कृति या इसकी सजातीय संस्कृति द्वारा प्रच्छादित हुई। यद्यपि विच्छेद वास्तव में आकस्मिक नहीं था, तथापि इसका कोई साक्ष्य नहीं है कि ऊरूक लक्षण प्रत्यक्षतः सूसा I से विकसित हुए। उदाहरणार्थं, किसी भी समय में इलाम में मूठदार पात्र लोकप्रिय नहीं थे और न तो इस तरह के पात्र और पूरब में ही किसी प्रकार उपलब्ध होते हैं। हर हालत में लेखन-पद्धति सुमेर से सिद्धावस्था में नहीं ली गई। यदि लेख भावना की प्रेरणा उस दिशा से मिली भी हो तब भी आद्य-इलामीय लिपि संभवतः सूसा में उद्भावित हुई। इसको संभव बनाने वाली आर्थिक दिशाओं व उनके तकनीकी आधारों का विकास निश्चय ही उस समय में हुआ जब सूसा की देशी संस्कृति सूसा की B के ऊरूक तत्वों द्वारा प्रतिबिंबायित अभिनव परंपराओं के प्रवाह द्वारा शक्ति संपन्न बनाई गई। यदि उसने चाक प्रस्तुत किया हो तब भी उससे प्रदर्शनीयता के साथ सभी नूतन अभिनवताएं उत्पन्न नहीं हुईं। बेलनाकार मुद्रा बाद में आई प्रतीत होती है, जबकि धनुष, धातु-विज्ञान व फाएंस सूसा A तक पीछे प्राचीन हैं।

यह मानना स्वाभाविक होगा कि सूसा B की विशिष्टता प्रदर्शित करने वाली अभिनवताओं का प्रयोजक उसी पश्चिमी तत्त्व का अंतःप्रवेश है जिसमें सुमेर में ऊरूक संस्कृति का उन्नयन किया। पर, उस स्थिति में इस नए तत्त्व को सामीय कहना कठिन है क्योंकि, सूसियाना में सामियों (के अस्तित्व) के लिए कोई साक्ष्य नहीं है। सुमेर से, वहां पर ऊरूक संस्कृति के प्रतिस्थापित होने के बाद संभवतः सिर्फ विशिष्टीकृत शिल्पियों का अंतःप्रवेश इस व अन्य कठिनाइयों को दूर करने के लिए माना जा सकता है। अंततः अवस्था D में राजसत्ता की स्थापना के साथ सूसियन सभ्यता का दृढ़ीकरण उस समय में हुआ जब इलाम पूर्व व पश्चिम से आनेवाले आवेगों से प्रभावित हुआ। वस्तुतः यह पाया जा सकता है कि सूसियाना में तिग्री-फराती घाटी की अपेक्षा पहले ही ''वंशीय काल'' शुरू हुआ। प्राचीनतर बहुरंगी पात्र दियाला के कुसुम्बी द्रव्यों की अपेक्षा प्राचीनता व जम्देत नस्र के अधिक निकट जान पड़ते हैं। पर वहां राजतंत्र का उदय प्रथमतः विचारणीय है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अष्टम अध्याय

प्रारंभिक वंशीय काल

पुरातत्ववेत्ता के लिऐ विशिष्ट प्रकार की भवन-निर्माण-पद्धति के द्वारा प्रारंभिक वंशोय काल पूर्ववर्ती जम्देत-नस्र और उत्तरवर्ती सारगोनीय कालों से अत्यधिक सुविधापूर्वक पृथक् किया जा सकता है। उत्तरकालीन उरूक (Uruk) और जम्देत-नस्र के भवनों में प्रयुक्त समकोण चतुर्भुजाकार खपरैल के आकार की ईंटों के स्थान पर एक ओर चपटी और दूसरी ओर उपधानाकार छोटी सम-उन्नतोदर ईंटों का प्रयोग होने लगा था। इस प्रकार बनी दीवारें साधारणतः आधारभूत खाई में बैठाई जाती थीं। ईंटे भी क्षैतिज रूप में न बैठाई जाकर बहुधा ढालुवें रूप में विपरीत दिशाओं में बैठाई जाती थीं, जिससे नतोन्नत प्रकार की रचना (Hering-bone effect) खड़ी होती थी। यह रचना सारी दीवार पर चढ़े लेप से आवश्यक रूप से आच्छादित रहती थी। यह सूचित किया गया है कि प्रस्तर-भवन-निर्माण में अभ्यस्त विदेशियों द्वारा इस प्रकार की ईंटों का गृह-निर्माण-कार्य प्रस्तुत किया गया। अस्तु, नतोन्नत स्थापत्य प्रारंभ में सीरिया के बिब्लास (Byblos) में दृष्टगोचर होता है और हैलेस्पौंट (Hellespont) पर ट्राय (Troy) में लेस्ब्रास (Lesbos) पर थर्मी (Thermi) में और प्रारंभिक हैलाडिक यूनान[1] में प्राचीनतम बस्तियों की विशिष्टता है। अतः इस काल के लिए क्रिश्चयन द्वारा प्रस्तावित नाम "सम-उन्नतोदर (Plano-Convex) प्रारंभिक वंशीय की अपेक्षा अधिक युक्ति संगत अभिधान प्रतीत होगा।

तथापि. एक पुरातात्विक वैशिष्ट्य फ्रैंकफर्ट (Frankfort) के अपेक्षाकृत समाज-विज्ञान-संमत पद का औचित्य सिद्ध कर सकता है। प्रारंभिक वंशीय १ से

---

१. ड्यूनांद (Dunand), रि० बि० (Reven Biblique), lvii, १९५०, ५९१; चाइल्ड, डॉन, ३७, ६५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकर लगातार हमें छोटे शवाधान मिलते हैं जो अपने विलक्षण आकार और कर्मकांड के कारण "राजकीय समाधियों का नाम प्राप्त कर सकते हैं। प्रारंभिकवंशीय" समयों में जनसाधारण मिट्टी की साधारण कब्रों या घोड़ियादार छतों के नीचे ईंट की छोटी समाधियों में साधारणतया निकुंचित मुद्रा में दफनाए जाते थे। शव बहुधा चट्टियों से ढंके रहते थे और कभी-कभी खमांची या मिट्टी के तावूतों (larnakes) या बड़े कलशों (Pithoi) में वंद कर दिए जाते थे। किसी समय में कम से कम कुछ नगरों में, उदाहरणस्वरूप प्रारंभिक वंशीय१[1] के समय किश (Kish) में मृतक-घर के फर्शों के नीचे दफनाए जाते थे। यह प्रथा परवर्ती समय में चालू रही और समग्र प्रागैतिहासिक समय में ईरान और अनातोलिया के ऊंचे मैदानों और उत्तरपाषाणकालीन निचले मिस्र में भी नियमित रूप से दृष्टिगोचर होती है। सामान्यतया उत्खनक नगर की दीवारों के भीतर संभवतः खुले स्थानों में कब्रिस्तानों के अस्तित्व की सूचना देते हैं यदि वे मिट्टी की कच्ची ईंटों के वने मकानों की कमजोर दीवारों पर ध्यान देने में असफल न हुए हों। सभी समाधियां निःसंदिग्ध रूप से खाद्य और पेय से पूर्णपात्रों से उपकृत हैं। पर, प्रारंभिक वंशीय III तक धातु के औजार या हथियार अपेक्षाकृत दुष्प्राप्य हैं।

रचना, कर्मकांड और उपस्कर के दृष्टिकोण से असामान्य "राजकीय" समाधियां इन सर्वसाधारण समाधियों से भिन्न हैं। प्रथम वंशीय मिस्र में पायी जानेवाली (समाधियों) की तरह ये समाधियां नियमित भूमि के भीतर के प्रकोष्ठ हैं। मारी[2] (Mari) में इस्तर मंदिर (Ishtar Temple) के भीतर घोड़ियादार छत के रूप में विन्यस्त पत्थर के बड़े टुकड़ों से तीन विशाल समाधियां बताई गईं थीं। ये सभी लूट ली गई थीं। पर, तिथि और कर्मकांड (के स्वरूप) के निर्धारण के लिए समाधि संख्या ३०० में पर्याप्त सामग्री छोड़ दी गई थी। ६.६ मी लंबे, २.५ मी० चौड़े और १.६ मी० ऊंचे मेहराबदार प्रकोष्ठ में अब भी स्कारलेट (Scarlet) कुसुंभी पदार्थवाले और प्रारंभिक वंशीय १ आकार के पात्र, सोने-चांदी और वैदूर्य के आभूषण, बर्तन, एक दर्पण और तांबे का ९ प्रकार का घुमावदार एक कुठार तथा अब भी गर्दन में लगी हुई तांबे के दो लंबी कंटिकाओं से युक्त एक कंकाल के कुछ भाग हैं। इसलिये यह समाधि के स्वामी का न होकर उसके एक परिचारक का है जिसकी जीवित समाधि उसकी अंत्येष्टि के अवसर पर की गई थी। इस प्रकार के सती शवा-

१. वातेलिन (Watelin), किश, IV, १९३४, १७।
२. सीरिया (Syria), xviii, १९३७, ६०, xix, ४—६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घान वस्तुत: मेसोपोटेमिया और मिस्र में राजकीय समाधियों के समान वैशिष्टय हैं। यह प्रथा किश[1] (Kish) के y शवाधिस्थान में अज्ञात रचना एवं परिधित्राली तीन सम-सामयिक सामधियों में और भी अधिक स्पष्टता के साथ अभिलिखित है। और इनमें से प्रत्येक में अनेक शव थे जिनमें पांच का स्वरूप ज्ञात हुआ। इसकी एक द्वितीय समान रूप से विशिष्ट विलक्षणता है-एक शववाही शकट (Hearse) या रथ और इसको खींचनेवाले पशु २३७ और ३५७ संख्या को) समाधियों में से प्रत्येक में एक चार पहियोंवाला शकट था। ५२९ संख्या की समाधि में एक शकट और एक रथ था। (संभवत: तीन रथ थे)[2]।

इसी प्रकार के यान उत्कीरण (फलक XXIV) चित्रकारी (चि० ८४) और पच्चीकारी के अनेक प्रारंभिक वंशीय प्रतिमानों द्वारा निर्दशित होते हैं। सभी (यान) ठोस पहियों पर चलते थे जो व्यास में ५० मि० (किश Y) से १.० (उर-Ur, पी० जी० ७८९) तक[2] के थे और काठ के पहियों द्वारा (स्ट्रट, Struts) जड़कर पुष्ट किए गए तीन काष्ठ के फलकों के बने होते थे और प्राय: तांबे के कांटों के जरिए अपनी जगह में स्थिर किए गए चमड़े के टायरों से वंधे थे। प्रतिमानों और चित्रों में इन कांटों के निकले हुए सिरे सावधानी के साथ चित्रित हैं जो दांतों की तरह स्थित हैं और निस्संदिग्ध रूप से पहिए की हालों की रक्षा करते थे। वातेलियन (Watelin) के सूचनानुसार पहिए चर्मरज्जुओं से गाड़ी के मुख्य अंश के साथ बांध दिए गए थे। ९० मी० लंबी धुरी के साथ एक खंड में चक्कर काटते थे। उर (Ur) में वुल्ली[3] (Woolley) को तांबे की ढ़िबरी से मुख्य अंश के साथ कसकर बांधा हुआ पहिए का आवन प्राप्त हुआ था।

गाड़ियों को कभी-कभी एक जोड़ा बैल[3], जैसे, सूसा (Susa) में, पर अक्सर चार एशियाई गदहे या गोखर[4] समाधि तक खींचकर ले जाते थे। प्रत्येक पार्श्व में एक पशु जुए को, जो (गाड़ी के) वल्ले में कसकर बांधा हुआ प्रतीत होता है, खींचता था। दोनों और जुए के बाहर जुते हुए पशु अपने समीपस्थ पशुओं की रास[5] खींचते थे। जानवरों को नियंत्रित करने वाली रासें गोरखरों या बैलों के

१. वातेलिन (Watelin), किश IV, १९२३, २९, ३०।

२. वूली (Woolley), उर एक्सकेवेशन्स (Ur Excavations), ii, दी रॉयल-सीमेट्री यानों के लिए विशेषतया ६४—१०८ दे०।

३. देखिए संख्या २, पृ० १४० पर।

४. हिलजीमर (Hilzheimer), ऐंटीक्विटी, ix, १९३५, १३३।

५. फ्रैंकफर्ट, 'मोर स्कल्पचर (More Sculpture)' ऑ० इ० प्र०; IX, १९४३, १३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

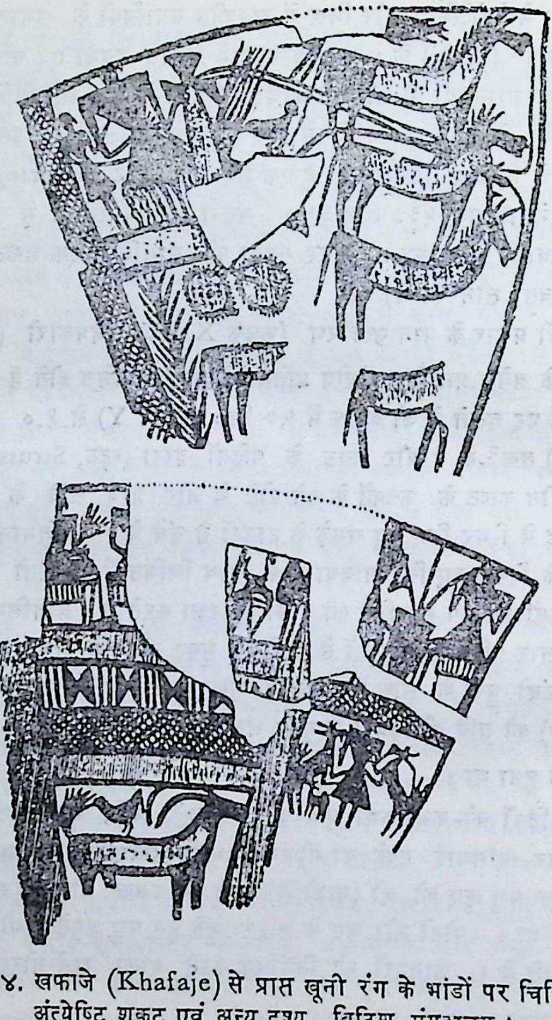

चित्र ८४. खफाजे (Khafaje) से प्राप्त खूनी रंग के भांडों पर चित्रित अंत्येष्टि शकट एवं अन्य दृश्य, ब्रिटिश संग्रहालय।

ऊपरी ओठों[1] से होकर गुजरने वाली तांबे की कड़ियों में संबद्ध कर दी जाती थीं। ये रासें धातु की बनी साज की कड़ी से आड़ी तिरछी गुजरती थीं। जुए के सामने के बल्ले में रास की एक जोड़ी कड़ियां बांध दी जाती थीं जिनपर एक यंत्र (Mascot,

१. स्केफर (Schaeffer), सीरिया, XVI, १९३५, १३६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फ० XXV) चढ़ा रहता था। यह स्पष्ट है कि ये यान और उनके पहिये आरियों एवं अन्य उपकरणों की सहायता से ही बनाए गए होंगे। और, यह महत्त्वपूर्ण है कि आरे किश की 'रथात्मक समाधियों' में वस्तुतः निक्षिप्त हैं।

चार पहियोंवाली बैलगाड़ियां सहज रूप से यातायात के लिए प्रयुक्त होती थीं और दो पहियेवाली गाड़ियां भी शांतिमूलक दृश्यों में पाई जाती हैं। पर, उर से उपलब्ध प्रसिद्ध "ध्वज दंड" और इरेक (Erech-IV) से प्राप्त मुद्रांकण के साथ अन्य अंकित प्रलेख दो और संभवतः चार पहियों वाले यानों को युद्ध यत्रों के रूप में प्रदर्शित करते हैं। अनगढ़ सुमेरीय सामरिक रथ भी अवश्य ही अत्यधिक व्ययसाध्य रहा होगा और इसे खींचने वाले सामरिक गदहे अवश्य ही विशेष रूप से प्रशिक्षित किए गए होंगे। प्रारंभिक वंशोय समाजों के अल्प समग्र साधनों के सदर्भ में यह आजकल के टैंक से पूर्णतया तुलनीय है। यह एक ऐसा युद्धोपकरण था जिस पर केवल सभ्य राज्य तथा उनके प्रतिनिधि व्यक्ति ही व्यय कर सकते थे। इससे न असभ्य कबीले और न तो विद्रोही किसान ही स्पर्धा कर सकते थे। अतः समाधि में इस प्रकार के संयंत्र (Engine) का दफनाया जाना मानव राजवंशीय में राज्य के परवशकारिणी शक्ति के रूप में अवतार को प्रतीकित करता है। और इस प्रकार को समाधि के लिए "शाही" विशेषण के प्रयोग का औचित्य सिद्ध करता है।

राजतंत्र के उपयुक्त अंत्येष्टि कर्मकांड की अतिनाटकीय अभिव्यक्ति वस्तुतः १९२८ में आविष्कृत उर (Ur) की राजकीय समाधियों में प्राप्त है और अब साधारणतया प्रारंभिक वंशीय III[1] को अभ्यर्पित है। यहां पर भी शवाधि स्थान एबीदोस (Abydos) में प्रथम फराओ की समाधि की तरह भूमि के भीतर का घर है। प्रकोष्ठ एक गहरे गर्त के तल पर बना था। इसमें ढालुवां या सोपानबद्ध ढाल या द्रोमास (Dromos) के जरिये जाया जाता था, जैसा कि उदिमु (Udimu) के शासन-काल से मिस्रीय समाधियों में जाने के मार्ग थे। एक समाधि में अपरिष्कृत चूना-पत्थर के फलकों के तीन समानांतर प्रकोष्ठ थे जिनमें से प्रत्येक की घोड़ियादार पीपे के आकार की मेहरावी छत थी और मूलतः पलस्तर की परत लगी थी तथा काष्ठ-फलकों से अलंकृत था। एक अन्य छोटी समाधि वास्तविक गुंबज से आच्छादित थी। यह गुंबज भी चूना-पत्थर के फलकों से बना था (चि०८५)। कहीं ईंटों का उपयोग किया गया था और कहीं-कहीं छत को मेहराव वास्तविक मेहराब के बीच के पत्थर

१. वूली (Woolley), उर एक्सकेवेशन्स (Ur Excavations), ii, दी रॉयल सीमेट्री (The Royal cemetery).।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

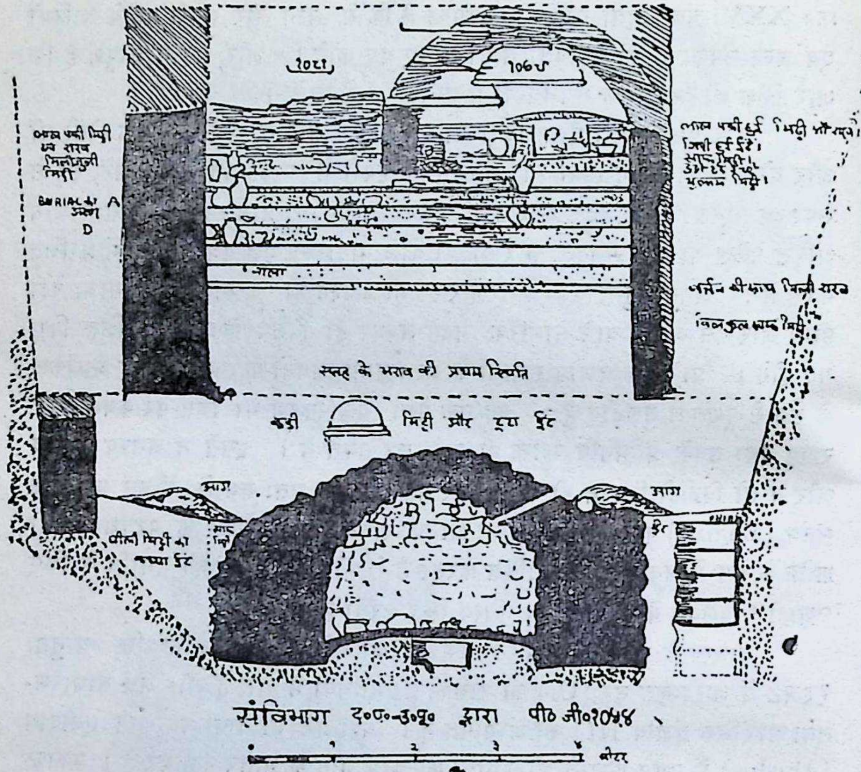

चित्र ८५. उर (Ur) के राजकीय शवाधिस्थान में समाधि १०५४ का एक ओर से दूसरी ओर तक का संविभाग ।

द्वारा अवलंबित था जो वास्तविक मेहराब के सिद्धांत को निदर्शित करता है। यह विधि तृतीय राजवंश के अधीन मिस्र की शवाधानीय वास्तुकला में दृष्टिगोचर होती है। पर, अमीरिया में प्राय: इससे भी पहले ज्ञात प्रतीत होती है।

उर (Ur) में किश (Kish) और अबिदोस (Abydos) की तरह स्थलांतर्वर्ती (Under ground) गृह द्वारा सूचित कल्पनाएं उसी बर्बर तर्क के साथ पूर्ण की गईं। शाही मृतक पूर्ण स्लेजों शाही परिधान में रथी और स्लेजों (बिना पहिए की गाड़ियों) पर समाधियों तक पहुंचाये गए थे। सिर्फ मूल (Draft) पशु ही नहीं, बल्कि चालक, योद्धा, सभासद, गायक एवं अंत: पुरांगनाएं अपने अधिस्वामी की जन्मांतर में अनुसरण करने को बाध्य थीं। उर (Ur) में "नृप का समाधि" के बाहर के गर्त में उनसठ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

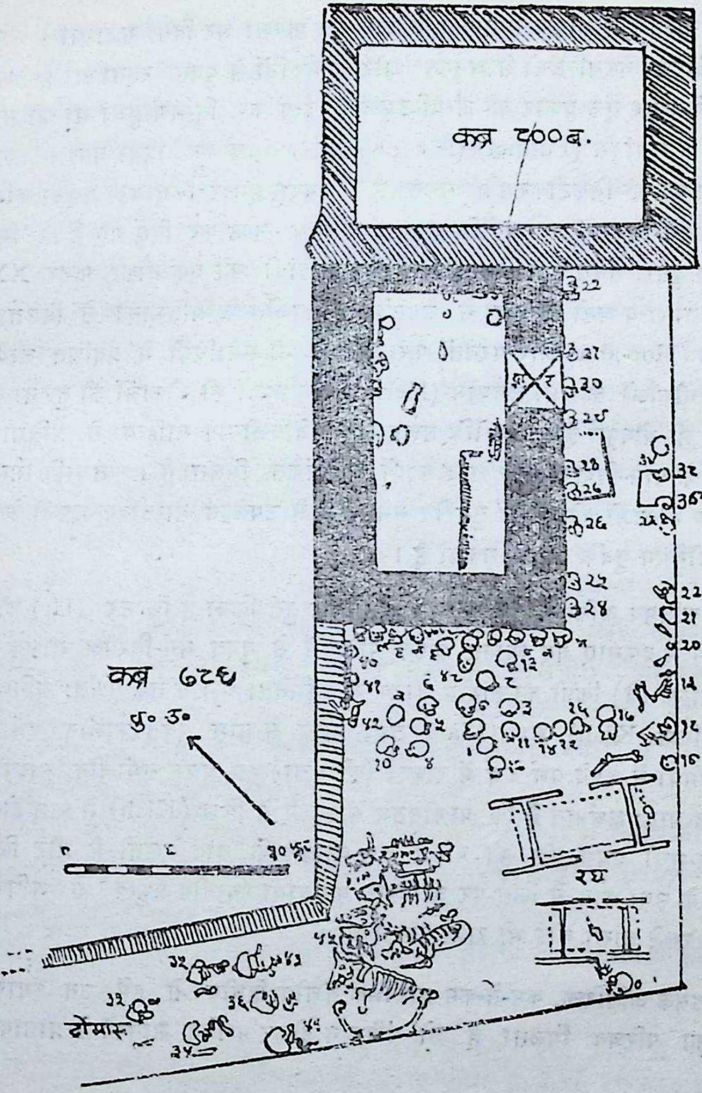

चित्र ८९. उर में दो शाही मकबरों की परियोजना, जो पी० जी० ७८९ में बलियों के स्वरूप प्रदर्शित करती है।

(५९) शव पड़े थे, जिनमें छः सर्वांग कवचावृत सैनिक थे और रत्नाभरणों से अलंकृत नौ स्त्रियां थी (चि० ८९)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समाधि में भीषण समारोहों के बाद गर्त क्रमशः भर दिया गया था। प्रत्येक क्रम अतिरिक्त नरबलियों से अनुगत और कर्मकांडों से युक्त रहता था। अंत में समाधि के ऊपर एक प्रकार का अंत्येष्टिमूलक चैत्य का निर्माण हुआ था जो समाधि से मिट्टी के धुआंकस (Funnel) (चि० ८५) द्वारा संबद्ध कर दिया गया। यह भी मिस्रीय प्रथा का निकटीकरण हो सकता है। परंतु हमारे लिए यह कहना कठिन है कि वे कितने निकट हैं। क्योंकि अनुमानित चैत्य नष्ट कर दिए गए हैं। मिस्रीय संबंध का दूसरा संकेत "शाही-समाधि" से प्राप्त चांदी की एक नौका, फलक XXIV व, और सामान्य जनों की कब्रों से उपलब्ध शिलाजीत के प्रतिमानों से मिलता है। हौर-अहा (Hor-aha) और परवर्ती फराऊनों की नौ समाधियों में प्रवेशित अंत्येष्टि-कालीन नौकाओं के साथ हेलवान (Helwan) के सभ्यों की नौकाओं की तुलना स्पष्ट होते हुए भी दोषपूर्ण है। क्योंकि उत्तरकालीन बेबिलोनीय साहित्य से प्रतिमानभूत नौकाओं के पाप-निवारण जैसे अन्य कार्यों का संकेत मिलता है। तथापि मिस्र की वास्तविक नौकाओं की तुलना सुमेरीय समाधियों से उपलब्ध वास्तविक छकड़ों के साथ अधिक औचित्य पूर्वक की जा सकती है।

कतिपय अधिकारी विद्वानों ने यह मत प्रस्तुत किया हैं कि उर (Ur) की इन समाधियों में दफनाए गए व्यक्ति अपने परिजनों से युक्त धर्म-निरपेक्ष शासक नहीं थे। बल्कि (वे) किसी कर्मकांडीय नाटक के अभिनेता थे। ये तर्क पूर्णतः अनिणर्यांक हैं, और किश (Kish), मारी(Mari) तथा सुसा से प्राप्त पूर्वतरकालीन समाधियां मेसोपोटेमिया में अपने पूर्ण अर्थ में राजतंत्र (की सत्ता) का प्रथम समीचीन साक्ष्य देती है। यह प्रायः अर्थवान है कि प्राचीनतम साक्ष्य में से किश (Kish) से प्राप्त होता है जहां राज-सूची प्रथम वंश को प्रसिद्ध जल-प्लावन के बाद रखती है और लिखित इतिहास के उषः काल से जिस पर आधिपत्य का दावा स्थानीय प्रभुत्व[1] से अधिक की आकांक्षा रखने वाला कोई भी राजा रखता था।

इसके अतिरिक्त, कम-से-कम प्रारंभिक वंशीय द्वितीय से हमें उन स्मारकीय भवनों का परिचय मिलता है जो मंदिर न होकर पार्थिव शासकों के प्रासाद थे।

१. प्राचीनतम स्पष्ट अंतर्लेखों में से एक 'किश के राजा मेसिलिम (Mesilim)' द्वारा अर्पित एक गदा पर है। वह राजसूची में उल्लिखित नहीं है, और संभवतः वह लगास (Lagash) का शासक था। परंतु उस नगर के बाहर (भी) उसका पूणं अधिकार था जिससे उसने अपने पड़ोसी उम्मा (Umma) को संधि के लिए बाध्य किया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रारंभिक वंशीय काल

किश[1] में स्तंभ-पंक्तियों वाला "ए" प्रासाद भव्यतम है जो इरेक (Erech) में स्तंभ-मंदिर (Pillar temple) से गृहीत वास्तुकलागत सिद्धांतों से समन्वित एक उत्कृष्ट दुर्ग (Sublime Porte) है। इरिदु (Eridu)[2] में १६४६ ई० में आनिष्कृत प्रासाद भी सुमेरीय परंपरा के संदर्भ में अर्थवत्ता के साथ स्थित है।

जैसा कि हमने देखा है- "सम-उन्नतोदर" ईंटों के प्रवर्तन का संबंध विदेशी आक्रमणकारियों के साथ ठहराया गया था। प्रस्तर या ईंट की मेहराबदार समाधि की व्याख्या इसी रूप में की जा सकती थी। और किश Y से उपलब्ध अनेक कंकालों का वर्णन पृथुकपाल अथवा आर्मेनियन-सम[3] (Armenoid) के रूप में किया जाता है। अब मानव और देवता बहुधा दाढ़ियों और लंबी लटों के साथ चित्रित किए जाते हैं। तथापि दाढ़ियां कृत्रिम हो सकती हैं और निःसंदिग्ध रूप से कृत्रिम केश[4] धारण किए जाते थे। कांटेनो[5] (Contenau) एवं अन्य व्यक्तियों ने उर (Ur) एवं किश के तथा हेरोडोट्स (Herodotus) और मार्कोपोलो (Marcopolo) द्वारा वर्णित यूरेशियाई खानाबदोशों के शवाधानों में साम्य पर बल दिया है। "संस्कृति ऐतिहासिक संप्रदाय"[6] के व्याख्याता, जिनका विश्वास है कि सभ्यता सदा बसे हुए कृषक वर्ग पर योद्धाओं और अश्वारोहियों के विजयशील अभिजात्य के अध्यारोपण की परिणति है, मध्य एशिया से आनेवाले आक्रमणकारियों का यहां साक्ष्य पायेंगे। वे सुमेरियनों के साथ इनका तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। इस मत का कुछ समर्थन सूसा शवाधानों और खूनी रंग के भांडों (Scarlet ware), जो प्रारंभिक वंशीय १ को परिभाषित करने में सहायक नवीन मृच्छिल्पीय वर्ग हैं, के पूर्वीय समरूपों में सप्रत्यय पाया जा सकता है।

इसके विपरीत ठीक इसी प्रकार की भीषण (Gary) शवाधानीय प्रथाएं आधुनिक अफ्रीका से उद्धृत की जा सकती हैं। और अबिदोस (Abydos) में जर

---

१. मैके, फील्ड म्यूजियम एन्थ्रॉपोलॉजी मेम्वायर्स, १, १६२६ में ईलियट, ए० मे० वे० ई० २०।

२. सुमेर iv, १६५०, ३१।

३. पेनीमैन (Pennyman), वातेलिन में किश IV, ६८, किश A से उपलब्ध अन्य बक्सटन द्वारा ज० रा० ए० इ० (JRAI) में वर्णित हैं; Lxi, ५७ आ०।

४. तु० फ्रैंक्फर्ट, तृतीय सहस्राब्दी की मूर्तिकला, ओ० इ० प्र० (OIP) liv, १६३६, में ४६ आगे

५. मैन्युएल (Manuel), iii, १५५७।

६. मेङ्घियन (Menghin)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(Zer) तथा उसके उत्तराधिकारियों के चतुर्दिक के सती शवाधान किश, मारी और उर में वलि पशुओं के साथ अधिक औचित्यपूर्ण साम्य रखते हैं। इसके अतिरिक्त, इन राजकीय मकबरों के घोड़ियादार गुंबद एवं अन्य वास्तुकलात्मक वैशिष्ट्य पहले ही मिस्र में प्राप्त होते हैं (पृ० ८८)। तब यदि आक्रमणकारियों की कल्पना की जाय तो नीलीय सिद्धांतों से प्रभावित होकर ये अवश्य ही पश्चिम से आए होंगे। यदि इनके लिए भाषागत नाम आवश्यक हो तो सामीय (नाम) अधिक उपयुक्त प्रतीत होगा। क्योंकि जब मेसोपोटेमिया में जम्देत नस्रकाल में सुमेरीय रहते थे तब सामीय मिस्र से प्रभावित हुए होंगे। इसके बावजूद किश के प्रथम राजवंशीय राजे राजसूची में सामीय नामधारी हैं। इसी प्रकार मारी के प्रारंभिक वंशीय शासको को मूर्तियों[1] पर भी सामीय नाम हैं।

अब भी मृद्भांडकला, वास्तुकला, समुत्कीरण, लिपि और आराधनापद्धति जमदेत नस्र और प्रारंभिक वंशीय १[2] के बीच घनिष्ठ अविच्छिन्नता प्रदर्शित करती हैं।

मेसोपोटेमियन राजत्व एवं राजकुलों के समाधि संस्कारों के आकार संभवतः फराऊनी राजतंत्र के आकारों के नमूने पर निर्धारित किए गए होंगे। कालिक दृष्टिकोण से एक संभाव्य तैथिक पद्धति के आधार पर मिस्र का एकीकरण प्रारंभिक वंशीय १ से पहले हुआ होगा। इसे ग्रहण करने पर भी सुमेर में आदिम राजे आवश्यक रूप से विजेता नहीं माने जा सकते हैं। ऊरूक-जम्देत नस्र (Uruk-Jamdet-Nasra) काल के विचारों ने मिस्र को प्रभावित किया और यह प्रभाव ठीक पारस्परिक रहा होगा। प्रसरणशील जनसंख्या वाले सन्निकटवर्ती समाजों के बीच जलाधिकार के विषय में विवाद लगभग अनिवार्य थे और फलस्वरूप स्थायी युद्ध नेता अपरिहार्य सिद्ध हुए होंगे। साथ-ही-साथ धन की वृद्धि समाजों के बीच आर्थिक वर्गभेद की दिशा में सदा अग्रसर होती है। सबों को एक स्वतंत्र प्रभुत्व संपन्न व्यक्ति के अधीन करके परस्पर विरोधी स्वार्थों में सामंजस्य स्थापित किया जा सकता था। यह व्यक्ति पौराणिक देवता से अधिक शक्ति संपन्न था। वस्तुतः मानव रूप में ईश्वर का अवतार था जैसा कि नरमेर अथवा अहा (Narmer or Aha) वस्तुतः हुए। इसी प्रकार की आभासतः तर्कसम्मत तैथिकी के आधार पर उत्तरोक्त किश अथवा मारी के प्रारंभिक राजाओं के अनुकारी माने जा सकते हैं।

१. रिव्यू द 'एसीरियोलॉजी, xxxi, १९३४, १४०—२।
२. ईलियट, ए० मे० वे० ई० ३३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रारंभिक वंशीय काल

कुछ भी घटना घटी हो, मरणशील 'राजे' अपने पुरोहित मंत्रियों के साथ अपने अनुयायियों की सुरक्षा का भार लेने तथा उनसे टिथे (Tithes) तथा अन्य प्रकार के देशांश ग्रहण करने में अमर्त्य देवों की अपेक्षा प्रत्यक्षतः अधिक सफल हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप समाजगत बचत प्रभावपूर्ण पूंजी के रूप में केंद्रित हुई। यद्यपि मंदिर निर्माण-कार्य अबाधित गति से होता रहा और, क्रियाकल्प में निरंतर विस्तार होता रहा। तथापि धर्मनिरपेक्ष शासकों ने इस पूंजी के कुछ अंश का उपयोग कुछ अधिक उत्पादक उद्देश्यों के निमित्त किया होगा। वे धातु एवं अन्य कच्चे मालों की आपूर्ति की व्यवस्था में निश्चित रूप से सफल हुए। किसी भी हालत में, प्रारंभिक वंशीय शवाधियों के उपस्करों से प्रतिफलित होने वाले धातु के उदारतर (प्रचुरतर) औद्योगिक प्रयोग से धन की प्रचुर वृद्धि प्रमाणित होती है।

इस काल में निर्मित सार्वजनिक गृहों के बाहुल्य, नगरों के विस्तार और शवाधि-स्थानो में शवाधियों की संख्या के आधार पर जनसंख्या की वृद्धि का भी अनुमान किया जा सकता है। अब इरेक लगभग १,१०० एकड़ों में व्याप्त था और उर (Ur) १५० में। प्रायः, (नहीं) वस्तुतः जनसंख्या अधिक केंद्रित रही होगी। उर के निकट मेरेजिब (Meraijib), उकेयर (Uqair) और जम्देत नस्र (Jemdet-Nasra) आदि अनेक प्रागैतिहासिक-स्थल अब वस्तुतः परित्यक्त प्रतीत होते हैं। समुन्नत परिवहन ने ग्रामीणों को अपने आवासों को नगर की दीवारों की रक्षा के भीतर ले आने और अब भी दूर के मैदानों से उपज लाने में सहायता की। अब नगर निश्चित रूप से दीवारों से घेर दिए गए थे। पर, मंदिर को सीमा भीतरी दीवार से घेर दी गई थी। इस व्यवस्था का पूर्वाभास इरेक (Erech) में जम्देत नस्र काल में मिलता है। (लेखन एवं गणना प्रणाली के साथ-साथ एक औद्योगिक और सैनिक साज-सज्जा की निर्मिति तथा पूर्णता प्रारंभिक वंशीय मेसोपोटेमिया की सभ्यता की निश्चित देन थी। इसके (अनेक) तत्त्व समस्त पश्चिमी एशिया और समशीतोष्ण यूरोप में भी अपेक्षाकृत अधिक बर्बर समाजों द्वारा उधार लिए गए या अनुकृत हुए।) यह अंशदान धातुविज्ञान के क्षेत्र में प्रायः अत्यधिक सरलता से ज्ञात होता है।

अब मेसोपोटेमिया के धातु-शिल्पी केवल तांबे एवं अन्य धातुओं की प्रचुर आपूर्ति ही नहीं प्राप्त करते थे, बल्कि उनकी आपूर्ति विभिन्न स्रोतों से करते थे जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार के अशुद्ध धातु भी सम्मिलित थे। इस प्रकार वे सैद्धांतिक रूप से यह पता लगाने की स्थिति में थे कि कुछ कच्चे धातु या मिश्रित कच्चे धातु अर्थात् वंग-मिश्रित कच्चे धातु अधिक संतापप्रद धातु उत्पन्न करते थे। और पूर्व से ही सीसा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और एंव तांबे (पृ० १२९) के मिश्र धातु से भी परिचित रहने के कारण वे अपेक्षित कच्चा धातु मिलने पर लाभप्रद अशुद्धांश को निकाल कर उसे विचारपूर्वक तांबे में मिला सकते थे। किसी भी हालत में कम-से-कम प्रारंभिक वंशीय III तक सुमेरीय ताम्र शिल्पी ६ प्रतिशत से १० प्रतिशत क रांगा मिले हुए कांस्य का उपयोग[१] करते थे। यह किसी भी रूप में निश्चित नहीं है कि सुमेरीय धातुकार वस्तुतः इन साधनों का उपयोग करते थे और इससे भी कम निश्चय इसका है कि वे वस्तुतः उनसे लाभान्वित हुए थे और वस्तुतः कांस्य के आविष्कारक थे। असीरिया, पैलेस्तीन और ट्राय से भी उपलब्ध कुछ कांस्य सुमेरीय (कांस्य) से अच्छी तरह प्राचीनतर हो सकते हैं, पर वे अब भी निश्चित रूप से प्रागैतिहासिक काल के हैं।

सुमेरियों को ओमन, इरानी पठार और अनातोलिया से भी तांबे का संभार भी प्राप्त होता था। पर, रांगे की आपूर्ति का स्रोत अज्ञात है। अगादे के सारगोन के समय तक कम-से-कम उर से रांगे की आपूर्ति खंडित हुई जान पड़ती है। कभी-कभी लोहे का भी प्रयोग होता था। उर के राजकीय कब्रिस्तान से प्राप्त एक पदार्थ उल्का-लौह का सिद्ध हुआ है। पर, खफाजे(Khafaje) से प्राप्त एक कटार का फलक पार्थिव कच्चे धातु[२] को गला कर बनाया गया है। तथा यह बना बनाया आयातित जान पडता है। संभवतः इसका आयात अर्मेनिया (Armenia) से किया गया है। बाद की घटनाओं से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि कतिपय बर्बर कबीलों ने लोहा गलाने की मितव्ययिता पूर्ण पद्धति का आविष्कार किया। और द्वितीय सहस्राब्द के अंत तक सफलतापूर्वक इसे गुप्त रखा।

सुमेरीय ताम्र-शिल्पी सिरे परड्यू (Cire perdue) ढालने, धातु की चद्दर जोडने, और पीतल की ओप लगाने की विधि पर अधिकार प्राप्त कर चुके थे। वे टांके के रूप में सीसे का प्रयोग करते थे। इनके उद्योग से कृषक प्रत्यक्ष रूप से लाभान्वित हुए थे, यह संदिग्ध है। प्रारंभिक वंशीय काल में वस्तुतः मिट्टी के हसुए को पूरी तरह छोड़ दिया गया और सामांयतः इसका स्थान अनलाश्म[३] के दांतों से

---

१. डेस्च (Desch) 'रिपोर्टस ऑफ दी कमिटी ऑन सुमेरियन कॉप्पर' (Reports of the Committee on Sumerian Copper) एनुअल रिपोर्टस ऑफ दी ब्रिटिश एसोसियेशन फॉर दी एडवांसमेंट ऑफ साइंस में १९२८ से १९३६, प्लेंडरलीथ (Plenderlith), वूली ने उर एक्सकेवेसंस (Ur Excavations), ii, २८७ आगे, डिलूजा (Delaugaz) 'दी टेंपुल ऑवल, ओ० आइ० पी० liii, १५२।

२. ओ० आइ० सी०, १७, १९३४, ६१।

३. वातेलिन (Watelin), किश IV।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

युक्त कोनदार हसुए ने लिया। सुमेर में धातु के कुछ ही हसुए अभिज्ञात[1] हो सकते हैं। पर, वे असीरिया में दुर्लभ नहीं हैं। फिर भी शिल्पी एवं योद्धा धातु के औजारों और हाथियारों से सुसज्जित थे। उनके उपयोग के लिए निर्मित प्रकार इरान से लेकर भूमध्यसागर के पूर्वीय तट तक (Levant) फैले हुए थे, जो सुमेरीय वाणिज्य एवं सांस्कृतिक प्रभाव के विस्तार को अच्छी तरह निदर्शित करते है। निम्नलिखित इनमें से अत्यधिक महत्वपूर्ण[2] हैं —(१) छेनियां—नोकीले कठरों वाली चौरस कुल्हाड़ियां

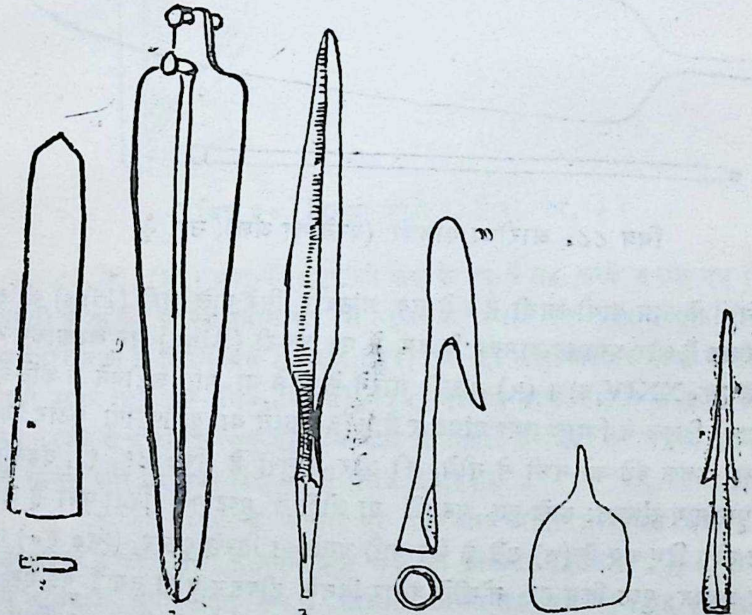

चित्र ८७. चिपटी छेनी, कटार का फलक, सीकचा लगे कठरेवाला भाले का सिरा, मछली पकड़ने की छिद्रयुक्त रस्सावंधी बर्छी, अस्तूरा और बाण का सिरा, उर, ¼।

१. Andrae, Die archaische Inschtartempel, ८३, चित्र ६३, Genouillac Fouilles de Telloh, i, १९३४, फलक ii, ३ ब; इराक ix, १९४७, १६५, ये सभी नमूने सारगोन काल के हो सकते हैं।

२. संदर्भों के साथ सूची एम० ए० जी० डब्ल्यू०, lxii, १९३२, २२८ में उपलब्ध होगी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(चि० ८७,१), (२) कठरे के बीच से निकलती हुई नोकवाली आरियां (चि० ८८,१) (३) प्राय: समकोण चतुर्भुजाकार नोकीले अस्तुरे जो सदा जोड़ों में ही पाये जाते हैं बड़े (चि० ८७,५), (४) धातु के दो टुकड़ों को मिलाकर बनाई गई चिमटियां। इनके आकार संभवतः सड़सियों के रूप में व्यवहृत होते थे। चिमटियां बहुधा कर्ण दर्वियों एवं कर्ण

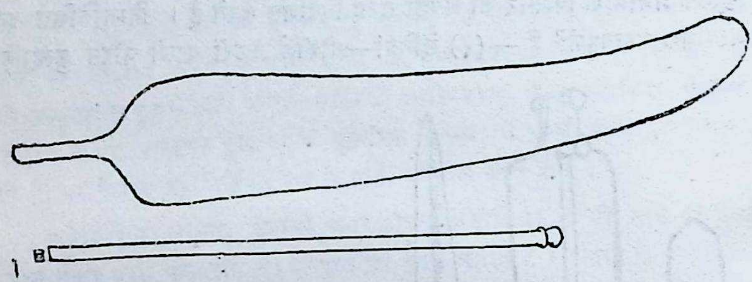

चित्र ८८: आरी व गोलची (बरने का अंश), उर, ¼

वेंधनियों के साथ पायी जाती हैं। ये सब गांठदार सिरे वाले शूत्रो (Pins) की तरह चक्करदार हैं और प्रसाधन-सामग्री के रूप में एक चकरी (Ring) पर लटकाकर रखी हुई हैं (फ०XXIV,ब)। (५) मछली मारने के भाले या मांस खरोचने के कांटे-दोनों (प्रकार) द्विशूल व त्रिशूल तथा डांसदार हैं, (६) फरसे या युद्धोपयोगी कुठार जिनका तिरछा फलक डंडे की नली से नीचे की ओर ढालुवां है (चि० ८९, १), दंडनलिका का पृष्ठभाग संभवतः ढाले हुए पदार्थों या जोड़ों से पुष्ट कर दिया गया है अथवा कांटे ठीक दिए गए हैं (७) डंडे के छेद वाले बसुले या तिरछे कुठार, (चि० ९०)।(८) रीढ़ जड़कर पुष्ट किए हुए नोकीले कटार जिनमें ठीकवर घुंडी लगाई गई एक डांस लगी है (चि० ८७, २), जोड़ साधारणतः धातु की सामी से सुरक्षित कर दिया गया है। यह सामी फलक के साथ अंतिच्छाद के स्थल पर मिस्रीय नतोदर संधि के विपरीत

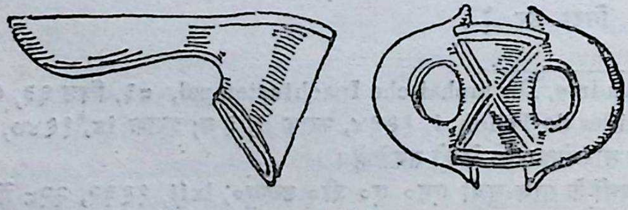

चित्र ८९. फरसे के सिरे, उर ¼।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(फलक XXVI, अ) हमेशा एक उन्नतोदर रेखा बनाती है। (९) पीठ पर मुड़े हुए अर्धचंद्राकार फलक, जो सामान्यत: चि० ९१ में प्रदर्शित उदाहरण की अपेक्षा अधिक पतले धातु के बने हैं, (१०) अ पत्राकार या सींकचे के आकार के फलक से युक्त सींकचा-लगे कुंदेवाले भाले के सिरे, जिनका पेंदा हमेशा अठपहल रहता है और जिससे नरकट के डंडे में अंतर्विष्ट करने के लिए एक शुंडाकार चतुष्कोण नोक निकलती है

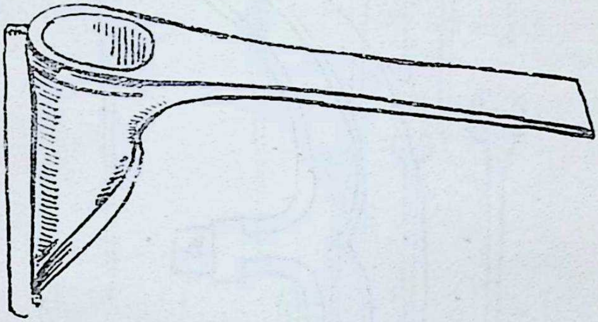

चित्र ९०. तिरछा फरसे का सिरा, उर, ½।

(चि० ८७, ३), (११) धातु की चद्दर को शंकु के रूप में तह करके बनाए गए छिद्रयुक्त बरछी के कुंदे, (१२) समान रूप से तहकर के बनाए गए छिद्र से युक्त दोनों और कांटेदार बाण के सिरे (चि० ८७,६), (१३) एक ही और कांटेदार बाण के सिरे, जो उसी प्रकार छिद्रित हैं (चि० ८७, ४), (१४) नोकीले बाण व भाले के कुंदे जो डोरी को नरकट से चीरने के लिए बाणों व फेंकी जानेवाली बरछियों के नरकट के बने डंडों के निचले छोर पर लगा दिए गए हैं (चि० ८३,९)।

प्रकाशित सामग्री के आधार पर चिरकाल व्यापी प्रारंभिक वंशीय काल में उपकरणों व अस्त्र-शस्त्रों में प्रगतिशील परिवर्तन का पता नहीं लगाता है। और, इनमें से अधिकांश अपरिवर्तित रूप में सारगोन समय तक बचे रहे। यह स्वीकार करना पड़ता है कि विभिन्न प्रकारों सिर्फ :प्रारंभिक वंशीय ३ से ही ज्ञात हैं। पर, इसके कारण संभवत: दफन संबंधी रीति-रिवाज हैं या प्रकाश में लाई गई प्राचीन कब्रों की न्यून संख्या। फिर भी, प्रकार १, २, ६, ८, ९ व १४ प्रारंभिक वंशीय १[1] द्वारा

---

१. वातेलिन (Watelin), किश IV, २२, २४, हॉल व वूली (Hall and Woolley), उर एक्सकेवेशन्स (Ur Excavations) अल उबेद (El Obeid), २०४, २१०, सीरिया, xix, ४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अभिप्रमाणित हैं, जबकि सूसा व गावरा में प्रकार ७ एक ऊरूक (Uruk) क्षितिज में पूर्वाभासित होता है।

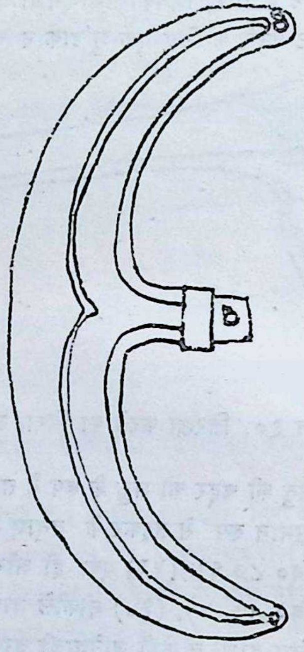

चित्र ९१. वक्र किनारदार फरसे का सिरा, उर, $\frac{1}{2}$।

व्यक्तिगत आभूषण औद्योगिक प्रकारों की शृंखला की कुछ कम उपदेशप्रद अविच्छिन्नता नहीं स्थापित करते। हम यहां निम्नलिखित वस्तुओं का उल्लेख कर सकते हैं (१५) चक्करदार सिरों वाले कांटे (चि० ९२, ५), (१६) वल्ले की तरह के कांटे (चि० ९३) जो संभवतः बालों में लगाए जाते थे, (१७) ऐसे कांटे जिनकी गरदन में एक छोटी आंख खुदी है (चि० ९२, १-४), (१८) छोटी नोक वाले सिरे से युक्त कांटे (चि० ९२,) नीचे दाहिनी तरफ), (१९) जानवरों के सिरों से युक्त कांटे (चि० ९२, १२-१४), (२०) हाथ के आकार के बालों के कांटे जिनकी अंगुलियों के छोर पर मनके लगे हैं (चि० ९३)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

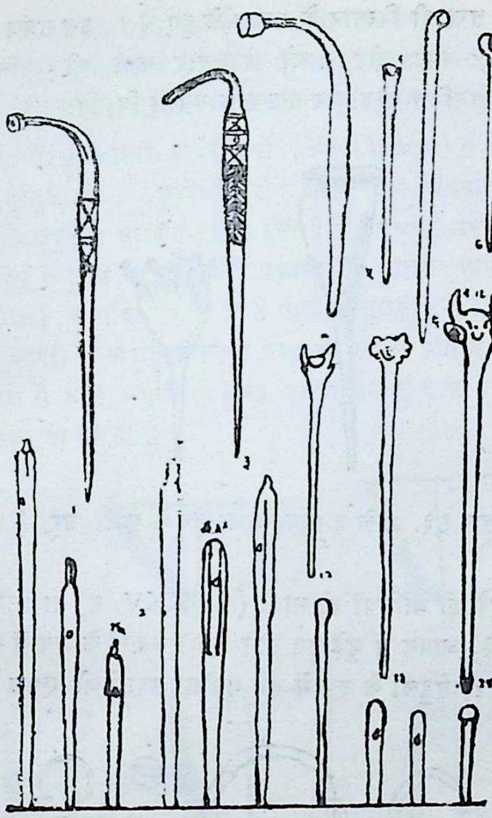

चि० ६२. तांवे के कांटे अ, कब्रिस्तान, किश, $\frac{1}{4}$।

स्वर्णकार व रजतकार निम्नकोटि के धातु का काम करने सालों की अपेक्षा कम सफल नहीं थे। वे पीतल की ओप व टांके लगा सकते थे और इसलिए अपने उत्पादनों को अलंकृत करने के लिए पच्चीकारी का और कभी-कभी लगभग मोटे किस्म के दानेदार बनाने की पद्धति का भी उपयोग करते थे (फ० XXVI, ब)। राज परिवार के लिए सिर्फ कांटे व प्रसाधन पदार्थ ही नहीं किंतु हथियार, आरे व छेनियां भी सोने और चांदी की बनती थीं। इसका उल्टा, निर्धन वर्ग के लिए जौहरियों द्वारा निर्मित आभूषणों का अनुकरण तांवे (के आभूषणों) में होता था। मुख्यत: परवर्ती उपादान के बने सुमेरीय सोनारों के अनेक विलक्षण उत्पादन औजारों व हथियारों के विभिन्न

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुमेरीय प्रकारों की तरह ही विस्तार के साथ फैले हुए थे। इस संबंध में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण हैं : (२१) चपटे छोर वाली चक्करदार कान की बालियां जो फलक XXVII, स के अतिरंजित नौकाकार प्रकार के रूप में विकसित हुईं, (२२) घुमौआ

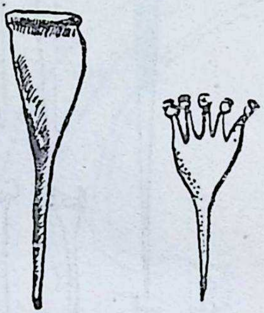

चित्र ९३. बल्ले व हाथ के आकार के कांटे, उर, $\frac{1}{4}$।

चपटे छोर वाली जूड़े की बालियां जो सादी (फ० XXV, ब) या ऐंठी (फ०XXVII, अ) रहती थीं, (२३) आपस में जुड़े हुए सोने के दो चक्करों के रूप में बने हुए लोलक (Pendants), (२४) गेंडुलो के रूप में बने घुमौआ पदार्थ जो एकल (फ०XXVII,

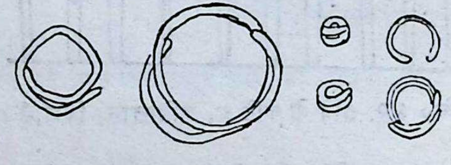

चित्र ९४. चिपटे छोर वाले तांबे के कंगन व कर्णफूल, किश अ, $\frac{1}{2}$।

ब) हैं, अथवा एक गोल घेरे में चार-चार की संख्या में पिरोए हुए हैं (फ०XXV, ब) (२५) दो नलिकायुक्त चक्रों के बने मनके जो इस प्रकार जोड़े गए हैं जिससे नलिकाएं मिलकर धागे के लिए नलियों का काम करती हैं (तुलनोय फलक XXXI)। (२६) उभड़ी नकाशी (Reponss'e) वाले अभिकल्पों से विभूषित धातु के चक्कर। मारी से उपलब्ध प्रारंभिक वंशीय १ के एक जोड़े के मध्य में स्थित एक वर्तुल उभाड़ के चारों तरफ छः सूच्याकार वर्तुलशोथ (Bosses) हैं। पर चक्कर का किनारा मनकेदार है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धातुकर्मी भी विभिन्न प्रकार के पात्रों का निर्माण करते थे। केवल प्रारंभिक वंशीय ३ की समाधियों से उपलब्ध कड़ाहों व बालटियों के अतिरिक्त मृद्भांड कला में परिचित पात्रों के प्रायः प्रत्येक आकार का निर्माण चांदी, सोने या तांबे में भी होता था। धातु में चर्म के सुरा-पात्रों, खर्पर-दीपों (Shell lamps) व खर्पर के रंग-पट्टों का भी उल्था किया गया था। इसके विपरीत प्रस्तर-पात्र पूर्ववर्ती युगों में प्राप्त पात्रों की अपेक्षा कम वैविध्यपूर्ण व अलंकृत प्रतीत होते हैं। तथापि उर (Ur) के शाही शवाधिस्थान में वेदूर्य व अन्य बहुमूल्य प्राय प्रस्तरों के उत्तम पात्र निहित थे जो अबिदोस (Abydos) शवाधिस्थान से प्राप्त पात्रों से तुलनीय हैं। विदेशगत संपर्कों के लिए शुरुप्पक (फारा) के शवाधिस्थान में सामान्य रूप से प्राप्त एवं पृष्ठ संख्या ६४ पर उल्लिखित मिस्र से प्राप्त नमूनों की तरह बनाए गए कुंदे के बरतनों का निश्चित रूप से उल्लेख किया जा सकता है।

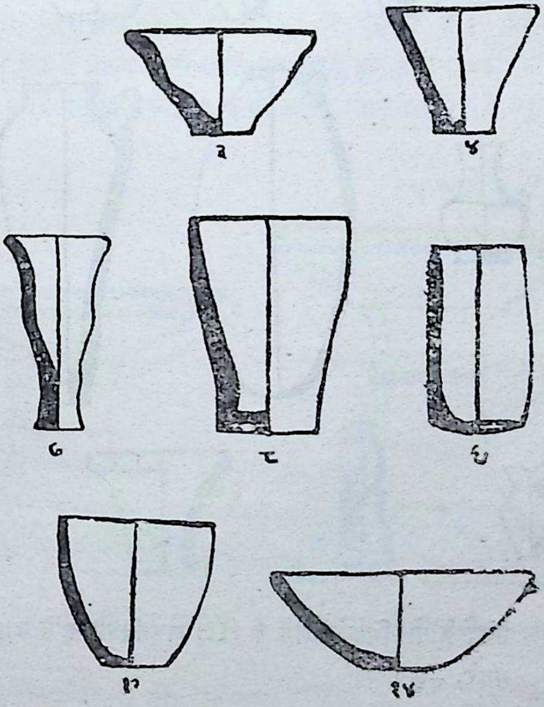

चित्र ६५. चपक व कटोरे, अल उबेद, कब्रिस्तान, $\frac{1}{2}$।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अनिवार्यतः मृद्भांडों का ह्रास हुआ। देवताओं व समृद्ध नागरिकों के भी उपयोग के लिए पत्थर, सोने, चांदी व तांबे के पात्र थे। मृद्भांड छोटे-मोटे कार्यों व निर्धनों के व्यवहार के लिए सुरक्षित थे। सिर्फ प्रारंभिक वंशीय १ व २ की अवधि में किसी हद तक उत्तम कोटि के मृद्भांड बनते थे। मारी से सूसा[1] तक उपलब्ध होनेवाला तथाकथित अंगूरी रंग का मृद्भांड प्रारंभिक वंशीय १ का अपना वैशिष्ट्य है। जम्देत नस्र (अवस्था) का स्मरण दिलाने वाले ज्यामितिक अभिप्राय व प्रारंभिक वंशीय कला (चि० ८४) के प्रिय दृश्य-इन दोनों प्रतिमानों की रूप-रेखा धूसर मिट्टी

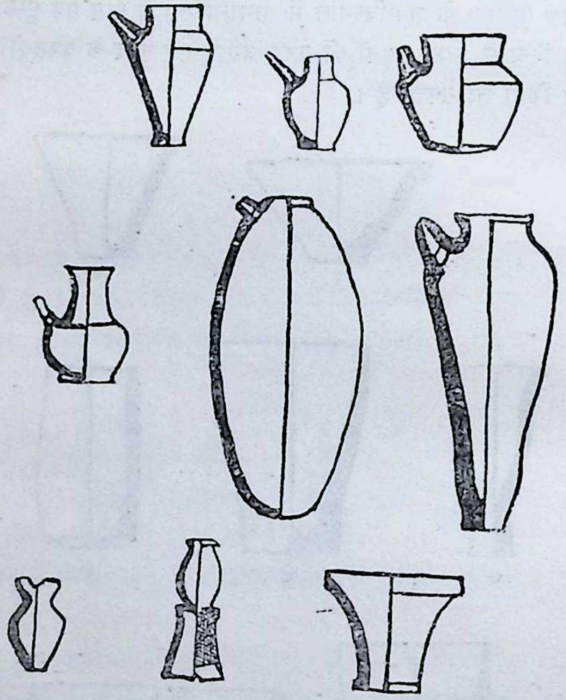

चित्र.६६. अल उबेद में प्रारंभिक वंशीय १ (II) शवाधिस्थान से प्राप्त टोंटीदार गगरे, $\frac{1}{2}$।

१. फ्रैंकफर्ट (Frankfot) ओ० इ० कम० (OIC), २०, ६५, सीरिया (Syria), xix, ५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की भूमि पर काले रंग से बना ली गई है और तब चमकीले गहरे, पर दुर्निहित (Ill-fixed) लाल रंग से भर दी गई है। जम्देत नस्र अवस्था का नील रक्त पट्टीवाला मृद्भांड प्रारंभिक वंशीय २ तक बचा रहता है। उसी तरह "सुरक्षित पट्टी वाला भांड[1]" अस्तित्त्व में रहता है। इस तरह के भांड की सतह पर भूरे रंग की पट्टी से पूरी परत कर दी जाती है और तब कंघी के जरिए समानांतर रेखाएं खींच दी जाती हैं। यह रचना (Fabric) मिस्र व सीरिया के "कंकतिकालंकृत" भांड के बराबर है। पर, सर्व-सामान्य फीके धूसर भांड भी यदा-कदा नकाशीदार प्रतिमानों से विभूषित किए जाते थे। फिर भी, इनकी बहुलता ह्रासोन्मुख थी।

शिल्प-विधान व आकार—दोनों में ही जम्देत नस्र व प्रारंभिक वंशीय अवस्थाओं के बीच अविच्छिन्नता के अनेक तत्त्व विद्यमान हैं। चित्र ९५, VII, की तरह के ठोस पेंदों पर स्थित लंबे जलपात्र प्रारंभिक वंशीय १ के असामान्य तत्त्व हैं। पर, उसी चित्र में ३ की तरह के घंटीनुमा कटोरे, ९६ के टोंटीदार अभिषेक पात्र व सामान रखने के गगरे प्राचीनतर आकारों से प्रत्यक्ष रूप में उद्भूत हैं। प्रारंभिक वंशीय १ व २ में समान रूप से प्राप्य दोनों छोरों पर खुली हुई लंबी "बैठकियों" को एरिदू में पहले से ही उबेद-भांडों के अंतर्गत बनने वाली "तसल्लियों" से व्युत्पादित किया

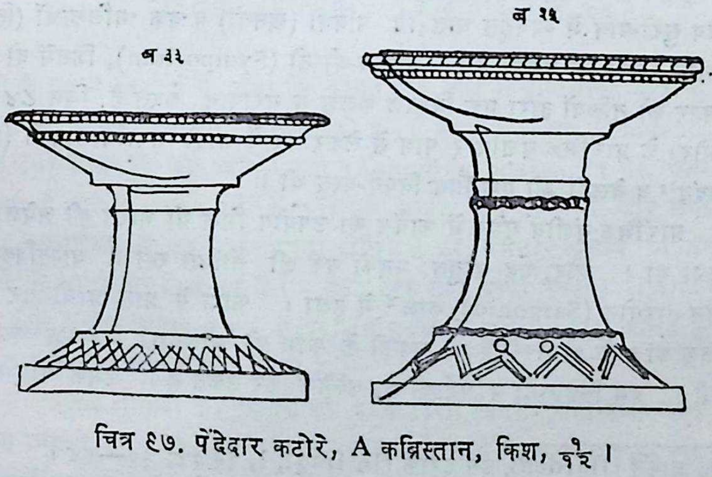

चित्र ९७. पेंदेदार कटोरे, A कब्रिस्तान, किश, १/२।

१. फ्रैंकफर्ट (Frankfort) ओ० इ० कम० (OIC), २०, ६२—५, एंटि० ज० x, ६३९, वातेलिन (Watelin), किश, iv १४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जा सकती है। पर, अब वे धातु या पत्थर के कटोरों को वहन करती हैं। प्रारंभिक वंशीय २ में कटोरे व बैठकी का परस्पर विलयन हुआ होगा जिससे प्रसिद्ध पेंदीदार कटोरे (चि० ६७) अस्तित्त्व में आए होंगे जिन्होंने प्रारंभिक वंशीय ३ तक खुले छोर-वाली "बैठकियों का स्थान पूर्ण रूप से ले लिया। गांठदार हत्थे प्रारंभिक वंशीय १ तक व्यवहार वाह्य हो गए थे। पर, एक ऊर्ध्वस्थित कर्णाकार हत्था (Bug handle) निच्छिद्रित कलशों के कंधों में लगा दिया जाता था। अपभ्रंश प्रक्रिया के फलस्वरूप इस कर्ण (Bug) का हत्था के रूप में व्यवहार होना बंद हो गया। और प्रारंभिक वंशीय २ में नारी की रूढ़ीकृत ऊर्ध्वकाय[1] मूर्ति को धारण करने लगता है। फलतः तथाकथित "अन्न संचय पात्र" (Granary pot, चि० ६८) पाया जाता है, जो किश के A शवाधिस्थान में प्रारंभिक वंशोय III की अवधि में अत्यधिक जनप्रिय है तथा उर, मारी व सूसा[2] के शाही शवाधिस्थान में पुनः दृष्टिगोचर होता है।

खफाजे[3] (Khafaje) के सिन टपुल (Sin Temple) व चंद्र-मंदिर से चित्र संख्या ६७ की तरह का एक पेंदीदार कटोरा प्राप्त हुआ है। पर, यह प्रतिमानभूत चैत्य पर स्थित है तथा चार पहियों पर चलता है। यह पहिएदार कर्मकांडीय पात्रों का प्राचीनतम उदाहरण है जो बाद में सोलोमन के मंदिर व उत्तरकालीन कांस्य-युगीन यूरोप के पहिएवाले कड़ाहों के वर्णन द्वारा प्रसिद्ध बना। इसी संबंध में उत्सवीय सुरा-पान में व्यवहृत धातवीय पवित्रों (छननों) व वक्र नलिकाओं (तिनकों) का उल्लेख किया जा सकता है। आपान-गोष्ठी (Symposium), जिसमें दो व्यक्ति इस प्रकार की नलियों द्वारा एक विशाल कलश से सुरापान करते हैं, चित्र ८४ (नीचे बांई ओर) के प्रारंभिक वंशीय १ पात्र से लेकर उर में शाही शवाधिस्थान से (प्राप्त) "ध्वजदंड" व बेलनों की एक प्रिय विषय-वस्तु थी।

प्रारंभिक वंशीय सुमेर में फायेंस का उपयोग मिस्र या भारत की अपेक्षा बहुत कम हुआ था। और, यह वस्तुतः मनकों तक ही सीमित रहा। वास्तविक काच का ज्ञान सारगोन (Sargonid) काल[4] में हुआ। फारा से प्राप्त प्राचीनतर मनके प्राकृतिक कांच के हो सकते हैं। लकड़ी के काम की जानकारो अप्रत्यक्ष रूप से ही होती है। हम सिंहासनों व पर्यङ्कों का उल्लेख कर सकते हैं। इनके पाए सांड़ के

१. हार्डेन (Harden), इन इराक (In Iraq), i, १९३४, ३०—४४।
२. वूलो, उर एक्सकेवेशन्स, ii, फलक १८७, ऐंटीक्विटी, v, १९३१, ३३०।
३. ओ० इ० कम (OIC). १९, ४४।
४. OIO, 17, 56

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

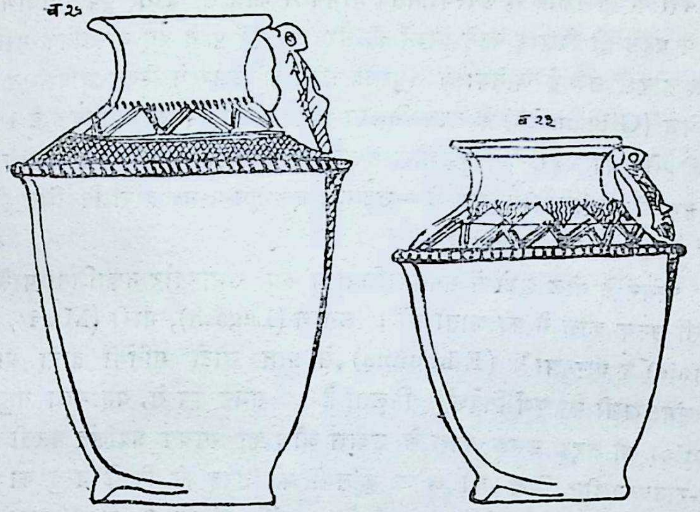

चित्र ६८. ,'अन्नपात्र'', A कब्रिस्तान, किश १/२ ।

पैरों के रूप में उत्कीर्ण थे, जैसा कि आद्यवंशीय मिस्र में दृष्टिगोचर होती है । विभिन्न प्रकार की तँत्रियां व वीणाऐं भी मिलती हैं । रानी शब- अद (Shub-ad) की तंत्री (Harp) में लकड़ी की ध्वनि-मंजूषा (Sounding box) क्षैतिज थी, जबकि सीधी वल्ली में सोने के ग्यारह पर्दें (Keys) लगे थे और उस वल्ली में तार लगा दिए गए थे । वीणाओं में भी ध्वनि-मंजूषा क्षैतिज है पर, नो तार द्वितोय समानांतर क्षैतिज वल्ले में आबद्ध कर दिए गए हैं । ये वल्ले ठीक उसी प्रकार पच्चीकारी वाले ऋजुवल्लयों पर टिके हैं जिस प्रकार फ० १ में प्रदर्शित गर्दभ या गर्दभ-चर्मावृत मनुष्य द्वारा बजाए जाने वाले वाद्य यंत्र में देखा जाता है ।

(शंख शुक्तियों के) छिलके की पच्चीकारी, जिसमें कभी-कभी उर (Ur) से प्राप्त ध्वजदंड की तरह वैदूर्य व लाल पत्थर मिले रहते थे, व छिलके पर की उत्कीरणा बेबिलोनिया के प्रारंभिक वंशीय शिल्पियों के प्रिय माध्यम थीं । हमारे फलक १ में छिलके पर उत्कर्त्तन कला की एक उत्तम कृति प्रदर्शित है । गाडु[1] का विश्वास

१. गॉड्ड (Gadd), हिस्ट्री एंड मोनूमेंट्स ऑफ उर (History and Monuments of Ur), १६२६, ३६ ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है कि यहां के कर्मकांड में उपस्थापित अभिनेता फ्रांत से प्राप्त पूर्व पाषाणकालीन चित्रों में पहले ही दिखाई पड़ने वालों की तरह पशुचर्म पहने हुए वास्तविक मानव हैं। शृंगाल द्वारा बजाई जानेवाली मिस्रीय झांझ के ऊपर में स्थित आदर्शभूत सुमेरी गिलगामेश (Gilgamesh) के साथ मिलाप हर हालत में आमोदजनक है। इससे पहले ही सोने की चद्दर लगी हुई गोल लकड़ी में संगतराशी का काम उसी तंत्री से, जिसमें हमारी उत्कीरणा संलग्न थी—उपलब्ध एक वृष-मस्तक द्वारा निदर्शित होता है, पर यह बहुत कम सफलतापूर्ण है।

पत्थर के गोल छड़ों में संगतराशियां व कम उभाड़दार नक्काशियां पहले से ही उत्तरवर्ती उरूक काल में की जाती थीं। लगाश (Lagash), मारी (Mari), खफाजे (Khafaje) व एशनुन्ना[1] (Eshnunna) से प्राप्त छोटी मूर्तियों द्वारा प्रारंभिक वंशीय संगतराशी का पूर्ण निदर्शन मिलता है। समग्र रूप से, यह कला समुत्कीरण (Glyptic) की तरह, उरूक काल के उदात्त ओज का अपचय प्रदर्शित करती है और प्राचीन-राज्यकालीन मिस्र की श्रेष्ठ कृतियों की तरह की किसी वस्तु का निर्माण इसने नहीं किया। फ्रैंकफर्ट लिखता है कि प्रारंभिकवंशीय २ में "मानव शरीर निर्दयतापूर्वक अमूर्त प्लास्टिक आकारों में" विहस्त कर दिया गया है, जबकि बाद ३ में आकार कुछ अधिक यथार्थ रचना का प्रयास किया गया जिसमें हमेशा अच्छी सफलता नहीं मिली। इसी प्रकार की अभिवृत्तियां मुद्रोत्कर्त्तन[2] (Seal-engraving) में परिलक्षित हुई हैं। प्रारंभिक वंशीय १ की "किमखाबी शैली" (Brocade style) में जम्देत नस्र के रूढ़िग्रस्त प्राणी व मत्स्य विशुद्ध रूप में ज्यामितिक हो गए हैं, जो बर्बर हलफियन मुद्रांक अभिकल्पों की तरह अभिज्ञातव्य प्रतिनिध्यात्मक (Representational) विषयवस्तु विहीन हैं। बाद के लोकाचारों सामान्यतः पौराणिक या कर्मकांडीय दृश्यों में अभिरुचि दिखाई। पर, ये उरूक के श्रेष्ठ उत्पादनों के ओज से कदाचित ही संपन्न हुए।

कला-कृतियां सुमेरीय वेशभूषा को पूर्णतया निदर्शित करती हैं। स्कर्ट या घाघरा अति परिचित परिधान है जैसा कि पहले उरूक काल में पहना जाता था। प्रारंभिक वंशीय ३ में यह ऊनी सूत का बनता था और झब्बों से ढंका रहता था जो संगतराशी में ठीक उसी रूप में उपस्थापित हुए हैं जैसे भेड़ के रोवें हों। प्रारंभिक वंशीय १ व २ में मनुष्य साधारणतः दाढ़ियों व लंबे बालों को धारण किए हुए चित्रित

१. फ्रैंकफर्ट (Frankfort), ओ० इ० प्रो० (OIP), xliva और lx।
२. फ्रैंकफर्ट (Frankfort), सिलिंडर सील्स (Cylinder Seals)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हुए हैं। पर, प्रारंभिक वंशीय III में बहुधा पूर्णतया सर मुड़ाए हुए हैं। यह संभव हो सकता है कि पूर्ववर्ती चित्रों में कृत्रिम दाढ़ियों व बालों का चित्रण हुआ हो। सांड़ कृत्रिम दाढ़ी के धारण करते हुए उपस्थापित हुए हैं और उर की मेस-कलाम-दग (Mes-Kalam-dug) की कब्र में एक सोने का कृत्रिम केश-कलाप (Wig) था। किसी भी स्थिति में न परिधानगत आचारों को और न केश प्रसाधनमूलक व्यवहारों को ही, जैसा कि कभी विश्वास किया जाता था, सुमेरीयों व सामीयों के मध्य विभेदक के रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। परिधान में आदर्श रूप से सुमेरीय (जान पड़नेवाले) मारी (Mari) के एक राजा की मूर्ति पर युक्ति-युक्त सामीय नाम लम्गी मारी (Lamgi-Mari) अंकित है।

इरिदु (Eridu) से मारी (Mari) तक परिधान-मूलक एकरूपता उस विराट् सांस्कृतिक एकता का एक रूप है जिसके विधायक, चाहे वे जिस किसी भाषा के बोलने वाले हों, सुमेरीय कहे जा सकते हैं। क्योंकि अगादे के सारगोन के समय तक ऐसा कोई भी ज्ञात नहीं है जिसने सामीय भाषा में कुछ लिखा हो।

सुमेर के निवासी कच्चे ईंट के एकमंजिला घरों में रहते थे जो अनेक कमरों में विभाजित थे। पर, ये कमरे सामान्यतः प्रांगण के चारों तरफ संघटित रूप से नहीं रहते थे। खफाजे[1] (Khafaje) में पांच कमरों वाला एक व्यक्तिगत घर १० मि० लंबे व ६.५ मि० चौड़े स्थान में व्याप्त था। पर, दस कमरों वाला एक अपेक्षाकृत बड़ा घर कुल ३० मि० × २० मि० क्षेत्र में व्याप्त है। उत्तरोक्त (घर) के कुछ द्वारों पर आधार प्रस्तर से युक्त एक वास्तविक मेहराब बना था। यह विधा (Device) कुछ समाधियों द्वारा भी निर्दशित होती है। पर, ये घर सिर्फ पांच फीट ऊंचे थे। छोटी खिड़कियां कमरों को प्रकाश प्रदान करती थीं। स्वभावतः प्रत्येक घर में गुंबददार तंदूर था। मंदिरों में नियमित "चूल्हों की पंक्ति थी[2] जिसमें आसानी से कुम्हार की भट्ठी का भ्रम हो जाता है। घर टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों व सकरी गलियों द्वारा विभक्त संबद्ध गृह पंक्तियों में वर्गीकृत थे। पर, नगर की चहारदीवारियों के भीतर विस्तृत मंदिर-प्रांगणों के बाहर खुले स्थान अवश्य ही रहे होंगे, आधुनिक भारतीय नगर की तरह जहां पशु विचर सकते थे। अतः क्षेत्रफल के बावजूद

१. डिलूजा (Delougaz) 'दो टेम्पुल ओवल (The Temple oval)', ओ० आइ० पा० (OIP), liii, ४६, ओ० आइ० क० (OIC), १७, १०—१६।

२. डिलूजा, ओ० इ० पव, liii, १३०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फ्रैंकफर्ट[1] साम्राज्यीय राजधानी होने के समय में भी उर की आबादी सिर्फ २४००० आंकता है, जबकि प्रारम्भिक वंशीय काल में खफाजे की आबादी इसकी आधी रही होगी

निस्संदेह, "चारों ओर से घेरनेवाली दीवारों द्वारा अपरिष्कृत प्रकृति से विच्छिन्न नगर ने मनुष्यों को विशुद्ध रूप में मानवीय पर्यावरण प्रदान किया।" फिर भी, अधिकांश नागरिक प्राथमिक उत्पादक थे जो उन दीवारों के ठीक बाहर बिना जोती भूमि को जोतते थे या प्राकृतिक जलाशयों में मछली पकड़ते थे। अनलाश्म सज्जित काठ के हंसुवे व मिट्टी के बोड़कोंवाले[2] मछली के जाल जैसे प्राथमिक उत्पादन-उपयोगी औजार शहरी आवासों में दृष्टिगोचर होते हैं। पर, माध्यमिक उद्योग भी चलाए जाते थे। और, इनमें—जैसे, शासन व देवपूजा में, विशिष्टीकृत कर्मचारियों की आवश्यकता पड़ती थी। उन्हें बाहर से आयातित कच्चे माल की भी अपेक्षा थी। सिर्फ धातु व रत्न ही नहीं, बल्कि मकान बनाने के लिए काठ व पत्थर भी जलोढ़भूमि वाली घाटी के बाहर से मंगाने पड़ते थे।

अपेक्षित वस्तुओं का कुछ भाग लूट के माल या उपहार के रूप में प्राप्त किए गए होंगे। सुमेरीय राजे मंदिरों के श्रृंगार के लिए पत्थर व धातु लाने वाले "अभियानों" की समय-समय पर बड़ाई करते हैं। प्रत्येक नगर की अपनी रक्षावाहिनी (Militia) थी, जो व्यूह बनकर युद्ध करने में प्रशिक्षित, धातु की (बनी) बर्छियों व सामरिक कुठारों से सज्जित, तांबे को पीटकर बनाए हुए शिरस्त्राणों से परिरक्षित थी व उसके आगे रथ सेना चलती थी। इन सेनाओं का सबसे अधिक प्रमाणित उपयोग सुमेरीय नगर राज्यों के बीच होने वाले परस्पर संहारक युद्धों में समान प्रकार की सेनाओं के विरुद्ध था। निस्संदेह उन्होंने अब भी बर्बर (की स्थिति रहनेवाली) पहाड़ी जातियों या मरुस्थलीय कबीले द्वारा होने वाले आक्रमणों से सभ्यता की उपलब्धियों की रक्षा का कार्य भी किया। कच्चे माल प्राप्त करने में उनकी नियुक्ति के विषय में सारगोन के समय के पूर्व तक कोई ठोस प्रमाण नहीं है, और उसके भी विषय में यह कहा जाता है कि उसने विदेश के विभिन्न भागों में पहले से ही बसे हुए शांतिप्रिय व्यापारियों के स्वार्थ-रक्षा के लिए ही सैनिकों का उपयोग किया। अतः शहरी उद्योग के लिए आपूर्ति का अधिकांश भाग निश्चित रूप से "व्यापार" के जरिए ही प्राप्त किया गया होगा।

---

१. फ्रैंकफर्ट, टाउन प्लानिंग रिव्यू (Town Planning Review), xxi, १९५०, १०४।

२. डिलूजा, दो टेंपुल ओवल (The Temple Oval), ओ० इ० पब० liii, ३०, ५४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रारंभिक वंशीय काल

सिर्फ पुरातात्विक अभिलेख रांगा को छोड़कर अन्य नये कच्चे मालों पर प्रकाश नहीं डालता और न तो उरुक (Uruk) काल द्वारा प्रकटित साधनों के अतिरिक्त आपूर्ति के अन्य नए साधनों पर ही प्रकाश डालता है। और न तो स्थायी निर्यात ही सुमेरीय वाणिज्य के विस्तार का निदर्शन करते हैं। ठीक २००० खृष्टाब्द पूर्व लिखित विवरणों से यह ज्ञात होता है कि धातुओं के विनिमय में अनातोलिया को निर्यातित अत्यधिक महत्वपूर्ण सामानों में निर्मित वस्तुएं, विशेषतः उत्तम प्रकार के वस्त्र थे। पर, ये नहीं बच सके। प्रारंभिक वंशीय व्यापार के विषय में भी संभवतः यही बात है। पर, उत्तरोक्त में पुरातत्ववेत्ता विलक्षण नवीनता का पता लगा सकते हैं। सुमेर के नगर उस समय में सभ्यता के दूसरे केंद्र में निर्मित वस्तुएं प्राप्त करते थे।

खफाजे[1] में प्रारंभिक वंशीय २ के चंद्र-मंदिर (Sin Temple) से एक वतुंलाकार प्रस्तर-पात्र मिला था जिस पर खमाची के घर का एक चित्र उत्कीर्ण था। उसी प्रकार के छिटफुट उदाहरण मारी, उर व सूसा[2] में उपलब्ध हुए हैं। मक्रन (Makran) में कुल्ली संस्कृति के स्थलों पर इस तरह के पात्र प्रचुर संख्या में प्राप्त हुए हैं। यहां पर वे स्थानीय पत्थर से बनाए गए थे। मकरन से उनका निर्यात सिर्फ पश्चिम में ही नहीं हुआ बल्कि पूर्व में सिंधु-घाटी के विशाल नगरों में भी। सिंधु के नगरों से भी निर्मित वस्तुएं मेसोपोटेमिया पहुंची थी। मेसोपोटेमिया के नगरों व सूसा से ३० से ऊपर मुद्राएं संगृहीत हुई हैं जो या तो सिंधु की बनी हैं या सैंधव प्रकारों की निकटतक प्रतिलिपियां हैं। सिर्फ दो प्रारंभिक वंशीय संदर्भों से प्राप्त हुई हैं, ७ सारगोन काल की हैं और ३ उससे भी बाद[3] की। कड़े छिलकों की कुछ और समुत्कीरणाएं एवं उन प्रकारों की अन्य सामग्रियां जो सैंधव नगरों के उपयुक्त हैं, सारगोन-काल से संबंधित हैं। ये सभी दियाला[4] (Diyala) पर एशनुना (Eshnunna) में पाई गई हैं।

इस तरह की आयातित निर्मित वस्तुएं मेसोपोटेमिया के नगरों व इरान के पठार के पार की दूसरी विस्तृत नदी-घाटी के नगरों के बीच वाणिज्य संबंधों की वास्तविकता के विषय में किसी प्रकार के संदेह का अवसर नहीं देती। दियाला पर

---

१. ओ० इ० कम (OIC), १६, ५३।

२. वूली (Woolley) उर एक्सकेवेशन्स, ii, फ० १७८ अ० सीरिया, xvi, १९३५, फलक xxvii, ३; ऐंटीक्वीटी, vi, १९३२, ३५६; xvii, १९४३, १६७।

३. पिग्गॉट (Piggott), ऐंटिक्विटी, xvii, १७८।

४. ओ० इ० कम (OIC), १६, ४७—५२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उनका संकेंद्रण यह सूचित करता है कि यह व्यापार उच्च समतलीय मार्ग से होता था। इसके अतिरिक्त दिवाला प्रदेश में स्थित टेल अग्रब (Tell Agrab) से प्राप्त एक पात्र सिंधु के उपासनामूलक दृश्य[1] का चित्रण करता हुआ जान पड़ता हैं। इसमें एक ककुदवाला सांड़ समारंभीय नाद के आगे है जैसा कि हड़प्पा की मुद्राओं पर वारंवार चित्रित किया गया है। यह पात्र शैली में प्रारंभिक वंशीय III की सुमेरीय रचना जान पड़ता है और संभवतः नगर में सुमेरीय शिल्पी द्वारा उत्कीर्ण किया गया था। अतः उसने मेसोपोटेमिया में अनुष्टित सैंधव उपासना-पद्धति को संभवतः देखा था। इसमें कुछ भी आश्चर्य नहीं यदि यह साक्षीकृत व्यापार सैंधव व्यापारियों के साथ या दलों द्वारा किया गया हो, क्योंकि इनको कम से कम सीमांत बाजार में अपनी वस्तुओं को वेचने और वापसी सामान को इकट्ठा करने के लिए अनेक महीनों तक वहां रहना पड़ा होगा। वस्तुतः एक उपयुक्त सुमेरीय नगर में स्थायी रूप से बसे हुए सैंधव व्यापारियों का एक उपनिवेश आधुनिक प्रथा और द्वितीय सहस्राब्द में पूर्वी वाणिज्य के विषय के अनुरूप होगा।

जहां सिंधु के निर्मित सामान तिग्री-फराती व सिंधु-घाटियों के बीच प्रत्यक्ष वाणिज्यिक संबंधों का इस प्रकार अभिलेख प्रस्तुत करते है उसी जगह प्रारंभिक वंशीय कालों में वैदूर्य का वृहत उपयोग उत्तर-पूर्व की ओर वंक्षु (Oxus) घाटी की तरफ कुछ क्रम नियमित व्यापार का निदर्शन नहीं करता है। क्योंकि इतने परिमाण में वैदूर्य सिर्फ बदक्शां (Badakshan) से आ सका होगा। पर इस व्यापार में कम-से-कम मिस्र ने भी अपना भाग लिया। इसलिए २५०० खृ० पू० तक तिग्री से सिंधु व वंक्षु तक समग्र क्षेत्र को एक सूत्र में बांधनेवाले व्यापार के जाल-सूत्र व फरात के पश्चिम-नील तक की दूरी में इसके विस्तार का ठोस साक्ष्य हमें प्राप्त है। जबकि सुमेरीय नगरों व शवाधि-स्थानों से प्राप्त आयातित वस्तुओं द्वारा पूर्वीय व्यापार का उत्तम साक्ष्य प्रदान किया जाता है, तो स्वभावतः यह (व्यापार) एकपक्षीय नहीं था। बाद के अध्यायों में उल्लिखित की जानेवाली सुमेरीय धातु-कर्म की प्रतिलिपियों के अतिरिक्त सिंधु-घाटी व ट्रांसकेस्पिया से प्राप्त अकीक के विलक्षण रूप से रेखित मनकों के बनाए जाने की संभावना जिस तरह किसी अन्य स्थान[2] में है उसी तरह उर में भी है।

हर हालत में यह व्यापार व्यक्तियों व मालों के आवागमन से संबंधित था। विशेषतः निपुण शिल्पी आसापास में यात्रा कर सकते थे और अपनी कला-कृतियों के

१. आइ० एल० एन०, सेप्ट० १२, १९३६।
२. वेक (Beck) एंटि० ज० (Ant J.) xiii, १९३३, ३८४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लिए जहां कहीं भी उन्हें बाजार मिलता था वहां बस सकते थे, जैसा कि आजकल भी वे पूर्व में करते हैं। इस तरह विचारों के आदान-प्रदान के लिए पूर्ण अवसर मिला होगा। अतः इस समय में तीनों सभ्यताएं अपनी सांस्कृतिक पूंजी को एकत्र कर रही थीं, क्योंकि मेसोपोटेमिया व मिस्र की तरह ही सिंधु-घाटी भी पूर्णतः साक्षर थी।

अंतिमोक्त सहभागियों के अपने-अपने अंशदानों के सापेक्ष मूल्यांकन के लिए प्रारंभिक वंशीय मेसोपोटेमिया की निरपेक्ष तैथिकी के स्पष्टीकरण के लिए प्रयास करना आवश्यक है। अगादे के साम्राज्य के उदय के साथ संपतित होनेवाली प्रारंभिक वंशीय काल की समाप्ति लगभग २३२५ ख़ॄ० पू० में निर्धारित की गई है। राज-सूची में उल्लिखित प्राचीनतम शासक, जिसके स्मारक बचे हुए हैं. उर का अ-अन्निपद्द है। राजसूची में जैकाब्सन द्वारा विन्यास के आधार पर उसके राज्यारोहण की तिथि २५५० ख़ॄ० पू० के आसपास रखी जानी चाहिए। उसकी मुद्राओं व मकानों की शैली के अनुसार उसका राज्य पुरातात्विकों के प्रारंभिक वंशीय ३ उत्तरार्द्ध में पड़ा। प्राचीनतम सभी अवस्थाएं वस्तुतः प्रागैतिहासिक हैं। तथापि शुरूप्पक से प्राप्त कुछ गुटिकाएं प्रारंभिक वंशीय २ शैली के मुद्रांक व किश[1] के प्राचीनतम ऐतिहासिक राजाओं के नामों से साम्य रखने वाले नाम वहन करती हैं। राजसूची, (जो किश के प्रारंभिक राजाओं के लिए कोई विश्वसनीय अंक प्रदान नहीं करती है) के पुनर्निमाण के आधार पर उत्तरवर्तियों के राज्यों को २८०० ख़ॄ० पू० में रखा जा सकता है। अतः संक्षिप्तम मिस्री तैथिकी के आधार पर प्रारंभिक वंशीय २ का भाग उनतीसवें शतक में या मेनेस (Menes) के समय लगभग पड़ेगा।

इन अंको की कुछ पुष्टि कतिपय मंदिरों के इतिहास से होती है, क्योंकि मंदिरों के निर्माण व पुनर्निमाण का कार्य प्रारंभिक वंशीयों में उसी उत्साह के साथ चलता रहा जिस उत्साह के साथ उरूक व जम्देत-नस्र कालों में हुआ। खफाजे चंद्र-मंदिर के कम-से-कम दस रूपांतरों को पृथक् किया जा सकता है। इनमें से पांच प्रारंभिक वंशीय और शेष जम्देत नस्र के हैं। डिलूजा[2] ने प्रत्येक मंदिर को १०० से १४० वर्षों की

१. जेकॉब्सन (Jacobson), दी सुमेरियन किंग लिस्ट (The Sumerian King List), १९८-९, फैंकफर्ट. ओ० इ० कम् (OIC), २०, तथिक सारिणी पर टीका (Commentary on the Chronological Table)।

२. डिलूजा, प्री-सारगोनिद टेंपुल्स (Pre-Sargonid Temples), ओ० इ० कम्० (OIP), lviii. १२९—१३३, तु० फैंकफर्ट, ओ० इ० कम, १९, ८७। (सारगोन की नूतन तिथि के साथ मेल रखने के लिए इन अंकों को कम करने पर यह प्राग्वंशीय II की शुरुआत को लगभग ३००० ख़्री० पू० में रखता है)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अवधि प्रदान करने के लिए विशिष्ट तर्क प्रस्तुत किए हैं जो किसी भी रूप में सर्वमान्य नहीं हैं। उसकी गणनाओं के आधार पर चंद्र मंदिर (Sin Temple) iv व प्रारंभिक-वंशीय १ लगभग ३१७५ खृ० पू० में प्रारंभ हुए होगे। उसी संकेत के आधार पर जम्देत नस्र अवस्था को और पहले खृ० पू० ३५७० तक जाना चाहिए। तब यह उच्च मिस्र में जर्जी अवस्था के वड़े भाग की समानांतर होगी। फिर भी, पूर्वगामी अंक सर्वोपरि प्रतीकित व तर्क अनुमान मात्र हैं। जम्देत नस्र व सारगोनीय कालों के बीच युक्ति-युक्त रूप से पूर्णतया ज्ञात भांडीय आकारों[1] में दृष्टिगोचर होने योग्य अपेक्षाकृत न्यून परिवर्तनों के मध्यवर्ती काल के उग्र रूप में कम की गई अवधिक साक्ष्य रूप में समीचीन रीति से उद्धृत किया जा सकता था।

चूंकि उरूक काल ने जम्देत नस्र की अपेक्षा अधिक भवन-निर्माण-कार्य को देखा, अतः इरेक व इरिदू में उवेद अवस्था की परिसमाप्ति को पूर्वगामी संगणनाओं के आधार पर ४००० खृ० पू० के आस-पास रखना होगा। तब उवेद का प्रथम मंदिर लगभग ४५०० खृ० पू० में वनाया गया होगा और युग के संवंध में यह फायूम उत्तर-पाषाण के साथ तुलना के योग्य होगा जैसा कि रेडियों कार्बन (Radio-Carbon) द्वारा तिथि-निर्धारण किया गया है।

---

१. ईलियट (Eliot), एक्स० मेसो० वे० ई० (EMWI), ३३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नवम अध्याय

ईसा पूर्व तृतीय सहस्राब्दी में भारतीय सभ्यता

सिंधु एवं उसकी सहायक नदियों की निम्नतर घाटी, जो प्राचीन पूर्व में उच्चतर सभ्यता का तृतीय केंद्र है, ऐसी बाढ़ से बनी समतल भूमि होने के कारण मिस्र और बेबिलोनिया के समान है, जिस पर वर्षा की न्यूनता के कारण व्यवस्थित कृषि मुख्यतः प्राकृतिक अथवा कृत्रिम सिंचाई पर निर्भर करती है। प्रागैतिहासिक समय में बेबिलोनिया के साथ यह साम्य और भी निकटतर रहा होगा। क्योंकि सिंध उस समय वास्तव में मेसोपोटामिया था, जो पश्चिम में सिंधु के अतिरिक्त पूरब में प्रसिद्ध मिहरन (सरस्वती) के द्वारा सींचा जाता था। परंतु, मेसोपोटेमिया की अपेक्षा यहां प्राकृतिक सिंचाई का क्षेत्र अत्यधिक बड़ा है, जो ठीक दक्षिणी पंजाब के आर-पार और तलहटी तक फैला हुआ है। सतलज, रावी, चिनाब और झेलम के विस्तृत मैदान, असीरिया के उच्च समतल भू-भाग के विपरीत वास्तविक सिंध के समतल के विशुद्ध विस्तार का निर्माण करते हैं। और आकार में यह प्रांत आजकल इराक से बहुत भिन्न है। यह आधुनिक सुमेर की तरह न तो मुख्यतः वनस्पतिविहीन परती है और न तो प्रागैतिहासिक सुमेर और आधुनिक दक्षिणी इराक की तरह दलदल ही है।

जहां भी बांधों के कारण बाढ़ का पानी अब प्रवेश नहीं कर पाता है वहां भी निम्न समतल उपभूमि के जल से पोषित वृक्षों और झाड़ियों के नियमित वन से ढंके हुए हैं। यद्यपि उपभूमि का स्तर प्रागैतिहासिक समय से ऊपर उठ गया है क्योंकि आजकल यह पृथ्वी की पुरानी सतह से १० या १५ फीट ऊपर है, तथापि समतल की ओर नदी के तल के सापेक्ष स्तर संभवतः अपरिवर्तित रह गए हैं। खास मोहेंजोदड़ों[1]

१. मार्शल मैके एवं अन्य, मोहेंजोदड़ों ऐंड दी इंडस सिविलिजेशन, लंदन, १९३२, (उद्धृत मोहजोदड़ों, १)। पिगोट (Piggott) की प्रो-हिस्टॉरिक इंडिया, लंदन, १९५० के प्रकाशित होने के समय तक इस पुस्तक ने सभ्यता का उत्तम सामान्य विवरण भी दिया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नगर बाढ़ क्षेत्र में था। यद्यपि आजकल की बाढ़ों की अपेक्षा वे बाढ़े प्रायः कम विध्वंसक थीं, तथापि पुरानी बाढ़े सिंचाई की उन्हीं सुविधाओं को सूचित करती है, जैसी आजकल विद्यमान हैं। इसके अतिरिक्त, आजकल की अपेक्षा प्रचुर वर्षा के संकेत मिलते हैं। प्रागैतिहासिक प्रलेख प्रारंभिक सुमेरीय कला के अर्ध वन्य प्राणियों के प्रतिकूल बाघों, हाथियों और गेड़ों जैसे वन्य प्राणि-वर्ग को प्रदर्शित करते हैं। आधुनिक वर्षाविहीन परिस्थिति के अंदर प्रागैतिहासिक नगरों में पड़ी ईटों का अपरिमित उपयोग एक अनावश्यक एवं मूर्खतापूर्ण कार्य प्रतीत होता।

जैसा हम मिस्र और बेबिलोनिया में देख चुके हैं, जलोद समतल पर जीवन की परिस्थितियां बाढ़ के पानी को, जिसने जीवन को संभव बनाया तथा इसे सुखमय बनाने के लिए विदेशी मालों के आयात को सरल बना सका, नियंत्रित एवं निदेशित करने के लिए संघटित सहयोगात्मक प्रयत्न से संबंद्ध थीं। अपने को उस वातावरण के अनुकूल बनाने एवं अपनी इच्छानुसार उस पर नियंत्रण पाने के लिए होनेवाले मानवीय प्रयत्नों की चरम परिणति एक औद्योगिक तथा वाणिज्यमूलक सभ्यता के निर्माण में हुई। परंतु, ये प्रयत्न भी अथवा फरात के तटों पर होने वाले प्रयत्नों की अपेक्षा वृहत्तर पैमाने पर हुए। ध्वस्त नगरों में से अबतक तीन का ही अन्वेषण हुआ हैं। (इनमें से) मोहेंजोदड़ों[1] (Mhenjo-daro) और चंहुदड़ों (Chanhu-daro) सिंधु के तट पर और हड़प्पा[2] (Harappa) रावी के तट पर हैं। पर वे पहले से ही एक दूसरे से ४०० मीलों की दूरी पर हैं। फिर भी, इन तोनों की सभ्यता विस्मय-जनक रूप में एकजातीय है। मोहेजोदड़ों में उल्लिखित वास्तुकला, नगर-योजना, धातु के उपकरणों एवं अस्त्रों, आभूषणों एवं मनकों कला तथा शिलालेख आदि विषयक सभी विशिष्ट मानसिक अभिवृत्तियां हड़प्पा में आवर्तित होती हैं। यह साम्य इतना पूर्ण है कि उत्तरवर्ती वर्णन में प्रत्येक अभ्युक्ति कुछ स्थितियों को छोड़कर, जहां विपरीत संकेत दिये गये हैं, समान रूप से सभी स्थलों के अनुकूल होगी। और यह समानता कोई साधारण एकरूपता नहीं है जो समान परिवेशीय परिस्थितियों में होने वाले समानांतर विकासों के द्वारा व्याख्या के योग्य हो सके, परंतु यह अत्यधिक कृत्रिम है जिसकी अभिव्यक्ति, उदाहरण के लिए, अत्यधिक विशिष्ट एवं आत्मचेतन मृच्छिल्प तथा समुत्कीरण कला की एकरूपता में हुई। यह इसी प्रकार की एकरूपता जो एरिडु

---

१. मैके, चन्हुदड़ों एक्सकेवेमन्स (Chanhu-daro Excavations), १९३५—३६, न्यू हावेन, कॉनू, १९४३।

२. वाट्स, हड़प्पा, नई दिल्ली, १९४०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(Eridu) से लेकर मारी (Mari) तक की प्राचीन सुमेरीय सभ्यता के ध्वंसावशेषों से प्रदर्शित होती है। तथापि, इन नगरों के बीच की दूरी चन्हुदड़ों को हड़प्पा से पृथक् करने वाली दूरी से सिर्फ आधी है, पर यह विशेषता आत्यंतिक सीमाओं को लक्षित नहीं करती है। समरूपता के आधार पर एक ही प्रकार की सभ्यता धारा के निर्गम की ओर उमरी तक पाई गई है और धारा के उद्गम की दिशा में उच्च सतलज[1] (के तट पर), रूपर (Rupar) तक इसकी सूचना मिली है। हड़प्पा काल में सिंधु घाटी की सभ्यता के अंतर्गत क्षेत्र प्राचीन राज्यकालीन मिस्र के क्षेत्र की अपेक्षा दुगुना और संभवतः सुमेर एवं अक्कद के क्षेत्र से चौगुना अवश्य ही रहा होगा।

इस सांस्कृतिक एकता का राजनैतिक प्रतिरूप क्या था? मिस्र में मेनेस (Menes) के बाद मुहाने से लेकर प्रथम जल-प्रपात तक रहने वाली सांस्कृतिक एकता केवल परिवेश, परंपराओं, भाषा और प्रजातीय कुटुंबों की एकरूपता के ही अनुरूप नहीं है, अपितु एक सम्राट के अधीन राजनीतिक एकीकरण के भी अनुरूप है। बेबिलोनिया में भौतिक संस्कृति की एकता के साथ-साथ भाषा, धर्म और प्रजातीय प्रकारों की एकरूपता अस्तित्व में आई जो स्वतंत्र राज्यों की बहुलता के बावजूद कायम रही। वातावरण की आर्थिक एकता ने क्या सिंधु के राजनैतिक एकीकरण और भौतिक-संस्कृति, धर्म, लिपि और संभवतः भाषा की एकता में अभिव्यक्ति प्राप्त की थी? सामरिक अस्त्र-शस्त्रों एवं युद्ध के दृश्यों का बाहुल्य मेसोपोटेमिया की तरह नगर-राज्यों के बीच परस्पर विनाशकारी संघर्षों का साक्ष्य नहीं देता और न तो उस शक्ति को ही प्रमाणित करता है जिसके द्वारा किसी एक राजा ने, जैसे मिस्र में, विजय के द्वारा आंतरिक शांति प्राप्त की।

संप्रति, हड़प्पा और मोहेंजोदड़ों के दोनों नगर प्रांतीय-नगरों, दुर्गरक्षित गांवों और संभवतः सीमांतवर्ती सैनिक अड्डों और कारखानों जैसे अपेक्षाकृत कतिपय छोटे स्थलों[2] के बीच में स्थित एकमात्र "साम्राज्य" में युग्म राजधानियों की तरह खड़े हैं। कारखानों के क्षेत्रफल में ६०,००० वर्गफीट से लेकर ७००,००० वर्गफीट (१$\frac{9}{4}$ से १५$\frac{9}{2}$ एकड़) तक का अंतर है। परंतु, एक शतक पूर्व हड़प्पा[3] में दीवाल से

---

१. १९५० में ज्ञात हड़प्पा सभ्यता के (क्षेत्रीय) विस्तार के लिए दे० पिगॉट (Piggott), प्री-हिस्टॉरिक इंडिया; अतिरिक्त स्थल बीकानेर में १९५१ ई० में ज्ञात हुए थे और मानचित्र में संमिलित कर लिए गये थे।

२. पिंगॉट, प्री० इ०, १७१—४।

३. वाट्स (Vats), हड़प्पा, ४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

घिरे क्षेत्र की सीमा हर ओर आधा मील देखी जा सकती थी। मोहेंजोदड़ों का वृत्त किसी भी हालत में निम्न कोटि का नहीं रहा होगा। परंतु, हम उस स्रोत का रूप निर्धारण नहीं कर सकते जिसकी चारों तरफ गांव के नगर के रूप में परिवर्तन के लिए अपेक्षित अतिरिक्त संपत्ति एवं पूंजी पूंजीभूत होती थीं। केवल १९४७ ई० से हमने जाना है कि प्रत्येक राजधानी पक्की ईंटों के ठोस अंतरंग प्रकार से रक्षित एक उत्तुंग दुर्ग से संरक्षित[1] थी। हड़प्पा का दुर्ग ४६० × २१५ गजों में फैला था। एक विशाल धान्यागार इससे संवद्ध था, जिसका समग्र क्षेत्रफल १६८ × १३५ वर्गफीट था और इसमें प्रत्येक छ: प्रकोष्ठों वाले दो संविभाग थे। १९५० ई० में मोहेंजोदड़ों में इसी के तुल्य एक धान्यागार का पता लगा। यह धान्यागार दुर्ग के घेरे के भीतर था।

यह स्पष्ट है कि एक शासक इन दुर्गों में रहता था और इनसे संवद्ध धान्यागार इसकी आर्थिक शक्ति को दृढ़ता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। सुमेरीय नगर देवता अथवा दिव्य फराऊनों के समान वह नगर के अधीनस्थ प्रदेशों द्वारा उत्पादित वास्तविक धन को संकेंद्रित करता था। पर, क्या यह काल्पनिक ईश्वर था, अथवा वास्तविक दिव्य राजा[1] एक बौद्ध स्तूप और आधुनिक कब्रों ने क्रमश: एक मंदिर अथवा प्रासाद[2] को प्रकाश में लाने की संभावना से पूर्ण दुर्गों के पूर्ण उत्खनन में व्याघात उपस्थित कर दिया है। मोहेंजोदड़ों के दुर्ग में प्रकाश में आया हुआ भव्यतम भवन एक सार्वजनिक स्नानागार है। परंतु, अबतक अनिर्णीत स्वरूप वाले इस स्रोत की क्षमता का अनुमान खुद भग्नावशेषों द्वारा अभिप्रमाणित शासन-पद्धति से किया जा सकता है।

सुचिंतित योजना के आधार पर सावधानी के साथ नगरों की स्थापना हुई थी और पुनर्निर्माण की अनेक, प्रावस्थाओं तक दृढ़ता के साथ योजना का अन्वयन किया जाता था, जिसके फलस्वरूप सड़कों की चौड़ाई सर्वदा स्थिरता के साथ अक्षुण्ण रखी जाती थी। नगरों में विस्तृत सोपानबद्ध प्रणालियों की व्यवस्था थी, ये प्रणालियां गर्तों में गिरती थीं और इन गर्तों की समय-समय पर, संभवत: सार्वजनिक पदाधिकारियों द्वारा, सफाई होने पर ही ये कार्योपयोगी हो सकती थीं।

खास नागरिक जनता के बीच वास्तुकला संबंधी अवशेष लगभग वर्ग विभाजन में परिणामित होने वाले धनगत वैषम्य का प्रदर्शित करते हैं। हड़प्पा[3] में ठीक दुर्ग

---

१. ह्वीलर (Wheeler), एन्श्येंट इंडिया, iii, १९४७, ६१—७६।

२. मैके (Mackay) द्वारा 'प्रसाद' के रूप में अभिहित भवन वस्तुत: इसके चारों ओर के अन्य मकानों की तरह एक व्यापारी का विशाल भवन है। दे० 'फर्दर एक्सकेवेशन्स ऐट मोहेन्जोदड़ो', न्यू देल्ही, १९३८, (मोहेन्जदड़ो ii)।

३. वाट्स (Vats), हड़प्पा, ६३; पिगॉट (Piggott), प्री० इ० १६६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के नीचे दो कमरे वाले एक दूसरे से अलग पंक्तिबद्ध कुटीर बने हुए थे जो प्रत्यक्ष रूप में शिल्पियों के आवास का काम करते थे। इन कुटीरों में और प्रांगणों, स्नानगृहों, अनेक प्रकोष्ठों और बहुधा निजी कूप से युक्त तथा हरप्पा के मध्य वित्तवर्गीय कहाने योग्य व्यक्तियों के आवास का काम करने वाले विशाल दो मंजिला मकानों में अत्यधिक अंतर है। तथापि, इन मकानों में भी निचले तल्ले के कमरे, दुकानों या भांडारों (गोदाम) का काम करते थे।

जातीय विषमताओं ने भी नगर की जनता[1] को विभक्त किया होगा। यह निश्चित रूप से मिश्रित थी। कंकालीय अवशेष और छोटी मूर्तियां निःसंदिग्ध रूप में शारीरिक संरचना के आधार पर विभिन्न अनेक प्रकारों से संबंधित हैं। सामाजिक व्यवस्था के निम्न स्तर में आदिम, "आग्नेय" कुटुंब आता है। एक छोटी कांस्य-मूर्ति (फलक २९) की रूखड़ी नाक और मोटे होंठ दक्षिणीय भारत के अवशिष्ट आदिवासी कबीलों के साथ इस दल की बंधुता को शीघ्रता के साथ प्रकट करते हैं और इसके आधुनिक प्रतिनिधियों के समान समाज में इसका जो स्थान था उसपर भी प्रकाश डालते हैं। पूर्वोक्त प्रकार की तरह एक उच्चतर दीर्घ कपाल प्रकार का यूर-फ्रीकी अथवा भू-मध्य सागरीय नाम भी रखा गया है। यह दीर्घ-कपाल सुमेरीय प्रकारों में से अन्यतम प्रकार के निकट प्रतीत होता है और चित्रित मूर्तियों में (फलक २८) दाढ़ी, मूंछ मूड़े हुए ऊपर के ओठ और बिलकुल सुमेरीय रीति से केशपाश के रूप में संवरे हुए लंबे बाल के द्वारा यह समता दृढ़ हो जाती है। तीसरे स्थान में, एक पृथक-कपाल एलपाइन अथवा आर्मेनॉइड (Armenoid) प्रकार अक्कद (Akkad) में किश (Kish) की तरह (यहां भी) प्रस्तुत किया गया है। अंततः केवल एक कंकाल और अनेक मिट्टी की छोटी मूर्तियां निस्संदिग्ध रूप से मंगोल अथवा मंगोल-सम प्रकार से संबंधित है। ये इस जातीय प्रकार के अबतक प्रकाश में लाए गए, आदितम तिथित, पर, हड़प्पा के उत्तरकालीन उदाहरण हैं।

इस मिश्रित जनता को आश्रय देनेवाले, बड़े नगर लगभग समग्र रूप में ईंटों के बने थे और अधिकांश ईंटे भट्ठे में पकाई गई थीं। मोहेंजोदड़ो में भरने के काम को छोड़कर कच्ची ईंट का प्रयोग शायद ही कभी होता था। हरप्पा में कभी-कभी कच्ची और भट्ठी में पकी ईंटे दीवालों के (निर्माण) क्रम में पारी-पारी से प्रयुक्त होती थीं। तथापि, प्रारंभिक किलाबंदी में ईंटों के किनारे में लकड़ियां लगाई जाती थीं। यह विधि कच्ची ईंट की वास्तुक्रिया के लिए अधिक उपयुक्त थी जो अंत में

---

१. मोहेंजोदड़ो, १, ६३८ अ०; २, ६३०; ऐंथ्रोपस, २८, १९३३, १४८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

छोड़ दी गई। ईंटे बिल्कुल सादी बनती थी, परंतु कुछ प्रत्यक्ष साक्ष्य मिला है कि इन पर मिट्टी का पलस्तर किया जाता था जो बौद्ध तथा आधुनिक भारत की तरह निस्संदिग्ध रूप में सजावट का एक साधन रहा होगा। लकड़ी, जिसमें स्थानीय शीशम काठ और प्राय: हिमालय के जंगलों से आयातित सागौन सम्मिलित थे, मकान बनाने के काम में प्रयुक्त होती थी, पर पत्थर का प्रयोग कदाचित ही होता था। बेबिलोनीय वास्तुकला के विशिष्ट स्वरूप पत्थर के द्वारा-छिद्रों का स्थान ईंटों के द्वारा छिद्रों ने लिया था। अपेक्षाकृत बड़े मकानों में कूप और स्नानगृह—इन दोनों की व्यवस्था थी। पर, असंदिग्ध शौचालय केवल एक बाद के मकान में पाए गए थे।

मिस्र और बेबिलोनिया की अर्थ-व्यवस्था की तरह सिंधु घाटी की अर्थ-व्यवस्था सिंचाई (पर निर्भर) और कृषि पर आधारित थी। खाद्योचित गेहूँ (Triticum Compactum) जौ, खजूर, मटर और तिल की खेती होती थी। तौल की इकाई धान के उत्पादन को सूचित करती है, परंतु प्रत्यक्ष साक्ष्य का अभाव है। कपास ने पटसन का स्थान लिया। ककुदमान भारतीय पशु (पालतू सांड़) और एक ककुदविहीन कुल (केवल मुद्राओं तथा मिट्टी के प्रतिरूपों से ज्ञात) भैंसे, बकरे (Urial), भेड़ें, मुर्गे, मुर्गियां और हाथी पालतू बना कर रखे जाते थे। सुअरों की हड्डियां सर्वसाधारण होते हुए भी स्थानीय जंगली सुअर से संबंधित जान पड़ती है। अत: अनिवार्य रूप से शूकर-पालन का संकेत नहीं करती है। मोहेंजोदड़ो के नवीनतम स्तरों में ऊंटों, गधों और घोड़ों की हड्डियां मिलती हैं। परंतु, ये पशु मुद्राओं अथवा मिट्टी के नमूनों पर प्रदर्शित नहीं किए गए हैं। अत: ये हरप्पा सभ्यता के समाप्त होने के बाद ही यहां आए होंगे।

ये नगर अनिवार्य रूप से वाणिज्य के केंद्र थे और विस्तृत क्षेत्र से खाद्य पदार्थ भी प्राप्त करते थे। पहिएदार सवारियों और नावों से यातायात में सुविधा हुई। पहिए तीन ठोस तख्तों के बनाए जाते थे जैसा सुमर और इलाम (Elam) में तथा आधुनिक सिंध में देखा जाता है—बीच के तख्ते पर उभाड़दार धुरा रहता था[१]। मिट्टी और कांसे के नमूने[२] लगभग आधुनिक ग्रामीण गाड़ियों की तरह[३] की (i) दो पहिया गाड़ियों, आधुनिक एक्का और यूरेशियाई स्टेप्प-लोक (Steppe-Lolk) के दो पहिया अर्बा (Arba) से मिलते-जुलते (ii) कुछ ढके हुए छकड़ों, और (iii) एक ऊंचे

१. मैके (Mackay), चन्हुदड़ो, १६२।

२. वाट्स (Vats), हड़प्पा. ९९—१००, चन्हुदड़ो, १६३।

३. अन्ट (Ant), जे०, Ix, २६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मृत्तिका-रोधक[1] फलक (Dash board) से युक्त चार पहियों वाले छकड़े, जो उर से प्राप्त ध्वजदंड पर चित्रित सुमेरीय रथ का स्मरण दिलाता है, को प्रदर्शित करते हैं। ककुदयुक्त बैल निस्संदिग्ध रूप से अभिप्रमाणित एकमात्र रेखा-चित्रित पशु है। केवल एक मुद्रा[2] पर उपस्थापित नौका आधुनिक नदी-शिल्प के समान है। परंतु, उरुक की पटियों (Tablets) और मुद्राओं (चि० ६४) पर चित्रित नौका से भिन्न नहीं दीखती है।

व्यापार पूर्णतः सुसंगठित था। समुद्री तटों से केवल खाद्य पदार्थ की ही नियमित आपूर्ति नहीं प्राप्त की जाती थी, पर राजपूताना या बलूचिस्तान से धातुओं की भी आपूर्ति उपलब्ध की जाती थी। दक्षिणी भारत से शंख का छिलका तथा और भी सुदूर क्षेत्रों से विलास वस्तुएं, जैसे बदक्शां से वेदूर्य, चीन या बर्मा से जेड (Jade), गुजरात या नीलगिरि पहाड़ियों तक से अमाजोनाइट (Amazonite) मंगाई जाती थी। हमने तृतीय सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध में भारत में निर्मित वस्तुओं को, जिनमें मुद्राएं तथा गांठदार मिट्टी के पात्र भी सम्मिलित हैं, मेसोपोटेमिया पहुंचते देखा है। सिंधु धाटी में[3] सुमेरीय आकार की वर्तुल मुद्राओं और प्रसाधन सामग्री का समय-समय पर अनुकरण किया जाता था।

हड़प्पा के नगरों के गौण उद्योग तिग्रो और नील के तटों पर उसी काल में किए जाने वाले उद्योगों के समान हैं। परंतु वस्तुओं का व्यवहार भिन्न रीति से होता है और सिंधु घाटी के लोग अपने सुमेरीय अथवा मिस्रीय बंधुओं से कुछ विषयों में आगे थे।

धातु विशेषज्ञ चांदी, कांच और तांबा गलाते थे तथा सोने का सामान भी बनाते थे। ताम्रकार (Copper smiths) सुमेर की तरह यहां भी रांगा चढ़े हुए कांसे का उपयोग करते थे और साथ ही साथ ३.४ से ४.४ प्रतिशत तक संखिया मिले हुए तांबे से तैयार मिश्र धातु, जिसका उपयोग ट्रांसकेस्पिया (Transcaspia) के अनो (Anau) में भी होता था, का व्यवहार करते थे। वे सिरे परदू (Cire Perdue) और धातुओं के चद्दर को जोड़ने की कील भी ढालते थे। पर, कभी भी उन्होंने पीतल की कलई की हो या उसका पक्का जोड़ लगाया हो, ऐसा नहीं प्रतीत होता है। हड़प्पा में धातु का काम करनेवाले ३ फीट ४ इंच व्यासवाली और ३ फीट ८ इंच

---

१. चन्हुदड़ो, फलक Lviii, फलक lxxxix ६, १३।

२. मोहेंजदड़ो, ii, १९३८, पृ०।

३. मोहेंजोदड़ो, ii, ३४५, ए० आर० एस० आई०, १९२७-२८; ७३—६; १९२८—२९, पी० एल० २८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गहरो "बर्तन" के आकार की भट्ठियों का उपयोग करते थे। इन भट्ठियों में एक प्रकार की कार्यक्षम भाथियों[1] द्वारा तिर्यक नलिकाओं से नीचे की ओर धमन (Blast) को अवश्य ही ढकेला जाता होगा। ८ फीट ३ इंच लंबी केंद्रीय रेखा के बराबर पिछली दीवाल से निकलती हुई एक दीवार के द्वारा दो भागों में आंशिक रूप से विभक्त नाशपाती के आकार की बड़ी भट्ठियां संभवतः कुम्हारों द्वारा उपयोग में लाई गई होंगी।

हड़प्पा के धातुकारों द्वारा निर्मित औजार और हथियार सुमेरीय (उपकरणों) की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रकार ये हैं—(१) चपटी रुखानियां

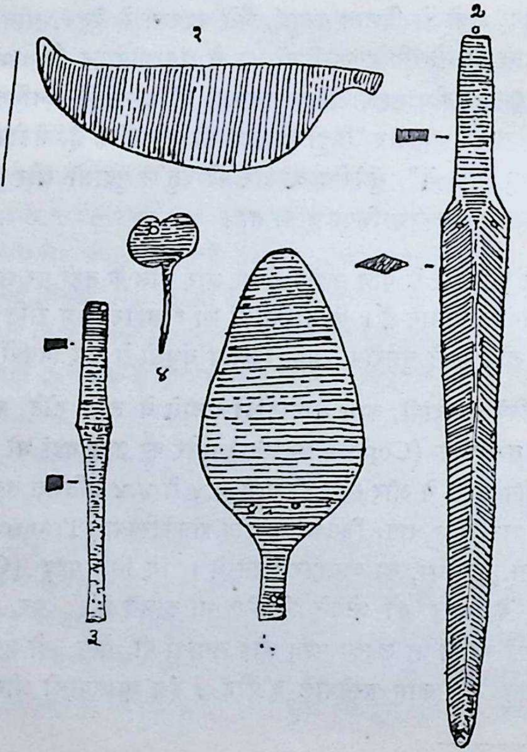

चि० ६६. तांबे की आरी, कटार, छेनी, छुरा और बर्छी का सिरा, मोहेंजोदड़ों, ¼।

१. वाट्स (Vats), हड़प्पा, ४७०—२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जो निचले भाग को अपेक्षा व धड़ की ओर अधिक चौड़ी, पर चपटी होती थीं (फ० ६६, ३), (२) वक्र एवं एक ओर संकीर्ण बनाए गए फलकों से युक्त चपटे कुठार, (३) प्रारंभिक निम्नोय प्रकारों की तरह सोधी पीठ वाली आरियां, जो आजकल सेल (Shell) में भारतीय कर्मकरों द्वारा प्रयुक्त लोहे के आरों के स्पष्टतः समान हैं, (४) वीच में रीढ़दार चपटी नोंक वाली कटारें जिनमें फलक की जड़ के नजदीक दो कील के छेद हैं और समग्र भाग एक मजबूत छड़ से हथौड़े के द्वारा पीटकर बनाया गया है (फलक ६६, २)। ये पश्चात् कालीन अथवा हड़प्पोत्तर-कालीन[1] भी हैं, परंतु शिल्प के आधार पर पूर्णतया भारतीय हैं, (५) कटारों की तरह हथौड़े से पीटकर बनाए गए बर्छी के सिरे, जिनको नोंक चपटी है और फलक चौड़ा एवं चपटा है, (६) एक धार वाले चाकू, जो नोंक के नजदीक फिर से मुड़े हुए हैं, पर पीठ की ओर सीधे या उभाड़दार हैं, और छोटी डांस लगी हुई है। परंतु, कील के छेद नहीं हैं (फ०६६,१), (७) धातु के पतले छड़ से, कुठार के समान निकलते हुए चौड़े उन्नतोदर फलक से युक्त छुरे जो दूसरी तरफ अर्धवृत्ताकार उभाड़ के द्वारा संतुलित हैं (चि० ६६, ४), (८) आजकल भारत में काम में लाए जानेवाले हंसिए की तरह के पौधों को काटने के लिए एक हंसिया, (९) एक बैल हांकने का अंकुश, (१०) हंसिए, जो संभवतः जबड़े की हड्डी के बने हैं, पर दुष्प्राप्य हैं, (११) खोखली जड़ वाले बिना नोंक के तीरों के सिरे, जो तांबे की चद्दर को काट कर बनाए गए हैं। (इन) सारी वस्तुओं और पृष्ठ १५६ पर सूची-बद्ध सुमेरीय प्रकारों में विलक्षण भेद है। खास कर फलक तक डंडे के छेद में कुल्हाड़ी बैठाने की सुमेरीय पद्धति नियमित रूप से यहां कभी भी प्रयोग में नहीं लाई गई थी। यह सत्य है कि इस रोति से स्पष्टतः बैठाई गई कुल्हाड़ी का एक चित्रित मृणमय प्रतिरूप तथा एक वास्तविक कुठाराकार बसूला मोहेंजोदड़ो[2] से उपलब्ध हुए हैं। परंतु, पूर्ववर्ती पूर्णतः एकल है और एक भी धातु के नमूने के द्वारा उपस्थापित नहीं हुआ है, जबकि कुठाराकार बसूला ऊपरी स्तर से प्राप्त हुआ है और अधिक ह्रासोन्मुख हड़प्पा सभ्यता के अंतिम दिनों से संबंधित है। पिन हड़प्पा की वेश-भूषा के सामान्य सहायक नहीं हैं। दोहरे चक्करदार सिरे का एक अलग नमूना[3] अवश्य ही विदेशी प्रकार से संबंधित रहा होगा, जैसा कि हिसार के द्वितीय और सियालक के तृतीय स्तर में पाया जाता है। उसी तरह छोटी विमटियों का एकमात्र बचा हुआ

---

१. पिगॉट (Piggott) प्री० इ०, २२६।
२. मोहेंजोदड़ो, ii, ४५८—९, फलक ११२, १; १२०, २७।
३. चन्हुदड़ो, १९५, फलक ९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जोड़ा प्रसाधन सामग्री[1] का एक अंश है। ठीक सुमेरीय उदाहरणों की तरह अनेक उपकरण गांठदार फंदे में संलग्न कर दिए जाते थे। संभवतः इसीसे हड़प्पा की प्रसाधन सामग्री नकल की गई थी।

पात्र तांवे, चांदी और कांच के भी बनाए जाते थे। पर, सभी आकार मृद्भांड कला में भी पाए जाते हैं (चि० १००)। स्वर्णकार सुमेर में अत्यधिक लोकप्रिय सोने-चांदी के वारीक तार का काम नहीं करते थे। पर, वह पीतल आदि धातुओं का पक्का जोड़ लगा सकता था और छोटे मनकों पर सोना चढ़ाने में उसे सूक्ष्म दक्षता

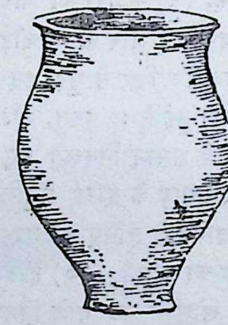

चि० १००. ताम्रचषक, मोहेंजोदड़ों से प्राप्त, $\frac{1}{3}$।

प्राप्त थी। सोने के तार की घुमोआ नकाशी से सजा हुआ एक चांदी का बकसुआ[3] और सोना चढ़ा हुआ मनका उसके काम के अच्छे नमूने हैं। (फ० XXXI)।

सुमेर की अपेक्षा सिंधु घाटी में अब भी मृद्भांड को अधिक आदरपूर्ण स्थान प्राप्त था। उत्तम भांड वनाए जाते थे जो समय-समय पर भड़कीले ढंग से:सजाए जाते थे। कुम्हार तेज चलने वाले चाक का उपयोग करता था। यद्यपि वह सामान्यतया पीले या हल्के लाल गुलाबी रंग से भांड वनाता था, तथापि वह पृ० १२३ पर वर्णित उरूक (Uruk) भांड के अनुरूप धूसर भांड के निर्माण के लिए पाक-प्रक्रियां पर नियंत्रण रख सकता था। सामान्य शैली वही जान पड़ती है, जिसका प्रयोग आजकल सिंध[3] में ग्रामीण कुम्हार करते हैं। मोहेंजोदड़ों के खंडहरों में कुछ वस्तुएं मिली है जिनमें बर्तनों को चिकना बनाने के लिए उपकरण और आजकल समीपवर्ती गांवों में

१. आर० ए० एस० आइ (RASI), १९२३-२४, ५२—५।

२. वाट्स (Vats), हड़प्पा, ६४, फलक १३७।

३. मैंके (Mackay), जे० आर० ए० आइ, Lx, १९३०, १३१—४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कुम्हारों द्वारा दैनिक प्रयोग में लाया जाने वाला एक विलक्षण रोकने वाला (Stopper डंटा उल्लेखनीय है। ये सब मोहेंजोदड़ों के भग्नावशेष में पाये गए हैं। वेविलोनिया में जम्देत नस्र (Jemdet-nasr) अवस्था में प्रयुक्त और चि० सं० ६५ में प्रदर्शित रोधक डंटा (Stopper) इसी प्रकार का है।

सुंदरतर रचनाओं में लाल अथवा पांडुर मिट्टी की पट्टियों का प्रयोग किया जाता था और लाल पट्टियों का ऊपरी भाग संभवतः उदभ्राजित रहता था। कभी-कभी धूसर भांड पर भी काली धूसर मिट्टी की परत लगाई जाती थी। लाल भांड की तरह जिसका रंग पहले की अपेक्षा न्यूनीकृत[1] अयोविकार (Iron oxide) के अधीन था। विचित्र नोंकीली पेंदीवाला एक छोटा पान-पात्र (प्याला) जो बहुत ही खुरखुरा रहता था, (चि० १०१) इस श्रेणी का सर्वसाधारण प्रकार है। समसामयिक भारतीय व्यवहार के अनुसार इस तरह के पात्र एक बार उपयोग कर लिए जाने के बाद संभवतः तोड़ दिये जाते थे। संकीर्ण और लगभग नोकीले तल दूसरे आकारों, विशेषतः बड़े संचय कलशों में सामान्य थे। टोटियां भोजन के कटोरों में सामित हैं जो सर्वमान्य नहीं हैं और दुष्प्राप्य श्रेणी के प्यालों में संलग्न व्यंजनाकार छिद्रित कानों

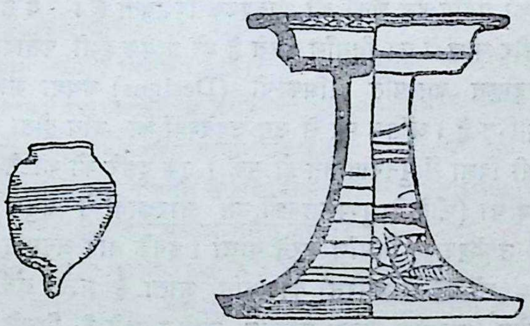

चित्र १०१. मोहेंजोदड़ों से उपलब्ध पान-पात्र और हड़प्पा से प्राप्त चित्रित शावाधान-पात्र।

में मूठ की एकमात्र निकटता देखी जाती है। संकरे गले वाले कलश वस्तुतः अपेक्षाकृत दुष्प्राप्य हैं। लंबी गर्दन वाली बोतलें या फैले हुए मुंह अज्ञात हैं। इसके विपरीत लाल धूसर और अलंकृत वस्तुओं में ऊंचे पीठवाला भांड पाया जाता है, जो

१. रि० आर्कं० स० ई०, १९२८—२९, १५३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुमेर की तरह बहुधा कब्रों में उपलब्ध होता है (चित्र १०१)। अन्य स्पष्टतर प्रकार छिद्रित भित्तियोंवाला वर्तुलाकार कलश हैं।

बर्तन संभवतः रस्सी की छाप से विभूषित किए जाते थे। सुमेरीय संरक्षित पट्टीदार भांड की तरह हल्के पोले रंग की मोटी पट्टी पर हलका रंग चढ़ाकर या छोटी गांठों द्वारा यह कार्य होता था। पर, उत्तम भांड चित्रित रहते थे। रंग साधारणतः काला है कहीं तूलिका से गहरे लाल रंग की पट्टी अथवा पतले रंग पर और असामान्यतया हल्के रंग की गाढ़ी मिट्टी की परत पर चढ़ाया जाता है। मोहेंजोदड़ों के उत्तरकालीन अधिवास में बहुरंगी भांड प्रकाश में आया है। हलकी पीली जमीन पर काले सांचे लाल, हरे या पीले रंगों से भर दिए गए हैं जो (बर्तन) पकाने के बाद चढ़ाये गये हैं।

लाल रंग पर काले चित्रित विभूषा सिंधु घाटी की सभ्यता की एकता, मौलिकता एवं प्राचीनता को अन्य वस्तु की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह प्रदर्शित करती है। इसकी शैली परिपक्व एवं आत्मचेतन (स्वतंत्र) है जो अन्य तत्वों से पूर्णतया भिन्न है। पर अमरी (Amri) से लेकर हड़प्पा तक पूर्ण एकरूपता के साथ पायी जाती है। विशाल तत्वों का प्रयोग इस शैली की आवश्यक विशेषता है। ये तत्व बारी-बारी से विस्तृत क्षेत्रों और चौखंडों का निर्माण करते हैं जो प्रत्येक वृक्षों, पत्तीदार शाखाओं और लताओं जैसे रूढ़ीकृत वनस्पति अभिकल्पों (Designs) अथवा आवर्ती प्रतिरूपों से पूर्णतया आच्छादित हैं। अंतिम पद से उन उद्देश्यों का बोध होता है जो अनिश्चित रूप से किसी भी दिशा में पुनरावर्तित हो सकें। एक दूसरे को काटने वाला वृत्त सबसे अधिक लोकप्रिय था (फीते के पुष्प-स्तवकों, या चारखानों से संयुक्त होने पर विस्तृत हाइड (Hide) उद्देश्य का निर्माण करने वाला। इसके बाद अनुमाप प्रतिरूप (Scale pattern) (अर्धवृत्तों पर आधारित) का स्थान आता है और लंबी उत्तरावधि पर चारखाने, त्रिकोण (उत्तरोक्त पूर्णतः बराबर बदलते रहते हैं जिससे उदाहरण स्वरूप एक रिक्त त्रिकोण के दोनों पार्श्वों पर रेखोत्कीर्ण त्रिकोण स्थित है) और तरंगित रेखा पर आधारित जटिल प्रतिरूप व्यत्यस्त रेखा (Cross) अंग्रेजी टी (T) का आकार और हृदय आते हैं (फ० XXXII)। इसी प्रकार के प्रतिरूप कर्परों की पच्चीकारी जैसी अन्य कलाओं में भी लोकप्रिय थे। अन्य प्रदेशों में स्वतंत्र मेखलात्मक प्रतिरूपों के रूप में आवर्तित होने वाले उद्देश्य यहां सिर्फ बड़े क्षेत्रों लिए किनारों के रूप में प्रयुक्त होते हैं। (यहां) हम वृत्त, बिंदु युक्त निश्रेणी (Ladder) और अधिक विरलता के साथ एकांतरिक (Alternating) त्रिकोण पाते हैं। (रेखोत्कीर्ण बंटे फीतों की नक्काशी,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रेखोत्कीर्ण तरिडत पट्टी और रेखोत्कीर्ण त्रिकोणों तथा अर्ध-वृत्तों के संमिश्रण मुख्यतः दुर्लभ धूसर लेप वाले भांडों पर प्राप्त होते हैं)। पशुओं के चित्र बिल्कुल असाधारण हैं। कभी-कभी छोटे मयूर पत्तियों के बीच प्रस्तुत किए गए हैं। हड़प्पा[1] से प्राप्त एक विलक्षण भांड-खंड एक कृषक के परिवार तथा पशुधन का चित्र प्रस्तुत करता है। मोहेंजोदड़ों से उपलब्ध धूसर भांड पर साधारणतया प्राप्त एक विचित्र उद्देश्य एक बड़े कंधे के समान है, पर यह एक वृष का रूढ़ीकृत उल्था हो सकता है।

भारत में बड़े पैमाने पर फायेंस (Fayence) का उत्पादन होता था। कंगनों (फ० XXX, द), छोटी मूर्तियों (फ० XXX स) मुद्राओं और मनकों एवं सामान्य मृद्भांडों के आकारों के अनुकारी छोटे पात्रों के लिए इसका उपयोग किया जाता था। मोहेंजोदड़ों में प्रारंभिक और मध्य स्तरों से उपलब्ध कुछ मृद्भांड खंड विशुद्ध रूप से काचित हैं। इसके विपरीत, पत्थर के वर्तन दुष्प्राप्य थे। आयातित पात्र अत्यधिक आकर्षक हैं और प्रारंभिक राज वंशीय २ काल में मेसोपोटेमिया में आयातित उत्कीर्ण प्रस्तर-पात्रों के अनुरूप हैं।

जैसा पहले कहा गया है, हथियार अत्यधिक दुर्लभ थे। छिक्का सर्वमान्य था। गोल और अंडाकार ढ़ेलवांस 'की गोलियां बिल्कुल सामान्य हैं। गदा के सिरे भी उपलब्ध होते हैं जो साधारणतया बेबिलोनियां की तरह गोलाकार या नाशपाती के आकार के हैं और अपवाद स्वरुप चक्राकार हैं। अनलाश्म के अस्त्र-शस्त्र अज्ञात हैं और वस्तुतः अनलाश्म एवं प्रस्तर के उपकरणों का प्रतिनिधित्व सिर्फ कुछ बिल्कुल सादे फलक और कुल्हाड़ियों की तरह शल्क उतार कर बनाए गए चर्ट (Chert) के एकाध बड़े उपकरण करते हैं। इनमें से एक ठीक नार्दिक (Nordic) मोटे छोर की कुल्हाड़ी की तरह तिर्यक् छेदित समकोण चतुर्भुजाकार हैं।

मृद्भांडों के पश्चात् मुद्राएं (फ० XXX) सैंधव संस्कृति एवं कला के विशिष्टतम उत्पादन हैं। सेलखड़ी की चतुष्कोण गुटिकाएं सामान्यतम हैं। इनकी पीठ उभाड़दार हैं और ऊपरी भाग उत्कीर्ण है। काटी जाने के बाद वे काचित की गई थीं। उन पर अनुद्वाचित लिपि में व्याख्या और उत्तर रीति से निष्पादित पशुओं की मूर्तियां उत्कीर्ण हैं। (बाहुल्य के क्रम में) यूनिकॉर्न्स (Unicorns) छोटी सींगं वाले सांड़, ब्रह्माणी सांड़, हाथी, गैंड, बाघ, भैंस, मगर और हरिण (प्रमुख) हैं। इसी प्रकार की प्रबुद्ध शैली में समान अभिकल्प चपटी ताम्र-गुटिकाओं, जिनकी पीठ पर

१. वाटस (Vats) हड़प्पा, फ० lxix, ३; सं० १६ एक मछुवे तथा जालों को प्रदर्शित करती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक लेख है, पर उत्कीर्ण पाए गए हैं। लंबी और संकुचित मुद्राएं भी उपलब्ध हैं जो लंबान के वल छिद्रित हैं और जिनपर केवल अभिलेख ही हैं। सेलखड़ी या फायेंस की समकोण चतुर्भुजाकार बटन की तरह बनाई गई मुद्राएं ज्यामितिक प्रतिरूपों और स्वस्तिक से विभूषित हैं। यद्यपि इन सभी वस्तुओं का वर्गीकरण मुद्राओं के रूप में हुआ है, पर, कभी किसी वस्तु को मुद्रांकित करने में इनके उपयोग का कोई साक्ष्य नहीं है। इसके विपरीत, मेसोपोटेमिया या मिस्र में मुद्राओं की अपेक्षा मुद्रांकन अधिक सामान्य है। भारत में पकी मिट्टी की छोटी गुटिकाएँ, जिनपर मुद्रा के चित्रों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है, और जो अपने आप में पूर्ण हैं, इस दिशा में निकटतम मार्ग प्रशस्त करती हैं। अतः "मुद्रा" यह पद रूढ़ है और इस प्रकार से सूचित पदार्थों को कर्मकांड की श्रेणी में रखना होगा, जो यह कहने की वैदुष्यपूर्ण पद्धति होगी कि हमको उनके स्वरूप का ज्ञान नहीं है।

मनोयोगपूर्वक बनाए गए पत्थर के चक्र और चतुर्भागीय समत्रिकोण (Tetrahedra) सुमेर की तरह यहां भी जुआरियों से संबद्ध रहे होंगे। पासे का खेल अवश्य खेला जाता था। पास सुमेर की तरह त्रिघातीय (Cubical) रहता था। पर, अंक भिन्न प्रकार से रखे जाते थे।

पुरुष शाल ओढ़ते थे, जिसे (वे) कंधों के चारों ओर रखते थे। स्त्रियां बुना हुआ वस्त्र जिनमें पिन की आवश्यकता नहीं पड़ती थी, पहनती थीं। मिस्र और मेसोपोटेमिया के भूषाचारों के विपरीत चूड़ियां बहुत लोकप्रिय थीं। वे पालिशदार मिट्टी, (लाल या गहरी भूरी) धातु, छिलके या फायेंस (बहुधा पसुलियों या चक्करदार किनारों से सज्जित) की बनती थीं। मेसोपोटेमिया की तरह बाल सोने के फीते के फंदों से बांधा जाता था। अनेक लड़ियों के हार कंठ में पहने जाते थे। सोने या सोने के मुलंमा किए हुए छोर बहुधा अर्धवृत्ताकार हैं। यह प्रकार पुरातन राज्यकालीन मिस्र और बिब्लोस (Byblos) में प्राप्त है, पर, एलाम (Elam) से प्राप्त संभवतः अधिक प्राचीन (फ० XXXI, शीर्ष) चित्रित खप्परों पर प्रदर्शित हैं। सुमेर, मिस्र और ट्राय तक में समान रूप से उपलब्ध होने काले पूर्वोल्लिखित (पृ० १६४) गोल टिकली के आकार के सोने के मनकों के अतिरिक्त हमें लटकनों के लिए सोने की टोपियां मिलती हैं जिनमें भीतर की ओर छोटी गांठ टांक दी गई है (फ० XXXI, तल) (यह प्रकार पुनः ट्राय में उपलब्ध होता है। फांयस के वृत्तखंडित मनके हड़प्पा-सभ्यता अथवा इसकी बर्बर उत्तराधिकारियों[1] की केवल बहुत नवीनतम अवस्था से संबंधित

१. ऐंशियेंट इंडिया, iii, १२३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जान पड़ते हैं। श्वेत प्रतिरूपों[1] से रेखित अकीक (Carnelian) के मनके जो दुष्प्राप्य हैं, पर गारे में अनुकृत हैं, और अकीक के लंबे द्विशङ्कु (Bicons), जैसे कि उर (Ur) के राजकीय मकबरों में पाए गए हैं, एवं ठीक उसी कब्रिस्तान[2] में रानी शब् अद् (Shub-ad) में मकबरे में (उपलब्ध) कुछ वेलनों के समान सुलेमानी पत्थर का एक चिपटा वेलन भी उल्लेखनीय हैं। तथापि, विशिष्टतम भारतीय मनका धारीदार या दांतेदार किनारा वाली एक छोटी गोल टिकली के रूप में जान पड़ता है। ताबीज दुष्प्राप्य हैं। फायंस की वनी पशुओं की सूक्ष्म मूर्तियां यहां सम्मिलित की जा सकती है। भेड़ों की टांगें ठीक उसी शैली में नीचे की ओर दुहरी कर दी गई हैं जिसमें उर (Ur) में राजकीय मकबरों से प्राप्त वैदूर्य के भेड़ और सांड़ हैं। हड्डी या हाथी के दांत की एक मक्खी के आकार की तावीज अनूठी हैं और संभवतः मिस्रीय अथवा सुमेरीय प्रकारों की अनुकृति है।

समउन्नतोदर गोल टिकुलियों के आकार के सेलखड़ी[3] के कनपटी के अलंकरण या बटन, जो अधोमुखी-कृत व्ही (V) के रूप में एक विंदु पर मिलने वाले दो छिद्रों के द्वारा चौरस तल पर छिद्रित है, समशीतोष्ण यूरोप के प्रागैतिहासिक "ताम्रयुग" में परिचित प्रकार का निदर्शित करते हैं।

अबतक ज्ञात एकमात्र नियमित हड़प्पा कब्रिस्तान[4] में साक्षीकृत शव-संस्कार प्रसारित मुद्रा में एक लंबी गर्त शवाधि में केवल शवाधान (के रूप में) था। शरीर के साथ अनेक पात्र, व्यक्तिगत अलंकरण और प्रसाधन सामग्री रहती थीं। नरकुल में कफन में लपेटा हुआ कम-से-कम एक शव लकड़ी के तावूत में लेटा हुआ था। पर, थारो[5] (Tharro) की समुद्र तटीय बस्ती के नजदीक १० फीट लंबे, ३ फीट चौड़े और २ फीट ऊंचे सूख पत्थर के कमरों में हड़प्पा काल के शवाधान रहे होंगे। इसके विपरीत दोनों मुख्य उत्खात स्थलों में दाह शवाधनों और कशलों[6] में अवशेष शवाधानों के विवरण दिए गए हैं। जबकि घरों या गलियों[7] में एकल अथवा समुदाय-बद्ध पूर्ण

१. आइ० आर० ए० एस०, १९२५, ६९८, मेन ३३ (xxxiii) (१९३३), १५०, ऐंशियेंट ज०, १३ (xiii) १९३३, ३८४।

२. एंटक्विटी, व्ही (v), १९३१, ४५९।

३. चन्हुदड़ो (Chanhudaro), १९७, हड़प्पा, ४४३।

४. ऐंशियेंट इंडिया, iii, १९४७, ८६—९।

५. पिग्गॉट (Piggott), पी० आइ०, २०७।

६. मोहेंजोदड़ो, i, ८६ बाद, हड़प्पा, १६१।

७. मोहेंजोदड़ो, ii, ९४, हड़प्पा, १९७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कंकाल प्रकाश में लाए गए हैं। पर, कलश-शवाधानों का अंत्येष्टि स्वभाव संदिग्ध हैं, (क्योंकि) गलियों और घरों से प्राप्त कंकाल औपचारिक शवाधानों को नहीं सूचित करते हैं और संभवतः आक्रमणों या महामारियों के शिकार बने व्यक्तियों से संबंध हैं।

यह प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त कहा जा चुका है कि भारत तृतीय सहस्राब्दी तक अपनी पूर्णतः विशिष्ट एवं स्वतंत्र सभ्यता के साथ मिस्र और बेबिलोनिया का सामना करता है। यह सभ्यता शिलपतः अन्य सभ्यताओं के समक्ष है। और स्पष्टतः यह भारतीय भूमि में पूर्णतया बद्धमूल है। सैन्धव सभ्यता विशिष्ट परिवेश के साथ मानव जीवन के पूर्णतम सामञ्जस्य को सूचित करती हैं। यह सामञ्जस्य वर्षों के अथक प्रयास का ही परिणाम हो सकता है। और, इसने चिरस्थायित्व पाया है। यह प्रारंभ से ही विशिष्ट रूप में भारतीय है और आधुनिक भारतीय संस्कृति के आधार का काम करती है। वास्तुकला और उद्योग में तथा उससे अधिक वेशभूषा और धर्म में मोहेंजोदड़ो उन विशेषताओं को प्रकट करता है जो सदा ऐतिहासिक भारत की विलक्षणता रही है। इनमें से कुछ का यहां उल्लेख किया जा सकता है।

स्थापत्य में चूना और सिरमिट के अनुमानिक उपयोग, स्नानालयों की संख्या तथा शौचालयों के वास्तविक अभाव के अतिरिक्त एक प्रकोष्ठ है, जिसमें कुआं और जलपात्रों के लिए चबूतरे हैं और जो पियाड़ या पनसाल का निश्चित पूर्वगामी प्रतीत होता है, जो भारतीय बाजार का विभेदक वैशिष्ट्य है। छकड़े और नौकाएं जैसा पहले कहा गया है, अब भी देश में उपयुक्त छकड़ों और नौकाओं से मिलती-जुलती हैं। पलंगों के मिट्टी के प्रतिमान आजकल भारत में व्यहृत आकार का चित्र प्रस्तुत करते हैं। फिर भी, इनके समानांतर प्राचीन सूसा (Susa) और असीरिया में भी उपलब्ध होते हैं। जान पड़ता हैं कि सिंध के कुम्हारों ने प्रत्यक्ष रूप में सिंधुकाल से अपने शिल्प का दाय पाया है। पिनों का अभाव, चूड़ियों का प्रेम और विस्तृत नासा-भरण---ये सभी विलक्षणताएं भारतीय लक्षण हैं। अन्य स्थानों की तरह यहां भी आंखों के लिए काजल का प्रयोग किया जाता था। पर, मोहेंजोदड़ों में यह छोटी कुप्पियों में रखा जाता था और विशिष्ट रूप में भारतीय प्रतीत होने वालीताम्र शलाकाओं द्वारा लगाया जाता था। बालों में धारण किए जाने वाले हाथी-दांत के कंघे आजकल भी धारण किए जाने वाले लकड़ी के कंघों से ठीक-ठीक मिलते हैं। मोहेंजोदड़ों से प्राप्त पत्थर या मिट्टी के रूखड़े अंगघर्षक (Flesh-rubbers) संप्रति भारत में व्यवहृत प्रसाधन सामग्रियों के समान हैं। फिर भी, उनके समानांतर प्रारंभिक वंशीय समयों में किश (Kish) में भी प्राप्त होते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

धर्म[1]-सैंधव सभ्यता के स्पष्टतः भारतीय स्वरूप का सबसे अधिक प्रत्यायक निदर्शन प्रदान करता है। प्राचीन नगरों से उपलब्ध अनेक अन्यथा अबोधगम्य, पदार्थों की संतोषजनक व्याख्या हिंदू उपासना पद्धति के संदर्भ में दी जा सकती है। मिट्टी की असंख्य सूक्ष्म मूर्तियों की समानांतर वस्तुतः अन्य स्थानों में भी पाए जाते हैं। भारत में इनमें से अधिकांश (मूतियां) नारी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती हैं जो बहुवा रत्नाभरणों से पूर्णतः अलंकृत है और कभी-कभी गर्भिणी अथवा शिशु की परिचर्या करती हुई दिखाई गई हैं। इनमें से कुछ देवता की संकल्पित छोटी प्रतिमाएं हो सकती हैं, पर अन्य (मूर्तियां) भक्तों या गुड़ियों को सूचित कर सकती हैं। इस प्रकार पशुओं के मिट्टी के प्रतिमानों में बहुलता से प्राप्त ब्राह्मणी सांड़ पवित्र समझे जा सकते हैं, पर अन्य, जैसे चलायमान मस्तक से युक्त बैल समान रूप से सामान्य छकड़ों, पलंगों, रोटियों (Loaves) और पात्रों के लघु रूपों की तरह स्पष्ट रूप में खिलौने हैं। पर, कुछ प्राणि प्रतिमेतर (Aniconic) पदार्थ हैं जिनमें पत्थर के विशाल शिश्न हैं और चक्रिकाए (Rings), जो किनारे पर तरंगित हैं, उल्लेखीनय हैं और हिंदू उर्वरता-संप्रदाय (Fertility-cult) के लिगों और योनियों के अनुरूप हैं।

दबाई हुई मिट्टी, उत्कीर्ण तांबे या ढाले हुए फांयस (Fayence) की मुद्राऐं और गुटिकाऐं अपेक्षाकृत अधिक निर्णायक साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं। मोहेंजोदड़ों से प्राप्त एक मुद्रा वन्य पशुओं के बीच समाधि मुद्रा में पैर-पर-पैर चढ़ाकर आसन लगाए बैठे हुए एक त्रिशीर्ष एवं शृंग-धारी देवता का चित्र प्रस्तुत करती है। वह स्पष्टतः शिव "त्रिमूर्ति", "पशुपति" और "योगीश्वर"—जैसा कि मार्शल (Marshall) ने विस्तारपूर्वक प्रदर्शित किया है—, का आद्य रूप है। मिट्टी की अनेक गुटिकाए एक पुरूष देवता को चित्रित करती हैं। इसमें से एक-एक देवी के गर्भ से प्रभावित होने वाली नदी को प्रदर्शित करती है। अन्य स्थितियों में वृक्षात्माएं स्पष्टतः निर्दिष्ट हैं। हिन्दू मूर्तिकला में परिचित इस प्रकार की सभी विषय-वस्तुओं के विपरीत बाघों को पकड़े हुए एक नायक का परस्पर विरोधी दल और एक सांड़ या बाघ से बाहुयुद्ध में रत सुमेरीय एंकिदु (Enkindu) जैसा एक अर्द्धमानव-राक्षस हैं जो बेबिलोनिया के सूचक एकाकी प्रेरक उद्देश्य है। मुद्राओं पर सामान्य रूप से प्राप्त स्वस्तिक और ध्यान मुद्रा धार्मिक वा संमोहनात्मक प्रतीक हैं—जैसे कि प्रारंभिक प्रागैतिहासिक काल में बेबिलोनिया और इलाम (Elam) में उपलब्ध हैं। पर, अन्य स्थानों की तरह आधुनिक भारत में भी यह विशेषता सुरक्षित है।

---

१. मोहेंजोदड़ो, १, ४८—७८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

पूर्वंगामी प्रलेखों से सूचित धार्मिक अवधारणाएं आधुनिक एवं वेदोत्तरकालीन हिंदू धर्म में परिचित हैं। पर, वे हिंदुओं के प्राचीनतम धर्म-ग्रंथ, ऋग्वेद में प्रत्यक्षत: अविद्यमान हैं। ऐसी स्थिति में सेंधव काल में इसके सूक्तों के निर्देशक दृश्यों की खोज संभवत: व्यर्थ होगी। हड़प्पा और मोहेंजोदड़ों में चित्रित शिव साधारणत: आदिवासियों का देवता माना जाता है, जिसे आक्रमणकारी वैदिक आर्यों ने स्वीकार कर लिया और वेद के गौण देवता प्रजापति के साथ शाब्दिक तादात्म्य स्थापित किया। वैदिक पुराण में वृक्षात्माओं और देवियों का उपेक्षणीय स्थान है और लिंग-पूजा का उल्लेख नहीं है। इन सभी तत्त्वों को यूरोपीय विद्वानों ने ब्राह्मण धर्म में वेदोत्तरकालीन समवृद्धि माना है। विपरीत रूप से, वैदिक विश्वदेवता गण में वज्रधारी इंद्र जैसे दिव्य पुरूष सेंधव काल में अनुसंधेय नहीं है। वैदिक कल्पना में अत्यधिक विशिष्ट स्थान रखनेवाला अश्व, जो यज्ञ का मुख्य पशु है, मुद्राओं पर, जो अबतक धार्मिक प्रभाव अवश्य ही प्राप्त कर चुका होगा, कभी चित्रित नहीं हुआ है।

सिर्फ उपयुंक्त कारणों से सैंधव सभ्यता आर्येतर एवं प्रागैतिहासिक मानी जा सकती है। वस्तुत: यह उन सहरूढियों (Accretions) के, तुलनात्मक आधारों पर पूर्वनिर्मित स्रोतों का प्रलेखात्मक निदर्शन प्रस्तुत करती है जो वेदों में प्रतिपादित धर्म और कर्मकांड से आधुनिक ब्राह्मण-धर्म को पृथक् करती हैं।

जैसा अब हम देखते हैं, सैंधव सभ्यता में प्रदर्शित भारतीय पर्यावरण की ओर सुकुमार एवं स्थायी अनुकूलन का कार्य और विस्तृत क्षेत्र में इसका प्रसार इस स्थान में अंतर्विकास (Incubation) की लंबी अवधि के बाद ही संभव हुआ होगा। तथापि यह सभ्यता विशिष्ट रूप से भारतीय के रूप में मिस्र और सुमेर की सभ्यताओं से भिन्न रहने पर भी उन्हीं मौलिक विचारों, आविष्कारों और उद्भावनाओं पर आधारित है जिस पर वे दोनों सभ्यताएं आधारित हैं। नगर जीवन, अन्नोत्पादन, गोवंश एवं मेषों का दमन, धातु-विज्ञान, वस्त्रोद्योग, ईंटों और भांडों का निर्माण, मनकों के लिए कठोर प्रस्तरों (रत्नों) का व्यधन, वैदूर्य के लिए प्रेम और फायंस का ज्ञान (इन विषयों में) साम्य वस्तुत: अधिकांश रूप में बिलकुल सामान्य और अमूर्त हैं। पर, ऐसी स्थिति में भी, समान वातावरणों में पुंजित स्वतंत्र उद्भावनाओं के रूप में इन्हें स्वीकार करना कठिन है।

सिंध और तिग्री-फराती घाटियों के बीच प्रत्यक्ष वाणिज्यिक संपर्क मेसोपोटेमिया से प्राप्त हड़प्पा के वास्तविक उत्पादनों द्वारा निर्दोष पूर्वक प्रदर्शित होता है। यह दोनों सभ्यताओं के बीच कुछ बाह्य समताओं की ही व्याख्या प्रस्तुत कर सकता है, पर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दोनों के सामान्य अंतरंग शिल्प-वैज्ञानिक एवं आर्थिक आधारों को नहीं। तथापि, यह उस सभ्यता की तैथिकी के लिए विश्वसनीय आधार प्रदान करता है जो प्राक्-साक्षर नहीं होते हुए भी हमारे लिए प्रागैतिहासिक है। हड़प्पा काल के लिए अंतिम सीमा (Terminus Ante Quem) प्रदान करने वाले मेसोपोटेमिया में आयातित सुनिर्धारित तिथि वाले पदार्थ सारगन युग (Sargonid age) से संबंधित हैं। केवल एक मध्यवर्ती क्षेत्र से इन दोनों प्रदेशों में आयातित कुछ मुद्राएं और प्रस्तर-पात्र २६५० खृ० पू० से पहले प्रारंभिक वंशीय समयों में व्यापारिक संबंध सूचित करते हैं। मेसोपोटेमिया में अक्कद (Akkad) के उत्तरकालीन संदर्भ से प्राप्त सिंधु की अन्य मुद्राएं २००० खृ० पू० तक हड़प्पा-सभ्यता की साग्रह सत्ता को सूचित करती हैं। अतः स्पष्ट है कि हड़प्पा सभ्यता प्रारंभिक वंशीय सुमेरीय सभ्यता के मात्र स्थानांतर रोपण अथवा अनुकरण की परिणति नहीं है। दोनों सभ्यताएं एक ही प्रकार के भौतिक आविष्कारों और उद्भावनाओं पर आश्रित हैं। पर, उरूक समयों (Uruk times) में आधुनिकतम सामान्य तत्त्वों के मेसोपोटेमिया पहुंचने के समय से दोनों प्रदेशों में ये स्पष्टतः दीर्घकाल तक भिन्न रूप में विकसित हुईं।

उस सहस्राब्दी में भारत में इन विकासों का १६५० ई० में कुछ भी साक्ष्य उपलब्ध नहीं है। सिंधु के नगर अनेक बार विध्वंसक बाढ़ों द्वारा नष्ट कर दिए गए थे। प्रत्येक दुर्घटना के बाद मकान के स्तर ऊंचे कर दिए जाते थे। पुराने भू-स्थलवर्ती प्रकोष्ठ मिट्टी या ईंट से भर दिए जाते थे, जबकि कुओं के मोहड़े (Well-shafts) ऊपर की ओर बढ़ा दिए जाते थे, जिसके परिणामस्वरूप आजकल वे प्रारंभिक आधारों पर कारखानों की ऊंची चिमनियों की तरह खड़े हैं। इस प्रकार अवशिष्ट निक्षेप बहुत ही गहरे हैं। पर, उत्तरोत्तरवर्त्ती स्तरों में अंतर प्रदर्शित करने के लिए महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन दृष्टिगोचर नहीं हो सकते हैं। हड़प्पाकालीन सभ्यता आदि से अंत तक लिपि या कला में धातु कर्म या वास्तुकला में प्रगति के चिह्नों को प्रदर्शित नहीं करती है।

तथापि हड़प्पा में दुर्ग की दीवार के नीचे कुछ भांडों के टुकड़े निकले हैं जो चाक पर बने होने के बावजूद हड़प्पा की मृच्छिल्प माला में कोई स्थान नहीं रखते हैं। पर, ये (उन) निरक्षर ग्रामीणों[1] की बस्ती को व्यक्त करते हैं जिनके बंधु प्राक्-हड़प्पा काल में उत्तरी बलूचिस्तान में रहते थे। और इसी प्रकार मजुमदार[2] को अवर

१. पिगॉट (Piggott), पी० ई०, १४२, ऐंशियेंट इंडिया, iii, ६१—३।

२. मेंवायर्स आफ इंडिया, xlviii, १६३४, २५ आगे; तुलनीय, पिगाट, पी० आई० ६४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिंधु घाटी में, सिंधु में और अमरी (Amri) तथा अनेक अन्य स्थलों में बिल्कुल हड़प्पा प्रकार के नगरों के नीचे प्राचीनतर काल से संबंधित वस्तियां और भिन्न प्रकार के मृद्‌भांड मिले हैं। पर, विशिष्ट प्रकार के भांडों को छोड़कर इस अमरी संस्कृति के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है। अमरी का भांड सामान्यता चाक पर बना है। परंतु, इसका रंग फीका है और ज्यामितिक प्रतिरूपों, क्रमानुसार त्रिकोणों, युग्म कुठारों, गुटिकाओं और संवेष्टित चतुष्कोणों, जिनका खाका काले रंग में है और फिर लाल-भूरे रंग से भर दिए गए है, से सज्जित है। यद्यपि केवल भांडकला ही सिंधु घाटी में अभिज्ञात प्राचीनतम संस्कृतियों को प्रदर्शित करती है, तथापि यह पूर्णतया प्रदर्शित करती है कि ये संस्कृतिया पहली वार मेसोपोटेमिया में उरूक काल में प्राप्त शैल्पिक विकास की अवस्था को पहले ही प्राप्त कर चुकी थीं। और यह भी सूचित करती हैं कि यें संस्कृतियां, अमरी और जम्देत-नस्र के वीच शैली और रचना में कुछ साम्य रहने के वावजूद ठीक उसी हद तक मेसोपोटेमीय संस्कृतियों के दूरगामी प्रसार या अनुकृतियां नहीं हैं जिस हद तक हड़प्पा की सभ्यता। परवर्ती (हड़प्पा-सभ्यता) का अंत उसकी शरुआत की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह ज्ञात है। हड़प्पा के नगरों[1] के अंतिम पुनर्निमाण ह्रास के लक्षण प्रदर्शित करते हैं। मध्य वित्त वर्ग के विस्तृत भवनों द्वारा पहले अधिकृत स्थानों पर छोटे घरों के निर्माण के लिये पुरानी ईंटों का फिर से उपयोग किया गया था अव नगराधिकारी अधिक समृद्ध दिनों में दृढ़तापूर्वक पालन किए जानेवाले भवन (निर्माण) विनियमनों को लागू नहीं कर सकते थे। इसलिए मकान सड़कों पर निकल आये थे।

वाद में बर्बर आक्रमणकारियों द्वारा यह सभ्यता नष्ट कर दी गयी और फिर इन निरक्षर विदेशियों ने (यहां के) नगरों पर अधिकार जमा लिया। हड़प्पा[2] में एच (H) कब्रिस्तान में केवल प्रसारित और निकुंचित शवाधानों और उनके साथ दिए गए विचित्र रूप से रंगे हुए पात्रों द्वारा इनका परिचाय प्राप्त होता है। सिंध में[3] चन्हुदड़ों और झूकर में संस्कृति (के नाम से ज्ञात) एक भिन्न प्रकार की वर्वर संस्कृति ने हड़प्पा सभ्यता का स्थान ले लिया। हर जगह अंतर्लेखयुक्त मुद्राओं में उदाहृत साक्षर परंपरा लुप्त हो गई। पर, कब्रिस्तान H और झूकर स्थलों से प्राप्त भांडों और परवर्ती (झूकर) स्थलों से उपलब्ध धातु की वनी सामग्री के आधार पर निर्णय करने

---

१. मैके (Mackay), मोहेजोदड़ो, ii, ६; चन्हुदड़ो, २३—५।

२. वाट्स (Vats), ड़ड़प्पा, २२० आगे; तु० ऐंशियेंट इंडिया, iii, ७४—९८।

३. मैके (Mackay), चन्हुदड़ो, २४, १०३, १४४, १८८, २०८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पर सिद्ध होता है कि कुछ शैलिपक परंपराएं प्रवाहित रखी गई। संभवतः कुम्हार और धातुकार (लोहकार आदि) नए ग्राहकों के हेतु कार्य करने के लिए बच गये थे। स्वभावतः वे विदेशी अभिरुचि के अनुरूप अभिनव वस्तुएं बनाते थे।

झूकर और H कब्रिस्तान से प्राप्त भांड अब भी चाक पर बनाया जाता था और पुरानी शैलियों में रंगा और पकाया जाता है। पर, इसका आकार भिन्न प्रकार का होता था एवं नए अभिकल्पों से अलंकृत किया जाता था। झूकर के लोहार तीर छिद्र (Shaft hole) कुठार के सिरे और संभवतः कुठाराकार वसूले और मोटी गरदन वाले कांटे बनाते थे। पत्थर, फायेंस या मिट्टी के बटन या मनके के आकार की मुद्राओं ने समकोण चतुर्भुजाकार सेलखड़ी की काचित मुद्राओं का स्थान लिया और अंतर्लेखों एवं जीवित तुल्य पशुओं के बदले (इन पर) ज्यामितिक अभिकल्प उत्कीर्ण थे। इनमें भरी हुई व्यत्यरत रेखा और यदा-कदा परंपरागत पशु संमिलित थे।

छेददार डंडेवाली कुल्हाड़ी की तरह बटन के आकार की मुद्रा ने भारत में स्पष्टतः पश्चिमोत्तर से अनधिकार प्रवेश किया। झूकर मुद्राओं की निकटतम समानांतर (मुद्राएं) और कुल्हाड़ी के आकार के वसूले का ठीक समानांतर उत्तरी ईरान[1] में हिसार तृतीय (स्तर) से उपलब्ध होता है। बाद में मक्रन (Makran) और बलूचिस्तान से प्रसिद्ध मध्यवर्ती कड़ियां प्रोद्भूत की जाएंगी। ये समताएं सूचित करती है कि हड़प्पा की सभ्यता को नष्ट करने वाले बर्बरों में कम से कम पश्चिमोत्तर ईरान से आनेवाले आक्रमणकारी संमिलित थे। ह्वीलर[2] ने वैदिक आर्यों के साथ दृढ़ता के साथ इनका तादात्म्य बताया है। किसी भी स्थिति में, ऋषियों ने अपने वैदिक सूक्तों का गान प्रागैतिहासिक निशा में किया। क्योंकि, आक्रमण ने साहित्यिक परंपरा को पूर्णतया छिन्न-भिन्न कर दिया और दारियस (Darius) के शासन-काल तक भारती इतिहास में कोई निश्चित संकेत नहीं है।

---

१. पिग्गॉट, ऐंटिक्विटी, xvii, १९४३, १८०; ऐंशियेंट इंडिया, १,१९४६, १७।
२. ह्वीलर (Wheeler), ऐंशियेंट इंडिया, iii, ८२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दशम अध्याय

दजला-तिग्री से सिंधु तक

मेसोपोटेमिया और सिंधु घाटी के बीच के बहुसंख्यक टीलों से गत बीस वर्षों में उपलब्ध पुरातात्त्विक सामग्री का सर्वेक्षण इस पुस्तक के उद्देश्यों के लिए दो प्रकार से संगत होगा। क्या वे उत्तर-पाषाण-कालीन-क्रांति—कृषि की उत्पत्ति पर कुछ प्रकाश डालते हैं? एशियाई सभ्यता के दो प्रथम केंद्रों, एशिया में नगर-क्रांति के उत्पत्ति-स्थलों, के बीच संस्कृति के प्रसार को वे किस हद तक निर्देशित करते हैं ?

मध्यवर्ती स्थल में इरान का विस्तृत समतल व्याप्त है। इसका जलोत्सारणहीन (Undrained) हृदय अब मरूस्थल है। पर, इसको आवेष्टित करने वाली उत्तुंग पर्वतों की समानांतर शृंखलाएं सार्वकालिक स्रोतों, स्थायी नदियों एवं अनियतकालिक धाराओं के पोषक अधःसाद (Precipitation) को ग्रहण करती हैं। इनके द्वारा पर्वत के तटवर्ती नखलिस्तानों और पश्चिम, दक्षिण तथा पूर्व में समानांतर शृंखलाओं के बीच की घाटियों की उर्वर भूमि की सिंचाई होती है। तर्क की दो दिशाओं ने वनस्पति शास्त्रियों को यह आशा करने की प्रेरणा दी है कि कभी पठार के चारों तरफ अनाज अपने आप उगते थे। यह मान्य रूप के—सतालू और शायद अंगूर जैसे अनेक फलवृक्षों का उत्पत्तिस्थल है। जंगली भेड़े अब भी पहाड़ी चरागाहों में चरते हैं जो प्रागैतिहासिक पात्रों पर चित्रित किए गए थे। पठार से ठीक उत्तर ट्रंसकेस्पियन बंजर स्थल चिरकाल से तेज घोड़ों का घर माना जाता है जबकि बैक्ट्रियन ऊंट आस-पास के स्थानों में सुविधापूर्वक रहे होंगे।

इस प्रकार उत्तरपाषाणकालीन क्रांति के लिए परिस्थितियां परिपूर्ण की गई हैं। पर, लगातार अनावृष्टि-मूलक बाधा और सिंचन योग्य भूमि के अत्यधिक परिसीमन ने अपने पशुओं की वृद्धि चाहनेवाले किसानों को घाटी से पहाड़ी चरागाहों में मौसमी प्रव्रजन के लिए बाध्य किया होगा। अंततः उन्हीं आवश्यकताओं ने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रसारशील कृषक वर्ग की नई पीढ़ी को नवीन भूमि की खोज में दूसरी घाटी में प्रव्रजन के लिए प्रेरित किया होगा। क्योंकि, यहां बड़े पैमाने पर आर्थिक अथवा राजनैतिक एकीकरण के प्रोत्साहन वा प्रवर्तन के लिए एकल नदी प्रणाली पर निर्भर रहने वाले विस्तृत एवं अविच्छिन्न क्षेत्रों का अभाव है। और न तो कच्चे माल की ऐसी कमी ही थी जिसने मिस्र, सुमेर और सिंधु में स्वस्थ प्रोत्साहन प्रदान किया। अनेक नखलिस्तान स्वतः पूर्ण हो सकते थे। औद्योगिक एवं व्यापारिक अर्थव्यवस्थागत आध्यवसायिक संगठन के बिना केवल जीवन संभव था। व्यवहार में नगराश्रित जीवन (के प्रारंभ) में पूर्ण विलंब हुआ। खृष्टाब्द पूर्व प्रथम सहस्राब्दी तक फारस निरक्षर रहा। बलूचिस्तान किसी ऐतिहासिक राज्य के अधीन अनेक ग्राम्य जनजातीय इकाइयों में विभक्त असभ्य प्रदेश के अतिरिक्त और कुछ न हो सका। इसके विपरीत लकड़ी और कच्चे धातु के अधिकार ने सभ्यता के घटकों के अभ्यागमन को प्रेरित किया। वस्तुतः इस प्रकार के संपर्क ने बर्बर ग्रामों को साक्षर नगरों में परिवर्तित नहीं किया। पर, बड़ी नदी घाटियों में आसानी से उत्पादित बचत में पर्वत निवासियों के लिए एक हिस्सा सुरक्षित किया होगा। उनके लिए इसने निश्चित रूप से आवश्यक आयात उपलब्ध किए जो आधुनिक पुरातत्वज्ञों को टीलों में तैथिक क्षितिज प्रदान करते हैं।

आजकल इस क्षेत्र के अधिकांश भागों में अपेक्षाकृत विरल आबादी है। पर, इसके उच्च स्थलीय छोरों पर टीले बिखरे पड़े हैं जो अपेक्षाकृत प्रागैतिहासिक घनी आबादी का संकेत करते हैं। कृपया "अपेक्षाकृत" शब्द पर ध्यान दें। प्रथम अवसर में तुलना समसामयिक बेलजियम या ब्रिटेन के साथ हैं और द्वितीय में समसामयिक इरान के साथ न होकर खृष्टाब्द पूर्व तृतीय सहस्राब्दी में बेलजियम या ब्रिटेन के साथ की जाती है। पांच हजार वर्ष पूर्व दुनिया में कोई भी क्षेत्र आधुनिक अर्थ में "घनी आबादी" वाला नहीं था।

पश्चिमी इरान में अधिकांश घाटियों और निचली पहाड़ियों में एक छोर से दूसरे छोर तक टीले व्याप्त हैं। वहां से पूरब की ओर केंद्रीय मरुस्थल भी चारों ओर फैले हुए हैं और एक ओर तुरानी घाटी और संभवतः हेलमंड (Helmund) तक फैले हुए एलबर्ज के तल-पर्वतों तक भी व्याप्त हैं। दक्षिण में फार्स (Fars) और मक्रान (Makran) की घाटियां टीलों से भरी पड़ी हैं। पर, अरब सागर के तट पर प्रागैतिहासिक बस्ती का कुछ भी चिह्न नहीं मिलता है। बलूचिस्तान की उच्च स्थलीय घाटियों में एक न एक शृंखला अविच्छिन्न रूप से स्थित है। सर ओरेल स्टेन (Sir Aurel Stein) द्वारा परीक्षित बहुतेरे टीलों ने "प्रागैतिहासिक प्रकार" के चित्रित

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भांडों का प्रचुर संग्रह प्रदान किया है। पर, भांड-खंड सुस्पष्ट स्थानीय वैविध्य प्रदर्शित करते हैं और वस्तुतः विस्तार या समरूपता में हलफियन (Halafian) वा उवेद संस्कृति से तुलनीय सस्कृतियों को परिभाषित नहीं करते हैं। यह सत्य है कि पश्चिम और उत्तर में काले रंग के लिए पृष्ठभूमि बहुधा लाल प्रतीत होती है और दक्षिण एवं पूर्व में प्रायः फीके धूसर रंग की। मेक् काउन[1] (Mc Cown), जिनका अनुसरण पिगॉट (Piggott) करते हैं, इसके अनुसार "लाल भांड" और "धूसर भांड-संस्कृति" में विभेद प्रदर्शित करते हैं। लेकिन ये शैल्पिक विलक्षणताएं भी आंचलिक रूप में दृढ़तापूर्वक वितरित नहीं हैं। और अपने आप में किसी "संस्कृति" को परिभाषित करने में पर्याप्त नहीं हैं। इसके विपरीत, समस्त क्षेत्र के एक सामान्य वैशिष्ट्य का पता लग सकता है। यद्यपि प्रस्तर के उपकरण एवं भांड-खंड बहुधा उपलब्ध होते हैं, पर बाण के सिरे विचित्र रूप से दुष्प्राप्य हैं और उत्खनित स्थलों में सर्वदा पश्चात्-कालीन हैं। इसके विपरीत, पश्चिमोत्तरीय एवं दक्षिण-पश्चिमीय इरान और ट्रांसकेस्पिया (Transcaspia) में भी, प्रत्येक उत्खनन मिट्टी की बहुसंख्यक ढेलवांस की गुलिकाओं को प्रकाश में लाता है।

अन्य स्थानों में हम स्थानीय संस्कृतियों का नितांत बाहुल्य पाते हैं। और, कुछ क्षेत्रों में संस्कृतियों के स्तर भिन्नानुसार निर्णीत तिथि वाले समयानुक्रम प्राप्त होते हैं। वे टीलों में हड़प्पा या मेसोपोटेमिया में बने कुछ सामान छोड़ गए हैं। और, इन सामानों ने निर्धारित तिथि संपन्न क्षितिज प्रदान किया है। कुछ उदाहरणों में इस प्रकार निर्धारित तिथि-युक्त क्षितिज से निम्नतर स्तरों में प्राचीनतर अवस्थाओं के निर्णय के कार्य को इसने संभव सिद्ध किया है।

पश्चिमी ईरान के सियालक[2] में सूसियन सभ्यता की साक्षर चौकी उन अवस्थाओं के समयानुक्रम की चरम सीमा है जो उत्तर-पाषाण-कालीन ग्राम में जर्मो (Jarmo) की समाप्ति-बिंदु पर प्रारंभ हुई। सियालक में केंद्रीय फारस के मरूस्थलीय क्षेत्र के पश्चिमी किनारे पर एक बारहमासी सोता नखलिस्तान बनाता है। कम-से कम प्रागैतिहासिक बस्ती के परवर्ती दिनों में प्रयुक्त होने वाला उत्तर-दक्षिण के व्यापार

१. दी कपेरेटिव स्ट्रॉटीग्राफी ऑफ अर्ली ईरान (The Compartive Stratigraphy of Early Iran), ओ० इ० स्ट०, २३, १९४२।

२. गर्समैन (Ghirshman), Fouilles de Sialk, १, १९३८, प्राणियों की अस्थियों पर अभिलेख के लिए ग्रंथ II, १९३९ देखिए।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

को वहन करने वाला एक स्रोत है जो इस नखलिस्तान को अब भी पार करता है। उत्तरोत्तरवर्ती ग्रामों के अवशेष समीपस्थ दो टीलों के रूप में परिणत हैं।

उत्तरीय टीले के तल में स्थित प्राचीनतम बस्ती, १, १, के वास्तुकलागत कुछ भी अवशेष नहीं बचे हैं। इसमें प्रायः नरकुल की झोपड़ियां थीं। पर, ३८ मी० निक्षेप संचित होने के बाद पिसे (Pise) दीवाल वाले घरों के अवशेष १, २ से लेकर १, ५ तक, चार उत्तरोत्तरवर्त्ती वास्तुकलागत स्तरों को स्पष्ट करते हैं। ग्रामवासी मिश्रित कृषि,, जिसमें शिकार और मछली पकड़ने के काम सम्मिलित थे, पर निर्भर थे। शस्य, जो कुछ भी वे रहे हों, ठीक नतूफियन (हंसुओं) की तरह नलिका युक्त प्रसुंवास्थियों के बने और अनलाश्म के दांतों वाले हंसुओं से काटे जाते थे। उनकी तरह इनकी मूठें जीव शास्त्रानुसार उत्कीर्ण थीं। पर, अत्यधिक रोचक प्रकार पीठ पर तह कर के बांधे हुए लहंगा या घांघरा पहने हुए मानव आकार को उपस्थापित करता है (फ० XXXIII)। वृषभ एवं दो प्रकार के मेष भोजन और प्रायः ऊन तथा दूध के लिए भी पाले जाते थे। हिरणों एवं अन्य जानवरों का शिकार किया जात था। शिकारी गदाओं एवं ढ़ेलवांसों का प्रयोग करते थे। ढ़ेलवांस की गुलिकाएं पकाई गई मिट्टी की बनाई जाती थीं। वसूले या कुदाल के पत्थर के फलक शल्क उतार कर बनाए जाते थे। १, ४ से प्राप्त केवल एक नमूने में धार रगड़ कर बनाई गई है। भ्रमियां (Whorls) वस्त्रोद्योग का साक्ष्य देती हैं।

चार प्रकार के मृद्भांड प्रचलित थे। (१) भूसा और रवा मिला हुआ काले रंग का रुखड़ा पात्र, (२) बहुत दुष्प्राप्य काला पात्र, (३) उत्तम कोटि का लाल पात्र जिसमें बहुधा चिकनी मिट्टी पुती रहती थी और उद्भ्राजित रहता था एवं कभी-कभी पाक-क्रिया की अनियमितता के कारण काले धब्बेदार रहता था और (४) भूसा मिला हुआ विशुद्ध धूसर भांड। प्राचीनतम स्तरों को छोड़कर, अंतिमोक्त प्रकार के पात्र साधारणतः और तृतीय प्रकार के भांड बहुधा पूर्ण काले रंग के (चि० १०२) वंश-पात्रगत प्रतिरूपों से प्रसाधित थे। आकार अपेक्षाकृत साधारण हैं, पर कभी-कभी नतोदर या ढाल की तरह उभाड़दार (चि० १०२) बनाकर चिपटे तल वाले आकारों को स्थिरता दी गई। सामान्य प्रकार के पात्र पत्थर के भी बनाए जाते थे।

उबेद संस्कृति एवं "उत्तरपाषाणकालीन" थेसली (Thessaly) में ओष्ठ-रोधनियों (Lip-Plugs) के रूप में समझे जाने वाले पत्थर के कीलों की तरह के मिट्टी के छोटे लोढ़ों से मिट्टी को छोटी ओखलियों में कांतिवर्धक औषधियां पीसी जाती थीं। पत्थर के कंगन एकमात्र अवशिष्ट आभूषण हैं। आकार में उत्तर-पाषाण-कालीन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

होते हुए भी यहां के ग्रामीणों ने व्यापार के द्वारा कम-से-कम ज्वालाकांच (Obsidian)

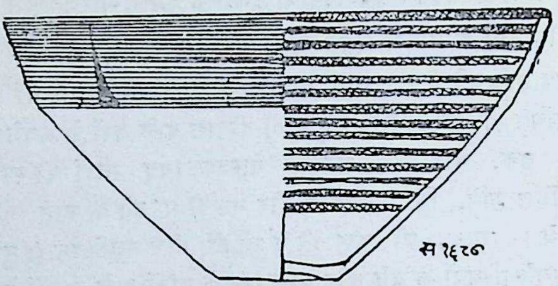

स १६८७

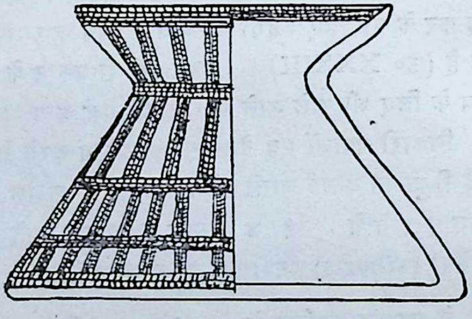

स २५६७

चित्र १०२. सियालक १ से प्राप्त चित्रित पात्र १,¼ ।

का एक :फलक और दो या तीन तांबे के छोटे सूजें भी प्राप्त किए थे। बाद में उल्लिखित प्रायः देशी धातु के बने थे जो निश्चय ही ढाले नहीं गए थे।

न छोटी मूर्तियां और न ताबीजें ही प्राप्त हुई थीं। पर, मृतक कर्म-कांड-विधि के साथ साधारणतः निकुंचित मुद्रा में घरों के नीचे या दो घरों के बीच दफनाए जाते थे। शरीरों पर गैरिक पूर्ण रूप से छिड़क दिया जाता था। फलतः मांस के गल जाने पर हड्डियां धब्बेदार बन जाती थीं। यह प्रथा यूरोप में पुरातन पाषाण युग में भी प्रचलित थी और बाद में नियमित रूप से उत्तरपूर्वीय यूरोप, दक्षिणी रूस और चीन में इसका अनुसरण होता रहा।

उत्तरी टीले में अंतिम तीन आवासीय स्तर सियालक II या चश्मामली (Chashmah Aly) नामक एक भिन्न संस्कृति, जो सियालक I संस्कृति की एक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विकसित अवस्था मात्र है को कभी-कभी अभ्यर्पित किए जाते हैं। घोड़े और सूअरों की बहुत कम अस्थियों की विद्यमानता, जिसमें से कोई भी निश्चित रूप से पालतू नहीं बनाया गया था, स्थापत्य कला में गोली मिट्टी की ईंट का परीक्षणात्मक प्रयोग, वसूल (या कुदाल) के फलकों की अधिक ओपदार धार, नखलिस्तान में उस समय फीरोजा और अकीक, एवं फारस की खाड़ी से तेरोरा (Pterorea) छिलके तथा अधिकतर मात्रा में तांबा लाने वाले व्यापारियों का विस्तार-ये विशिष्ट नवीनताएं हैं। तथापि, धातु को अब भी हथौड़े से पीटकर रूप दिया जाता था और आकार अब भी सादे थे। मृद्भांड-कला में लाल भांडों की प्रमुखता थी और अंतिम ग्राम के समय समुचित आंवे में पकाए जाते होगें। पात्रों में बहुधा गोले तल अथवा पेंदें निवेशित रहते हैं। ज्यामितिक वंशपात्रीय प्रतिरूप इस प्रकार अभिवर्धित हुए होग जिससे योजनाबद्ध प्राणिगत आकारों का संकेत मिलता है। दूसरी ओर, अस्थि पर उत्कीरणा का परित्याग कर दिया गया और बाद में हंसिए की मूठों का निर्माण बंद कर दिया गया। शवाधान संस्कार अब भी अपरिवर्तित रहते हे और ढ़ेलवांस तथा गद एक मात्र प्रामाणिक हथियार हैं।

अभी-अभी वर्णित संस्कृति उत्तरी फारस में सीमित प्रतीत होती है "सियालक दो" के रूप में विभेदित प्रावस्था चश्मा अली[1] (Chahmah Aly), रायी (Rayy) के निकटस्थ टीले, में भी, स्पष्ट रूप से उपस्थापित है। तुर्कमनिया (Turkamenia) में अबतक अविन्ष्ट अनेक टीलों में से केवल एक मर्व (Merv) नखलिस्तान के अना (Anau) में प्रथम बस्ती के साथ अगर किसी प्रकार का संबंध न भी हो तब भी मृद्भांडों में समताओं से साम्य का अनुमान किया जा सकता है। केवल एक जोड़ा स्पष्टतः सरल प्रकार के मृद्भांडीय अभिकल्प मेसोपोटमिया की हलफियन संस्कृति के साथ संभावित संबंध सूचित करते हैं। परवर्ती काल में स्थिति भिन्न हो जाता है।

दसवें स्तर के अधिवास के बाद उत्तरी टीला छोड़ दिया गया और आधा मील और दक्षिण हटकर एक नूतन ग्राम बसा। मृद्भांड कला और शवाधानीय संस्कारों के आधार पर निर्णय करने पर दक्षिणी टीले में प्रथम बस्ती (सियालक III, I) सियालक दो संस्कृति के विकास को उपस्थापित करती है। पर, तेप हिसार[2]

१. अप्रकाशित, तुलनीय मेक्काउन (Mc Cown), कॉम्पे० स्टे० अ० ई०, ३।

२. स्मित (Schmist), एक्सकेवेशन्स ऐट तेप हिसार (Excavations at Tepe Hissar) i दमुधन, १९३७, और म्यू० ज०, xxiii, १९३३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(Tepe Hissar) में पूर्वोत्तर की ओर दमघन (Damghan) के निकट निम्नतम स्तरों A में लगभग एक समरूप संस्कृति प्रकाश में आई है।

सियालक तीन, १ से ३ तक की और हिसार I A की संस्कृति सियालक दो एवं चश्मा अली की संस्कृति से कुछ ही अंशों में भिन्न हैं। बर्तन अब भी हस्त निर्मित

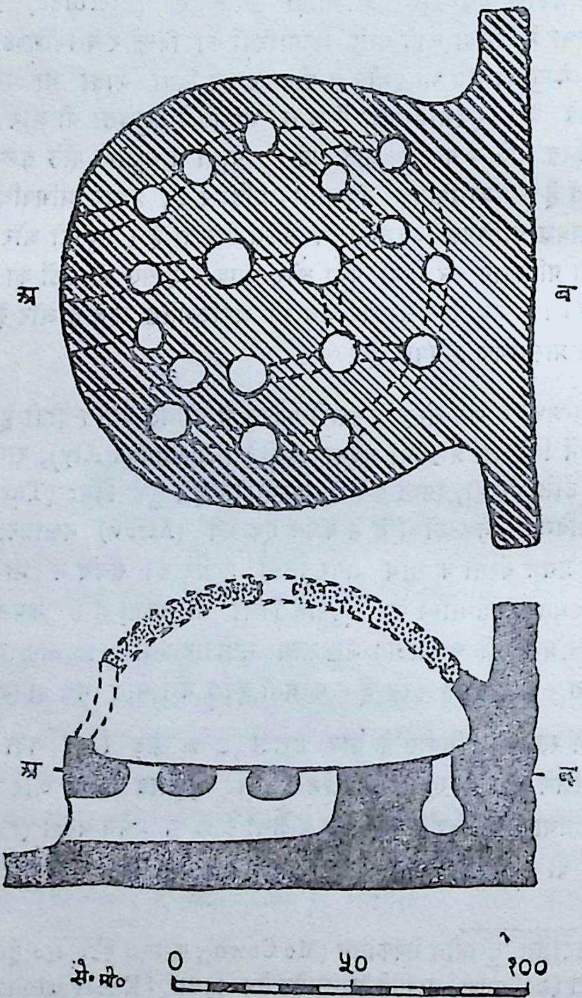

चित्र १०३· कुम्हार का आंवा, सियालक III, योजना और संविभाग (पुनर्निर्मित)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहते हैं पर, साधारणतः खास तौर पर बनाई गई भट्ठी में पकाये जाते हैं चि०१०३ यद्यपि भांड एवं ईंधन एक ही प्रकोष्ठ में रखे गए प्रतीत होते हैं, तथापि तापमान को खुली अग्नि के ताप से ऊपर उठाने के निमित्त वायु वेग को प्रेरित करने के लिए तथा तापमान की पूर्ति को नियमित करने के लिए नलियां रहती थीं। मृच्छिल्पीय अभिकल्प अधिक भिन्न रूपात्मक हैं और इनमें वर्णनात्मक तत्त्व संमिलित हैं, जिनमें चक्करदार पत्तों और शाखाओं वाले तने तथा पक्षियों की पंक्तियां उल्लेखनीय हैं (फ० XXXIV) तांबा थोड़ा और सर्व जन-साधारण होता है। सियालक से एक नोकीला कटार भी उपलब्ध हुआ है। पर, यह ढाला गया नहीं प्रमाणित होता है। मिट्टी की ढेलवांस की गुलिकाएं अब भी सामान्य हथियारों का प्रतिनिधित्व करती हैं। पर, हिसार से दो अनगढ़ बाण के सिरों की सूचना मिलती है। मृतक पहले की तरह निकुंचित मुद्रा में घरों के बीच दफनाए जाते है। पर, गैरिक केवल मस्तक पर ही लगाया जाता है और यह प्रचलन भी सियालक तीन, १ के बाद बंद हो जाता है। हिसार में इसका कभी उल्लेख नहीं मिलता है।

सियालक तीन, ४ और हिसार I B के साथ एक प्रकार की नाटकीय प्रगति होती है। पर, सांस्कृति अविच्छिन्नता में किसी प्रकार का अवरोध नहीं उपस्थित होता हैं। प्राचीन ग्रामों की तरह भवन पौर्वात्य प्रकार के बनते हैं। मृतक अब भी घरों के बीच दफनाए जाते हैं, पर अब निश्चित रूप में गैरिक से रंगे नहीं जाते हैं। वर्तन परिचित आकारों की सुरक्षित रखते हैं और प्राचीन शैली में रंगे जाते हैं। तथापि, चीतों अथवा अन्य पशुओं या पक्षियों के रूढ़ि-संमत प्रस्तुतीकरण अधिक लोकप्रिय होते हैं। परंतु, बोधगम्य धातु-शोधन कला पर अधिकार प्राप्त किया जाता है। चि० ७६ अ की तरह तिर्यक् परशु या वसूले और रीढ़दार कटार बंद सांचों में ढाले जाते हैं। संभवतः व्यावसायिक धातुकर्मी (Smiths) अब सियालक और हिसार में बस गए थे। कुम्हार भी व्यावसायिक हो गए, क्योंकि पात्र अब चाक पर बनते हैं। उसी समय में बटन के आकार की मुद्राओं का नियमित उपयोग शुरू होता है। (इनमें से) एक सियालक तीन[1], मे पाई गई है और कुछ हिसार १ में पाई गई हैं। पर सियालक तीन २, या तीन, ३ में एक भी नहीं पाई गई हैं। ये मुद्राएं मिट्टी की मुद्रिकाओं पर उन्हें जादूई प्रारूप-सामान्यतः भरित व्यत्यस्त रेखा, प्रदान करने के लिए अंकित की जाती थीं। अंततः सियालक तीन, ६ और हिसार १ सी ने एक विलक्षण प्रकार के सेतखली के बाट[1] के सापेक्ष तिथिय नमूने

१. सियालक, सं० फ० Lxxxv पर स २२३, हिसार, H २०९५, पृ० ५८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रदान किया है। इसका उपयोग आभासतः क्षैतिज करघे के संबंध में होता था और इसका सामानांतर सूसा (Susa) बी या सी एवं अनो[1] (Anau) तीन में उपलब्ध होता है। अंततः सियालक तीन, ४ में एक गृह लगभग पृ० सं० १२५ मे वर्णित गृहबहि-भागों की शैली में पोश्तों से सजाया गया है।

तदनंतर उत्तरी इरान में धातु विज्ञान, चाक, और प्रायः बटन के आकार की मुद्रा अविच्छिन्न सांस्कृत विकास क्रम में आबादी की विच्छिन्नता या वस्तु-विद्यात्मक, कलागत अथवा शवाधानीय परंपरा में अवरोध के विना दृष्टिगत होती हैं। क्या, इससे यह सूचित होता है कि ये क्रांतिकारी आविष्कृतियां एवं उद्भावनाएं इरानी पर्वतों के :बीच की गईं और मेसोपोटेमिया के अधिक विस्तृत ग्रामों में पहुंचने के पहले ही मरूधानों के सीधे सादे किसानों के द्वारा अपनाई गईं। तांबा गलाने के लिए आवश्यक तापमान वस्तुतः सियालक तीन की भट्ठी में प्राप्त हो सका। और, मैक्काऊन (Mc Cown) ने एक सापेक्ष कालक्रम स्वीकार किया है, जो वस्तुतः प्राथमिकता इरान :को प्रदान करता है। इसके वैधत्व का निर्णय सियालक चतुर्थ (IV) से उपलब्ध प्रामाणिक सहजात घटनाओं (Synchronisms) के आधार पर ही किया जा सकता है।

सियालक तीन, ७ तीव्रता के साथ नष्ट कर दिया गया। इसके भस्मावशेष पर एक नूतन प्रकार की वस्ती का उदय हुआ जो आभासतः साक्षर एलामीय (Elamite) सभ्यता की चौकी थी। "आद्य इलामीय" चित्र लिपि में अंतर्लिखित गणना-पट्टिकाएं और "जम्देत-नस्त्र" शैली में उत्कीर्ण वर्तुलाकार मुद्राएं संकेत करती हैं कि वैदूर्य के वाणिज्य पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए सूसा निवासियों ने उत्तरी जनपथ पर प्रमुख स्थान को अधिकृत किया था।

मृतक अब भी घरों के बीच पर पूर्णतः आकुचित मुद्रा में दफनाए जाते थे। और प्रचुरता के साथ दर्पणों एवं ताम्र, स्वर्ण तथा हरितमणि के आभरणों, सेतखली के पात्रों तथा मृद्भांडों से उपस्कृत किए जाते थे। लाल पर काले रंग में चित्रित भांड व्यवहार वहिर्गत हो गए और उनका स्थान धूसर भांडों ने ले लिया जो हिसार द्वितीय का भी वैशिष्ट्य है। काले रंग में रूप-रेखा से युक्त रक्षित चौखंडों को छोड़ने के उद्देश्य से लाल-पट्टी से आंशिक रूप में ढंका हुआ एक पात्र जम्देत नस्त्र शैली और

१. पंपली (Pumpelly), अनो (Anau) ii, ४७६, स० ६; यह प्रकार अनो एक या दो में उपलब्ध बताया जाता है, मे० ढे० प०, xxv, १८२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विद्या[1] का स्मरण दिलाता है। चि० ७५, ८ की तरह चंच्वाकार टोंटी वाले घड़े और टोंटीदर आकार सूसा एवं मेसोपोटेमिया के नूतन उरूक (Uruk) प्रकारों का संकेत करते हैं, पर मूठदार पात्र अविद्यमना हैं। :आभरणों में प्रारंभिक शीय मेसोपोटेमिया में सामान्य रूप में प्राप्त अंतरों जैसे मक्खी के आकार के जंतर, दोहरा घुमावदार सिरा वाला शूक (Pins) जो सिंधु घाटी से लेकर अनो (Anau) और हिसार II तथा III से ट्राय, साइक्लेड एवं बाल्कन[2] तक फैले हुए दोहरे चक्करदार सिरों वाले शूलों से तुलनीय है, एवं जर्जी मिस्र में उपलब्ध (चि० २०) गांठदार सिरा वाला शूल संमिलित हैं।

पूर्वगामी साक्ष्य के आधार पर दजला-फराती घाटी में जम्देत नस्र अवस्था के साथ सियालक ४ का साम्य अच्छी तरह स्थापित किया जा सकता है। और यह निस्संदिग्ध रूप से अधिक प्राचीन नहीं है। उस स्थिति में तीन ७ के विनाश के बाद एक परित्याग काल निर्हेतुक कल्पना ही उरूक प्रावस्था को सियालक III के अभ्यर्पण में बाधा डालेगी। वस्तुतः सियालक तीन के छठे स्तर से प्राप्त टोंटीदार दो वर्तन में से एक-एक अच्छा प्रारंभिक उरूक आकार[3] हैं। यदि इन समताओं को काल-क्रमानुसार अर्थवान माना जाय, तो धातु-विज्ञान के विकास एवं चाक के उपयोग के दृष्टिकोण से सुमेर की अपेक्षा इरान को प्राथमिकता देने का मामला, जैसा कि सियालक तीन, ४ के द्वारा उपस्थापित होता है, कमजोर मालूम पड़ेगा (इरेक से प्राप्त तथाकथित चाक पर बने उवेद पात्रों को अस्वीकृत करने पर भी) सियालक एक I भी आर्काइक हसूना (Archaic Hassuna) से प्राचीन नहीं हो सकता है।

अतः अब तक परीक्षित संस्कृतियों में से एक भी न मेसोपोटेमिया के साथ और न तो प्रथम कृषकों या न प्रथम व्यावसायिक धातु कर्मियों के साथ ही प्रमाणतः पैतृक संबंध रखती है। पर, सियालक II-III चश्मा अली-हिसार I और सिंधु घाटी के पश्चिमी सीमांत पर की कम-से-कम एक संस्कृति के बीच इस प्रकार के संबंध के निमित्त मामला कायम किया जा सकता है।

उत्तरी बलूचिस्तान में झोब (Zhab) की अब शुष्क उच्चस्थलीय घाटी में स्थित अनेक विशाल टीलों से प्राप्त मृद्भांड आकार-प्रकार, शैली और सज्जा में हिसार-

---

१. सियालक, एस० २३, फ० xc, तुलनीय मैक्काउन, सी० एस०ई० आतइ०, ५४।
२. चाइल्ड (Childe), ए० अर्को० एन्थ्रॉ० लि०, xxiii, ११६; डॉन, ५०, ६७, १२६।
३. सियालक (Sialk), एस् १३५, फ० lxixi तु० ल्वायड (Lloyd), सुमेर, iv, १९४८, तालिका ३, संख्या-२१, २८, ३६, ३७। उत्तम समांन्तर निनेवा (Nineveh) IV और गावरा (Gawra) VII से प्राप्त होते हैं।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

I ब[1] के मृद्‌भांडों के साथ वस्तुतः विलक्षण साम्य प्रदर्शित करते हैं। बर्तन चाक पर बने हैं। यद्यपि उत्तरी इरान की अपेक्षा झोब घाटी में धूसर तल अधिक सामान्य था, तथापि वैसे कभी-कभी लाल-पट्टी से ढंके पाए जाते हैं। अंत में, वे प्राणियों के चित्रों से विभूषित हैं और हिसार की शैली रूढ़िकृत हैं। परंतु, सांड़ों को चीतों या जंगली बकरों की अपेक्षा अधिमान्यता दी जाती है। पर, इन विशिष्ट पात्रों के साथ विशुद्धतः सांस्कृतिक तत्वों का कौन सा समवाय संबंध है अथवा ये किसको प्रतीकित करते हैं—यह विषय लगभग संदिग्ध रणघुंडे[2] (Rana-Ghundai) के विशाल टीले में वे मध्य स्तरों-रणघुंडे II में एक अधिक प्राचीन एवं अधिक "भारतीय" ग्राम के खंडहरों के ऊपर पाए जाते हैं।

रणघुंडे[2] (Rana-Ghundai) I के लोक अचित्रित हस्तनिर्मित भांडों का उपयोग करते थे। पर, ककुद्‌मान (Humped), भारतीय वृषभों, (Bos Indicus) ऊरियल (Urial) भेड़ों, गदहों और संभवतः घोड़ों को पालते थे तथा पौधों की कृषि करते थे। डुंगर पश्चिमीय न होकर स्पष्टतः भारतीय हैं। भेड़ों का उद्‌भव देशी स्कंधों (Stocks) से अच्छी तरह माना जा सकता है। वस्तुतः पुरातात्विक रूप से पता लगाने योग्य परिश्चम के निःसंदिग्ध प्रभाव के पहले बलूचिस्तान में उत्तर-पाषाण-कालीन कृषक रहते थे। रणघुंडे II के भांड़ों से पूर्णतः यह अनुमान किया जा सकता है कि दक्षिण-पूर्वी एशियाई कृषकों के बीच कुछ व्यावसायिक कुम्हार अपने चाकों एवं उत्तरी ईरान की कलागत अभिरुचियों के साथ आकर बसे थे।

ऊपरी स्तर, रणघुंडे III, घाटी के अनेक अन्य टीलों में उपस्थापित बहुरंगी भांडों की एक स्थानीय शैली के विकास को प्रदर्शित करते हैं। ये पत्थर की नीवों पर उठाए गए मिट्टी की ईंटों के घरोंवाले गांवों या शहरों के भी स्थलों का चिह्न प्रदान करते हैं। व्यापार के द्वारा उन्हें तांबा, नीलम और अकीक के रेखित मनके प्राप्त हुए। इसके विपरीत, अनलाश्म के वाण के सिरे[3] युद्ध के द्योतक हो सकते हैं। कड़ों की बहुतायत, प्रस्तर का एक लिंग और "दांत पीसते कपाल से युक्त चेहरे वाली" कंटोप पहने हुए एक स्त्री की मिट्टी की छोटी मूर्ति इरानीय समताओं की अपेक्षा अधिकांश में भारतीय साम्य रखती हैं। दबर-कोट, जो जोब-स्थलों में से अन्यतम है, अंत में हड़प्पा का व्यापार स्थल बन गया। अन्य स्थानों से प्राप्त मुद्राएं एवं मनके सिंधु घाटी के प्रभाव और हड़प्पा काल के साथ कालारूढ़ अतिच्छाद को

१. पिग्गॉट (Piggott), एंटिक्विटी; xvii, १९४३,१७२-३।
२. ज० नी० ई० स्ट०, v, १९४६,२८४-३१६; तु० पिग्गॉट, प्री० ई० १२१-६।
३. ए० एस० आइ० एम०; सं० ३७, १९२९, ४०, ८६ पिग्गॉट, पी० आई० १२८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूचित करते हैं। तथापि, रणघुंडे III के बहुरंगी भांडों का सिंध के प्राचीनतर अमरी भांडों और खास हड़प्पा में दुर्ग की दीवारों के नीचे प्राप्त भांडों के साथ निकट सादृश्य है। अतः पिग्गॉट[1] (Piggott) की धारणा है कि रणघुंडे तीन की अंतिम प्रावस्था को छोड़कर समस्त जोवमाला निश्चित रूप में हड़प्पा-सभ्यता से प्राचीन है। वस्तुतः जोब से होकर ही हड़प्पा सभ्यता के हेतु पश्चिमी आधार सिंधु घाटी पहुंचा।

दक्षिणीय पथ की ओर मुड़ने पर हम स्तर-विज्ञानानुसार साक्षीकृत ऐसा कोई संस्कृतिक्रम नहीं पाते हैं, जिसकी तुलना सियालक में आविष्कृत संस्कृति-क्रम से की जा सके। वस्तुतः फार्स (Fars) में पर्स-पॉलिस (Persepolis) के निकट बकुन बी (Bakun B) नामक एक टीले से प्रस्तर के उपकरणों एवं सादे भांडों के मिलने की सूचना[2] मिली है। ये वस्तुएं संभवतः सूसा I की वस्तुओं से प्राचीन और सियालक I से तुलनीय हैं। और कुछ पुरब मदवन (Madavan) के निकट दो टीलों के निम्नतम स्तरों में स्टेन[3] (Stein) को संभवतः तुलना करने योग्य कुछ समान मिले हैं। विस्तृत विवरण अनुपलब्ध हैं। दूसरी ओर, बकून[4] अ (Bakun A) के चारों स्तरों से प्राप्त पुर्णतः अलंकृत भांड सूसा I की तरह ही संस्कृति की विकसित अवस्था का निदर्शन करते हुए प्रतीत होते हैं। हस्त-निर्मित होने के बावजूद ये पात्र नियमित आंवों में पकाए जाते थे। इन आंवों में भट्टी और अग्नि-प्रकोष्ठ (Firing-Chamber) को मिट्टी के खंड-फलक (Floor Plate) के द्वारा स्पष्टतः पृथक् कर दिया जाता था। कुछ (पात्र) चक्राकार तरु एवं सांचे में बने कोर जैसे मृच्छिल्पीय मिश्रणों (Sophistications) को प्रदर्शित करते हैं। उनके भूषार्थ विशुद्ध रूप में शृंगारात्मक सांचों में रूढ़िकृत पशु ज्यामितिक उद्देश्यों के साथ संबंध कर दिए गए हैं जिनमें हलफ (Halaf) और समारा (Samarra) की तरह माल्टसे (Maltese) समचतुष्कोण प्रमुख हैं पत्थर के पात्र भी व्यहृत होते थे, पर विरलता के साथ ही सांचे में बने ईंटे दृष्टिगत नहीं हुए। पर. भरी व्यतरस्त रेखाओं तथा जटिलतर प्रतिरूपों से युक्त एवं हलफियन अभिकल्पों का स्मरण दिलाने वाले बटन उन्नतोदर भाग में उत्कीर्ण थे और मुद्राओं के

१. पी० आ० ई०, १२२-६।
२. मैक्काउन (Mc Cown), कांपे० स्ट्रॉ० अ० ई०, २३।
३. इराक, iii, १९३६, १८३, १८६।
४. लांगसडोर्फ (Longsdorff) और मैक्कउन (Mc Cown), टॉल-इ-बकुन अ (Tall-i Bakun A), ओ० इ० प०; lix, १९४२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूप में व्यवहृत होते थे। फसल अनलाश्य को धार वाली हंसियों से काटी जाती थी। पत्थर के गादा के सिरे और मिट्टी की ढ़ेलवास की गुलिकाएं ही एकमात्र बचे हुए हथियार हैं। नीलम और शायद फीरोजे का आयात मनकों के लिए किया जाता था। स्त्रियों और पशुओं की मूर्तियां मिट्टी की बनती थीं।

मृच्छिल्प और मुद्राओं की शैली सूसा साथ बकुन अ के समीकरण को औचित्यपूर्ण सिद्ध करती है। यदि शवाधिस्थान का पता चले तो संभवतः उसमें उतना ही मात्रा में धातु मिले। और कुछ पूरब फासा (Fasa) मरूद्यान तक पूर्वीय अनेकानेक टीलों से स्टेन[1] (Stein) द्वारा संगृहीत कुछ खपरे और मुद्राएं समसामयिक अधिवासों को प्रमाणित कर सकती हैं। उसके अतिरिक्त मृद्भांडों की सज्जा में शैली-मूलक समताएं, जिनमें एक भी पूर्णतः शुद्ध नहीं है, सिस्टन[2] (Sisten) में और क्वेटा[3] (Quetta) के इर्द-गिर्द समसामयिक व परस्पर संबंध बस्तियों को सूचना दे सकती हैं। क्वेटा भांडों व बकुन ए के भांडों के बीच अभिकल्प-मूलक (In design) साम्य बलूचिस्तान एवं पश्चिमीय ईरान के बीच वस्तुतः प्रारंभिक संबंधों के प्रदर्शक माने जा सकते हैं। पर, कुछ खपड़े कम-से-कम चाक पर बने भांडों के प्रतीत होते हैं। यदि ये शिल्पी वस्तुतः चाक पर क्वेटा भांडों के निर्माता व्यावसायिक कुम्हार थे, तो शैलीगत समताओं की व्याख्या उसी रूप में करनी होगी जिस तरह सूसा I एवं अधोवर्णित शाही-तंप (Shahi Tump) के हड़प्पोत्तर-कालीन शवाधिस्थानों के बीच की समताओं की की जाती हैं।

इस संदिग्ध "क्वेटा भांड" से भिन्न बंपर (Bumper) नदी और मक्रन की सश्वेष्टित घाटियों में व्याप्त ऊंचे टीलों में प्राचीनतम निश्चेय-तिथि-युक्त (Datable) क्षितिज प्रारंभिक वंशीय सुमेर एवं भारत की हड़प्पा-सभ्यता के साथ संबंधों द्वारा परिभाषित होता है। तब तक मक्रन में पिग्गॉट द्वारा कल्पित "कुल्ली संस्कृति" (Kull Culiture) इस नाम के अंदर इसके संवेष्टन के औचित्य को सिद्ध करने वाली सामग्री पूर्णतया अनुरूप हो जाती हैं।

जल-विहीन समुद्र तट के समानांतर में स्थित अंतःस्थलीय घाटियां आजकल अनावृष्टि से इतना अधिक आक्रांत है कि अपनी मिट्टीयों को उर्वरता के बावजूद वे

---

१. इराक, iii, १५०, १५४।

२. स्टेन (Stein), इनरमोस्ट एशिया (Innermost Asia), फ० cxiii।

३. पिग्गॉट (Piggott) ऐंशि० इंडिया, सं०३; १९४७, १३१-१५४; ऐसे स्मृतिचिह्न ज्ञात नहीं हैं जो स्पष्टतः इस मृद्भांड कला से संबद्ध हों।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुसंख्यक कृषकों को आकृष्ट करने में असमर्थ हैं। पर वे कुल्ली अवशेषों को प्रदान करने वाले टोलों से भरी पड़ी हैं। वे विशाल एवं स्थायी बस्तियों को उपस्थापित करती हैं मेही[1] (Mehi) जो मश्काई (Mashkai) घाटी में है, लगभग २५०,००० वर्गगजों में व्याप्त है और इसकी ऊंचाई ५० फीट हैं। पर, सभी गांवों के रूप में रह जाते है, तथापि कज (Kej) घाटी में शाही तंप[2](Shahi-tump) जैसे कुछ गांवों का पर्यवसान हड़प्पा सभ्यता की चौकियों के रूप में हुआ होगा। फिर भी, ये गांव किसानों के अतिरिक्त व्यावसायिक कुम्हारों, निस्संदिग्ध रूप से आवासी धातुकारों, और अधिक संभव अन्य विशिष्ट शिल्पियों के आश्रय थे। लूट या व्यापार के द्वारा इन ग्राम-वासियों को सैंधव नगरों की बचत और धातु तथा वैदूर्य की आपूर्ति में हिस्सा मिल। कुल्ली से प्राप्त सिर्फ एक दर्पण और एक चपटे परशु तथा एकाध छोटे पदार्थों द्वारा उपस्थापित होने पर भी ताम्र वस्तुतः इतना सर्वसाधारण हो चुका था कि प्रस्तर का उपयोग, जैसे खास हड़प्पा में ही, सिर्फ साधारण फलकों के लिए होता था। पत्थर के फरसे के सिरे और अनलाश्म के वाण के सिरे समान रूप से अर्थवत्ता के साथ अनुपलब्ध हैं। नर्तकियां, जिनकी धातु को मूर्तियां हड़प्पा में बनती थीं(फ०XXXIX अ), और उत्कीर्ण प्रस्तर[3] पात्र, जो प्रारंभिक वंशीय २ कालिक मेसोपोटेमिया एवं सैंधव नगर इन दोनों स्थानों में खरीदे और बेंचे जाते थे, निर्यातित पदार्थों में थे। इनमें से उत्तरोक्त के अनेकानेक नमूने मेही (Mehi) और शाही तप में पाये गए हैं। सिस्टन और फारसी मक्रन में अनेक स्थलों से प्राप्त उदाहरण सूसा व सुमेर की ओर इस व्यापार के पश्चिमाभिमुख मार्ग का संकेत करते हैं।

मृद्भांड-कला पूर्वीय एवं पश्चिमीय दोनों प्रकारों के संबंधों को सूचित करती है। पात्र, जो चाक पर बने थे, आंवे में गुलाबी रंग में पकाए जाते थे और तब साधारणतया उनपर धूसर रंग की पट्टी चढ़ा दी जाती थी। पर, मेही में बहुधा लाल रंग चढ़ाया जाता था और, कुल्ली में बारीक धूसर भांड भी बनते थे। चित्रित विभूषा की एक विशिष्ट शैली ''भूदृश्योचित उद्देश्य-युक्त पशु'' पर आधारित थी। ककुद्धारी पशु या कभी-कभी बकरे वृक्षों के मध्य एक ऐसे भूदृश्य में पाए जाते हैं, जो बहुधा छोटे पक्षियों व पशुओं अथवा जयमितिक मूर्तियों में परिन्यास्त है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो रिक्त स्थानों को भरने के लिए निरतिशय प्रयत्न किया गया है

१. ए० एस्० आई० एम्०, सं०४३, १५४।
२. वही, ८८।
३. ऐंटिक्विटी, xvli, १७६, एवं संख्या, १५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(फ० XXXV, अ)। अब, यद्यपि पशुओं की आकृतियों की नकाशी काले रंग में की जाती है, और ढ़ांचे को सिर्फ कुछ पट्टियों में काले रंग के साथ बदलते हुए लाल रंग का प्रयोग होता है, फिर भी, यहां की शैली अर्थवत्ता के साथ मेसोपोटेमिया एवं[1] डी के खूनी रंग के भांडों की शैली से समता रखती है। दूसरी ओर, कुल्ली शेली का कम-से-कम-एक पात्र मोहेंजोदड़ों[2] पहुंचा था। इसके विपरीत, सभी कुल्लीस्थलों पर हड़प्पा के प्रभाव की प्रमुखता है। पीपल के पत्ते एवं पार्श्व प्रतिरूप जैसे हड़प्पा उद्देश्य और खुले आधार, पेंदीदार कटोरे और पिरीमार्म (Pirifom) कलश जैसे हड़प्पन आकार स्थानीय मृच्छिल्पीय उद्योग की विशेषता प्रदर्शित करते हैं। हड़प्पा के पात्र, जिनका आयात वास्तव में सिंधु घाटी से होता था, सिर्फ सुत्क-गां-दोर (Suktagen-dor) में अभिलक्षित हुए हैं। यह एक दुर्ग रक्षित स्थान है जो दाश्त (Dasht) के मुहाने के अत्यधिक निकट रहने के कारण उस सभ्यता के साथ समुद्र तटीय व्यापार का एक बंदरगाह रहा होगा।

मिट्टी की कतिपय छोटी मूर्तियों द्वारा निर्दशित वेशभूषा-चार में भी कड़ों की अधिक लोकप्रियता एवं रत्नाभरणों की प्रचुरता पूर्णतः भारतीय प्रतीत होती हैं। साथ-ही-साथ कुल्ली की सूक्ष्म मूर्तियों के साथ आभूपणमूलक विशद समानता हीं हड़प्पा[3] से प्राप्त फ० XXIX a में प्रर्दशित कांस्य की छोटी मूर्ति की प्रामाणिकत का विश्वास दिलाती है। इसकी प्राचीनता पर बहुधा संदेह किया जाता है, क्योंकि, ऐसी उत्साह पूर्ण अभिवृत्ति प्राक्-प्रतिष्ठित (Pre-classical) मूर्ति-कला में पहले अज्ञात थी। फिर मेही में उपलब्ध एक प्रतिरूपात्मक शकट केवल इतना ही सिद्ध नहीं करता कि यातायात एवं भांड-निर्माण के लिए चक्रों का उपयोग होता था, पर यह भी कि मक्रन के शकटकार (Wain-wrights) सिंघु घाटी में समर्थित आदर्श का अनुसरण करते थे।

जब कुल्ली के इन स्थलों के परवर्ती अधिवास इस प्रकार हड़प्पा सभ्यता के समकालीन हैं और अपनी आंशिक समृद्धि के लिए इसके सान्निध्य के ऋणी हैं, तब ऊंचे टीलों के निम्नतर स्तर अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन काल के हो सकते हैं। पर, कुल्ली-संस्कृति की इस तरह की शुरुआत के अंवेषण की प्रतीक्षा है। इसके अवसान

१, फ्रैंकफर्ट, आर्क सु० प्रो०, १९३२, ६८-७०, तु० पृ० १४३, १४९ आगे।
२. ऍशियेंट इंडिया, सं० ५, १९४९, ३०, फ० vi, ७०।
३. पिग्गॉट (Piggott), ऍशियेंट इंडिया, सं० १, १९४६, १६; प्री०इ०, १०९, १७८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

को अधिक निकट से स्पष्ट किया जा सकता है स्टेन[1] (Stein) को शाही-तंप में सबसे बाद के कुल्ली नगर में खंडहरों में प्रविष्ट शवाधियां मिली जो बिल्कुल विदेशी परंपरा में उपकृत थीं। शव, साधारणतः ऊर्ध्वमुख, निकुंचित वा अकुंचित मुद्रा में दफनाए गए थे। इनके साथ दी जाने वाली वस्तुओं में चौरस फरसे, एक दंड-छिद्र-युक्त परशु (चि० १०४ अ), तांबे वा एकल फलक वाला एक चाकू, सेतखली के कटोरे, फीरोजा के मनके, पिग्गॉट[2] के अनुसार प्रकोष्ठबद्ध (Compartmented) प्रकार की चौरस ताम्र मुद्राएं (चि० १०४ ब) और पात्रों के प्रचुर उपहार, जो कभी-कभी सूसा कब्रिस्तान की तरह क्रीड़ा-गृहों में सजाकर रखे गए हैं, संमिलित हैं।

चौड़ी खुली थालियां (फ० XXXVIII), लंबे गिलास, चिपटे तल वाले छोटे भांड (जो अब रूप-रेखा में कोणयुक्त नहीं रहे), और सूसा के अंडाकार कलश-सभी यहां उपस्थापित हैं, जबकि एक त्रिभागीय (Triple) पात्र के समानांतर उस स्थल के बाद में मिलते हैं। रिकाबियां और अधिकांश कलश भूरे पदार्थ के बने हैं। ये इतने अधिक पकाए गए हैं कि चीनी मिट्टी के जैसे जान पड़ते हैं। अन्य पात्र बिना मिट्टी के गुलाबी द्रव्य के बने हैं दोनों प्रकार वस्तुतः एक ही प्रकार के भांड हैं जो विभिन्न पद्धति से पकाये गऐ हैं। सब में भूसा मिलाया गया है। सूसा के साथ संबंध का दृढ़ीकरण उन प्रतिरूपों से होता है जिनमें स्वस्तिक एवं माल्टसे चतुर्भुज संमिलित हैं। साथ ही, आकार और प्रतिरूप समान रूप से यह सूचित करते हैं कि सूसा एवं बकुन अकीमृच्छिल्पीय परंपरा के परवर्ती व ह्रासोन्मुख रूपांतर ने ही शाही-तंप के कुम्हारों को उत्प्रेरित किया था।

बंपर घाटी के खरब (Khurab) में स्टोन[3] द्वारा संगृहीत अंत्येष्टि भांडों में एक मध्यवर्त्ती अवस्था को मान्यता दी जा सकती है। फिर भी, वहां की कतिपय शवाधियों में बकुन व शाही तंप के मध्यवर्ती काल में अस्तिमंत ईरानीय धूसर भांडों के साथ-साथ विशिष्ट रूप से हड़प्पा आकार के लाल-पट्टी वाले पेंदेदार कटोरे, हड़प्पा शैली का तांबे का एक भाले का सिरा और एक थाली, तथा कुल्ली शैली का एक प्रस्तर-पात्र था। अंततः एक शवाधान में एक ताम्रदंड दिया गया था, जिसके ऊपरी

१. ए० एस० आइ० एम्०, सं० ४३, ८८-१०३।

२. ऐंटिक्विटी, xvii, १८०।

३. एन् आर्केओलाजिकल रिकांनेसेंस इन नार्थ-वेस्ट इंडिया ऐंड साउथ-इस्ट इरान (An Archaeological Reconnaissance in North-West India and South-east Iran), १९३७, १२०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भाग में एक ऊंट की पूरे आकार की मूर्ति (फ० XXIX, ब) बनी थी। यह मध्य-पूर्व में इस पशु की प्राचीनतम उपस्थापना थी।

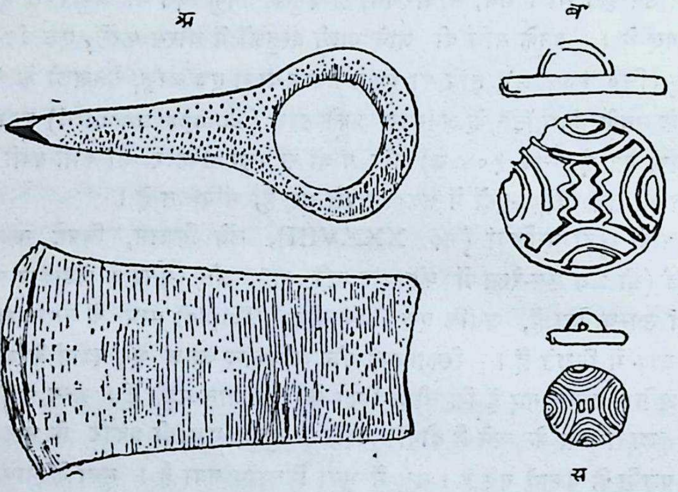

चित्र १०४. शाहा-तंप के कब्रिस्तान से प्राप्त तांबे का फरसे का सिरा व प्रकोष्ठबद्ध मुद्राएं तथा चंहुदड़ों २ से उपलब्ध फाएंस की मुद्रा, ½ पिग्गॉट के अनुसार।

आक्रामक शाही तंप संस्कृति के पश्चिमोत्तरीय संबंध बलूचिस्तान व भारत के लिए समान रूप से विदेशी प्रकार के रूप में स्थित दंड-छिद्रयुक्त परशु के द्वारा, हिसार २ ब एवं ३, अनो ३ व सूसा तथा थोड़ी ही कम विशुद्धता के साथ सीरिया[1] के बिब्लॉस में और मध्य अनातोलिया[2] में विशुद्ध समानांतर रखनेवाली प्रकोष्ठबद्ध मुद्राओं द्वारा तथा अत में खरब से प्राप्त ऊंट (की मूर्ति) के द्वारा पूर्णतः प्रमाणित हो सकते हैं। सूसा से प्राप्त मुद्रा के संदर्भ और हिसार तथा अनो के संभावित तिथि निर्धारण के आधार पर:सारगोन काल से परवर्ती तिथि का अनुमान किया जा सकता है। चंहुदड़ों की झूकर (Jhukar) बस्ती में फायेंस की एक प्रकोष्ठबद्ध मुद्रा की उपलब्धि से इसकी पुष्टि होती है। इस तरह, शाही-तंप शवाधिस्थान पश्चिम से (आने

१. मांते (Montet), बिब्लास्-एत ईजिप्ट (Byblos et' Egypte), फ० LIx,४४।

२. vonder Osten, Alishar, Huiyuk, १९२०-३२, ओ० आ० पी०, xxix सं० १४८१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वाले) ऐसे असभ्य कबीलों द्वारा मक्रन के आक्रमण को अभिलिखित करता प्रतीत होता है जिन्होंने सूसियाना (Susiana) व फार्स की मृच्छिल्पीय तथा अंत्येष्टिगत परंपराओं के कुछ अंशों को परिरक्षित करते हुए, मार्ग में व्यावसायिक कुम्हारों तथा धातुकारों और संभवतः ऊंटों को साथ कर लिया था। पर, लिपिक उनके साथ नहीं आए थे। उन्होंने कुल्ली संस्कृति को लगभग उसी समय में नष्ट किया होगा जिस काल में अन्य बर्बरों की लहर ने सैंधव सभ्यता को ध्वस्त किया।

अंततः, उत्तरी बलूचिस्तान की नाल (Nal) व नंदरा (Nundara) घाटियों में, जो सिंधु से मात्र १५० मील का दूरी पर हैं, टालों के रूप में स्थित बड़े गांवों के भग्नावशेष दूसरी संस्कृति को निर्दशित करते हैं। यह संस्कृति आंशिक रूप मे घाटी की सभ्यता पर आश्रित है, पर आंशिक रूप में संभवतः इसकी पूर्ववर्त्तिनी है। नाल[1] के निकट का सोहर-दंब (Sohr-damb), जो यहां का मुख्य स्थल है, कठिनता से नगर की श्रेणी में आ सकता है। तथापि, पत्थर व मिट्टी के ईंटों के विशाल भवनों के अवशेष ३०,००० वर्ग गज क्षेत्र में व्याप्त हैं। अवशेष शवाधान, जिनमें कपालों या कुछ अस्थियों के साथ पात्र दिए गए थे, अनेक प्रकोष्ठों में प्राप्त हुए थे। लेकिन ईंट की कब्रों में पूर्ण शवाधान भी अभिज्ञात हुए थे।

धातु का स्वतंत्रतापूर्वक व्यवहार होता था। चौरस कुल्हाड़ियां लंबी और पतली हैं। आरे सुमेरीय प्रकार से साम्य रखते हैं। एक नोकीला कटार सैंधव कटारों के अनुरूप है। पर, सिंधु की छेनियां व बर्छी के सिरे अनुपलब्ध हैं। ककुद्मान वृषों की आकृतियां, पत्थर के चक्रक (Ring) संगमरमर के पात्र, फायंस का उपयोग, खप्पर का एक कड़ा, कड़े पत्थर के लंबे द्विशांकव (Biconical) मनके और सेलखड़ी की एक बटन के आकार की मुद्राएं-सभी सैंधव सभ्यता के साथ नाल (सभ्यता) के सादृश्य को प्रदर्शित करते हैं। पर, नारी मूर्तियां नहीं हैं। मुद्रा सैंधव शैली में उत्कीर्ण नहीं है। और, तांबे की एक अन्य (मुद्रा) तथा वैदूर्य की अपेक्षाकृत प्रचुरता लगभग शाही-तंप (संपर्क) को सूचित करती हैं।

मृद्भांड हर हालत में पूर्णतः निजी विशेषता युक्त हैं। मिट्टी हरे या काले रंग की पाई जाती है और संभवतः पीताभ श्वेत अथवा (कदाचित ही) गहरे लाल रंग की पट्टी चढ़ी रहती है। थोड़ा भीतर की ओर मुड़े हुए किनारों वाले कटोरे, वर्तुलाकार मंजुषाएं और छोटी हंसलीदार गरदनों वाले सपाट बरतन (कभी-कभी शहतीर लगे हुए) (यहां के) विशिष्ट आकार हैं। पात्र उन अभिकल्पों से भूषित हैं, जिनकी रूपरेखा

१. मे० आर्क स० ई० (MASI), सं० ३५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काले रंग में है, पर, बहुधा लाल, पीले, नीले व हरे रंग से भरित हैं। अंतिम तीनों रंगों का प्रयोग पाक-क्रिया के बाद किया गया है। पर, लाल रंग, अक्सर आमरी की तरह का नीलाभरक्त (Plum-red) रंग अधिकांश अवस्थाओं में स्थिर जान पड़ता है।

परिरूप संरचनानुसार विस्तृत भागों में विन्यस्त हैं, जो साधारणतः चौखंडों में संविभाजित हैं। एक ओर, विधित्साओं (Motives) में बाघों, सांड़ों, मछलियों और वास्तविकता के साथ प्रतिपादित पत्तियों के अत्युत्तम चित्रांकन संमिलित हैं। पर एक प्रकार के संश्लिष्ट परिरूप के साथ समरूपता रखने के लिए रुढ़ीकृत हैं। दूसरी ओर दूरतर पश्चिम में परिचित अवग्रहाकार (अंग्रेजी S एस् के आकार के) W डब्ल्यू व कंकतिक नमूने—जैसे ज्यामितिक उद्देश्य एवं अपूर्ण आवृत्तिपरक नमूने, जिनमें परस्परच्छेदी (Intersecting) वृत्त सम्मिलित हैं, तथा फ० XXXV व में प्रदर्शित उद्देश्य हमें उपलब्ध होते हैं। ये विषय, जिनमें रेखा-कृतियों के अनेक विभिन्न भाग विभिन्न रंगों से भर दिए गए हैं, भव्य विभूषा के रूप में मिश्रित हो जाते हैं जो खास हड़प्पा शैली से भी श्रेष्ठ हैं।

प्रतिपादन में प्रचुरता से विशिष्टीकृत होते हुए भी इस शैली व इसकी विधा के अनेक तत्त्वों को सीधे आमरी अवस्था से व्युत्पादित किया जा सकता है। नल की तरह वहां हम सिर्फ वही पट्टी व नीलाभरक्त रंग ही नहीं पाते, पर नाल के कुछ अभिप्राय और विशेषतः वृत्ताकार केंद्र से युक्त व्यत्यस्त रेखा के रूप में प्रचुर अंश में विशिष्टीकृत विषय भी हमें मिलते हैं। अतः यह अनुमान किया जा सकता है कि नाल व आमरी की मृच्छिल्पोय शैलियां उभय साधारण परंपरा से विकसित हुई। वस्तुतः, नाल निर्मित, कम-से-कम शैली, के कुछ पात्र खास सिंधु[1] घाटी के आमरी संदर्भ में प्राप्त हुए हैं।

अतः नाल संस्कृति संभवतः प्राक्-हड़प्पा काल में अस्तित्व में आई। यह अब तक स्पष्ट नहीं है कि इस आद्य अवस्था को ठीक किस उपलब्धि से विशेषित किया जाय। यह संस्कृति कम-से-कम हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वावस्था तक व कुल्ली संस्कृति के साथ-साथ जीवित रही। यह संभवतः आक्रामी शाही-तंप संस्कृति के द्वारा उत्तरोक्त (कुल्ली संस्कृति) का स्थान लेने के समय तक भी कायम रही होगी। क्योंकि एक प्रकोष्ठबद्ध मुद्रा प्रकार-स्थल (Type-site) पर पाई गई थी। फिर भी, इसका समुचित संदर्भ अनिश्चित है। इतना तो निश्चित है कि नाल व नंदरा घाटियों

१. ऐंशियंट इंडिया, सं० ५, १९४९, १६-१७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के गांव बलूचिस्तान के अन्य गांवों की भांति ही नगरों के रूप में विकसित नहीं हुए थे। इन संकीर्ण सीमाओं के भीतर सभ्यता की उपलब्धि नहीं हुई थी। पर, सिंधु व तिग्री-फराती की अधिक विस्तृत घाटियों में यह समृद्ध हुई। इस सर्वेक्षण का यह निश्चितम निष्कर्ष है।

पूर्वगामी पृष्ठों में एक विस्तृत क्षेत्र के प्रागैतिहास का बहुत ही स्थूल सर्वेक्षण निहित है। पर, (यह सर्वेक्षण) अधिक लंबी अवधि तक विद्यमान अंधकार को बाधित करने वाले आर्धैतिहासिक सांध्य प्रकाश के बहुत ही संकीर्ण अंचल में सीमित है। शायद पांच शताब्दियों तक प्रायः २५०० से २००० खृष्टाब्द पूर्व तक इस क्षेत्र में भारतीय-सुमेरीय व्यापार ने इरान, सिस्टन व बलूचिस्तान की बर्बरता पर मेसोपोटेमिया से थोड़ा ऐतिहासिक प्रकाश विकीर्ण किया। उसके बाद पुनः दारियस् या प्रायः सिकंदर के काल तक अंधकार व्याप्त रहा। वस्तुतः अंधार का तात्पर्य निर्जनीकरण नहीं था। उन १५०० वर्षों की रिक्तता को भरने के लिए अभिलेखों के विशाल, पर अस्त-व्यस्त संग्रह पहले से ही प्राप्य हैं। केवल बलूचिस्तान में प्रागैतिहासिक चित्रित भांडों के (अनेक) प्रकार पहचाने गए हैं। व्यवस्थित उत्खनन निस्संदिग्ध रूप से इन्हें उचित क्रम में विन्यस्त करके उनके निर्माताओं के अन्य क्रिया-कलापों को प्रकाश में लाता। १९५० ई० में वे सांध्य प्रकाशीय क्षेत्र के दोनों बगल में किसी भी स्थान में पड़ सकते हैं। और, तर्कमूलक शैल्यात्मक सिद्धांतों के अनुसार मृच्छिल्पीय वर्गों का विन्यास इस पुस्तक का उद्देश्य नहीं है।

इस सर्वेक्षण से एक निश्चित परिणाम पहले ही निकल चुका है। और, दूसरा और भी अधिक नकारात्मक है। कृषि की शुरुआत शायद किसी टीले के तल में अनन्विष्ट (Unexplored) स्तरों में मिलेगी। वैज्ञानिक उत्खनन को पश्चिमी फारस की तरह भारतीय-इरानीय सीमा-क्षेत्रों पर उस दिशा में अवतरित होने वाला अनुक्रम प्रदान करना चाहिए। पर, इसकी भी विशेष संभावना है कि प्राचीन पूर्व के प्राचीनतम कृषक स्थायी गांवों में नहींरहते थे। अतः टीले के रूप में परिणत ऐसे गांवों की अध्यारोपित श्रेणियों के तल में उनकी विद्यमानताकी आशा नहीं की जा सकती है। आबाद गुफाएं लुप्त सूचना दे सकती हैं। केस्पियन के दक्षिण की गुफा में डॉ० सी० एस० कुन (Dr. C. S. Coon) के उत्खननों ने एक अनुक्रम प्रदान किया है जो मध्य-पाषाण (अनुक्रम) के साथ प्रारंभ होता है और एक ऐसे उत्तर-पाषाण-कालीन (अनुक्रम) द्वारा प्रवर्तित रखा गया है जिसका संबंध अब तक ऐतिहासिक रूप से स्थिर किसी भी संस्कृति-अनुक्रम के साथ नहीं स्थिर किया गया है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यहां एक निश्चयात्मक पुष्टि की जा सकती है। सैंधव नदी प्रणाली में अभिज्ञात प्राचीनतम आहारोत्पादक अर्थ-व्यवस्था रणघुंडे I की, प्राथम्येन विशिष्ट रूप में भारतीय स्वरूप रखती है। अतः रणघुंडे I व सियालक I सांस्कृतिक परिवर्तन के एक ही संश्लेष के परिणामों को अंतर्विष्ट किए हुए हैं—ऐसी कल्पना के प्रसारवादी उपधारण (Postulate) के आधार पर विभिन्न प्रकार के विशेषीकरण व खास प्रसार के लिए भी पर्याप्त समय देना होगा। दोनों प्रक्रियाएं पुरातात्त्विक अभिलेख के ज्ञात विभाग के बहिर्भूत हैं।

तथापि उस (प्रक्रिया) में आविष्कारों व उद्‍भावनाओं के द्वितीय संश्लेष-धातु-शोधन कला व चक्र-के प्रसार को संमिलित करना चाहिए। दोनों परिवर्तनों के प्रयोग में प्राविधिक समताएँ प्रसारात्मक उपधारण को कुछ औचित्य प्रदान करती हैं। इस क्षेत्र की दोनों सीमाओं पर बहुत स्थूल रूप में अनुपात के माप को संभव बनाने की संभावानाओं से युक्त एक समयगत अनुमाप प्रदान करने वाले निश्चित संदर्भ-संकेत यह सूचित करते हैं कि यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत तीव्र थी। साथ ही कुलाल चक्र (Potteri's Wheel) या धातु-विज्ञान के स्वीकरण व उनके संप्रेषण की प्रक्रिया की परिस्थितियां उन परिस्थितियों से भिम्न हैं, जो शस्य कृषि व पशु-पालन को नियमित करती हैं।

कुलाल चक्र या धातु के उपकरणों का उपयोग सिर्फ शैल्पिक ज्ञान पर ही निर्भर नहीं करता है। भंगुर भांडों का समूहोत्पादन सिर्फ तभी उचित होगा जबकि एक ही गांव में साथ-साथ रहने वाला जन-समुदाय ठोस, पर अब तक अनिर्धारित संख्या प्राप्त कर चुका हो। प्रभावपूर्ण सामाजिक बचत का उत्पादक समुदाय ही धातु के औजारों का उपयोग कर सकता है। प्रत्येक स्थिति में ग्रामीण अर्थव्यवस्था की क्षमता व सामाजिक वचत के संकेंद्रण या न्यूनतया प्रवाहशीलता—जैसे आर्थिक व सामाजिक तत्वों द्वारा सीमा का निर्धारण होता है। हस्त-निर्मित भांड व प्रस्तर के उपकरण किसी समुदाय की प्राचीनता की अपेक्षा अधिकांश में उसकी लघुता व निर्धनता के परिचायक हो सकते हैं।

और भी, धातु विज्ञान व चाक पर भांडों का निर्माण, तथा बहुत संभव शकट निर्माण कार्य भी, ऐसे शिल्प थे जिनका प्रयोग पूर्णकालिक विशेषज्ञों द्वारा होता था। ऐसे व्यक्ति, कम-से-कम आर्थिक रूप में, बंधुता के बंधनों से मुक्त थे। वे अपने गुप्त कौशल के बल पर ऐसी जगहों में अपनी जीविका उपार्जन कर सकते थे जहां अपेक्षित सामाजिक बचत उपलब्ध थी। इसके बावजूद एक सामान्य कृषक-ग्राम सिर्फ एक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

या दो धातुकर्मियों व कुम्हारों की सेवाएँ चाहता है और उन पर व्यय कर सकता है। ऐसे ग्रामीण-शिल्पी के बच्चे अबतक शिल्पि-रहित किसी पड़ोस के गांव में अपनी नियुक्ति व आजीविका खोजने के लिए बाध्य होते थे। इस तरह इस अवस्था में मृच्छिल्पीय शैलियों व आकारों के प्रसार का अर्थ लोक-प्रव्रजन न होकर केवल विशिष्टता-प्राप्त कुम्हारों कां आव्रजन होगा। उदाहरणार्थ, जोब व हिसार के पात्रों के बीच समताओं व विषमताओं की सम्यक् व्याख्या एक शैल्पिक परंपरा में प्रशिक्षित, पर, कला व पटलाचार[1] मूलक भिन्न सामाजिक परंपराओं की मांगें पूरी करने के लिए काम करनेवाले कुम्हारों की कल्पना से की जा सकती है। जम्देत-नस्र व हड़प्पा-पात्रों के बीच की तरह मेसोपोटेमिया व सिंधु घाटी[2] के शिल्पियों के शिल्प-विधान व उपकरण लगभग समान प्रतीत होते हैं।

अब, मेसोपोटेमिया में ऊरूक काल (Uruk times) तक, प्रायः ३००० खी० पू० से X एक्स शताब्दिक पहले ही धातु-विज्ञान व चाक की सम्यक् स्थापना हो चुकी थी। वे आमरी अवस्था में २५०८० खृ० पू० से Y शताब्दिक पहले सिंधु घाटी पहुंचे थे। कुछ विचार X व Y द्वारा उपस्थापित विपुलता के क्रमों को कुछ अधिक निकट से स्पष्ट करने में सहायक हो सकते हैं। मृद्भांडों के विषय में सीमांतवर्ती किसी भी एक क्षेत्र में वैविध्यपूर्ण शैल्पिक विकासों के लिए कोई साक्ष्य नहीं है। इसके विपरीत, धातु-विज्ञान (के क्षेत्र) में सम-सामयिक उत्पादनों की संभाव्य तुलना के समय तक विविधता प्रबल हो जाती है। आठवें अध्याय में परिगणित व निर्दशित सुमेरीय प्रकारों व नौवें अध्याय के सैंधव के बीच के वैषम्य को केवल अभिरूचित वैषम्यमूलक कहा जा सकता है। सिरे से होकर दंतछिद्रों के माध्यम से कुठार चढ़ाने का कार्य अधिकांश में सिर्फ स्थानीय कौशल है। इसकी श्रेष्ठता इसके सार्वभौम स्वीकार से प्रदर्शित होती है। तथापि, यह विवेकपूर्ण अभिकल्प भारत और केस्पियन तृणस्थलियों में (Steppes) बहुत विलम्ब से, तृतीय सहस्त्राब्द में पहुंचा, जबकि उससे बहुत पहले धातु-विज्ञान सुस्थित हो चुका था। अतः यह खास धातु-शोधन कला के साथ-साथ प्रसृत नहीं हो सका होगा।

---

१. मलोवां (Mallowan) 'दी लिगेसी ऑफ एशिया', लंदन यूनिवर्सिटी इंस्टिच्यूट ऑफ आर्केओलॉजी, एनुअल रिपोर्ट iv, १९४८, ३३ आगे निर्देशित करता है कि आज-कल पौर्वात्य शिल्पी किस तरह शैल्पिक परंपरा का निर्वाह करते हुए भी अपने ग्राहकों की अभिरुचियों के अनुसार शैलियों को बदल देते हैं।

२. मैंके, जे० आर० ए० आई० (JRAI), xxx, १९३०, १३०—५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकिन, चूंकि इसका साक्ष्य सियालक III, ४ व सूसा व में और अप्रत्यक्ष रूप उबेद सुमेर में भी मिल चुका है, अतः मध्यपूर्व में धातु-विज्ञान का प्राथमिक प्रसार इस प्रकार परिभाषित काल के पहले ही प्रारभ हो गया होगा। खास दंड-छिद्रयुक्त कुठार भी निश्चय ही पूर्व दिशा में किसी द्वितीय सूत्रार का परिणाम होगा। अंततः शाही तंप व चंहुदाड़ों पहुंचनेवाले आकार प्रारंभिक वंशीय मेसोपोटामिय नहीं हैं, बल्कि उर से लेकर उकेयर (Uquair) तक उबेदकालीन मृत्प्रतिरूपों द्वारा प्रायशः निर्दशित प्राचीनतर प्रकारों से इनका उद्भव मानना चाहिए। तब, यदि दंड-छिद्रयुक्त कुठारों का अस्तित्व उबेदकाल में माना जाए, तो सुमेर को धातु-विज्ञान का प्रथम उत्पत्तिस्थल न मानकर सिर्फ द्वितीय केंद्र मानना होगा जहां प्रायः दंड-छिद्रयुक्त कुठार उद्भावित हुआ था। इससे यह निष्कर्ष कतई नहीं निकलता कि उपधृत (Postulated) प्राथमिक किरणपुंज मिस्त्री से पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में विद्यमान था। क्योंकि, नील में सिंधु (घाटी) की अपेक्षा अधिक दंड-छिद्रयुक्त कुठार नहीं पहुंचे। साथ ही गांठदार सिरा वाली कंटिका, जो कि प्राचीनतम विशिष्टीकृत धात्त्रीय प्रकारों में से अन्यतम है, समान रूप से जर्जी, मिस्र व सियालक IV में उपलब्ध होती है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एकादश अध्याय

उर्वर चाप के शृंगों के मध्य

उपसंहार में ठीक उर्वर चाप के केंद्र की ओर मुड़ने पर हम उन कठिनाइयों का सामना करते हैं जो दजला के पूर्व के भू-भाग के हमारे सर्वेक्षण में बाधा डालने वाली कठिनाइयों के समकक्ष हैं। यह क्षेत्र बहुत विषम रूप में संनिविष्ट तीन प्रांतों में स्थित है। ये हैं-(१) असीरिया व उत्तरी सीरिया समवेत उत्तरी मेसोपोटेमिया का वृक्ष घास-स्थलीय शुष्क भू-भाग (Park land steppe), (२) ऑरोंटस घाटी व फोनेसियाई समुद्र तटवर्ती भू-भागों से युक्त फरात के निकटतम पश्चिम का पार्वत्य प्रदेश, और (३) पेलेस्तीन। सभी, सुमेरीय व मिस्रीय शृंगों को अप्राप्य तथा प्राक्-साक्षर संस्कृतियों के बहुमुखी विकास के लिए अनुकूल वृष्टि, नदियों, उपकरणों के लिए उपयुक्त प्रस्तरों व लकड़ी के रूप में प्राकृतिक साधनों का उपभोग करते हैं। सभी में साक्षर सभ्यता व लिखित इतिहास का प्रारंभ विलंब से हुआ। तीनों ही प्रदेश विभिन्न अंशों में एक या दोनों प्राचीनतम सभ्यताओं से संबंधित हैं। पर, सन्निकृष्ट प्रांत एक दूसरे से अधिक निकटता से आबद्ध हैं। अतः प्रत्येक का पृथक-पृथक सर्वेक्षण सुविधाजनक होगा।

(१)

सिजर शृंखला के उत्तर का शुष्क स्थलीय कटिबंध ऐतिहासिक कालों में निरंतर पूर्व व पश्चिम के मध्य यातायात का प्रवाह पथ रहा। पर, अपेक्षाकृत विश्वसनीय वृष्टि, स्थायी जल, प्रस्तर व काष्ठ की पूर्ण आपूर्ति ने तथा ज्वालाकाच (Obsidian) व कच्चे धातु की खानों के समीप्य ने छोटी, पर वर्धनशील आर्थिक इकाइयों को उत्तर जीविता प्रदान की। ये आर्थिक इकाइयां मिस्र, सुमेर व सिंधु घाटी में अतिशीघ्रता से क्रियाशील होने वाले जन-संकेंद्रण व आर्थिक दृढ़ीकरण के दबाव से मुक्त थीं। नगरीकरण व साक्षरता में बहुत विलंब हुआ और अंत में इनको दक्षिण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

से आरोपित किया गया। मिस्र व सुमेर की अपेक्षा यहां सात शताब्दियों बाद लिखित अभिलेख प्रारंभ हुआ जब सारगोन के पौत्र मनिस्तुसु (Manishtusu) ने निनिवेह[1] (Nineveh) में इश्तर मंदिर का निर्माण व पुनर्निर्माण किया और नराम्-सिन ने खाबर[2] पर स्थित ब्राक में एक महल बनवाया। और दक्षिण, असूर (Assur) में भी मंदिर-प्रधान नगर (Cathedral city) रूप में एक प्रांतीय ग्राम के परिवर्तन को सूचित करने वाला प्राचीनतम इश्तर मंदिर प्रारंभिक वंशीय ३ के पहले नहीं बना था। और, यह निम्न मेसोपोटेमिया से आने वाले सभ्य "सुमेरोयनों" का प्रतिष्ठान जैसा जान पड़ता है।

निम्न मेसोपोटेमिया से तुलना करने पर प्रागैतिहासिक काल में भी इसी प्रकार के अवरोध का पता चलता है। उत्तरी सीरिया व असीरिया, जैसा कि छठे अध्याय में दिखाया गया है, सुमेर के साथ उबेद संस्कृति के अंशभागी रहे। पर, यह भो प्रदर्शित किया गया था कि असीरिया में गावरा—XVIII व XVII की अवर उबेद वस्तियां निश्चय ही इरिडू में प्रारंभिक उबेद मंदिर—७ को समकालीन होंगी। अंतिम उबेद स्तर, गावरा—XII में आयातित सामग्री की अपेक्षिक प्रचुरता जिसमें तांबा, वेदूर्य, व "गारा" (फायंस १) सम्मिलित हैं, बटन के आकार की मुद्राओं व चक्राकार लोलकों तथा मिट्टी के कुटीराकार प्रतीक का भी निरंतर उपयोग पहले ही उरूक काल की अनुरूप घटनाएं हैं। मृद्भांड भी आकार व शिल्प में उबेद परंपराओं को सुरक्षित रखने के बावजूद कभी-कभी उन परंपरानुसारी पशु-पक्षियों (के चित्रों) से अलंकृत हैं, जो अक्कद के उकेयर में छोड़कर दक्षिणी उबेद परंपरा के लिए विदेशी तत्व हैं। और, इसके अतिरिक्त यह उबेद भांड एक लाल पट्टी वाले भांड से संबंधित है, जो काले में साधारण अभिकल्पों से चित्रित है और खाबर[3] पर ब्राक में भी ज्ञात है।

और, निम्न मेसोपोटेमिया की तरह यहां उरूक संस्कृति उबेद संस्कृति की उत्तराधिकारिणी नहीं हुई। सिंजर श्रृंखला की दक्षिणी ढलानों पर महत्त्वपूर्ण रूप से बसे हुए सिर्फ ग्रेरेश (Grairesh) में ही "धूसर उरुभांड" उबेद व प्रारंभिक वंशीय या निनेवाइत स्तरों[4] के बीच में निक्षिप्त स्तरों—(२ से ५ तक) के एक वर्ग का स्वरूप निरूपण करता है। पर, यहां भी धूसर भांड हस्त निर्मित प्रतीत होता है।

---

१. LAAA (एंनाल्स आर्कें० एंथ्रा), xix, १६३२, ५६।
२. इराक (Iraq), ix, १६४७, २६।
३. टॉब्लर (Tobler), गावरा, ii, ४६-४७।
४. इराक, vii, १६४०, १५-१६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लाल भांड अप्राप्य है एवं अन्य मृच्छिल्पीय उत्पादन व आयात मेसोपोटेमिया में उरूक काल की केवल अंतिम अवस्था के साथ ही सम-सामयिकता स्थापित करते हैं। वस्तुत: ग्रेरेश—५-२ उबेद अवस्था के तुरत बाद उत्तरी मेसोपोटेमिया में वृद्ध्युन्मुख संस्कृति के एकरूप या संस्कृतियों की एक परंपरा का निदर्शन करता है। निम्न मेसोपोटेमिया के अनुक्रम के साथ उनके संबंध की अपेक्षा इन सबों की सम-सामयिकता अधिक आसानी से स्थापित की जा सकती है। इस प्रकार व्याख्यात काल का गावरा काल[1] यह नामकरण समीचीन है, क्योंकि इसकी विषयवस्तु तेप गावरा (Tepe Gawra) में XIA से-VIIIB तक की बस्तियों द्वारा निर्दशित होती है। उपर्युक्त नाम सम-सामयिक अवशेषों व स्मारकों के संघात के निरपेक्ष युग के पूर्व-निर्णय का परिहार करता है।

गावरा काल में धातु निश्चित रूप से ज्ञात होने के बावजूद सब जगह दुष्प्राप्य था। पत्थर की कुल्हाड़ियां अब भी कुठार या वसूलों के सिरों के लिए सामान्यतः प्रयुक्त होती थीं। इनकी संख्या में गावरा-XII में पचास से गावरा-IX[2] में बारह तक के ह्रास को धातु द्वारा प्रस्तर के क्रमिक स्थान ग्रहण के सूचक के रूप में लिया जा सकता है। पर, गावरा-८ में यह संख्या फिर इकतालिस पर चली गई[3]। फिर भी, गावरा—९[4] से प्राप्त एक पत्थर का छिद्रित वसूला सूसा B से प्राप्त संख्या ७६ से साम्य रखता है, और इसके समान, निश्चय ही धातु के उपकरण का अनुकरण होगा। इस काल के अंत तक वस्तुत: कृषि संबंधी उपकरणों के उत्पादन के लिए भी धातु का उपयोग हुआ। गावरा-८ से तांबे के हंसुए के फलक की सूचना मिली है और यथावसर (Occasionally) कम-से-कम ५.६ प्रतिशत त्रयु ताम्र[5] के साथ मिश्रित किया जाता था।

मृद्गर व ढ़ेलवांस अभिमत अस्त्रों के रूप में रहते हैं। ढ़ेलवांस की मिट्टी की गोलियां सर्वसाधारण हैं। वाण के सिरे ग्रेरेश व गावरा में नहीं मिलते हैं। फिर भी, निनिवेह से (दो के मिलने) का विवरण मिलता है। गावरा-११[6] से प्राप्त एक

१. परकिन्स (Parkins)।
२. टॉब्लर (Tobler), २०२।
३. स्पीजर (Speiser), गावरा, 1, ८५।
४. वही, ८८।
५. स्पीजर, १९२-५।
६. टॉब्लर, फ० xciv, डी व एफ (D and F)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दो धारों वाला पत्थर का मुद्‌गर-सिरा डेनमार्क व स्वीडेन से उपलब्ध परवर्ती उत्तर-पाषाण-कालीन नौ कुठारों के साथ निरर्थक साम्य रखता है और यह पर्याप्त विनोदजनक है कि यह उसी क्षितिज में घटित होता है जिसमें कड़ी खोली या फाएंस[1] के चक्रांकार लोलक, जो फिर स्कैंडिनेविया (Scandinavia) में अवर उत्तर-पाषाण-कालीन हैं। इस काल में सादे मृद्‌भांडों की प्रमुखता है। हस्तनिर्मित धूसर भांड ग्रेरेश-V-२ और निनिवेह ३ में लोकप्रिय था। लाल भांड सिर्फ निनिवेह ४ में प्रचलित था। तिरछे कोर वाले (Hevel-rimmed) कटोरे ग्रेरेश, निनिवेह ३-४ व ब्राक में दृष्टिगोचर होते हैं। पर, कुछ अंतर्गत कोर-वाली ऊंची पोपली पेंदियों पर कटोरे व प्याले गावरा-IX व ग्रेरेश में पाए जाते हैं। इन भांडों में से अधिकांश हस्त-निर्मित थे। केवल गावरा की परिसमाप्ति के समकाल ही व्यावसायिक कुंभकारों ने असीरियाई गांवों में बासना प्रारंभ किया। चाक पर बने चार बरतन सिर्फ गावरा-IX[2] से मिले हैं। पर, निनिवेह में प्रायः इससे अधिक थे।

इससे पूर्व[3] सचक्रयानों का विश्वसनीयता के साथ कोई साक्ष्य नहीं मिलता है। गावरा-Xiii से प्राप्त केंद्रगत धुरायुक्त एकमात्र मृच्चक्र (Clay disc) निश्चय ही बाद के प्रतिमान चक्रों के अति समान हैं। पर, IX से XII तक से एक भी नहीं और XIII से चौदह मिले हैं। बाद की बस्ती में, पर इसके पूर्व नहीं, मिट्टी के प्रतिमान यह प्रदर्शित करते हैं कि चतुष्चक्र (Four-wheeled) व द्विचक्र शकट या रथ-दोनों ही परिवहन के लिए प्रयुक्त होते थे। चूंकि नमूने के घोड़े या गदहे इतना पहले नहीं ज्ञात है, अतः वे संभवतः बैलों द्वारा खींचे जाते थे। असीरिया में गावरा काल भर बेलन के आकार की मुद्रा भी अज्ञात रही। पर, मनके, बटन या त्रिकोणात्मक प्रकार की अंकन मुद्राएं अच्छी तरह उपस्थापित होती हैं जैसा कि मिट्टी के ठप्पों पर उनके अंकन उपलब्ध होते हैं। उन पर भरी हुई व्यत्यस्त रेखा या अन्य ज्यामितिक अभिकल्प उत्कीर्ण थे। साथ ही गावरा XI में कभी-कभी रहस्यात्मक वर्गों[4] में रखे गए जीवंत पशु व मानव आकार भी उत्कीर्ण किये जाते थे।

तब पूर्वगामी संदर्भों में गावरा काल में असीरिया उरूक अवस्थांतर्गत निम्न मेसोपोटेमिया से पिछड़ा था। गावरा की धार्मिक वास्तुकला सुमेर के साथ परिमाणा-

---

१. वही, ८६, १६५, फ० cixxlii, ४१-४२।
२. टॉब्लर, १५४।
३. टॉब्लर, १६७; स्पीजर, ७४--५।
४. टॉब्लर, १८८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

त्मक तुलना व इस काल के विस्तार के स्थूल माप का आधार प्रदान करती है। गावरा-XIA में अब तक एक ऊंचे दुर्ग के रूप में परिणत टीले के शिखर पर एक वृत्ताकार दुर्ग व्याप्त था जिसका व्यास १८ मी० से १९ मी० तक था और एक मजबूत मिट्टी की बनी दीवार से आवेष्टित था। पर, गावरा-में केंद्रीवर्ती क्षेत्र जो एक समय XIX, XVIII व XIII के उबेद मंदिरों द्वारा पावन बना था, पुनः पूर्व-कालीन धार्मिक उपयोग की स्थिति में आ गया और केवल ९.५ मी० वर्ग माप वाले एक छोटे मंदिर का स्थल बना। चार निर्माण कालों के बाद गावरा-VIII B में इसके उत्तराधिकारी की लंबाई चौड़ाई क्रमशः १६.५×१३ थी और उत्तरवर्ती उबेद स्तर-XIII की तरह दो अन्य पूजा-वेदिकाओं से संबद्ध था चूंकि विभिन्न मंदिर एक ही स्थान पर नहीं स्थित थे, अतः चार निर्माण काल एरिदू या खफाजे के अभ्यासित मंदिरों की तरह एक ही मंदिर के उतने पुनर्निर्माणों को उपस्थापित नहीं करते है। अतः ये निस्संदेह दो शताब्दियों से अधिक काल के अनुरूप नहीं हैं।

असीरिया में समाजगत अतिरिक्त धन के संकेंद्रण में देवताओं के साथ स्पर्धा रखने वाले धर्म-निरपेक्ष सरदारों के अस्तित्व का अनुमान संभवतः गावरा के राजधानी क्षेत्र में आविष्कृत कुछ मकबरों से किया गया है। शिशुओं व बच्चों के बहुसंख्यक शवाधानों के अतिरिक्त, जो संभवतः बलिदान हैं, X से VIII तक के स्तरों में ईंटों शवपेटिकाओं में वयस्कों के शवाधान घटित हुए। इनमें से कुछ स्वर्णाभरणों व प्रस्तर-पात्रों से प्रचुरतया उपस्कृत हैं। चार दिशाओं में पत्थर के गदासिरों से[1] युक्त हैं। ये हथियार, जिनमें से दो पर उभाड़दार गाठों की नकाशी बनी है मंदिर-प्रांगणों में या इनके निकट इन मकबरों की अवस्थिति के बावजूद धार्मिक उच्च पदस्थों की अपेक्षा युद्ध नायकों के अधिक उपयुक्त हैं।

अंत में, विलक्षण मृद्‌भांडों व पत्थर के सामानों के लोकप्रिय प्रयोग द्वारा गावरा काल के आध्यात्मिक जीवन का स्वरूप निरूपित होता है। इन सामानों का वर्णन विभिन्न रूप से "बाटों" लीलामूर्तियों व कुटीर—"प्रतीकों" के रूप में किया जाता है। ये पदार्थ उर्वरता की अधिष्ठात्री देवी इनंना या इसके सामीय प्रतिरूप इश्तर[2] (चि० १०५) के लिए पवित्र हैं। ग्रेरेश V-II में व गावरा के अंतिम उबेद

---

१. टॉब्लर, ७८, ८४, ९२।

२. वॉ व्यूरॉ (Van Buren) ने इनकी अर्थवत्ता व वितरण का नवीनतम विबरण दिया है,—इराक XII, १९५०, १९३९ आगे; तुलनीय मलोवॉ, वही IX, १९४७, ३४ व फ्रंकफर्ट, जे० एन० ई० एस्०, VII, १९४९, १९४ आगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्तर XII में पाये जाने वाले मिट्टी के पदार्थं के प्रास्तरीय रूपांतर की उपस्थापना गावरा में XIA से VIIIC तक व ब्राक में सम्यक् रीति से हुई है। इरेक में ए-अन्न के अधीन जम्देत नस्र स्तर III में स्थित संग्रह से व खफाजे में सिन मंदिर (Sin Temple) IV

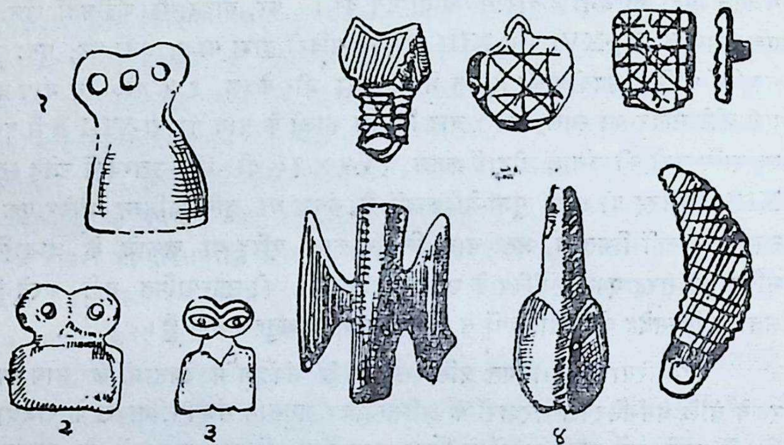

चित्र १०५. १-२, कुटीर-प्रतीक, १, मिट्टी (का) हमा के (Hama K), २/१५; पत्थर (का), ब्राक C, २/५; ३, नेत्राकार मूर्ति (eye-idol), पत्थर, ब्राक, २/५; हलाफियन ताबीज व मुद्रांकित लोलक, १/१, अर्पचिया (Arpachiya)।

से उपलब्ध कुछ एकल नमूने इन मालाओं और इसलिए गावरा काल की तिथि को जम्देत नस्र और संभवतः निम्न मेसोपोटेमीय अनुक्रम में उत्तर उरूक कालों में रखते हैं। ओरांटस पर हमा के (Hama K) में हमें उसी तरह का कर्मकांडीय पदार्थ उपलब्ध होगा। पर, फ्रैंकफर्ट ने दिखाया है कि लेस्बॉस पर थर्मी (Thermi) में चतुर्थ बस्ती से प्राप्त पात्र-विधानों (Pot-Covess) में उसी प्रतीक का अंतिम रूपांतर सुरक्षित है।

जबकि कुटीर प्रतीक अब भी प्रचलित थे, खाबर (Khabur) पर स्थित ब्राक जो पहले एक गांव था, जहां गावरा-XII के भांड की तरह का काले रंग पर लाल रंग से चित्रित भांड प्रयुक्त होता था, एक विशाल मंदिर[1] का स्थल बन गया। इसकी विशालता व योजना तथा शुष्क स्थलीय कटिबंध में प्रथमतः उल्लिखित इसमें पाई गई वेलन के आकार की मुद्राओं के आधार पर निर्णय करने पर कहा जा सकता है कि

१. इराक (Iraq), ix, १९४७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संभवत: मंदिर की परिकल्पना व स्थापना निम्न मेसोपोटेमिया से आने वाले सभ्य उपनिवेशवासियों द्वारा हुई थीं। तीन बार इसका पुनर्निर्माण हुआ प्रतीत होता है। पर, केवल अंतिम मंदिर A ही प्राचीन लुटेरों के सुरंगों से होने वाले विध्वंस से बच पाया है।

A मंदिर ६ मी० ऊंचे ईंट के चबूतरे पर स्थित था, जिसने संभवत: अवह्रासी क्रम में B C, व D के रूप में अक्षरांकित पूर्वकालिक मंदिरों की नीवों को अंतर्विष्ट कर लिया था। भीतर का केंद्रीय पूजागृह, जो १८ मी० लंबा व ६ मी० चौड़ा है, इरेक में श्वेत मंदिर (White temple) के प्रारंभिक पूर्ववर्तियों—D व अक्षरांकित अनु मंदिर (Anu Temple) के साथ अनुपातों व निरतिशय विस्तारों—इन दोनों में साम्य रखता है पर समग्र भवन २५ × २७ मी० क्षेत्र में अवश्य ही व्याप्त रहा होगा। पूजा-वेदिका के एक छोर पर स्थित पादिका या वेदिका सफेद चूना-पत्थर और धूसर सिलेटी पत्थर को चौखंडी दार पट्टी से अलंकृत थी। इसके चारों ओर सोने का आवेष्टन लगा था जो सोना चढ़े चांदी के कीलों द्वारा अपने स्थान पर टिका हुआ था। भीतर की भित्तियां प्रस्तर के बने अष्ट-दल गुलाबों से मिश्रित रंगीन मृत्तिका-शंकुओं की पच्चीकारी से विभूषित थी।

यह मंदिर अपने पूर्ववर्तियों की तरह वस्तुत: अनेक बार लूटा जा चुका था। पर, संभवत: ८ संज्ञक मंदिर से संबंधित कुछ गौण कोष लुटेरों की दृष्टि से बच गया था। सेलखड़ी के तीन मस्तक, जिनमें से एक १७.५ से० मी० ऊंचा (XXXVII) है, अत्यधिक विलक्षण हैं। ये उत्तरी मेसोपोटेमिया से प्राप्त बड़े पैमाने पर संगतराशी का प्राचीनतम उदाहरण हैं। पर, ये इरेक से प्राप्त भव्य मस्तक से अपकृष्ट हैं। सेलखड़ी या मिट्टी की लघु नेत्र-मूर्तियां (चि० १०५,३) व कुटीराकार प्रतीक अत्यधिक सार्वजनीन थे। मलोवा (Mallawon) परोक्त को नेत्र मूर्तियों के रूढ़िग्रस्त अवगत रूप (Degenerations) मानता है और इसको लीला-मूर्तियों (Spectacletidols) का नाम देता है। पर, फ्रैंकफर्ट प्रकार-परिवर्तन के पक्ष में है। अन्य अवशिष्ट देवार्पित मूर्तियों में बहुसंख्यक पशुाकार जंतर हैं जो शैली के आधार पर इरेक में प्राप्त ए-अन्न III संग्रह की मूर्तियों से पृथक करने योग्य नहीं हैं। और, इनमें दर, पशुओं व वृक्षों के आकार की मुद्राएं जम्देत नस्र शैली के बेलन और वृत्तखंडित फायेंस के साथ-साथ हजारों अन्य मनके सम्मिलित हैं।

बेलनों व इरेक संग्रह से प्राप्त सामानों के साथ तावीजों व पशु-मुद्राओं के साम्य को जम्देत नस्र काल में साथ रखने पर यह सिद्ध होता है कि नेत्र मंदिर (Eye-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Temple) उस काल से पूर्ण संबंध है। उत्खनकों का आभासतः युक्ति सुझाव है कि D मंदिर संभवतः उत्तर उरूक काल का था। खाबर पर गावरा काल के कुटीर-प्रतीकों व मुद्राओं का सुमेर में व्याख्यात जम्देत नस्र काल के उपयुक्त पदार्थों के साथ साहचर्य जम्देत नस्र व गावरा कालों के मध्य आंशिक ऐक्य का समीचीन समर्थक हैं। इसमें कोई अंतर नहीं पड़ता यदि हम फ्रैंकफ़र्ट के इस विचार को मान भी लेते हैं कि नेत्राकार मूर्तियां प्रकारतः कुटीर प्रतीकों से अर्वाचीन हैं।

उत्तरी मेसोपोटेमिया में परवर्ती काल एक विभिन्न प्रकार के चाक पर बने चित्रित मृद्भांड द्वारा परिभाषित होता है और उस स्थल के आधार पर, जहां इस प्रकार का भांड प्रथमतः अभिज्ञात हुआ था, निनिवाई काल[1] के नाम से अभिहित हो सकता है। यह भांड प्रचुरता से उपलब्ध होता है। और शायद यह सिर्फ निनवेह[2] व तेल[3] बिल्ला (Tell Billa) के अधीन प्रथम बस्ती (-७) और प्रायः ग्रे रश I[४] में बना था। पर, इसके कम-से-कम कुछ पात्रों का निर्यात सिर्फ गावरा-VII व VIII A[५] जैसे पड़ोसी गांवों तक ही नहीं होता था, पर खाबर घाटी[६] व अक्कद में में एश्नुन्ना[७] (Eshnunna) व किश[८] तक भी होता था। एश्नुन्ना में इन आयातों का संबंध प्रारंभिक वंशीय I से ठहराया जाता है जो निनवाई काल को बेलन के आकार की मुद्राओं द्वारा समर्थित तिथि प्रदान करता है।

निनेवाई ५ भांड हरे रंग का है और उबेद भांड से साम्य रखता है। पर, पात्र सर्वथा चाक पर बने हैं और पट्टीदार हैं। रंग चमकीला व आसमानी काला है और आकार एवं प्रतिरूप अभिनव हैं। ठोस पेंदों पर आधारित चषक (चि० १०६) तथा गोल तल व ले चपटे प्याले (चि० १०७) प्रिय आकार हैं। अभिकल्पों में अवग्रह (Sigma) दुहरा कुठार व अन्य प्राचीन उद्देश्य सम्मिलित हैं। और इनमें हिसार I या कुल्ली का भा स्मरण दिलाने वाली पद्धति में सावधानता पूर्वक शैलीबद्ध लंबी गरदनों वाले पक्षी व पशु भी सम्मिलित हैं। चित्रित भांड के साथ हलके भूरे रंग का

१. पर्किन्स (Perkins), CAENM, १८५।
२. एन्० आर्क० ए-श्राँ० लिव० (LAAA), xix; १९३२, २५२।
३. म्यू० ज० (Mus. J.) xxiii, २५२।
४. इराक, vii, १५।
५. स्पीजर (Speiser), ४१, ४७।
६. इराक iii, १९३६, ३८, iv, ९५।
७. ओ० इंस्टि० कम्० (OIC) सं० १९, पृ० ३१, सं २० फ० vii. २६-७।
८. अश्मोलियन संग्रहालय में भांड-खंड, ऑक्सफोर्ट।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

या धूसर रंग का भांड भी उपलब्ध होता है जो निकृत्त, उत्कृत्त या उभाड़दार नक्काशी वाले प्रतिरूपों से विभूषित हैं (चि० १०८)। यह विल्ला—७-६ से पूर्णरूपेण ज्ञात होता है। अतः यह वितला भांड[1] के नाम से अभिहित किया गया है। पर, यह खाबर पर गावरा में व छागर बाजार (Chagar Bazar) में भी उपस्थापित किया है। चषक एवं कुछ अन्य प्रकार निनेवेह ५ के आकारो से संबंधित हैं। पर कुछ अभिकल्प मक्रन से सुमेर में आयातित पत्थर के पात्रों पर उत्कीर्ण रूपों के साथ साम्य प्रदर्शित करते हैं।

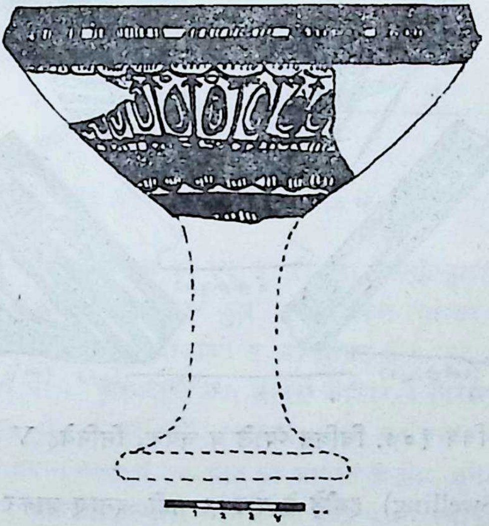

चित्र १०६ चित्रित चषक, निनेवेह V।

शेष विषयों में निनेवाई काल उत्तर गावरा अवस्था में कोई वस्तुतः महत्वपूर्ण प्रगति नहीं प्रदर्शित करता है। परिवहन व मृच्छिल्पोद्योग—दोनों में ही चाक का नियमित प्रयोग होता था। वाण के सिरे अंततः अपेक्षाकृत प्रचुर हैं और धातु अधिक सर्वसामान्य है। गावरा—VIII से उपलब्ध बाइस (पदार्थ) के विपरीत गावरा-VII से धातु के बियालीस और-VI से ३३४ पदार्थ मिले हैं। विशिष्ट सुमेरोय प्रकार ४ की सड़सियों का एक जोड़ा, और नलीदार शूक (Pins)—जिनकी गरदनों पर

१. म्यू० ज० (Mus.J.), xxiii, १६३४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

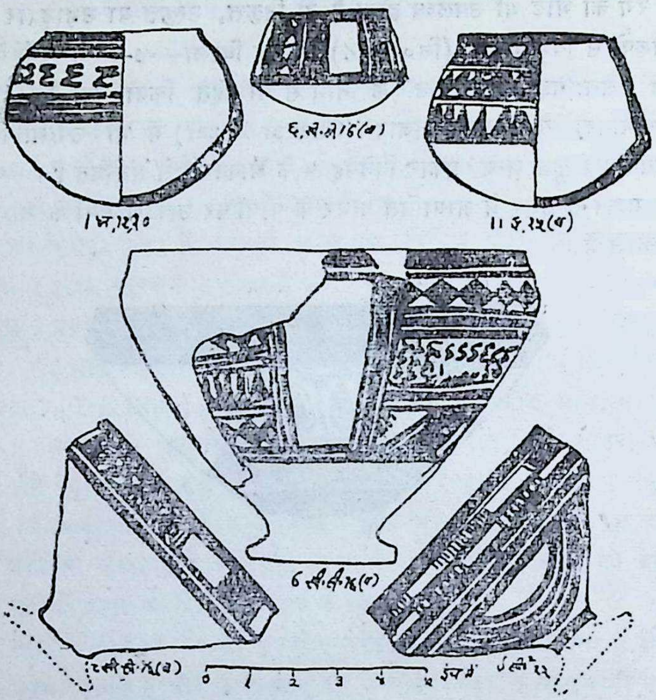

चित्र १०७. चित्रित प्याले व चषक, निनिवेह V ।

छिद्रित स्थूलन (Swelling) हथौड़े से पीटकर नहीं बनाए जाकर ढाला गया है— उल्लेखनीय हैं। तृणमय शोषस्थली में कहीं भी साक्षरता का पता नहीं चलता है। पर, गावरा-VII व निनिवेह ५ ठप्पों के साथ वर्तुलाकर मुद्राएं प्रतियोगिता रत थीं। निनिवेह ५ से प्राप्त अधिकांश अंकनों का शैलीमूलक वर्गीकरण "जम्देत नस्र" के रूप में हुआ है। पर, वास्तविक बेलन को प्रारंभिक वंशीय III का होना चाहिए। गावरा-VII से प्राप्त दो मुद्राएं जम्देत नस्र के रूप में वर्गीकृत हैं, दो प्रारंभिक वंशीय II और एक जम्देत नस्र[1] से अर्वाचीन मानी गई हैं। इस प्रकार उत्कीरण का साक्ष्य मृदभांडों के साक्ष्य का पोषक है । मध्य तिग्री व खाबर पर निनेवाई काल निम्न मेसोपोटेमिया में जम्देत नस्र की समाप्ति व प्रारंभिक वंशीय I-II के साथ मिलता है।

१. पर्किन्स, कांपे० आर्के अर्ली मेसो० (CAEM), १७५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

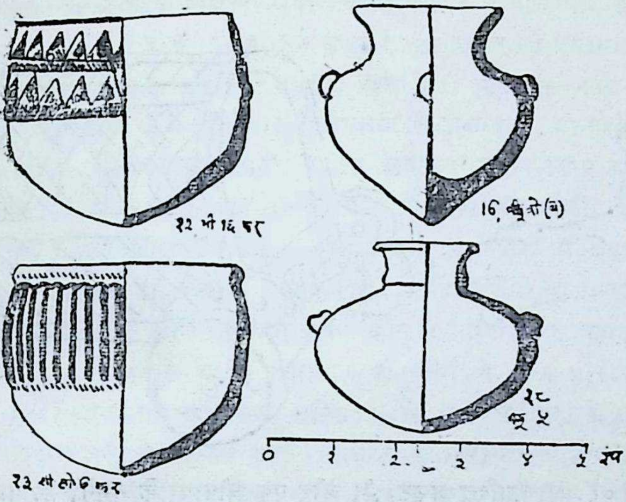

चित्र १०८. निनिवेह V से प्राप्त बिल्ला भांड के अंत:कृत पात्र ।

साक्षरता व नागरिक जीवन का प्रारंभ शीघ्रता से नहीं हुआ। निनिवेह में इश्तर मंदिर के नीचे ईंट के मिहराबदार कुछ मकबरे किश या उर में उसी तरह के मकबरों की तरह संभवत: स्थानीय राजाओं से सम्बन्धित हैं। पर, पुराने लुटेरों ने मकबरों को लूट लिया था। गावरा-VI व छागर बाजार-३ निरक्षर गांवों के रूप में कायम रहे। फिर भी, गावरा और संभवत: सभी अवशिष्ट ग्राम आवासिक धातुकारों को आश्रय प्रदान करते थे एवं धातु की आपूर्ति के लिए सुमेरीय वाणिज्यिक संघटनों से कम-से-कम अप्रत्यक्ष रूप में लाभान्वित होते थे। स्थानीय धातुकारों ने पीछे प्रगणित सभी प्रतिष्ठित सुमेरीय प्रकारों व धातु की हंसियों और सड़ुियों का प्रतिनिर्माण किया था। ये ठीक सामान्य सुमेरीय चिमटियों की तरह बनाई गई थीं जो केवल संयोगवश अब तक निम्न मेसोपोटेमिया से सूचित नहीं हुई हैं। खिलौने के चक्के, रथ और शकट इस समय बहुत लोकप्रिय थे। चित्र १०९ का आच्छादित शकट इस मत का खंडन करता है कि सचक्र यान मुख्यत: आयुधों के रूप प्रयुक्त होते थे। गावरा-VI से प्राप्त एक सारंगी के आकार की पत्थर की छोटी मूर्ति हिसार II, अनातोलिया व एजियन में समानांतरों के लिए और एक द्विशीर्षपशु प्रारंभिक फराऊनी समानांतरों के लिए उल्लेखनीय हैं, दोनों की प्रतिलिपियां एशुन्ना[1]

१. स्पीजर, गावरा, i, फ० liii, ब, और liv, अ०, ओ० इ० कम् (OIC), सं० १९ चित्र, २४, २८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

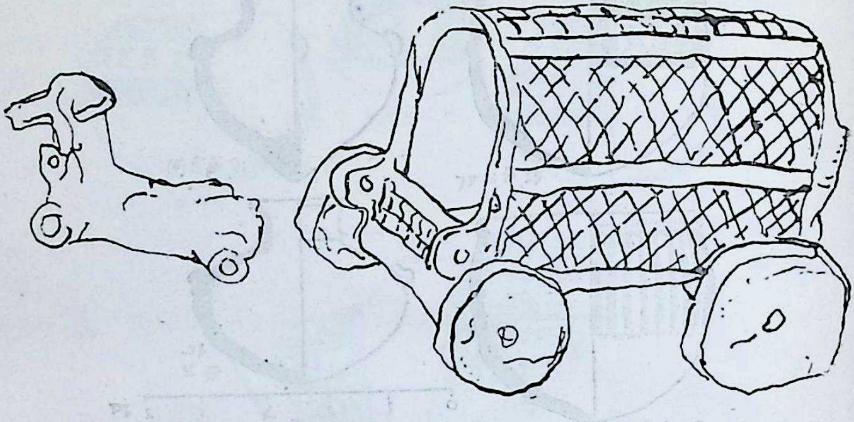

चित्र १०६. आच्छादित शकट, 1/1, और एक चौपाया के नमूने, 2/5, गावरा-VI, स्पीजर के अनुसार।

में एक प्रारंभिक वंशीय II के संदर्भ में पाई थीं। इस तरह ये इसका आंशिक साक्ष्य प्रदान करती हैं कि गावरा VI ने सुमेर में अवश्य ही प्रारंभिक वंशीय III को अतिक्रांत किया होगा। पर, शॉफर (Schaeffer) इसको सारगोन का परवर्ती मानने के पक्ष में है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि औजारों व हथियारों के प्रारंभिक सुमेरीय प्रकार फिर भी सारगोनीय काल में उत्तरी मेसोपोटेमिया के पीछे के जंगली इलाकों में प्रचलित थे। उस समय ब्राक में खाबर पर[1] ठीक चित्र ८७, ३ की तरह के बर्छी के सिरे अब भी व्यवहृत होते थे। उसी तरह उच्च फारस पर[2] कर्शमिश (Charche-

---

१. इराक, ix, १२१, फलक ३२,११।

२. शॉफर (Schaeffer), स्ट्रैटीग्राफी काम्पेरे (Stratigaphyic Comparee) ८०-४ और चित्र ६,७७-८२, १०४-५ अधिकांश सामग्री का संक्षिप्त परिचय देता है। तु० वूली, एन्नाल्स आर्क० ऐन्थ्रा० लिव० (LAAA),vs, १६१४, ८७ आ०, और थूरो दगिन (Thureau-Dangin) व द्यनांद (Dunand), तिल बर्सव, पेरिस, १६३६,६६-११२; सचक्र यानों के लिए वेरीटस् (Berytus) भी,ii, १३२; सीरिया, xl, फ० xxxiv, व कैम्० एंशि० हि० (CAH),फ० i, १६३७, फ० २४८ ब। कुछ उच्चतर तैथिकी के लिए देखिये मलोवां, ऐंटिक्विटी, xi, १६३७, २३५, स्वभावतः मेसोपोटेमिया की तैथिकी में क्रमिक न्यूनन की छूट देने के लिए इसकी निरपेक्ष तिथियों को २०० वर्षों तक घटाया जा सकता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

mish) के इर्द-गिर्द व उसके नीचे "मंजूषा-शवाधि काल" में गौण परिवर्तनों के साथ रास की कड़ी, हथियारों व ३, ६, ६, १० अ व १० व प्रकार की प्रसाधन सामग्री के प्रारंभिक सुमेरीय प्रकार अब भी बनाए जाते थे। उपर्युक्त काल सारगोन व नराम्‌सिन (Naram-sin) के सीरियाई अभियानों के ठीक बाद या पहले अवश्य ही शुरू हुआ होगा। प्रस्तर-खंडों से बनी सम्यक् उपस्कृत शव-पेटिकाएं बड़े शहरों या गांवों के नीचे गड़ी थीं। तिल-बरसिव में मारी के प्रारंभिक वंशीय I में मकबरों की तरह पत्थर के बड़े टुकड़ों से बने हुए एक मेहराबदार मकबरे में अवश्य ही एक छोटे राजे का अवशेष रहा होगा। नमूने रथों, गाड़ियों व दो या चार ठोस पहियों वाले छकरों के व्यवहार को सिद्ध करते हैं। और व्यवसाय लग्न कुम्हार चाक पर मिट्टी के लाल बरान बनाते थे। आवासिक धातुकारों ने सिर्फ प्रारंभिक सुमेरीय प्रतिमानों का ही अनुकरण नहीं किया, बल्कि उन्होंने उल्लेखनीयता के साथ बर्छी के सिरों को कांटेदार दांतों से सज्जित करके विशिष्ट रूपांतरों को भी उपस्थापित किया और अपने कोष को कुंदे में छोटे छिद्र वाली चिपटी कुल्हाड़ियों जैसे "फोनीसियाई" प्रकारों से समृद्ध किया। वेलन के आकार की मुद्राएं भी प्राचीनतर सुमेरीय अभिकल्पों की आपेक्षिक अनगढ़ प्रादेशिक अनुकृतियों से उत्कीर्ण की गईं थीं। पर उन पर कोई अंतर्लेख नहीं था। क्योंकि हमें इसका कोई साक्ष्य नहीं मिलता कि स्थानीय राजाओं को अपने राजस्व की देखरेख के लिए लिपिकों की आवश्यकता थी। वस्तुतः सुमेर निवासी एक हजार वर्ष पहले जिस स्तर पर पहुंचे थे वहां अब तक स्थानीय जनता नहीं पहुंची थी। और हलफियन एवं उबेद किसानों द्वारा इस प्रदेश के उपनिवेशोकरण के समय से अब तक स्वतंत्र स्थानीय विकास का कोई अभिलेख प्राप्त नहीं है। फिर भी, हम पाएंगे कि पूर्ण एकरूपता के साथ मंजूषा शवाधियों में प्रदर्शित समुचित धात्वीय प्रकार ही एजीयन (Aegean) व समशीतोष्ण यूरोप तक पूर्ण स्पष्टता के साथ फैले हुए प्रतीत होते हैं।

(२)

पर ज्यों ही हम भूमध्य सागरीय जल-प्रवाह से फरात को विभक्त करने वाली उच्च भूमि के संकीर्ण कटिबंध को पार करते है त्योंही पूरा चित्र परिवर्तित हो जाता है। अमानस (Amanus) व लेबानन शृंखलाएं पश्चिम से नमी भरी खाइयों को विद्ध करती हैं। अतः फोनीसिया और इसके पृष्ठ स्थलों में विश्वसनीय व उदार शरत्कालीन वृष्टि शस्यों, वनस्पतियों व द्राक्षालताओं को पटाती है तथा स्थायी नदियों व सोतों को भरती रहती है। इन साधनों के साथ ओरोंटस घाटी व समुद्र तटीय समतल

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मत्स्य मारण, शस्योत्पादन व पशुपालन के आधार पर, विशेषतः उद्यान कर्म से संमिलित होने पर, एक बड़ी आबादी का भरण-पोषण कर सकता था। पर, इसमें जनसंख्या के किसी प्रकार के संकेंद्रण की आवश्यकता नहीं थी। ओरोंटस पर हमा[1] में अमक (Amuq) समतल पर स्थित एश-शेख[3] व जूदा[3] में और उत्तर सकशे-गोजू (कोबा ह्यूक[४], Coba Huyuk) में करासू की उच्च स्थलीय घाटी में स्थित परीक्षण गर्त (Test pits) यह साबित करते जान पड़ते हैं कि मेसोपोटेमिया के किसान अपने ढ़ेलवांसों व भड़कीले रंगों वाले मृद्भांडों के साथ ओरोंटस घाटी में आ बसे थे। वस्तुतः उन्होने ठीक भूमध्यसागरीय तटों तक कम से कम उगरित रासशामरा[5] (Ras-shamra) में प्रवेश किया था। इन सभी स्थलों में ढ़ेलवांस की गोलियां व हलफियन भांड-खंड पूर्ण मात्रा में प्राप्त हुए हैं। सकशे गोजू (Sakce-Gozu) एवं अन्य स्थानों से प्राप्त समारा और संभवतः हस्सुनाई भांड-खंड अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन उपनिवेशीकरण का समीचीन संकेत कर सकते है।

पर, सभी दशाओं में चित्रित मृद्भांडों से युक्त "ताम्र पाषाण युगीन" बस्तियां स्वतः चित्रित भांडों व सिरों द्वारा अन्य से भिन्न हमा म (Hama M) बूदेदा व उगरित-V जैसे प्राचीनतर "उत्तर-पाषाण-कालीन "ग्रामों पर अध्यासित हैं। दुर्भाग्यवश इन गहरे स्तरों में ठिकरों के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है। समस्त क्षेत्र में कृष्णमुख वस्तुएं सर्व-सामान्य हैं। इनका पृष्ट भाग काला या अधिक दुर्लभता से लाल बनाया गया है। इन वस्तुओं को सामान्यतः अलंकृत किया गया था। पर एक स्थान से दूसरे स्थान के प्रतिमान व शैलियां भी भिन्न हैं। पाक क्रिया के पहले या बाद निकर्तन के द्वारा, बक्र प्रतिमान (Rocker pattern) उत्पन्न करने वाली खोली की धार से (कुटिल दांतेदार रेखाओं की लकीर देकर) छाप देकर सजावट की गई होगी या उद्भ्राजक उपकरण से ही यह काम हुआ होगा। उपकरण का प्रयोग इस प्रकार किया गया है जिससे फीके धूसर या गुलाबी रंग के धरातल पर चमकीले काले

१. इनघोल्ट, 'रिपोर्ट प्रेलिमिनेरे; के दॉस्क (K.Danske) विदेंस्काब्स सेल्सकब्स स्क्रिफते, १६४०।

२. अ० ज० आर्क (AJA), liv, १६५०, ६२।

३, अ० ज० आर्क (AJA), xli, १६३७, १०

४. ए० आर्क एन्थ्रॉ लि० (LAAA), xxiv, १२०-१४०, ईराक xli, १६५०, ५३-१५८।

५. सीरिया, xvi, १६३५, १६२, उगरितिका (Ugaritica).i.।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

या लाल रंग की धारियों पड़ गई है। इससे परिणत होने वाला "आघात उद्भ्राजित (Stroe-burnished), उद्भ्राजक अलंकृत (Burnish-decorated) भांड जूदेदा XIV व उगरित-V में पाया जाता है पर, सकशे-गोजू में "आद्य-ताम्र-पाषाण-युगीन स्तर में केवल प्रथम चित्रित पात्रों के साथ प्राप्त होता है। उसी तरह की अत्यधिक विशेषीकृत शैली समोस[1] (Samos) पर "उत्तरपाषण कालीन" स्थलों में त्रोद(Trod) में, उत्तरी यूनान व विंका (Vinca) में मध्य देंयूब[2] (Danube) पर फिर दृष्टिगोचर होती है। पर, यह प्रारंभिक मिनोवाई क्रीट[3] पिरगौस पदार्थ में विभिन्न प्रकार के पात्रों के लिए, किस[4] ने धूसर के उरूक पदार्थ के लिए और अंततः हिसार २ के धूसर भांडों में, और फोनीसिया व पैलेस्तीन के झिलमिल उद्भ्राजित वस्तुओं में ऊपरी लाल द्रव या रंग के ऊपर प्रयुक्त होती है।

इसके निक्षेपों की अतिशय गहराइयों, खासकर मर्सिन में जो एक ही सामान्य संस्कृति से संबद्ध है, के आधार पर निर्णय करने पर यह पूर्वभूमध्यसागरीय (Levantine) उत्तर-पाषाण-कालीन संस्कृति अवश्य ही चिरस्थायी रही होगी और प्राचीनता में नील घाटी या मेसोपोटेमिया में ज्ञात किसी भी वस्तु से स्पर्धा कर सकती है। यह वस्तुतः नाटूफियन या किसी अन्य मध्य-पाषाण-कालीन संस्कृति से उद्भूत सिद्ध हो सकती है। क्योंकि इसका क्षेत्र उत्तर-पाषाण-कालीन क्रांति के लिए वनस्पति व जंतु संबंधी परिस्थितियां प्रदान करता है। पर, प्रागुत्तर-पाषाण कालीन अवस्था के साथ कड़ियों का पता लगाना अभी बाकी है। सक्शे-गोजू जूदेंदा-XIII व उगरित IV के ताम्र-पाषाण-कालीन स्तरों में लेवांती पूर्वभूध्यसागरीय कृष्ण मुख वस्तुओं के अवशेष द्वारा हर हालत में स्थानीय परंपरा का स्थायित्व सिद्ध होता है अंततः उत्तरी मेसोपोटेमिया से प्राप्त नूतन प्रेरणाओं ने ओरोंटस घाटी में कम से कम मृच्छिल्प-कला-मूलक कला उत्तरी उबेद परंपराओं को लाया होगा और एमक (Amuq) मैदान में चित्रण कला की स्थानीय शैली के विकास को प्रोत्साहित किया होगा। यह टेली एशशेक टीला (Tell-esh-sheik) से उत्तम रीति में ज्ञात होता है और सिलिसिया (Cilicia) में सुदूर मर्सिन[5] तक इसका पता लग सकता है: पर, अंत में इस अमूक उबेद मृद्भांड

---

१. एथेनिश्के मितिलुंगेन (Athenische Mitteilungen), lx, १९३५—३६, १२९।
२. चाइल्ड, डॉन, २ एस्० वी० 'आघात-एद्भ्राजित वस्तु (Stroke burnished Ware)।
३. इवान्स, पैलेस ऑफ मिनॉस, १, १९२१, ५९।
४. अस्मोलियन म्यूजियम, आक्सफोर्ड में, सं० १९३०, ३३९ अ व २३८ ब।
५. अ० ज० आर्क० (AJA), liv, ६३; ए० आर्क० एन्थ्रॉ० लि० (LAAA), xxvi, ५१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

काभी स्थान अचित्रित निर्माणों ने, जो मेसोपोटेमिया के धूसर उरक पदार्थ[1] के संस्मारक है, ले लिया।

हमा (हमाथ Hamath), जो पूर्व-दक्षिण व पश्चिम के साथ संपर्क के लिए उपयुक्त स्थान पर स्थित है, दोनों प्रथम क्षेत्रों के बीच संपर्क के लिए बीच संबंध स्थापिप करने के निमित्त अब तक प्रकाशित उत्तम सामग्री प्रदान करता है। यद्यपि हलफियत व उवेद भाड खंड एक अंकक-मुद्रा (Stamp seal) की मिट्टी की अनुकृति के साथ हमा L में पाए गए थे, तथापि उत्तरी मेसोपोटेमिया के बिल्ला भांड से संबंधित ठिकरे लगभग निनेवाई काल तक इस बस्ती के अस्तत्व को सूचित करते है। इसके विपरीत, उत्तरवर्ती स्तर K से प्राप्त कुटीर-प्रतीक (चि० १०५, १), मुड़े किनारों वाले कटोरे, व जम्देत नस्त्र शेली के फायेंस के वने दो बेलन इसके व गावरा काल के बीच अतिच्छाद के सूचक हो सकते हैं।

अत: कल (के क्षेत्र) में K से प्राप्त प्रस्तर-मूर्ति की स्वाभाविकता से (फ० XXXVI) ब्राक से प्राप्त मूर्तियों (XXXVII) की अपेक्षा एक स्तर अधिक आगे हैं, और वस्तुत: उन मूर्तियों व साइक्लेड्स से प्राप्त संगमरमर को बिल्कुल अपरिष्कृत सूक्ष्म मूर्तियों को मध्यवर्ती है। फिर, मिट्टी के एक ठप्पे पर बना अभिकल्प एक गावरा मुहर पर अंकित पशुओं का रूढ़िग्रस्त उलथा हो सकता है। पर, पत्थर की मनकाकार मुद्राओं पर परिचित भरी हुई व्यत्यस्त रेखाएं थीं। अंत्यष्टि-रीति-रिवाज, जैसे बड़े कलशों या पिथोई (Pithoi) में शवाधान, मंजूषा-शवाधिकाल के पहले उच्च फरात पर कर्शमिश (Carcemish) में व समुद्र तट विब्लांस २ में देखी गई प्रथाओं से साभ्य रखते हैं। मृद्भांडों में चाक पर बने लाल पट्टी वाले व जालोद्भ्राजित (Lattice-burnished) पात्र व "खिरवेत केरक भांड "(Khirbet kerak ware) से संबंधित हाथ के बने आंशिक रूप से काले व लालरंग के पात्र संमिलित हैं। उत्तरोक्त पात्र एक लंबे अधिवास को सिर्फ अंतिम अवस्था में ही प्राप्त होते हैं।

दोनों वर्ग पैलेस्तीन में आवर्तित होते हैं। पूर्वोक्त (वर्ग) ई० बी० (E. B.) २ में व सिरवेत केरक भांड सिर्फ ई० बी० ३ में जिसे हम मिस्र में पिरामिड युग का समकक्ष पाएगें। अब, गैसा कि हड[2] ने १९५१ ई० में दिखाया था, सीरिया व

---

१. सक्चे-गोजू (Sakce-gozu), इराक, xii, १००; तबारा (Tabara), अनातोलियन स्टडीज (Anatolian studies), १, १९५१।

२. अनातोलियन स्टडीज (Anatolian Stndies), i, १९५१, ११७।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पैलेस्तीन में विस्तृत क्षेत्र में फैला हुआ यह हस्तनिर्मित मृद्भांड संभवतः जर्जिया से आने वाली बर्बर जन-जातियों के उन क्षेत्रों में आक्रमण को अभिव्यक्त करता है जो व्यावसायिक कुम्हारों को आजीविका देने के लिए पूर्णतः विकसित थे। यह मृद्भांड निस्संदिग्ध रूप से हमा-के (K) की अंतिम अवस्था का जूदेदा XI के साथ साम्य स्थापित करता है। दूसरी ओर, इसकी पूर्वतर अवस्थाओं के अंतर्गत जूदेदा XIII व XII को होना चाहिए।

अंत में, हमा J ने चाक पर बने मृद्भांडों के पुनरुज्जीवन व उसी सांस्कृतिक क्षेत्र में ओरोंटस घाटी के समावेश को देखा जिसमें मंजूषा-शवाधिकाल में अपने उपयुक्त पहिएदार गाड़ियों, छोटे छेदों वाली कुल्हाड़ियों व मुद्रांकित पात्रों के साथ उच्च फरात था। तब यदि हमा K का पूर्वतर भाग मेसोपोटेमिया में उत्तर जम्देत नस्र काल को अतिच्छादित करता है और मिस्र में प्रथम दो राजवंशों को अंतर्विष्ट करता है, तो इसका अवसान अगादे के सारगोन के अभियानों व नील के तट पर छठे राजवंश के राज्यारोहण काल के साथ स्थूल रूप से संपतित हो सकता है। पर, दुर्भाग्य से मेसोपोटेमिया के साथ और उससे भी अधिक मिस्र के साथ इनका पारस्परिक संपर्क संदिग्ध है। समुद्र तटवर्ती बिब्लोस से अधिक समीचीन साक्ष्य प्राप्त हो सकता है।

यह बंदरगाह, जो देवदारु व लेबनान के अन्य उत्पादनों का प्राकृतिक निर्गम-स्थल था, इतिहास के उषःकाल से मिस्रीय सामुद्रिक व्यापार का लक्ष्य रहा और एक अत्याधुनिक आख्यान के अनुसार ऑसिरिस व मिस्रीय कृषि का जन्म-स्थल रहा होगा। दुर्भाग्यवश, मेसोपोटेमियाई सपर्कों के प्रत्यक्ष साक्ष्य का अभाव है और फ्रांसीसी उत्खननों पर प्राप्य विवरणों के विषय में अनेक संदेहों का निराकरण नहीं हो पाया है।

बिब्लोस[1] के उद्भव का चिह्न सामान्य पूर्व भूमध्यसागरीय (लेवांताइनी) उत्तर-पाषाण-युगीन संस्कृति के कृषकों व संभवतः मछुओं के एक गांव में पाया जा सकता है। ओपदार धारों वाली-अनलाश्म की कुल्हाड़ियां छेनियों व गोल रुखानियों का काम करती थीं और पत्राकार वाण-सिरे व त्रिकोणात्मक भाग वाले बल्लम के सिरे हथियारों के रूप में व्यवहृत होते थे। बरतन, मुख्यतः कृष्ण मुख, शायद कंकतिकांकनों (Comb impressed) के अनियमित वर्गों से ढंके रहते थे जिससे पशुओं के पंजों की छाप का आभास होता था और रस्सियों या निकृत बहुलास्थि प्रतिमानों से युक्त सींक की बनी टोकरियों[2] या निकृत एवं छिद्रांकित फीतों या त्रिकोणों से चिह्नित रहते थे

१. रि० बि० (RB) lvii, १९५०, ५८४—८।

२. बिब्लोस व ऊगरित बीच हम्माम (Hammam) में अच्छी तरह दृष्ट, सीरिया, xxi, १९५, २०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

परोक्त अभिकल्प क्रीटों[1] में नोसस (Knossos) से प्राप्त उत्तर-पाषाण-कालीन भांडों पर बने अभिकल्पों के साथ उल्लेखनीय साम्य रखते हैं। पर, बहुलास्थि आशय एक ओर हस्सुनों का और दूसरी ओर पेलेस्तीन व मेरिम्दे के उत्तर-पाषाण काल व ताम्र-पाषाण युग का स्मरण दिलाता है।

फिर भी, उगरित-V की तरह बिब्लोस १ के लेवांतइनी (पूर्व भूमध्यसागरीय) उत्तर-पाषाण का स्थान किसी हलफियन उपनिवेश ने नहीं लिया। इसकी जगह, बिब्लोस २[2] पत्थर की चकतियों से पाटी हुई गलियों के किनारे बने हुए वक्ररेख या ऋजुरेख घरों वाला एक गांव था। यह गांव ३ हेक्टारे (Hectares) से अधिक में व्याप्त है और संस्कृति की दृष्टि से अधिकांशत: हमा के और, इसलिए मृतक[3] विशाल कलशों या पिथोई में कभी आकुंचित (Crouched), कभी विसंधित (Disarticulated) और कभी अनुमानत: अंत्येष्टि के बाद दफनाए जाते थे। कलश आबाद इलाके के भीतर प्राय: चट्टान काट कर बनाई गई कृत्रिम गुफाओं में रखे जाते थे। चट्टान काट कर बनाए गए मकबरे नियमित पारिवारिक कक्ष थे जिनमें छब्बीस वयस्क कंकाल रखे जा सकते थे। ये उस काल से सामूहिक शवाधान का प्रथम तिथित उदाहरण प्रदान करते हैं जबकि नाटूफियनों ने इसी प्रकार की प्रथा कारमेल पर्वत में एक प्राकृतिक कंदरा में अपनाई थी। यह प्रथा प्राचीनतम धातु युग में भू-मध्यसागर के चतुर्दिक् प्रचलित रही।

शरीरत:[4] ताम्र कांस्य युगीन गिब्लाइतियों का (Giblates) वर्णन भूमध्य-सागरीय प्रजाति के छोटे काले व लंबे मस्तक धारियों के रूप में किया गया है। इनकी तुलना नाटूफियनों के साथ की जा सकती है, पर एक पृथु कपाल संमिश्रण का भी विवरण मिलता है। आर्थिक दृष्टि से वे जेतून व जो की खेती करके व बकरों, भेड़ों और डंगर पोसकर एवं कबूतर फंसाकर और निस्संदिग्ध रूप से मछलियां पकड़कर जीवन-यापन करते थे। औजार बनाने के लिए अनलाश्म का व्यापक उपयोग होता था।

---

१. LAAA, X, १९२३, ३९।

२. रि० बि० (RB), lvii, ५८८—५९१।

३. दूनॉंद (Dunand) Fouilles de Byblos), पेरिस, १९३९, ३६५, ३७३,-३८१, ४३४—४५५।

४. बु० म्यू० बीरुत (Bul Mus. Beyrouth), i, १९३७, २३—३३, दुनॉंद, बिब्लिया ग्रामता (Biblia Grammata) (बीरुत, १९४५) ४, सं १।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जिनमें बिना दांतों के बने हंसिए के फलक, मदियन की तरह के और संभवत: चित्र १२, ६ में प्रदर्शित विशिष्ट फराऊनी परिवार के, पर विशुद्धतर रूप में परवर्ती पुरातन राज्य प्रकार के अनुकारी चाकू[1] सम्मिलित हैं। एक नाशपाती के आकार की पत्थर का गदा प्रिय आयुध थी।

साथ ही, समाधि उपस्कर धातु-विज्ञान की वृद्धिशील शाखा को प्रकट करता है। फिर भी आपूर्ति का संघटन अब भी अपूर्ण था। चांदी की कड़ियां अपेक्षाकृत सर्व-सामान्य थीं और कठिन शोधन कला पर अधिकार को सूचित करती हैं। तांबे की कटारें (फ० XXXIX व २), ८५० परीक्षित समाधियों में से सिर्फ पांच में ही पाई गईं। रीढ़दार मोटे फलक व दो या तीन कीलें न्यूनतम रूप में भी न मेसोपोटेमियाई और न तो नीलीय ही जान पड़ती हैं। वे उस विशिष्ट सीरो-फोनेसियाई धातूद्योग, के उत्पादन रहे होंगे जो हमा व अन्य ओरोंटस गांवों का आपूरक और साथ ही प्रारंभिक एजीयन धातु-विज्ञान का प्रेरक भी रहा होगा।

दूसरी ओर, चाक का प्रयोग नहीं किया जाता था। स्थानीय कुम्हार, किसी उपकरण की सहायता के बिना ही १.४० मी० ऊंचा पिथोई (Pithoi) एक प्रकार के दो मूठों या एक मूठ वाले घड़े व लोटे, मिले हुए मुंह वाले व टोकरीनुमा मूठों से जुड़े हुए युग्म पात्र व तीन पैर वाले कटोरे बनाते थे। इनमें से अधिकांश काले और साधारणत: सहज रंग युक्त हैं। समाधियों से प्राप्त कतिपय पात्र चमड़े के रंग वाले या हलके लाल भूरे रंग की चमकीली सरकन से ढंके हैं, जिनकी तुलना यूनान के "अरफरनिस" (Urfirnis) मृद्भांडों से किए बिना नहीं रह सकते। विभूषा एक नरकट व निकृत बहुलास्थि प्रतिमानों से बने मुद्रांकित वृत्तों तक सीमित है।

गिब्लातियों (Giblites) ने फरात पर उसके पार पर के चित्रित भांड से संबंधित रीति में मुद्राओं का व्यवहार नहीं किया। इसके विपरीत लगभग तीस पात्र पकाने से पहले मुद्राओं या संभवत: ठप्पों[2] से अंकित किए गए थे। ठप्पे शायद काठ के बने थे। पर, टीले में ढीली पड़ी तांबे की "प्रकोष्ठ-बद्ध मुद्रा"[3] इस प्रकार की छाप दे सकती थी जिसे समानांत पात्रों पर पाया जा सकता था। विधित्साओं में (Motive) सार्वत्रिक भरी व्यत्यस्त रेखा के अतिरिक्त तथाकथित चित्रलिप्यात्मक

---

१. दुनांद (Dunand), Fouilles, फ० cxii।

२. दुनांद (Dunand), बिब० ग्रा० (B. G.), २५—२६।

३. मांते (Montet), बिब्लॉस् एत् एल ईजिप्त (Byblos et l Egypte), पेरिस, १९२८, फ० lix, ४४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

चिह्न व जटिल प्रतिमान सम्मिलित हैं, जो हमा-K से प्राप्त मिट्टी के ठप्पों पर के प्रतिमानों के समान गावरा काल की मुद्राओं पर उत्कीर्ण जंतुमूलक उत्कीरण के पुनर्निर्माण के प्रयास जैसे लगते हैं। कभी-कभी काष्ठोत्कर्त्तक ने (Wood-carver) जोहरियों के व्यधन के प्रभाव का अनुकरण किया है। वस्तुतः बिना पकाए पात्रों पर मुहर लगाने की प्रथा तैयार व भरित रेखाओं वाले पात्रों में संलग्न मृत्पिंडों को मुद्रांकित करने की मेसोपोटेमियाई प्रथा से कुछ भी साम्य नहीं रखती है। ठप्पा पर के अभिकल्पों व जम्देत नस्र बेलनों पर स्थित अभिकल्पों के बीच शैलीगत तुलनाओं का कुछ भी काल-क्रमानुसारी महत्व नहीं है। फिर भी बिब्लोस व हमा में कुछ विधित्साओं का गावरा काल के मुद्रागत अभिकल्पों से तर्क-संमत व्युत्पादन (Derivation) यह सूचित कर सकता है कि बिब्लोस २ उत्तरी मेसोपोटेमियाई संस्कृति की उस अवस्था से अधिक प्राचीन नहीं है।

दुनांद (Dunand) की अवस्था III[१] किसी तीव्र विच्छेद द्वारा से पृथककृत नहीं है। पर, बस्ती के भीतर शवाधान का परित्याग कर दिया गया था। गृह योजनाएं परिवर्तित कर दी गई और दीवाल की नींवें ट्राय व प्रारंभिक हेलाडिक यूनान की तरह वहुलास्थि स्थापत्य पद्धति (Herring-bone masoury) में निर्मित होती होंगी। अनलाश्म-कर्म की परंपरा अव्याहत रूप से चलती रही। और, कुछ समय तक कम-से-कम बरतन हाथ से बनते रहे। पर, अब व्यावसायिक कुम्हार बिब्लोस में बस गए, जहां कुलालचक्र व भट्टी के प्रचार के साथ-साथ वे उत्कृष्ट लाल-सरकन वाले कंकलित भांडों का निर्माण करते रहे। उनके उत्पादनों में तकली के आकार की कुप्पियां थीं जो मिस्र में, जहां स्वभावतः कंकलित भांड भी पाया जाता है (चि० ५३)। प्रथम वंशीय समाधियों में आयात के रूप में पायी[२] गई कुप्पियों से तुलनीय हैं। इसलिए, संभवतः नील घाटी के साथ वाणिज्यिक संपर्क पहले ही स्थापित हो चुका था। बिब्लोस III वस्तुतः सम्यक् रीति से नगरीकरण के मार्ग पर जा रहा था। पर, यह प्रायः एक शताब्दी तक खुला उपनगर बना रहा।

---

१. रिव० बि० (RB.), lvii, ५९१—२, ६००।

२. कंकलित पदार्थ प्रारंभिक वंशीय काल में सुमेर में भी ज्ञात है। तु० इहरिक (Ehrich), जेबेलेह (Jebeleh), धार्मिक प्रारंभिक मृद्भांड कला, में अमें० फिल्० सो० (Mem, Amer. Phil, Society), १९३९, ३०।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसके बाद बिब्लोस IV[1] पत्थर की ठोस दीवाल से घेर दिया गया। छांटकर बनाए गए चूना पत्थर के फलकों ने गैहिक स्थापत्य में भी स्थानीय पत्थर की अलगाई गई परतों वाले टुकड़ों का स्थान लिया, और घरों की छतों या दूसरे तल्लों का सहारा देने के काम में लकड़ी के खंभों ने प्रस्तरों की न्यूनता की पूर्ति की। स्थानीय धातु कर्मी अब मोटे छोर पर छोटे छिद्र व तिरछे फलक वाली लंबी चौरस कुल्हाड़ी के रूप में जैसी उच्च फरात पर गर्त शवाधिकाल में मिलती हैं, विशिष्ट प्रकार के कुठार-सिरे ढालते थे (XXXIX व १)।

अब बरतन हाथ से नहीं बनाए जाते थे। पर, स्थानीय विशेषज्ञ अब पात्रों को झिलमिल उद्भाजक से विभूषित करने लगे। इस प्रकार के कई पात्र पकाए जाने के पहले ही मुद्राओं से अंकित कर दिए गए थे, पर इस समय बेलनों[2] की छापें थीं। परोक्त (बेलन) संभवतः अब भी काठ के बनते थे। पर, उन पर परंपराग्रस्त जंतुओं की पातें उत्कीर्ण थीं। इन अभिकल्पों की तुलना निम्न मेसोपोटेमिया में जम्देत नस्र शैली के उत्पादनों से की गई है। पर, एक वास्तविक जम्देत नस्र बेलन के अविभाजित स्तरावस्था में उस स्थल पर पाए जाने के बावजूद प्रारंभिक वंशीय II बेलनों के साथ तुलना समान रूप से तर्क संमत होगी। किसी भी हालत में, इन छापों का काल—क्रमात्मक मूल्य बिब्लोस II से प्राप्त छापों की अपेक्षा अधिक नहीं हो सकता।

दुनांद बिब्लोस IV को ला प्रीमरे अस्तवालाशियां अर्बेन (La premie're installation urbaine) कहता है। पर, न प्रासाद और न तो मंदिर ही उस स्थान में, जो अवश्य ही एक समृद्ध व्यापार-केंद्र रहा होगा, संपत्ति के केंद्रीयकरण को प्रकट करता है। और, पर्याप्त समय तक उन्नतिशाली रहने के बाद इस प्रथम दीवाल से घिरे नगर को अग्नि ने नष्ट कर दिया।

बिब्लोस V[3] में बा 'अलात गेबल (Ba'alat Gebel) का (बातियां XL) प्रथम अभिज्ञातव्य मंदिर बना। यह चूना पत्थर के कुंदे का बना था और योजना की दृष्टि से एश्नुन्ना में आबू के प्रारंभिक वंशीय II मंदिर के समान था। अपेक्षाकृत अल्प काल के पश्चात यह नगर पुनः परिकल्पित हुआ।

बिब्लोस VI[4] में बा 'लात (बातिम II) का एक परिवर्द्धित मंदिर नाप में कुल २८ × २० मीटर था, और एक नया मंदिर दूसरे स्थान में बनाया गया। बातियां II में खसेकमुई से पेपी II (Khasekemni, Pepi) तक के मिस्रीय फराऊनों द्वारा

१. रि० बि० (RB.), lvii, ५९३—६। २. दुनांद, बि० ग्रा० (B.G.), ५९—६८।
३. रि० बि० (RB.), lvii, ५९६—६०१। ४. रि० बि०, lvii, ५९७—९।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"बा" अलात गेबल को अर्पित शेलखटी के अंतर्लिखित पात्र पाए गए। वे किसी विदेशी राज्य के साथ मिस्र के व्यापार संचालन के पक्ष में मूल्यवान प्रलेख हैं। पर, सहज में, इस प्रकार के भक्तिमूलक उपहार स्पर्धापूर्वक अभिरक्षित होते होंगे। अतः जिस मंदिर में वे पाए गए उसमें वे आवश्यक रूप से अर्पित नहीं हुए होंगे। इस संभावना की उपेक्षा करके दुनांद सूचित करता है कि बिब्लोस VI २७०० से २२०० खु० पू०[1] तक कायम रहा।

यदि खसेक मूई द्वारा अर्पित प्राचीनतम अंतर्लिखित पात्रों को बिब्लोस VI के मंदिर के द्वितीय मिस्रीय राजवंश के अधीन निर्मित होने के साक्ष्य के रूप में न भी स्वीकृत किया जाय, तो भी बिब्लोस III और IV को भी प्रथम राजवंश के साथ संपर्कित होना चाहिए, क्योंकि यह बिलकुल संभव है कि उस समय में मिस्र में आयातित कंकनित व झिलमिल उद्भ्राजित मृद्भांडों में से कुछ कुप्पियां व बरतन फोनीसिया में लादे गए थे और तब बिब्लोस से जहाज पर भेजे गए थे। अत. प्रथम फराऊनों द्वारा पूंजीकृत सामाजिक बचत ने दीवार से घिरे प्रथम नगर में प्रकाश में लाए गए प्रारंभमान नगरीकरण के लिए पूंजी दी होगी। इसके विपरीत, व्यवसायिक कुम्हार, जिनकी गणना पहले ही नगर-जनों में हो चुकी थी, मिस्रीय नहीं हो सकते थे और न चाक ही सुमेर फोनीसिया या इसके उत्तरी पृष्ठस्थल से पहुंच सका होगा। यदि पात्रों पर बेलन की छापें अवर मेसोपोटेमिया[४] में बिब्लोस IV व जम्देत नस्र अवस्था के बीच समकालिकता का औचित्य भी प्रदर्शित करें, फिर भी, वहां उत्तरोक्त काल के पूर्व चिर काल तक चाक का उपयोग होता रहा। इसके परिश्रम-बचाने वाली विद्या अवश्य ही सुमेर से फोनीसिया में फैली होगी और इसके निःसंदग्ध रूप से सुरक्षित सरकन वाले सामानों जैसी शैल्पिक विद्याएं आयीं।

पर तब तक पूर्वी भू-मध्य सागर तट पर धातु-शोधन विज्ञान पूर्ण प्रतिष्ठित हो चुका था। बिब्लोस II की समाधियों से प्राप्त चांदी के आभूषण व तांबे के शस्त्रास्त्र मेसोपोटेमियाई प्रेरणा का कोई चिह्न नहीं प्रदर्शित करते हैं। पर (ये) उस स्वतंत्र धातु-शोधन-उद्योग के उत्पादन हैं जिससे एजियन धातु पदार्थों को भी उत्पन्न माना जा सकता है। अतः अंतमें १० प्रतिशतत्रयु से मिश्रित मानक कांस्य के पदार्थ, जिनका

३. ब्रेडवूडने (Bra'dwood) (अमे० ज० से० लांग०, lviii, २५४-८) १९४१ में कसेकमुई के राज्यकाल में बातिमां II की स्थापना की तिथि के पक्ष में दुनांद के साक्ष्य पर संदेह व्यक्त किया है। और २० वर्ष बाद भी उसके प्रश्नों का पूरा जवाब नहीं दिया गया है, और तु० स्केफर (Schaeffer), स्ट्रॉ० कम्पे० (Strat. Comp; ५३-५)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

विवरण बिब्लोस IV से मिला है, इस अवस्था की अनिश्चित तैथिक के बावजूद उतने ही पुराने होंगे जितने उर में राजकीय शवाधिस्थान से प्राप्त पदार्थ हैं और (इस तरह) पूर्व भूमध्यसागरीय उद्योग की एक दूरतर व्यापी उपलब्धि को निदर्शित करते हैं।

तो क्या बिब्लोस II माने जाने वाले अनलाश्म के मूठदार चाकू मिस्रीय आयातों का प्रतिनिधित्व करते हैं और इस प्रकार ताम्र कांस्य युगीन गांव को प्रारंभिक फराऊनी कालों तक उत्तरजीवित को सिद्ध करते हैं? यह एक अनोखी घटना होगी, यदि मिस्रवासियों ने विशिष्ट रूप में इस फराऊनी प्रकार के निर्माणारंभ के तुरत बाद फोनोसिया में उनका निर्यात किया हो। और हर हालत में सभी आकृतिवान नमूने वंश II अर्वाचीन जान पड़ते हैं। दूसरी ओर, क्या ये प्रकार फोनेसिया में उत्पन्न हुए होंगे जहां अनलाश्म की उतनी ही प्रचुरता है जितनी मिस्र में? क्या मिस्र में वंश I के प्रारंभ में इसका स्वाकरण उत्तरकालीन ओसिरिस (Osiris) पुराण आख्यान में लाक्षणिकी कृत (Allegorized) एक प्रागैतिहासिक घटना का पुरा तात्त्विक प्रतिरूप हो सकता है? यह सब होते हुए भी क्या यह अधिक संभव नहीं है कि ये चाकू बिब्लोस में उचित स्थान के बाहर में आविष्कृत हुए थे और वस्तुतः पुरातन राज्य के अधीनस्थ मिस्र से भक्तिमूलक पात्रों के आयात के समय में ही इनका आयात हुआ था?

तब बिब्लोस II का ताम्रकांस्ययुगीन गांव नील के तट पर मादी व जर्जी अवस्था के समानांतर में आ सकता है, जो अभी मेसोपोटेमिया में हमा-K के माध्यम से गावरा के साथ इसके समीकरण से साम्य रखता है। यदि बिब्लोस I व II के बीच कोई विच्छेद न भी हो तो भी पूर्व भूमध्यसागरीय उत्तर पाषाण पर्याप्त प्राचीनता का दावा कर सकता है, और इस प्रकार दुनांद (Dunand) की बदेरी के साथ (इसकी तुलना) तिथि क्रमानुसार असंभव नहीं है। पर, फोनीसिया से प्राप्त पुरातात्त्विक अभिलेख उत्तर-पाषाण-कालीन क्रांति का केंद्र समझे जाने के लिए इस प्रदेश के दावे के वस्तुगत मूल्यांकन के लिए अभी अत्यधिक अपूर्ण है।

(३)

पैलेस्तीन अपेक्षाकृत अच्छे स्थल पर बसा है। अन्नोत्पादन के लिए अपेक्षित वनस्पति तथा जंतुगत साधनों के अतिरिक्त यह पुरातत्त्ववेत्ताओं को दो विशिष्ट सुविधाएं प्रदान करता है। इसकी पहाड़ियां ऐसी प्राकृतिक कंदराओं से भरी पड़ी हैं, जहां कृषक जो अब तक फल-वृक्षों व सिंचाई-व्यवस्था के जरिए किसी एक स्थान से संबद्ध नहीं हुए थे, अपने शिकारी पूर्वजों की तरह, आश्रय पा सकते थे और, उत्खनकों

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

	मिस्र		पेलेस्तीन	सीरिया	उत्तरी मेसोपोटामिया	सुमेर	सूसा	ईरान		सिंधु
									हिसार	भूमर
	वंश ६				मंजूषा ाधि काल	उर तृतीय				
	५	पुरातन राज्य	ई. बी. ३	हमा जे		सारगोनिद			३	
२३२५	४					प्रारंभिक राज वंशीय ३				
	३						२			
	२	प्रारंभिक फराऊनी			ारंभिक राजवंशीय	२				हड़प्पा
			ई. बी. २		६ ७ गावरा	१	डी	सियालक		
	१		ई. बी. १ब	हमा के	निनेवाईत काल			४, [illegible]		अमरी
२८५०) ३२००)					८ अ	जम्देत				
					८ ब	नस्र	सी	४, १	२	
३५५०	जर्जियन	मदियन	ई. बा. १ अ							
					ावरा काल	उत्तरकालीन उरूक	बी		१ब	
३६५०			घासुलियन		११					
	अमरातियन			हमा एल	१२ १३	प्रारंभिक उरूक		३, ७		
							१	३, ४	१अ	
	बदारियन	मेरिम्दे	यमुकियन		उबेद १९	उत्तरकालीन उबेद		३, १		
४४००										
	तासियन		ताहुनियन		लफ	प्रारंभिक उबेद		२		
५०००			जेरिको	हमा एम	समारा	आदि उबेद		१		
		हेलवान	नातूफियन		हस्सुना					
					जर्मो					

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की प्राप्ति के लिए अवशेष छोड़ सकते थे। द्वितीयतः औजारों व हथियारों के निर्माण के लिए उत्तम कोटि के अनलाश्म की पर्याप्त आपूर्ति के उपलभ्य हैं। इस प्रकार (के पदार्थों) के वाह्यतलीय उपस्थिति इस प्रकार की बस्तयों को प्रकाश में ला सकती है जो इतना अधिक अस्थायी थी कि उस स्थल पर कोई टीला नहीं बन सका और जिसमें कोई पात्र न व्यवहृत हुआ या न तो विच्छन्न ही हुआ। १९३५ ई० से पैलेस्तीन में होने वाले उत्खनन ने अनेक स्थलों पर संस्कृतियों के सुदीर्घ व विश्वसनीय अनुक्रमों को प्रकाश में लाया हैं। ये संस्कृति-अनुक्रम मिस्र के साथ संपर्कों के जरिए ऐतिहासिक रूप में तिथित क्षितिजों से बहुत पहले उपस्थित होते हैं। तथापि, विभिन्न अनुक्रमों के अन्योन्य संबंधन विभिन्न, पर समसमायिक स्थानीय संस्कृतियों के उत्तरोत्तरवर्ती कालों में विन्यास के कारण विस्तारापत्ति (Danger of inflation) के मुख में पड़े हैं। अपने छोटेपन के बावजूद पैलेस्तीन कोई एक जातीय सांस्कृतिक प्रदेश नहीं है। विस्तृत समुद्र तटीय समतल पार्वत्य पृष्ठस्थल व इसके बाद के जोर्डन की दर्राई घाटी से भिन्न है, जबकि कार्मेल पर्वत व उसके उत्तर एस्ड्रेलोन (Esdraelon) की उर्वर घाटी इन पूर्वीय पश्चिमीय क्षेत्रों की एक छोर से दूसरे छोर तक दो भागों में विभक्त करती है। पैलेस्तीन के विशेषज्ञों ने, "उत्तरपाषाण काल" "ताम्रकांस्य युग व "प्रारंभिक-कांस्य-युग" जैसे वैविध्यमूलक पर सदा स्वच्छंदता-पूर्ण, शब्दों के प्रयोग द्वारा एक साधारण संदर्भ के ढांचे में रख कर स्थानीय अनुक्रमों के अन्योन्य संबंधन को ओर भी अधिक जटिल बना दिया है। इन शब्दों के प्रयोग के सिलसिले में यह कहना समीचीन होगा कि "प्रारंभिक कांस्य युग" धातु के पदार्थों उपयोग व रासायनिक संमिश्रण के विषय में कुछ भी नहीं सूचित करता हैं, पर पूर्वावधानता के रूप में प्रा० कां० (E. B.) यह संक्षिप्त रूप साधारणतया प्रयुक्त होगा।

१९३४ ई० खोहों व ऊपरी स्थलों (Surface sites) से प्राप्त अनलाश्म के संघातों के आधार पर न्यूविल्ले[1] (Newville) उत्तरयुगीन के रूप में वर्गीकृत होने योग्य एक ताहुनियाई (Tahunian) उद्योग की परिभाषा देने में समर्थ हुआ। कब्रों, हंसिये के फलकों और तिरछी ट्रांचेट (Tranchet) चोट देकर बनाई गए अनलाश्म की कुल्हाड़ियों के साथ-साथ, परवर्ती नाटूफियन से उपलब्ध हो सकने वाले वाण सिरों (चि० ११०) द्वारा इसकी विशेषता प्रदर्शित होती थी। इन स्थलों से, शिकार, मछली पकड़ने व आहार संचय के साथ-साथ परिवर्तमान कृषि व पशु अभिजनन में लगे हुए

१. रि० वि० (RB), xliii, १९३४, २५५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्थ यायावर दलों द्वारा अस्थायी अधिवासों का संकेत मिला। तदनंतर गारस्तो[१] के उत्खननों ने जेरिको स्तरों में विभाजित टीले के तल में समान प्रकार के अनलाश्म के उपादानों को प्रकाश में लाया।

उत्तर-पाषाण-कालीन जेरिको पहले ही एक स्थायी सोते के किनारे बसा हुआ एक स्थायी गांव था जहां फलोद्यान व मै अन्नोत्पादन व पशु अभिजनन का पूरक रहा होगा। पशु अभिजनन का अनुमान पशुओं की रूखड़ी कच्ची मृष्मूर्तियों से ही किया जा सकता है और शस्यों की कृषि का अनुमान हंसियों के फलकों व काठीदार चक्कियों और अंततः मिट्टी की परतदार अनाज रखने की खत्तियों या खड्डों से किया जा सकता है। ग्रामवासी मिट्टी की दीवारों वाले घर बनाते थे जिनके भीतरी भाग में चूने का

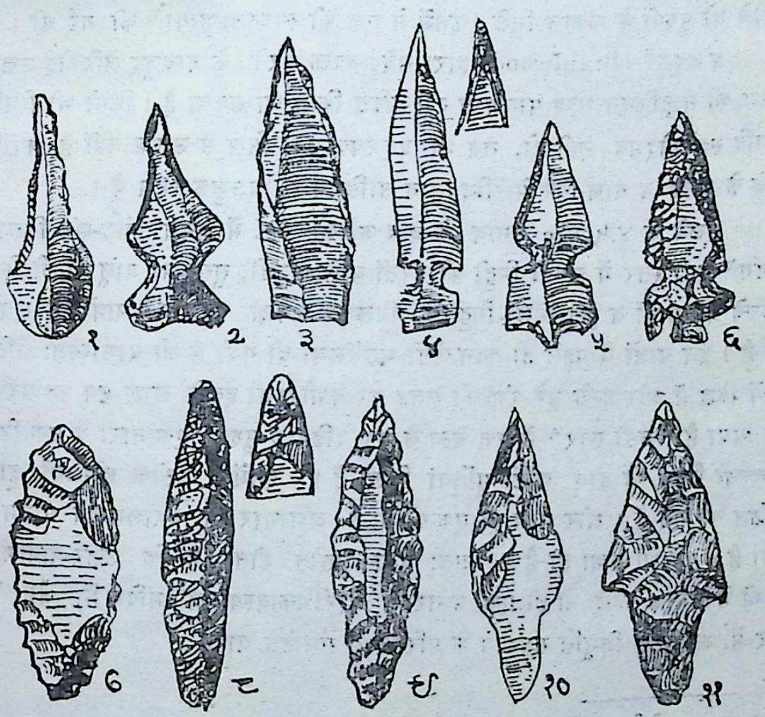

चित्र ११०. उत्तर नाटूफियन (१-५) व ताहूनियन (६-११) वाण-सिरे, न्यूविल्ले के अनुसार, ¹/₁।

२. ए० आर्के० एंथ्रॉ० लिव० (LAAA), xxii व xxiii

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पलस्तर लगा रहता था और कभी-कभी रंग पुता रहता था। पर, छतों को सहारा देने में सहायक के रूप में लकड़ी खंभे लगे रहते थे। काष्ठ-कर्म के उपकरणों के रूप में अच्छे कणों वाली चट्टान की ओपदार कुल्हाड़ियों का व्यवहार अनलाश्म की शल्कीकृत कुल्हाड़ियों के साथ-साथ होता था। मृद्भांड स्पष्टतः अज्ञात थे, पर खड़िया पत्थर को खोदकर कटोरे और सेतखली व चूना पत्थर के कुंदों से ओखलियां बनायी जाती थीं। सभी उत्तर-पाषाण-कालीन स्तरों और उनसे भी नीचे से प्राप्त ज्वालाकांच भूमध्य-सागरीय खोलियों व मेलेसाइट के एक टुकड़े से व्यापार[1] पर प्रकाश पड़ता है। लकड़ी के खंभों के एक बरसाती के पीछे दो कमरों वाला एक घर देवालय रहा होगा। इसमें व निकट पशुओं की अनेक मृण्मूर्तियों पायी गई, और एक समीपस्थ मकान के फर्श के नीचे दो पुरुषों के कंकाल मिले। इनमें से एक की स्पष्टतः हत्या[2] की गई थी।

ब्रेडवूड[3] (Braidwood) द्वारा संदेह व्यक्त करने के बावजूद जेरिकोई उत्तर-पाषाण को नाटूफियन मध्य पाषण से व्युत्पादित किया जा सकता है। किसी भी स्थिति में, यदि स्वदेशोद्भव नहीं हो, तब भी यह स्पष्टतया मिस्र से उत्पन्न नहीं है. क्योंकि हंसिये के फलक व बाण-सिरे मेरिम्दियन व तासियन से बिलकुल भिन्न है।

मलबे के ४.५ मी० जमाव के बाद जरिकों IX में प्रथम भांड-खंड मिला। गास्टंग[4] इसी स्तर में कच्ची मिट्टी की परतों वाले खड्डों, सूसा या बालू मिली मिट्टी के कच्चे प्रतिमानों व फूस मिली मिट्टी के बिलकुल अच्छी तरह पके पात्रों की सूचना देता है। इन पात्रों में पहले ही कान जैसी मूठें लगा दी गयी हैं जो सामान्यतः क्षैतिज रूप में विद्ध हैं और हल्के भूरे रंग की सतह पर कभी-कभी हलके लाल रंग का सरकन लगा दिया है। उसी स्तर[5] में एक चेत्य से एक दढ़ियाल पुरुष, एक नारी व एक शिशु की कच्ची मिट्टी की तीन छोटी मूर्तियां मिली हैं। इनमें से प्रत्येक खोलियों द्वारा प्रदर्शित की गई हैं। और साथ ही एक दो तल्ले अन्नागार या देवालय का प्रतिमान मिला है। यह भी कच्चा ही है। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि उत्तर-पाषाणीय जेरिकों में समाज पहले से ही एक प्रकार के प्रारंभिकावस्थापन्न मंदिर में, जैसा कि सुमेर में, अनुष्ठित त्रिमूर्ति संप्रदाय के परिसर में संघटित था।

---

१. ए० आर्के० एंथ्रॉ० लिव०, xxii, १८४, १८१।
२. वही, xxiii, ७०।
३. एंटिक्विटी, xxiv, १९५०, १९०।
४. ए० आर्के० एंथ्रॉ० लिव०, xxiii, ७१, ७७, ८७।
५. वही, xxiii, ७१।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

उर्वर चाप के श्रृंगों के मध्य

जेरिको में ताम्र-पाषाण-युग के नाम से अभिहित उत्तरवर्ती स्तर VIII में लेप में बालुका-कण की अपेक्षा भूसा कम सामान्य होता जाता है और पात्रों के तल धूसर जमीन पर मसृण लाल रंग की रेखाओं या अंतकृत बहुलास्थि या अन्य प्रतिमानों अथवा एक ओर मेसोपोटेमिया में हस्सुनी व दूसरी ओर अवर मिस्र में मेरिम्दे का स्मरण दिलाने वाले चित्रण व उत्कीरण के संमिश्रण से अलंकृत किये जा सकते थे। पर, इस समय तक जेरिकों के उत्तर-पाषाण या ताम्र-पाषाण युग की न्यूनाधिक रूप से सम-सामायिक होने योग्य तथा दक्षिणी पैलेस्तीन में गाजा[1] के निकट वादी घजेह (Wadi gazzeh) पर के टीलों से, और जोर्डन घाटी[2] में उम कताफा (Umm Qatafa) व अन्य कंदराओं व उत्तरी पैलेस्तीन में यामक (Yamuq) नदी के तटवर्ती एक स्थल से संचित सामग्री ऐसी अन्य संस्कृतियों या कम-से-कम मृच्छिल्पीय शैलियों के अस्तित्व को प्रकट करती हैं जिनका वर्गीकरण उत्तर-पाषाण के रूप में हो सकता है।

यारमक[3] के एक छोर से दूसरे छोर तक पायी जाने वाली वास्तविक हड्डियां भेड़ों व बकरों के पालन व हरिनों, जंगली सुअरों, जंगली गदहों और स्पष्टतया ऊंटों के शिकार का साक्ष्य देती है और सस्य दोनों तरफ बनाए गए दांतेदार हंसियों के फलकों से काटा जाता था। शिकारियों द्वारा अनलाश्म के वाण-सिरे व बल्लम-सिरे व्यवहार में लाए जाते थे। काष्ठ-कर्म के लिए अनलाश्म की कुल्हाड़ियां धारों को रगड़कर या ट्रांचेट चोट देकर तेज बनाई जाती थी। एक छोर पर नोक के रूप में शल्कीकृत अनलाश्म की ग्रंथियां जिनके कुंदे की त्वचा कायम रक्खी जाती थी, मेरिम्दे से प्राप्त गैंतों (चि० १११, ४) का स्मरण दिलाती हैं। भूसा व कड़ा खाद मिली मिट्टी से बरतन बनाए जाते थे। बरतन की सतह धूसर है, पर आंशिक रूप से हलके लाल रंग से लिप्त और अंतःकृत बहुलास्थि पट्टियों से अलंकृत की जा सकती थी। कर्मकांडीय उद्देश्यों के निमित्त मानव आकृति या शिश्न का संकेत करने के लिए बिल्लोर विलक्षणतापूर्वक उत्तीर्ण किए जाते थे।

इस अवस्था में मृद्‌भांड एवं अन्य कलाकृति-मूलक वैविध्य के कारण समान रूप से स्थानीय व तैथिक वैभिन्य हैं। फिर भी सर्वत्र ये मृद्‌भांड एक ओर मेरिम्दे के साथ

---

१. मैक्डोनाल्ड (Maodonald), बेथ पेलेट (Beth Pelet), II, १९३२, २-७।

२. अम कताफा (Umm Qatafa), सीरिया, xII, १९३१, २९-३२, उज्बा, (Uzba), बु० अ० स्कू० ओ० रि० (BASOR), ८६, ७ व ८६, २२।

३. स्टेकेलिस (Stekelis), इजरायल एक्सप्लोरेशन जर्नल, १, १९५०, २—१८।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

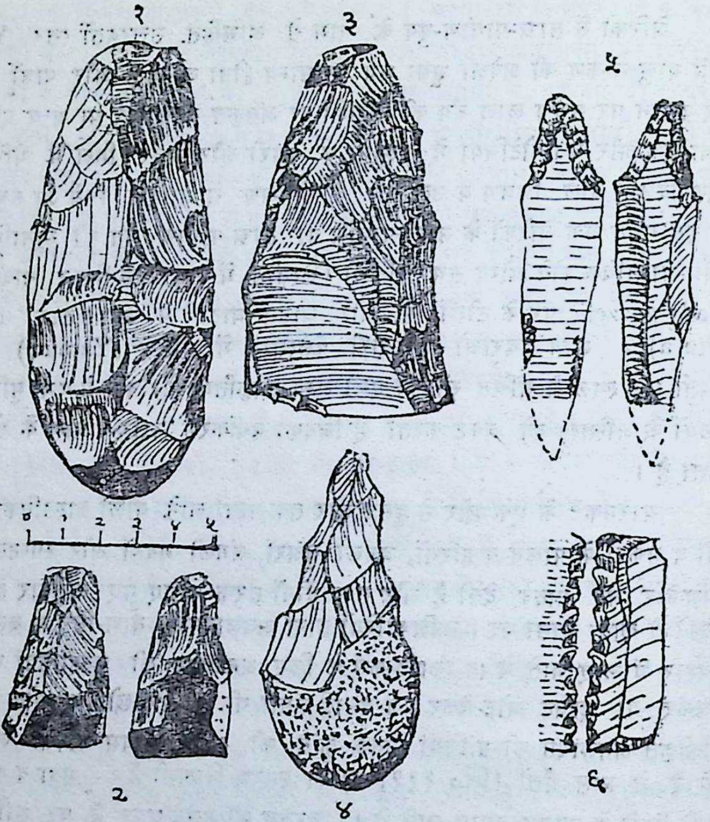

चित्र १११. रगड़ कर बनाई गई धारों वाले यारमकिवन कुठार, १-२, ट्रांचेट ३, गेती—४, हसिया का फलक ५, और बल्लम सिरा ६, स्टेकेलिज के आधार पर।

और दूसरी ओर हस्सुना के मृद्भांडों के साथ लगभग अस्पष्ट साम्य प्रदर्शित करते हैं, और बिब्लोस I व इससे भी अच्छी तरह हमाम[1] (Hammam) में निदर्शित फोनेसिया के पूर्व-भूमध्यसागर-प्रदेशीय उत्तर-पाषाण के साथ अधिक स्पष्टतया पूर्ण साम्य प्रदर्शित करते हैं। पर ताम्र-पाषाण-युग में एक सम्यक् पारिभाषित संस्कृति ने प्रायः जोर्डन के पूर्वांचल में स्थायी आकार पाया। परंतु, यह उत्तर में एस्ड्रेलोन[2]

१. सीरिया xxi, १९४०, १९९, और फलक xxii, २ आगे।

२. सुकेनिक (Sukenik) आर्क० इन्वेस्टिगेसन्स ऐट एफ्फूला (Affula) जेरूसलम, १९४८; रि० बि० liv, १९४७, ३९५—४००।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(Esdraclon) की घाटी तक और दक्षिण में वादी गाजो (Wadi Ghazzeh) तक फैली थी। यह जोर्डन से ५.५ कि० मी० पूर्व तेलीलत गासूल (Teleilat Ghassul) जहां यह सर्वप्रथम पहचानी गयी, के नाम पर गासूल संस्कृति कही जाती है।[1]

टीला[2] वस्तुत: दूहों का एक समूह है, जो २ मी० से ज्यादा ऊंचे नहीं है और ८०० मी० लंबे व ४०० मील चौड़े क्षेत्र में व्याप्त हैं। वे कच्ची मिट्टी की ईंट के घरों के एक संश्लिष्ट ग्राम के स्थल को निदर्शित करते हैं। दीवालें गोली मिट्टी की चक्रियों की बनी हैं जो किसी सांचे में नहीं बनाए जाकर हाथ से ही बनाई गई हैं और पत्थर की नींव पर टिकी हैं। इनके कुछ भीतरी भाग विस्तृत चित्रणों से अलंकृत थे। वसूलों व छेनियों को ट्रांचेट (Tranchet) चोट देने की अपेक्षा लंबे बल शल्क उतार कर और बाद में धारों को रगड़ कर तेज किया जाता था। अत्यधिक जनप्रिय औजार चौरस अनलाश्म का एक व्यंजनाकार खुरचन था जो मादी व बिब्लोस २ से प्राप्त खुरचनों के सदृश था। अनलाश्म के वाण-सिरे अनुपलब्ध हैं। अत: प्राय: ढ़ेलवांस ने धनुष का स्थान लिया। पर, नाशपाती के आकार के और चक्राकार पत्थर के गदा सिरे भी हथियारों के रूप में व्यवहृत होते थे।

मृत्पात्र शायद ही कभी रंगे जाते थे। पर उपयुक्त पंक्तियों (Applied Cordons) व अंगुल्यंकनों (Eligital impressions) से अलंकृत किए जाते थे। चाक का व्यवहार नहीं होता था, पर कुछ पात्र एक टूर्नेट (Tournette) पर निर्मित बताए गए हैं, और चित्रित प्रस्तर-चक्रों का वर्णन प्रयोग में लाए जाने वाले उपकरण के रूप में किया गया है। सोविध्यपूर्वक अभिज्ञातव्य आकार "तुरही" के आकार के पात्र लंबे नोकीले पेंदे वाले चषक और ऊंचे पेंदों पर कान वाले कटोरे हैं। पात्रों में कान या साधारण फंदातुमा मूठ लगी हैं और इनमें साधारण प्रकार के दोहरो मुठिया वाले पात्र सम्मिलित हैं। कटोरे बसाल्ट व अन्य पत्थरों के भी बनते थे। खोली का अर्धचंद्राकार लोलक या दोनों छोरों पर छिद्रित वृत्त का कुंडल (Arc of a circle) प्रिय वैयक्तिक आभूषण था। एक कुठाराकार जंतर मेरिम्दे, क्रीट व अतलांतिक योरप का स्मरण दिलाता है जबकि सारंगी के आकार की प्रस्तर की एक छोटी मूर्ति के फिर उत्तरीय समानांतर मिलते हैं।

जोर्डनपारीण (Trans jordan) गासूल के निवासी वैयक्तिक रूप में प्रस्तर-मंजूषाओं में दफनाए जाते थे जो कभी-कभी विशाल पत्थरों[2] के वृत्ताकार घेरों पर

---

१. मैलॉन (Mallon), तेलीलात गासूल (Teleilat Ghassul), पांटिफिकल बिब्लिकल इंस्टीच्यूट, रोम, i, १९३४, ii, १९४०।

२. स्टेकलिस (Stekelis), 'Les Monuments megalithques de Palestine;' IPH, Mem. 15. 1935.।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

टिके गोले ढूहों से ढंकी रहती थीं। दो या तीन प्रस्तर पिधानों (Cover-stones) के साथ सात या आठ सीधे खड़े प्रस्तर-खंडों की बनी प्रस्तर मंजूषाएं लंबाई में १.५ मी० से ज्यादा बड़ो नहीं हैं। १ मी० × ७० व × .५० मी० सामान्य विस्तार है। इस प्रकार की प्रस्तर-मंजूषाओं का पश्चिमीय योरप की वृहत्पाषाणीय समाधियों के साथ कोई संबंध नहीं है, जबकि इसी प्रकार की आकार की वृहत्तर रचनाओं ने जूडा व गेलिली (Judaea and Galilie) में उनके युग अथवा व्यवहार को सूचित करने के लिए कोई स्मृति शेष नहीं प्रदान किया है। ग्रासूली प्रस्तर-समाधियों की तुलना उत्तरी अफ्रीका के तथाकथित शिलास्मारकों (Dolmens) व ब्रिटेन के उच्च समतलीय प्रदेश की गोलाकार समाधि-प्रस्तरों के नीचे पड़ी कांस्य-युगीन प्रस्तर-पेटिकाओं के साथ की जानी चाहिए। इसके विपरीत, सारोन (Sharon) की घाटी में गासूल निवासियों के शव की हड्डियां-मांस के गल जाने पर मिट्टी के ऋजुकोण चतुर्भुजाकार अस्थिपात्रों[1] में रक्खी जाती थीं। ये (अस्थिपात्र) द्वार को बंद करने की अर्गला के लिए प्रयुक्त चटखनियों तक के निचले भाग-पर्यंत सपाट छत वाले या तिकोनिया आवासीय गृहों का अनुकरण करते हैं।

गासूल में चार आवासीय स्तर अध्यासित हैं और कुछ अपेक्षाकृत संदिग्ध उभाड़दार मूठें इस स्थान से अंकित की गई हैं अतः दो स्थलों पर गासूली अवशेष प्रा० कां० १ (प्रारंभिक कांस्य १) के अवशेषों के नीचे स्तृत हैं, फिर भी विशिष्ट स्थल (Patent station) का अधिवास संभवतः इस काल तक विद्यमान रहा होगा। इसके सबसे बाद के स्तर से एक जोड़ी कांसे की कुल्हाड़ियां मिली हैं जिनमें से एक में सात प्रतिशत त्रपु मिला है। पेलेस्तीन के अनुक्रम में इसकी वास्तविक स्थिति कुछ भी रही हो, पर यह कांस्य, निरपेक्ष युग की दृष्टि से गावरा-VIII से प्राप्त कांस्य पदार्थों के साथ समीचीन साम्य प्रदर्शित करता है।

उत्तरवर्ती काल में पेलेस्तीन दो भिन्न सांस्कृतिक प्रदेशों में विभाजित है। उत्तर में एस्ड्रेलोन (Esdralon) संस्कृति का साम्राज्य है। शिष्टन व राइट द्वारा इनका वर्गीकरण प्रारंभिक ताम्रपाषाण-युगीन के रूप में हुआ है, और श्रेष्ठ रूप में यह मेगिद्दो (Megiddo)—XIX[2], वेठशान XVI[3] (Beth Shan) व टी० फारा

---

१. ज० पॅ० ओरियेंटल मो०, जेरुसलम, xxII, १९३७, १५—३०।

२. 'स्टेजेज् (Stages)'—VII—V ऑफ इंगवर्ग ऐंड शिप्टन, ओ० इ० स्ट० (OIS), सं १०, १९३४

३. म्यू० ज०, xxiv।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

(T. Farah) नेप्लूज[1]-(Naplouse) में उपस्थापित हुई है। यह मुख्यत: किनारेदार कटोरों के निर्माण के लिए व्यवहृत बारीक उद्भ्राजित घूसर पदार्थ द्वारा परिलक्षित होती है। पर हलके भूरे रंग की वस्तुएं अब भी पुरानी परंपरा के अनुसार बनती थीं और अब बहुधा हलका लाल रंग इन पर लगा रहता था। उन्हीं से विभिन्न आकारों के नूतन भांड बनाए गए जिनका वर्गीकरण और दक्षिण में प्रा० कां० १ के रूप में हुआ है। घूसर भांड पैलेस्तीन में निश्चय ही अनहूत प्रविष्ट है। यह अंतिम अधिवास में निस्संदेह जूढ़िदेह (Judeideh-XIV) के पूर्व-भूमध्यसागर-तटीय उत्तर-पाषाण से उद्भूत है, पर, असीरिया के ग्रेरेश में गावरा काल मे और उसी संदर्भ में एमक मैदान के तबरा (Tabara) में प्राप्त हस्तनिर्मित प्रकार के ऊरूक घूसर भांड के साथ निकटतर संबंध प्रदर्शित करता है। इसके निर्माता निस्संदेह उत्तर से पैलेस्तीन आए। पर यदि उन्होंने कांस्य युग को प्रवृत्त भी किया हो तब भी उन्होंने चाक का प्रचार नहीं किया।

विलक्षण घूसर भांड जूदा (Judaea) में नहीं मिलता है। प्रत्युत, वहां पात्र बहुधा रंगे जाते थे। पर, जेरिको-VII आई (AI-I) व इसी प्रकार की अन्य बस्तियों की विलक्षणता प्रदर्शित करने वाली अनेक अभिनवताएं, जिनमें उभड़ी मूठों वाले घड़े, टोंटीदार मृद्भांड व दोहरी मुठिएवाली अलोरे सम्मिलित हैं, मेगिग्दो-XIX व एस्ड्रेलेन संस्कृति के सजातीय स्थलों के देशीय घूसर द्रव्यों में आवर्तित होती है। अब दक्षिणीय स्थल स्पष्टत: प्रा० कां० I में रखे जाते हैं। फिर भी, चूंकि उस अवस्था के स्वरूप को प्रदर्शित करने वाली मुख्य सामाजिक विशेषताएं व अनेक मृच्छिल्पीय अभिनवताएं दोनों प्रदेशों में सामान्य है, अत: यह संभव जान पड़ता है कि प्रारंभिक ताम्र-पाषाण-युग व प्रारंभिक-कांस्य-युग के बीच का अंतर तैथिक होने की अपेक्षा अधिकांशत: स्थानीय है और दोनों कालों को एक साथ पैलेस्तीन के प्रारंभिक कांस्य युग प्रा० कां० १ अ[2], के प्रथम भाग के रूप में समझना सुविधाजनक है। इस प्रकार परिवर्तित काल निस्संदेह लंबा है, पर हम प्रा० कां० १ अ, प्रा० कां० १ ब व प्रा० कां० II की अवधि में इस सांस्कृतिक विकास को एक अव्याहत क्रम के रूप में संक्षिप्त

---

१. रि० बि० (RB), liv, १६०७, ३६५—४००।

२. आल्ब्राइट ने विभिन्न स्थलों के विषम संबंधन प्रस्तुत किये हैं (आर्के० पैले०, १६४, ७०—१ और अ० ज० आर्के (AJA) liii, १६४६, २१३) शिप्टन (अ० इ० स्ट०, स० १७, १६३६, और ओ० इ० प० (OIP), xxxiii, १६३६, १४३—७ और राइट (बु० अ० स्कूल ओ० रि०) (BASOR), ६३, १६३६, ६३।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करेंगे। तथापि, यह क्रम वस्तुत: भयंकर विपत्तियों चिह्नित है, उदाहरणस्वरूप आ ई (AI) आग लगने से नष्ट हुआ था।

'कांस्य युग' के प्रारंभ में जो, गेहूं, बाजारा व मसूर[1] के साथ अंगूर व बादाम[2] की खेती किसानों को इस भूमि से बांध दिया, जब कि यातायात के लिए गदहे उपलब्ध थे। अतः यहां की बस्तियां चहारदीवारियों वाले छोटे शहरों में परिणत होने लगीं। जेरिको-VII[3] सात से आठ एकड़ भूमि में फैला और पत्थर की नीवों पर खड़ी कच्ची ईंट की दीवार से घिरा था। आइ[4] व मेगद्दों[5] का दुर्ग-दोनों ही क्रमशः ६.५ व ४.५ मी० मोटे प्रस्तर के प्राकारों से सुरक्षित कर दिए गए थे और आ ई के भागों की चारों ओर से बाहरी पंक्तियों द्वारा अनुपूर्ति की गई थी। ऐसा प्रायः ढेसवांस[6] संबंधी व्यूह रचना से रक्षा के लिए किया गया था।

इस तरह के घेरों के भीतर एक छोटा सा चैत्य स्थानीय देवता की अराधना के लिए ग्रामीणों के संगटन को प्रतीवित करता है। मेगिद्दों-XIX का चैत्य १२ मी० लंबा व ४ मी० चौड़ा था। आ ई में प्राचीनतम देवालय अविभाजित था। पर, प्रा० कां० युग II में आकार यह मानक सामीय मंदिर की योजना के आधार पर बाहरी आंगन, हेकल (Hekal) व देबिर (Debir) [पवित्रतम-Holy of Holies][7] के रूप में विभक्त कर दिया गया प्रारंभिक कांस्य II के पूर्व तक धर्म-निरपेक्ष शासकों के लिए महल निश्चित रूप से अभिज्ञातव्य नहीं है। तदनंतर आ ई का महल अपनी लकड़ी के खंभों वाली बरसाती बरामदा के साथ अस्पष्ट रूप से किश के A महल का, और अधिक निकटता से परवर्ती खत्ती शासकों के हिल्लानी (Hillani) महलों का स्मरण दिलाता है। किसान स्वभावत: अब भी कच्ची मिट्टी की ईंटो, जो अब भी अक्सर हाथ से बनाई जाती थीं, के घरों में रहते थे। पर शहरी दीवारों के भीतर भी प्राकृतिक कंदराओं को अनुकूलित व निवास योग्य बनाया गया था।

---

१. ए० आर्के० एंथ्रॉ० (LAAA) xxli, १६१।

२. मैक्डोनाल्ड (Macdonald) बेथ पेलेट ii, १४।

३. ए० आर्के० एंथ्रॉ० (LAAA), xxii, १५१।

४. मार्केत्क्रूज (Marquet Krause) ले फ्विल्ले द' आइ (Les Fouilles d' Ay), पेरिस, १९४९।

५. लाउड (Loud), मेगिद्दो ii, ओ० इ० प० (OIP), lxii, १९४८, ६६।

६. जैसा कि लौहयुगीन ब्रिटेन में, ह्वीलर, मेडेन कैस्ल, दोजेंत १९४३, ४८—५१।

७. दुस्साउद, सीरिया, xvi, १९३५, ३४५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समग्र कांस्य युग में मृतक सामूहिक रूप में दफनाए जाते थे और चहारदीवारियों के भीतर या अधिकांश में उनके बाहर की ढलानों पर प्राकृतिक या कृत्रिम खोहों में अपने पितरों के साथ सोते थे। समाधियों में निहित मृद्भांडों के प्रकारों व शवों की संख्या-जेरिकों में A समाधि में ३०० थे—के आधार पर निर्णय करने पर अनेक पीढ़ियों तक क्रमिक शवाधानों के लिए समाधियों का उपयोग सिद्ध होता है। हड्डियां साधारणतः अस्त-व्यस्तता की स्थिति में पायी जाती हैं, पर, समय-समय पर तूर्ण कंकाल यह सूचित करते हैं कि शव मूलतः दाहिने पार्श्व के बल[1] आंकुचित मुद्रा में दफनाया गया था। मेकालिस्टरे[2] (Macalister) ने गीजर (Gezer) में खोह २, II का वर्णन श्मशान के रूप में किया है। पर, उसका विवरण दुनांद द्वारा प्रस्तुत बिब्लोस के कलश-शवाधानों के विवरण की अपेक्षा अंत्येष्टि का अधिक निश्चायक साक्ष्य नहीं उपस्थित करता है। फोनेसिया में भी अधिक परिशुद्ध रीति से पेलेस्तीन की सामूहिक शवाधियां उन शवाधान प्रथाओं की पुनरावृत्ति करती हैं जिनका पालन स्थानीय धातु-युग के प्रारंभिक समय में भूमध्यसागर के चतुर्दिक चाहे प्राकृतिक कंदराओं या चट्टान काटकार बनाई गयी समाधियों या पृथ्वी के ऊपर बनाए गए वृहत पाषाणीय प्रकोष्ठों में होता था। गासूली शिला-स्मारकों (Dolmens) की अपेक्षा परोक्ष के उद्भव के साथ निश्चय ही इनकी अधिक संगति बैठती है। पैलेस्तीन में प्राकृतिक खोहों में सामूहिक शवाधान उतना ही प्राचीन है जितना कि मध्य-पाषाण-काल, और, मिस्र के राजकीय शवाधानों से चट्टान काटकर बनाई गयी कृत्रिम खोह की भी प्रेरणा नहीं मिल सकी होगी। कई मकबरों में "प्याली के चिह्न" उल्लिखित किए गए हैं, और इनकी तुलना नाटूफियन भांड से की जा सकी है।

धातु की जानकारी सर्वत्र थी, पर यह बहुत विरल जान पड़ता है। धातु का काम अब भी होता था, पर इसका वितरण प्रत्येक नगर में बसे हुए व्यावसायिक धातु-कर्मियों द्वारा न होकर पर्यटक धातुकारों द्वारा होता था। अनलाश्म का व्यवहार अब भी व्यापक रूप से होता था, पर, स्पष्टतया कुल्हाड़ियों या बसुलों के लिए नहीं। ये पदार्थ संभवतः तांबे के बनते। बेथ शान XVI से एक मजबूत नमूना बचा है। पर तांबे के अधिकांश अवशिष्ट पदार्थ, जिनमें से एक भी विश्लेषित नमूने में त्रयु नहीं था, कठार या बर्छियों के सिरे जैसे हथियार हैं। बर्छी-सिरे के तीन प्रकार प्रचलित थे। इनमें से प्रधान शुंडाकार नोक वाला, द्वितीय शुक के

१. ग्वे (Guy), मेगिद्दो टुम्ब्स (Megddo Tombs), ओ०इ०प०, xxiii १९३८,१३५
२. दी एक्सकेवेशन ऑफ गीजर, १९१२, i, २८५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूप में परिणत मुड़ी[1] हुई नोक वाला और एक, नली के रूप में तहदार चौड़ी डांस वाला प्रकार है। अंतिमोक्त प्रारंभिक फराऊनी प्रकार है, द्वितीय उस परिवार का प्राचीनतम तिथित उदाहरण हैं जो मंजूषा शवाधि-काल में (Cist grave period) ऊपरी यूफ्रेटस पर, सूसा में और ईरान में अच्छी तरह उपस्थापित हुआ है।

यह अनिश्चित है कि मृच्छिल्पोद्योग का किस हद तक उद्योगीकरण हुआ था। पैलेस्तीन में समस्त प्रारंभिक कांस्य युग में मृद्भांड सामान्यतः हाथ से बनाए जाते थे। पर, प्र० कां० १ ब में चाक का प्रयोग करने वाले व्यवसायी संभवतः कुछेक शहरों में बस चुके होंगे। चाक पर बने पात्रों (के अस्तित्व) की सूचना मेगिद्दों XVII बेश शान XV व जेरिको VI[2] से मिली है। पर, इसके स्वरूप निरूपण पर संदेह व्यक्त किया गया है। दूसरी ओर, लगभग, २० से० मी० व्यासवाले मध्य भाग में छिद्रित प्रस्तर के चक्र टूर्नेट[3] (Tournettes) कहे गए हैं।

प्रारंभिक कांस्य युग में एस्ड्रेलोन संस्कृति के धूसर उद्भ्राजित भांड व जूदा के पांडु सरलन वाले चित्रित भांड, जो दोनों ही प्रा० कां० १ के लिए उपयुक्त हैं, के अतिरिक्त हमें हलके पीले रंग के व लाल पुते भांड मिलते है और कां० १ ब में एक बारीक सख्त पका लाल द्रव्य भी प्राप्त होता है जो अपने ध्वनन गुण के कारण धात्वीय भांड के नाम से अभिहित है और पहले ही फोनीसिया में उपलब्ध हो चुका है। कंघी से या पट्टी को संविभागबद्ध करके, जैसा कि मेसोपोटेमिया या फोनीसिया में, या उद्भ्राजक उपकरण से विभूषा का निष्पादन किया गया होगा उत्तरोक्त विद्ध ने झिलमिल द्रव्य को जन्म दिया जो प्रा० कां० २ के पहले पैलेस्तीन में नहीं पाया जाता था, पर बिब्लोस ३ में और स्पष्टतया हम "क" में ज्ञात था। अब लाल रंग चढ़े हलके पीले भांड के लिए उपयुक्त होने पर भी, इसकी शैली वही है जिसका व्यवहार फोनीसिया व उत्तरी सीरिया के उत्तर-पाषण-युगीन सहज रंजित व आघात उद्-भ्राजित (Stroke-burnished) भांड पर किया गया है और जिसकी प्रेरणा निश्चय उसी परंपरा से मिली होगी। परंतु, किसी भी उत्खात (Excavated) स्थल पर उत्तरजीवी आघात उद्भ्राजित ऐसा भांड नहीं देखा गया है जो इतना नया है कि झिलमिल उद्भ्राजन को उत्प्रेरित नहीं कर सकता है।

---

१. गे, मेगिद्दो टूंबस, १६३।

२. लाउड (Loud), मेगिद्दो, ii, फ० २८३, I; मेगिद्दो—XVIII।

३. लाउड मेगिद्दो, II, ५७७, रि० वि० liv, १०४, तु० मैलोन, तेलीलात गासूले, i, ८७, और ए० आर्के० एंथ्रॉ० लि०, xxiii ८४।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पैलेस्तीन में कांस्य-युगीन मृद्भांड कला का विलक्षणतम आकार उभाड़दार मूठ वाला कलश है। प्रा० कां० १ अ में साधारण पर व्यावहारिक हस्ताधारों (Hand holds) के रूप में शुरू होकर जर्जी मिस्र में अपना समानांतर रखने वाले उत्तरों में (Ledges) बाद में एक प्रकार का विकास हुआ जो जर्जी तरंगित मूठवाले कलशों को प्रेरित करने वाले विकास से भिन्न था टोंटीवाले घड़े भी लोकप्रिय थे। कई की परवर्ती ऊरूक व जर्जी प्रकार की टेढ़ी टोंटी है, जबकि उबेद के तली[1] की परिवर्धित रूप प्रारंभिक हैलेडिक एस्कोस (Helladic Askos) के निकट है। जूदा में (Judaea) दोहरी मूठों वाले अखोरे (Amphorikos), जो पांडुवर्ण के सरकन पर लाल रंग में चित्रित हैं, प्रा० कां० १ अ से उपलब्ध होते हैं।

फायेंस के कुछेक मनकों के अतिरिक्त मृद्भांड कला पैलेस्तीन के वैदेशिक व्यापार का उत्तम साक्ष्य प्रदान करती है। उपर्युक्त अनेक द्रव्यों व आकारों के बने पात्र अबिदोस, सकारा, हेलवद व तारखन में प्रारंभिक फराऊनी समाधियों में आयातों के रूप में उपलब्ध होते हैं। इनमें अधिकांश निस्संदिग्ध रूप में बिब्लोस से समुद्र होकर मिस्र पहुंचे। पर, पैलेस्तीन में प्रारंभिक फराऊनी निर्यातों के लिए साक्ष्य बिब्लोस से होने वाले निर्यातों के साक्ष्य जैसा ही समीचीन व समान प्रकार का है। मिस्र में बने सेलखड़ी के कटोरे वोअलात गेबेल के मंदिर की तरह ही आई[2] के देवालय में अर्पित किए गए थे, जबकि जेरिको VII[3] से प्रारंभिक फराऊनी सिलेटी रंग-पट्ट उपलब्ध हुआ है। तब यह संभव है कि मिस्र में प्राप्त कुछ "सीरियाई" पात्र पैलेस्तीन में बनाए व शहद या तेल से भरे गये थे, और उत्तर के साथ मिस्रीय व्यापार ने उस देश की पूर्णतः उपेक्षा नहीं की थी।

प्रस्तुत संदर्भ में मृदभांडकला के सभी प्रकार प्रथम वंश के अधीन मिस्र में पहुंची। अतः यह मानने हुए कि इन आयातित पात्रों में से सभी बिब्लोस से नहीं आए, ये प्रारंभिक कांस्य युग के अने उपविभागों के लिए प्रारंभिक सीमा प्रदान करते हैं। अब प्रारंभिक कांस्य २[4] के पूर्व तक झिलमिल उदभ्राजित भांड का और प्रारंभिक कांस्य बी तक कंकतित धात्वीय भांडों (के अस्तित्व) का साक्ष्य नहीं मिलता है।

---

१. मार्के-क्राउज (Marquet Krause), आइ (Ay), फ० lx, ७—सं० ५८७।

२. मार्के-क्राउज (Marquet Krause), १६, २६।

३. ए० आके० एंमॉ० लि० xxiii, ६८।

४. उदाहरणार्थ, टी० फरा (T. Farah) ४, (रि० वि०, liv, ४२२), बेथशान—XIX, (म्यू० ज० xxiv, १३)।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वस्तुतः विचारणीय सभी आयातित पदार्थ प्रारंभिक कांस्य १ अ से संबंधित न होकर प्रारंभिक कांस्य १ ब या प्रा० कां० २ से संबद्ध हैं। अतः प्रां० कां० १ ब प्रा० कां० २ का प्रारंभ ये दोनों ही प्रथम वंश के शासन काल में पड़ेगें। तब प्रा० कांस्य १ अ को आंशिक रूप में प्राग्वंशीय की जर्जी अवस्था का समानांतर होना चाहिए वस्तुतः अबूसिर एल मेलेक (Abusir el Meleq) से प्राप्त दोहरी मूठिया वाले अखोदे (Amphoriskos) प्रा० कां० १ अ की जूदेई (Judaean) परंपरा से आसानी के साथ उत्प्रेरित हुए होगें। फिर उस अवस्था के उभाड़दार मूठ वाले घड़े उस प्राग्रूप से बहुत दूरीभूत नहीं है जिससे जर्जी तरंगित मूठ वाले घड़े विकसित हुए होगें। टोंटीदार पात्र भी नील की घाटी उसी दिशा से पहुंचे होंगे। क्योंकि वे प्रा० कां० १ अ से बराबर प्राप्त होते हैं। तथापि, टेढ़ी वाला प्राचीनतम प्रकाशित उदाहरण बेथ शान (Beth shan) XIV[1] से प्राप्त होता है।

मेसोपोटेमिया के साथ विश्वसनीय संबंध की स्थापता कम आसान है। एस्ड्लान संस्कृति के घूनर उदभ्राजित कटोरे व तत्संबद्ध टोंटीदार मृद्भांड निस्संदेह उरूक परंपरा से उद्भूत है, पर परंपरा चिरंतन हो सकती है प्रारंभिक कांस्य १ व के अवसान काल में रखे गए मेगिद्दों से दो पात्र पकाए जान के पूर्व बेलनाकार मुद्राओं से मुद्रित कर दिये गए थे अभिकल्पों की शैली की व्याख्या विभिन्न प्रकार से जम्देत नस्र व प्रारंभिक २ के रूप में की गई। स्वभावतः कच्चे पात्रों पर मुहर लगाने के लिए उत्कीर्ण लकड़ो के बेलनों व भरे घड़ों पर मुहर लगाने के लिए निकृत पत्थर के बेलनों के बीच शैलीगत तुलनाएं फोनीसिया की अपेक्षा पॅलेस्तीन में अधिक तैथिक अर्थवत्ता नहीं रखती हैं। तथापि, मेसोपोटेमिया में प्रारंभिक वंशीय २ और प्रथम मिस्रीय वंश के बीच समीकरण को अंतर्ग्रस्त करने वाली द्वितीय तुलना प्रारंभिक वंशीय २ की

---

१. ऑलब्राइट (Albright) आके० पॅले० (Arch. Pal). ७१; शिप्टन, ओ० इ० स्ट० (OIS), सं० १७, १९३९, ४२। निम्नलिखित 'रेडियो कार्बन' तिथियां शिकागो के डा० लिब्बी (Libby) द्वारा १९५१ ई० से प्रकाशित की गई है :—

मेसोपोटेमिया	नील घाटी
जर्मो उत्तरपाषाण (पृ० १०४) ४७५० खृ० पू०।	फायूम उत्तरपाषाण (पृ० ३५) ४१५० खृ० पू०
	अल उमरी (पृ० ४०) ३३०० खृ० पू०
	खारतूम उत्तरपाषाण (पृ० ४६) ३५०० खृ० पू०।

सभी ५०० वर्षों की अशुद्धि-सीमा के साथ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

शुरुआत, जिसपर तीन स्वतंत्र गणनाएं एक साथ मिलती हैं[1], के लिए निरपेक्ष तिथि के रूप में २६०० खृ० पू० के प्राक्कलन के साथ पूर्ण एकरूपता प्रदर्शित करेगी।

ये दूरव्यापो अन्योन्य संबंधन निश्चय ही संदिग्ध हैं। मिस्र व पैलेस्तीन के बीच अखंडनीय संपर्क निश्चित रूप से कतिपय विश्वसनीय निष्कर्षों की अनुमति देते हैं। आ ई या जेरिको VII के दीवारों से घिरे शहरों द्वारा निर्दशित नगरीकरण की दशा प्रथम मिस्रोय सभ्यता द्वारा संचित पूंजी की अधीनता के बिना ही उपब्ध हुई थी। स्पष्टतः प्रा० कां० १ बी व प्रा० कां० २ की अवधि में उस संकेंद्रित सामाजिक बचत से निष्कासित धन के बल पर इसे विस्तृत या समृद्ध नहीं बनाया गया था। फिर, वंशीय १ के खास फराऊनों व सभ्रों के लिए निर्मित सोपानबद्ध व चट्टानी मकबरों से बिब्लोन २ के चट्टान काट कर बनाये गए पारिवारिक मकबरे जितने उत्प्रेरित थे उससे ज्यादा प्रेरित पैलेस्तोन के चट्टान काटकर बनाये गए सामूहिक मकबरे नहीं थे। धातु-शोधन-विज्ञान भी स्पष्टतः मिस्री धातु-शोधन-विज्ञान पर निर्भर नहीं है, और प्रारंभिक वंशोय कालों के सुमेरीय धातु-शोधन-विज्ञान पर इसकी निर्भरता की और भी कम संभावना है।

जहां तक "उत्तर-पाषाण-युगीन क्रांति का प्रश्न है, पैलेस्तीन में अन्नोत्पादन का अभिलेख प्रा० कां १ ब के ऐतिहासिकतापूर्वक तिथि क्षितिज से पूर्ण प्राचीनता की ओर पीछे ले जाया गया है और अन्य स्थानों की अपेक्षा यहां यह अभिलेख आहार संचयन अवस्था के अभिलेख के साथ अधिक निकटता से संबद्ध कर दिया गया है। मृच्छिल्पीय अभिलेख प्रारंभ होने के साथ ही अवर मिस्र उच्चतर मेसोपोटेमिया इन दोनों के प्राचीनतम अभिज्ञातव्य कृषकों के साथ संबंधों के कम-से-कम संकेत देता हैं। अंत में भो गासूल व मादी के ताम्र-पाषाण-युगों के बीच हम एक प्रकार का साम्य देखते हैं, जिसमें प्रथमोक्त को प्राथमिकता मिलनी चाहिए, क्योंकि जर्जी, और इसलिए मादी प्रा० कां० १ अ जो गासुली का स्थान ग्रहण करता है, को अतिच्छादित करते हैं।

---

१. राइट (Wright) (बु० अ० स्कू० ओ० रि०, २२, १९१५, ५१—५२) हलाफियन व स्थानीय उबेद मृद्भांडकला द्वारा परिभाषित अवस्थाओं के मध्य में स्थिर जेरिको—VII व ओरोंटस घाटी की एक अवस्था (अमक D) के बीच समसामयिकता के लिए एक समीचीन मृच्छिल्पीय साक्ष्य का उल्लेख करते हैं। जेरिको—VIII व घसूली तथा एस्ड्रेलोन संस्कृतियों के बीच कालिक संबंध के अब भी विवादास्पद होने के कारण यह अमक उबेद पैलेस्तोन में घासूलो या एस्ड्रेलोन के बीच और भी दूरव्यापी समकालिकत्व को सूचित करता है; पर किसी भी दशा में यह पेलेस्तीन के प्रा० कां० I (? I a) व (उत्तरी) मेसोपोटेमियाई उरूक में साम्य स्थापित करता है। यह समीकरण हमारे निष्कर्षों के विपरोत नहीं है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

द्वादश अध्याय

प्रसार के प्रमाण

पृष्ठ संख्या २८०-२८१ पर की तालिका पाठकों को पूर्वगामी अध्यायों में पर्यालोचित विभिन्न प्रदेशों में सांस्कृतिक प्रगति के तुलनागत अनुपातों की एक पद्धति दिखाने के लिए प्रस्तुत की गई है। स्वभावतः स्तंभ १ में अत्यधिक "निरपेक्ष" तिथियां अनुमानों से अधिक और कुछ नहीं हैं। विभिन्न समय क्रमों के परस्पर संबंधन प्रचुरतया कल्पनात्मक हैं। मिस्रीय स्तंभ को नियत रखते हुए, मेसोपोटेमिया के समयानुक्रम में संकोच या विस्तार किया जा सकता था। और ईरानी समयानुक्रम को उसकी अपनी कीमत पर फैलाया जा सकता था।

इन परिसीमनों के साथ नगर-क्रांति सर्वप्रथम सुमेर में उरूक काल के बीच पूर्णता की पराकाष्ठा पर पहुंची होगी। मिस्र, सूसा व भारत की सभ्यताएं स्पष्टतः बाद की हैं। पर, जैसा कि हमने देखा है, इनमें से कोई भी सुमेरीय सभ्यता की अनुकृति मात्र ही नहीं है। लिपि के चिह्न तक बिल्कुल भिन्न हैं। यह वस्तुतः विचारणीय है कि मिस्र के लिपिकों ने चित्रलिपियों को ध्वन्यात्मक मूल्यों से समंवित करने की विधा किसी प्रकार सुमेर से सीखी। यह दलील शायद ही दी जा सकती है कि मेनेस ने अपनी नूतन जन-सेवा को प्रशिक्षित करने के लिए सुमेर के लिपिकों को मंगाया। तथापि नव राज्यकालीन फराऊनों ने अपने परराष्ट्र कार्यालय को कीलमुख लिपिक कर्मचारीवृंद प्रदान करने के लिए उस तरह का कुछ काम अवश्य किया होगा। सभ्यता की उपलब्धि के पहले मिस्र व भारत दोनों ही निस्संदिग्ध रूप से सुमेर के प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष संपर्क में रहे होंगे। पर इसके राजनीतिक प्रतिस्वरूप राज्य का प्राचीनतम आकार सभी प्रदेशों में एक दूसरे से भिन्न था।

वस्तुतः यह तर्क प्रस्तुत किया जा सकता है कि मेसोपोटेमिया ने राजा की दिव्यता में राज्य के मानवीकरण की धारणा मिस्र से ग्रहण की। इसके विपरीत, यह

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आकर्षक संकेत कि व्यक्तित्व विशिष्ट देवता मानवीकृत राज्य-फराऊनों की अनुकृतियां हैं—उरूक काल में मेसोपोटेमिय कला के साक्ष्य से शायद ही प्रामाणिक सिद्ध होता हैं। साथ ही जम्देत नस्र के फ० XXXVI का भव्य मस्तक हड़प्पा की नृत्यरत बालिका की तरह IV, XVIII व XXXVII फलकों की बर्बर मूर्तियों या सिंहाखेट (lion Hunt) रंग-पट्ट तक से तुलना करने पर सभ्यता के लिए सिर्फ एक सौंदर्यबोधात्मक निकष का ही संकेत नहीं करता है। यह दृढ़तापूर्वक सूचित करता है कि मानव आकृति का प्रकृतिवादी निर्माण दिव्य राजाओं-वृश्चिक (Scorpion) नारमेर व जोसर (Zoser) के चित्रण व आनुषंगिक अमर्त्यीकरण के साथ अनिवार्यतः सबंद्ध नही था।

कुछ शैलिपिक उद्‌भावनाएं, जिन पर चार विभिन्न सभ्यताएं आधारित थीं, निश्चित रूप से प्रसृत थीं। क्योंकि तालिका किसी एक आरंभक बिंदु से इस पद्धति की शुरुआत का पता लगाने की छूट देती है। उदाहरण के लिए यह अधिक संभव है कि सचक्रयान व कुलालचक्र (Potter's wheel) इन दोनों की उद्‌भावना सुमेर में उरूक काल में क्रांति से ठीक पहले हुई होगी। तृतीय सहस्राब्दी में सिंधु से लेकर ओरोंटस व फारस की खाड़ी से वंक्षु तक पाए जाने वाले मूल रूपों या नमूनों से ज्ञात गाड़ी के सभी पहिए एक ही रीति से तीन काष्ठ-फलकों से बनाए गए थे। मेकाउन द्वारा स्वीकृत ईरानीय प्रारंभिक बिंदु के पूर्णतया अपवर्जित नहीं होने पर भी तिग्री के पश्चिम में तिथित उदाहरण गावरा काल के प्रारंभ होने के ठीक पहले दक्षिण पूर्व से असीरिया तक, सारगोन के राज्य के समय खेब्रर तक और उसके अभियानों के बाद ही हमान्जे के समय में ओरोंटस तक क्रमिक प्रसार को निदर्शित करते हैं। दसवें अध्याय में उल्लिखित सामाजिक तत्त्वों के प्रभाव के कारण कुलाल-चक्र का प्रसार भिन्न अनुपात में हुआ, जैसे गावरा में मुश्किल से निनेवा अवस्था के पहले, ओरोंटस में हमा-के के समय तक, बिब्लोस ३ व पेलेस्तीन में ई० बी० १ ब (E. B. I b) में और मिस्र में भी पिरामिड युग में ही हुआ। प्राकृतिक विचित्रता के कारण मिस्र को यातायात के लिए पहिए वाली गाड़ी की आवश्यकता नहीं थी। इसके पहले वह जल पर निर्भर था। पर, ऐसा होने पर उसने पाल का ज्ञान संभवतः बाहर से पाया। इरिदु से प्राप्त उवेद की पाल लगी नाव का नमूना उत्तरकालीन जर्जी पात्रों पर चित्रित विदेशी जहाजों या वस्तुतः पात्रों के किसी अन्य विद्यमान प्रतिरूप से निश्चित ही प्राचीन है।

इसके विपरीत, जर्जी मिस्र में फायंस की उद्‌भावना अच्छी तरह हुई होगी, और तालिकाबद्ध तथ्यिकी के अनुसार वहां से प्रेषित होकर उरूक काल में मेसोपोटेमिया, सियालक IV तक ईरानी पठार, व हड़प्पा-काल के पहले भारत पहुंचा होगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक अन्य उद्भावना-जिसने, शैल्पिक विधा नहीं होने व अधिक संभव अंधविश्वास मूलक रीति-रिवाजों से उत्पन्न होने के बावजूद नगर-क्रांति को पूर्णता में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान दिया था, का स्थान निर्धारण कुछ परिशुद्धता के साथ हो सकता है। साथ ही इसका पता कुछ विश्वास के साथ लगाया जा सकता है। प्राचीनतम तिथि निर्धारण योग्य मुद्राएं उत्तरी मेसोपोटेमिया के हलाफियन मुद्रा लोलक हैं। उबेद कालों तक मनके की अंकन-मुद्रा या बटन के आकार में परिणमित होकर यह विधा सूसा १ (प्रारंभिक उरूक) के समय में कर्वा पहुंची और वहां से दक्षिण फारस होती हुई पर्स-पालिस (Pesrepolis) और उसके आगे फैली। पश्चिमोत्तर फारस में यह मुद्रा सियालक ३ व हिसार १ में, प्रायः कुलाल चक्र के ठीक पहले दीख पड़ती है। पर, कम से कम हिसार में अपनी अंकन-क्रिया से च्युत प्रतीत होती है। इस खंडित रूप में यह विधा ''मुद्रा-जंतर' के रूप में सिंधु पहुंची।

इस बीच अंकन-मुद्रा सुमेर में उरूक कालों में चक्करदार बेलन के रूप में परिवर्तित कर दी गई थी। इस रूप में इस मुद्रा का सीधे मिस्र में संप्रेषण हुआ, क्योंकि इतनी प्राचीन तिथि वाले मध्यवर्ती नमूने नहीं उपलब्ध हैं। उत्तरी मेसोपोटेमिया के शुष्क स्थल पर ब्रक के (चक्षु मंदिर १) (Eye Temple) में जम्देत नस्र शैली के सामान्य बेलनों का व्यवहार होता था। पर, गावरा में निनेवाइत (Ninevite) काल में बेलन मुद्राओं के साथ सिर्फ बराबरी करने लगते हैं। वे हमा-के (Hama-K) व जूदिदा-XII (Judeideh) के समय में ओरोंटस पहुंचते हैं। और मिट्टी के कच्चे बरतनों पर ठप्पा लगाने के नए प्रयोग में परिवर्तित होकर वे भूमध्य-सागर के तट पर बिब्लोस IV में व पेलेस्तीन में ई० बी० १ अ (E. B. Ia) से ई० बी० I ब में संक्रमण के समय के लगभग दीख पड़ते हैं।

पर अंकन-मुद्रा संभवतः हलफियन या उबेद भांडों के साथ बेलन से पहले ही फरात को पार कर चुकी थी। यद्यपि अंकन के लिए इसका उपयोग संभवतः भुला दिया गया होगा, फिर भी यह हमा-L व जूदिदा-XIII में दीख पड़ती है, और बिब्लोप २ में पात्रों पर ठप्पा लगाने में इसका उपयोग होता है। इसका प्रसार न तोरस से और न भूमध्य सागर से ही अवरुद्ध हुआ। मध्य अनातोलिया में मिट्टी व तांबे की भी मुद्राएं तथा मुद्रांकन पहले ही अलीशार[1] (Alishar) के ''ताम्रपाषाण-युग'' में उपलब्ध होते हैं। एजियन के बाद मिट्टी के ठप्पे, जिनमें एक पत्थर का है, थिमली के उत्तर पाषाण अ में, और फिर, पर हमेशा मिट्टी के ही, थ्रेस (Thrace)

१ वांदर ओस्तों (van der Osten) दी अलीशार हूयूक (The Alishar Hayuk) ओ० ई० पो० (OIP), xxviii, ८२।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गुमाल नित्सा (Gumalnitsa) टीलों में, बनात की कोरोस (Koros) संस्कृति में, व दंयूबियन २ या मोरेविया[1] की लंग्याल (Lengyel) संस्कृति में चित्रित भांडों व ढ़ेलवांस की गोलियों के साथ संबंद्ध हैं। भरी हुई व्यत्यस्त रेखावाला परिचित अभिकल्प तक अनातोलिया में, थिसली व हंग्री में मरोस (Maros) तक पर विश्वसनीयता के साथ पुनरुत्पादित होता है। क्या, हिदर एशिया से हमारे महादेश तक प्रसार के इससे अधिक निश्चयात्मक प्रमाण की मांग की जा सकती है? प्रारंभिक मिनोवां (Minoan) की बटन के आकार की मुद्राएं भी एक ही भांडार से उद्भूत हैं। पर, इसके विषय में यह धारणा है कि ये मिस्र[2] होकर कुछ अधिक कुटिल मार्ग से क्रीट पहुंची हैं।

फिर भी, धातु-विज्ञान का प्रसार अधिकांश में एक उपधारण (Postulate) ही बना रहता है। तृतीय सहस्राब्द के प्रारंभ में मिस्र, मेसोपोटेमिया व सिंधु-घाटी में हमें पूर्णतया पृथकभूत स्थानीय प्रकारों के परस्पर भिन्न संघात मिलते हैं। अपनी विशेषता लिए हुए "सुमेरीय" प्रकारों (के अस्तित्व) का पता सूसा, सियालक ३, ४ व गावरा-VIII से होते हुए कम-से-कम परवर्ती उरूक कालों में लगाया जा सकता है। अनुमानत: दंड-छिद्रयुक्त कुठार के निर्माण या धातु में परिवर्तन के साथ उवेद अवस्था में ही वैविध्यपूर्ण विशिष्टीकरण प्रारंभ हो चुका था।

सूसा स, जम्देत नस्र मेसोपोटेमिया विब्लोस २ व जर्जा मिस्र में चांदी और सीसे के व्यवहार के आधार पर निर्णय करने पर यह कहा जा सकता है कि चतुर्थ सहस्राब्द के उत्तरार्ध तक धातु विज्ञान उच्च शैल्पिक स्तर पर अवश्य पहुंच चुका होगा। गावरा-VIII व टी० घसूल (T. Ghassul) से प्राप्त पदार्थों के प्रकाशित विवरणों के अनुसार ३००० खृ० पू० से पहले त्रयुमिश्रित कांस्य (Tin bronze) भी, संभावित सीमित उपयोग होने के बावजूद आविष्कृत हो चुका था। पर, उस तिथि के पहले उत्खननगत दुर्घटनाओं के चलते धात्वीय अवशेषों का ज्ञात वितरण इतना अनियमित है कि इसका प्रतिमान किसी एक किरण केंद्र की दिशा में कोई विश्वसनीय संकेतक प्रदान नहीं करता है। खुद ये प्रकार इतने सरल हैं कि इनका निर्माण विभिन्न क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से हुआ होगा।

---

१. चाइल्ड (Childe), डॉन (Dawn) ६०, ६५, १०३, १२६; अ० ज० आर्के० (AJA), xliii १६।

२. माट्ज (Matz), दाई फ्रूकेतिश्चे सीगल (Die fruhkretischen Siegel), १६२८, २६।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्राचीनतम प्राच्य सभ्यता पर नया प्रकाश

सापेक्ष रूप से प्रथम विशिष्टीकृत प्रकार, जिसका उपयोग प्रसार के पक्ष में एक तर्क के रूप में हो सकता था, गांठदार सिरे वाला शंकुक (Pin) है। पर यह एक पुराना आविष्कार है जो सर्वप्रथम जर्जी मिस्र व सियालक IV जैसे पूर्णतः एक दूसरे से पृथक् रहने वाले प्रदेशों में लगभग एक साथ ही पाया गया है। सिर्फ थोड़े समय बाद प्रारंभिक फराऊनी मिस्र व मध्य फरात पर प्रारंभिक वंशीय I में किनारे पर मुड़ा हुआ या अर्धचंद्राकार कुठार उपस्थापित किया जाता है। पर, यह भी फोनेसिया व उत्तरी सीरिया में २००० खृ० पू० तक बचा रहकर व तृतीय सहस्राब्द के उत्तरार्ध में सूसा पहुंच कर लंबी अवधि तक लोकप्रिय बना रहा।

उस सहस्राब्द में सर्वाधिक विलक्षण सुमेरीय प्रकारों का विवरण बहुत ही सीमित रहा। पर, पहली बार फोनेसिया व उत्तरी सीरिया में मंजूषा शवाधि काल (Cist grave period, १२२५० खृ० पू० के पश्चात) में एक संघात के रूप में साथ-साथ पाए जाने वाले कतिपय गौण प्रकार स्पष्ट रूप से प्रस्तुत थे। प्रारंभिक वंशीय सुमेरीय प्रकारों से व्युत्पादित, पर टेढ़ी डांस[1] वाले बर्छी के सिरे साइप्रस, सिलिसिया, मध्य अनातोलिया, ट्राय व साइक्लेड और ईरान में हिसार III में भी फिर से दृष्टिगोचर होते हैं। तारसस (Tarsus) व अल्का[2] (Alaca) की राजकीय समाधियों से प्राप्त नमूने फलक XXXIX में प्रदर्शित तिल बर्शिब (Til-Barshibe) से उपलब्ध हथियार के फलक में देखे गए छिद्रों जैसी विस्तृत विलक्षणताओं का पुनर्निर्माण करते हैं। पैलेस्तीन में टेढ़ी डांस का आवश्यक पता बहुत ही पहले लग सकता है। (वहां) यह द्वितीय सहस्राब्द में सुस्थिर रहती है। इसी तरह "सुमेरीय" बर्छी के सिरे, जिनमें कांटा नहीं लगा था, काकेशस (Caucasus) को पार कर चुके थे और क्यूबा[3] की घाटी में स्थित नोवोस्वोद्नाया (Novosvohodnaya) में एक सरदार के मकबरे में निक्षिप्त हुए थे।

उसी प्रकार सुमेरीय दंड नलिका-युक्त कुठार से उत्पन्न प्रकार, जो XXXIX, १ फलक की मंजूषाकार शवाधि-रूप के निकट हैं और जिनकी दंड-नलिका के छोर पर

१. स्केफर (Schaeffer) द्वारा पर्यालोचित व निर्दशित, स्ट्रॉट० कंपे० (Strat camp.) ३८, सं० ८०, १६८, १७२, १७४, २३६, २४५, और मिसॉ अं साइप्र (Mission en chypre), पेरिस, १३६, ४२ आ०।

२. स्केफर (Schaeffer), स्ट्रॉटी० कंपे० चित्र ८२, ४, १७२, ४, १९७६, २३।

३. चाइल्ड, डॉन, चित्र ७५।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अर्धचंद्राकार कटाव है, प्रारंभिक एजियन काल[1] में लेम्बानास पहुंचे। और बाद में स्थानीय मध्य-कांस्य युग में हंगरी में परिवृंहित हुए। फिर तार के बने ऐंठ हुए छोर वाले कंठहारों ने केंद्रीय अनातोलिया में प्रवेश किया। और केंद्रीय यूरोप से अवर उत्तर-पाषाण-कालीन वडेन[2] संस्कृति की एक कब्र में कम से कम उदाहरण का परिचय मिला है। पर, तार के बने कंठहार कांटा युक्त डांस वाले बर्छी के सिरे व चौड़े कुठार, ये तीनों ही प्रकार परस्पर संबद्ध नहीं होने के वावजूद स्पष्ट रूप से उच्च फरात की मंजूषाकार कब्रों में साथ-साथ दीख पड़ने के पहले ही तिग्री के पूरब ज्ञात हो चुके थे।

दो हजार खृ० पू० के बाद ये तार के कंठहार फोनेशिया में ढ़ालकर पुनः निर्मित हुए। और वहां से "स्वर्णहार वाहकों" (Torque Beares) द्वारा कंटिकाओं (पिन), कर्णफूलों[3] और यूरोप में कर्तित कुंदेवाली इटली की फैली हुई कुल्हाड़ी के रूप में परिवर्तित होने वाली फेनिशियाई छोटे छिद्र युक्त कुल्हाड़ी के प्राचीनतर सुमेरीय प्रकारों की संपूर्ण मालाओं के साथ यूरोप में उपस्थापित हुए। ये वही प्रकार हैं जिनका उत्पादन और वितरण मध्य यूरोप में स्थानीय प्रथम धातु उद्योग के द्वारा हुआ इस तरह ये आल्पस के पार धातु-विज्ञान-प्रसार को निदर्शित करते हैं।

प्रसार को प्रदर्शित करने के लिए पूर्वगामी प्रकार निस्संदेह बहुत ही विशेषीकृत हैं। पर, इसे खास धातु-विज्ञान का प्रसार, कम-से-कम अनातोलिया और एजियन में, मानना कठिन है। यद्यपि मीनाओं क्रीट व त्रोद की तैथिकी में पूरी कटौती[4] की आवश्यकता हो सकती है, तथापि क्रीट लेसवोस व अलीसार से उपलब्ध प्राचीनतम धातु के पदार्थ को संभवतः सारगोन के राज्यकाल तक नीचे नहीं किया जा सकता है। मीनाओं के प्राचीन कटार किसी भी ज्ञात पूर्वीय प्रकार से उदभूत नहीं हैं। इसके विपरीत, एजियन व अनातोलिया से प्राप्त साक्ष्य उत्तरी फारस से उपलब्ध साक्ष्य को समवेत होकर ट्रांस केकेशिया में धातु-विज्ञान के उद्गम स्थल होने की फ्रैंकफर्ट[5] की उपकल्पना का समर्थन करता है। साथ ही मिस्र को प्रारंभिक वंशीय कब्रों से

१. आर्क अ० ज०, १९३७ (जहरबच द इंस्टीटयूट्स् lii) १७०, चित्र २२।

२. चाइल्ड, डॉन, ११३।

३. स्केफर, उगरितिका (Ugaritica), ii, पेरिस, १९५०, ५६—११५।

४. c. g.; Matz, *Historia*, ii, (Baden Baden, 1950), 185—194; Milojcic, BSA, xliv, 1949, 258-306।

५. Ant. J. viii, 233.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सूचित होने वाले साइक्लेडिक संगममंर और प्राय: उसी संदर्भ से और प्रारंभिक वंशाय सुमेर से प्राप्त पत्थर को खोदकर बनाए गए पात्रों के आधार पर एजीयन टापुओं का मिस्र और मेसोपोटेमिया के साथ भी संपर्क का अनुमान किया जा सकता है। मिस्र या फोनोसिया से अनातोलिया के पठार के बिना पार किए धातु विज्ञान एवं अन्य आविष्कारों का प्रसार एजीयन में हो सका।

पर धातु के उपयोग के लिए आर्थिक संघटन व शैल्पिक ज्ञान अपेक्षित थे। धातु विज्ञान के प्रसार का तात्पर्य ज्ञान व संघटन इन दोनों का प्रसार होना चाहिए। खुद नगर क्रांति ने उत्तरोक्त को प्रोत्साहित किया। मेसोपोटेमिया व मिस्र के धार्मिक या राजकीय धान्यागारों में संचित धन ने जनता के एक पूरे वर्ग को धातु एवं अन्य कच्चे मालों के उत्पादन व वितरण में नियुक्त किया। इसमें उत्पादन के लिए एक बाजार की भी गारंटी दी। पर, व्यवहार में राज्य ही बाजार या कम-से-कम मुख्य उपभोक्ता था। अब मिस्र में फराऊनी राज्य ने तांबे के निष्कासन व वितरण के लिए सिर्फ पूंजी (खाद्य, साज-सामान व भारवाही पशु) ही नहीं दी बल्कि इसमें नियोजित कर्मचारीवृंद भी दिए। तांबा और फिरोजा समय-समय पर फराउनों द्वारा प्रेषित एवं राजकीय सेना द्वारा स्थानीय खानाबदोश कबीलों के हस्तक्षेप से रक्षित अभियानों द्वारा सिनाई[1] से जीत कर लाए जाते थे। कुछ सुमेरीय राजवंशियों ने भी उन अभियानों का उल्लेख किया है जो उन्होंने धातु, भवन-निर्माणोपयोगी प्रस्तर या लकड़ी के लिए भेजे थे। ये अभियान संभवत: फराऊनी अभियानों के समान थे। इन्होंने स्वभावत: उन बर्बरों की समृद्धि के लिए कुछ भी नहीं किया जिनके प्रदेशों को उन्होंने आक्रांत किया।

पर प्ररंभिक सुमेरीय मंदिरों को इस रूप में शायद ही आपूर्ति मिली होगी। प्ररंभिक वंशीय कालों में लिखित अभिलेख सूचित करते हैं कि वे दमकुर (Damkur) या व्यावसायिक व्यापारियों की सेवाओं पर निर्भर थे। प्रारंभिक फराऊनी मिस्र व पैलेस्तीन या फोनेसिया के बीच के संबंध भी अधिकांश में पारस्परिक वाणिज्यिक स्वरूप के प्रतीत होते हैं। वाणिज्यिक अभियान राज्य द्वारा उपकरण सज्जित रहे हों या नहीं इतना निश्चित है कि संपर्क में लाये जाने वाले समुदायों को उन्हें अवश्य ही संतुष्ट करना पड़ा होगा। बिब्लोस व आई (Ai) के मंदिरों में प्रदत्त मिस्रीय पात्र पहली दशा में राज्य के मानवीकरण के रूप में स्थित फराओं के नाम पर प्रदर्शित

१. Petrie, Researches in Sinai, London, 1906.

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करते हैं कि मिस्रवासियों द्वारा व्यापार के लिए अनुमति कैसे पाई जाती थी। नारमेर के चत्वर पर स्थित उत्तरकालीन उरूक (Uruk) आकार का धातु का बना जल-पात्र संभवतः मिस्र राज्य में मेसोपोटेमिया के व्यापारियों द्वारा इसी प्रकार के प्रवेशों का परिणाम है। किसी दशा में प्रस्तर-पात्रों की तरह यह दिखाता है कि सिर्फ मृद्भांडों की सस्ती अनुकृतियों से ही परिचित पात्रों के प्रकार वस्तुतः उन प्रदेशों में फैल हुए थे जो आसानी से टूटने योग्य पात्रों के परिवहन के लिए अत्यधिक दूर पड़ते थे।

शहरी बाजारों व खानों, पत्थर की खदानों या जंगलों के बीच कुछ प्रकार के आधारों पर स्थापित नियमित यातायात व्यवस्था ने अकेले में इस तरह के नियमित व्यापार को प्रश्रय देने में बिल्कुल असमर्थ मध्यवर्ती प्रदेशों में कच्चे सामानों के वितरण का एक साधन प्रदान किया। अतः शवाधि अवशेषों से पता चलता है कि निम्न मेसोपोटेमिया से अमानस (Amanus) व तोरस तक के स्थायी यातायात वाले शुष्क स्थलीय मार्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक बसे सीरियाई गांवों में औजारों व हथियारों के लिए धातु का नियमित रूप से उपयोग होता था। पर पैलेस्तीन के सम-सामायिक ग्रामों में यह दुष्प्राप्त था और लगभग सिर्फ हथियारों के लिए ही उपयोग में लाया जाता था, क्योंकि उन दिनों मिस्र-सीरियाई व्यापार मुख्यतया सामुद्रिक था।

साथ ही, नगर केंद्रों के साथ नियमित व्यापार ने उत्पादक व मध्यवर्ती क्षेत्रों में एक प्रकार के सभ्य संघटन को बढ़ावा दिया होगा। स्थानीय बिरादरी के प्रतिनिधि ने, चाहे वह देवता रहा हो या कोई सरदार, अपना अधिकार उस अतिरिक्त धन पर पाया होगा जो अब बिरादरी के सदस्यों द्वारा स्वेच्छा से अर्पित उपहारों या परंपरागत दानों से ही प्राप्त किया जाता था। इस प्रकार अब उसने एक प्रकार की आर्थिक स्वतंत्रता पाई। जब कच्चे माल सैनिक-शक्ति के माध्यम से प्राप्त किए जाते थे, तब भी सशस्त्र आक्रमण ने, चाहे वह फराऊनी खनि-अभियानों का रहा हो या सारगोन व उसके उत्तराधिकारियों का "देवदारुवन" व "रजताद्रि" को ओर साम्राज्यवादी अभियान के रूप में रहा हो, युद्ध-नायकों के अधिकार को दृढ़ बनाया होगा। तिल-बार्सिब (Til Barsib) का राजकीय मकबरा, यदि उसका तिथि निर्धारण अगादे राजवंशियों के अभियानों के तुरत बाद शुद्धता से किया गया हो, इस विषय को उचित रीति से अभिलिखित करता है। और, इस प्रकार के युद्ध परायण साहसिक कृत्यों ने बर्बरों को धातु के महत्व से अवगत कराया होगा। औजारों के हेतु अनलाश्म प्रायः उतना ही अच्छा है जितना तांबा। पर, हाथ लड़ाई में अनलाश्म के कुठार मृत्युजनक परिणामों के साथ प्रहार करने में अत्यधिक सक्षम होते हैं। प्रस्तर-युगीन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बर्बर तांबे के हथियारों व शिरस्त्राणों से युक्त सभ्य सैनिकों के विरुद्ध वैसे ही निस्सहाय सिद्ध हुए होंगे जैसे स्पेनियार्डों के सम्मुख अजतेक हुए थे।

तथापि यदि धातु के लिए आकांक्षा इस प्रकार आवश्यक प्रयोजन के रूप में परिवर्तित कर दी गयी होती तो कुछ छिटफुट उपयोग और इसलिए उसकी एक हद तक जरूरत इन दोनों का पूर्ण प्रसार नागरिक क्रांति के प्रारंभ होने के पूर्व ही हुआ होता। एक के वितरण एवं दूसरे के प्रसार का विश्लेषण करने के निमित्त हम सिर्फ द्वितीय अध्याय में खींचे गये जन-समुदाय की अविच्छिन्नता के चित्र की ओर संकेत कर सकते हैं। बदरियन हलाफियन कालों में सामुद्रिक शंखशुक्तियों के परिभ्रमण यह सिद्ध करते हैं कि सामानों का यातायात मानवीय अभिकरण (Ageney) द्वारा होता था, और इसलिए उत्तर-पाषाणकालीन क्रांति के बाद बहुत शीघ्र विचारों का प्रसार सुदूर प्रांतों में हो सका। नवीन अर्थव्यवस्था द्वारा संभव बनाई गई सामाजिक अतिरिक्त धनों की अभिवृद्धि ने उस व्यापार के सघनीकरण व विस्तार के लिए भौमिक आधार प्रदान किया। पर इसकी प्रक्रिया अब भी उपकल्पना का विषय बनी हुई है पुष्टतर प्रमाण के साथ आजकल यह पूछना-कि स्वयं उत्तर-पाषाण कालीन क्रांति कैसे और कहां से प्रसृत हुई लाभजनक नहीं प्रतीत होगा। फिर भी, हम एक विचार प्रस्तुत करेगें। दो प्रारंभिक उत्तरकालीन सांस्कृतिक प्रांतों के बीच का सीमांत, जो क्रमशः स्वचित्रित भांडों व धनुषों द्वारा तथा हलके भूरे रंग के भांडों व ढ़ेलवांसों द्वारा स्वरूपायित (Characterized) होता है, उत्तरी सीरिया में भूमध्यसागर व अरबी समुद्रीय निर्गम के बीच की विभाजन रेखा के साथ मिलता है। पर, हाल में स्कीमन ने (Schiemann) गेहूं-उत्पादन के प्रथम केंद्र के रूप में उस क्षेत्र का सकेत किया है। उसके अव्यवहित दक्षिण में एक तीसरा प्रारंभिक उत्तर-पाषाण-कालीन क्षेत्र प्रारंभ हुआ जो एक दृष्टि से निम्न मिस्र तक व्याप्त रहा होगा। पर, अधिकांश मिस्रेतिहासवेत्ताओं (Egyptologists) द्वारा समर्थित यह दृष्टिकोण, जो मेरिम्दे को तासियन से अर्वाचीन मानता है, अफ्रीकामें एक स्वतंत्र गोधूमोत्पादक केंद्र की अपेक्षा रखता है।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

अंकक मुद्रा	Stamp Seal
अंगघर्षक	Flesh rubber
अंगुल्यंकनों	Eligital impressions
अंतर्विकास	Incubation
अकीक	Carnelian
अग्नि प्रकोष्ठ	Firing Chamber
अग्रिम दशनों	Incisors
अतिच्छादित	Overlap
अतिरिक्त पशु	Draft animal
अदरख रखने के वर्तन	Ginger jars
अध्यासित	Superimposed
अधः कर्तित	Uudercut
अधः साद	Precipitation
अनन्विष्ट	Unexplored
अन्नसंचय पात्र	Granary pot
अनुक्रम तिथि	S. D.
अनुमाप प्रतिरूप	Scale Pattern
अबूसिर एल मेलेक	Abusir el Meleq
अभिकरण	Agency
अभिकल्पमूलक	In design
अभिकल्पों	Designs
अभियात्रियों	Exepeditions
अयः प्राय	Ferrous
अर्द्धविराम चिह्नाकार	Comma Shaped
अरियल भेड़ों के निवास स्थल के पूर्वीयभाग के भेंड़	Argal
ऑक्सीकरण	Oxdization
आतरक	Spacers

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

आंतरिक	Core
आकर्षक संकेत	Attractive suggestions
आग्नेय प्रस्तर उद्योग	Flint Industries
आघात उद्भ्राजित	Strok Burnished
आदि जीव समय	Eocene
आदिम आनंदपूर्ण उद्यान	Original Eden
आदि वंशीय	Early dynastic
आभूषणों के प्रकार	Fashions
आयस	Ferruginious
आयातित सीमा	Terminus Ante quem
उत्खात	Excavated
उत्तर-पाणायुगीन क्रांति	Neolithic revolution
उद्गतहनुत्व	Prognathism
उद्भ्राजक अलंकृत	Burnished decorated
उपधारण	Postulate
उपधृत	Postulated
उपनिवेशीकरण	Colonization
उपयुक्त पक्ति	Applied Cordon
उबेद संस्कृति	Ubaid Culture
उर्वरता संप्रदाय	Fertility cult
उर्वर चाप के शृंगों के मध्य	Between the Horns of the fertile Crescent
ऊति	Fabric
ऊपरी वर्त्तन दंतों	Incisors
ऊपरी स्थल	Surface Site
ऊर्णामय रोमयुक्त	Woolly fleece
एक शववाही शकट	Hearse
एकांतरिक	Alternating
कंकतिवालंकृत	Comb-decorated
कंटिकाएं	Pins
कलश पिधानी	Jar-Stopper

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

कर्शेमिश	Carchemish
किमखावी शैली	Brocade Style
कीलदार पीन	Toggle pin
कुआं के मोहड़े	Well-shafts
कुदाल संस्कृति	Hoe-culture
कुल्ली संस्कृति	Kulli culture
कुलाल चक्र	Potter's wheel
कुसुमी रंग के भांड	Scarlet ware
कूटोत्थ	Omphalos
कृष्ण शीर्ष	Black topps
केश कलाप	Wigs
केश शूकों	Hair pins
खननयाष्टियों	Digging Sticks
खाद्योचित गेहूं	Triticum Compactum
खुले गोड़े	Open work
गांठधार सिरे वाले शंकुक	Pins
चंद्र मंदिर	Sin Temple
चकरी	Rings
चक्रक	Ring
चक्रनुमा तला	Splayedring foot
चक्राकार खुरचन	Disc'and end-Scrapes
चक्षु मंदिर	Eye temple
चतुष्चक्र	Four wheeled
चित्रलिपियां	Hieoglyphs
चूना पत्थर	Calcite
चषक	Beaker
छाग पालक	Goat Herders
छिद्रित	Swelling
जंगली पहाड़ी भेंड़	Mauflon
जंतुरूपात्मक मुद्राएं	Heniomorphic Seals

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

जलोत्सारणहीन	Undrained
जालोदभ्राजित	Lattice-burnished
ज्वालाकांच	Obsidian
टिटहिरियों	Lapurings
तट रेखा	Coast line
तकु' चक्रिकाएं	Spindle whorls
तल, ताबूतों	Base, Larnakes
ताम्रकार	Copper Smiths
तासी सभ्यता	Tasian Civilizatior
त्रिघातीय	Cubical
तिरछे कोरवाले	Hevel-rimmed
तृणस्थलो	Savannah
दबाव शल्कन	Pressure flaking.
दरियाई घोड़े	Hippopotami
दलदल भूमि में रहनेवाला भेड़	Ovis Palustris
द्विशंकु	Bicons
द्विशांकन	Bioconical
देवदार	Juniper
दोहरो मूठवाले अखोरे	Amphoriskos
धूम्रांकस	Funnel
धूल के कटोरे	Dust bowl
धूल से युक्त हिमहत भूमि	Tundra
नर मत्स्य	Nar fish
नलिकायुक्त	Grooved
निकुंचित या आनत	Crouched
निश्रेणी	Ladder
नीलाभरक्त	Pluum-red
नीलोपल	Lapis lazuli
नेत्राकार मूर्ति	Eye-idol
न्यूनीकृत अयोविकार	Iron oxide

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

न्यूनोत्थ उत्कीरणाओं	Pas reliefs
पट्टियों	Tablets
परस्परच्छेदी	Intersecting
पवनरोधी	Wind-Screen
पवित्रतम	Holy of Holies
पर्वत के शिखर पर दो सिंहों का सहारा दिए हुए	dompting two lions on a rocky peak
पशुदमन	Domestieating
पात्र विधानों	Pot Covess
पिरामिड युग	Pyramid age
पुच्छहीन विशाल मेष	Barbery Sheep
पुनस्तेजन	Resharpening
पुरोभाग	Front
पुरोहित नगरों	Cathedral Cities
पूर्ण मानव	Homo Sapiens
पृथक्करण	Seperation
पृथुशिंबी	Vetch
प्रकार स्थल	Type site
प्रक्षेपण	Projection
प्रतिमेतर	Aniconic
प्रतिरूप व्यत्यस्त रेखा	Cross
प्रतिनिध्यात्मक	Representational
प्रवर	Upper
प्रस्तर विधानों	Cover stones
प्रसारवादी उपधारणा	Postulate
प्राक प्रतिष्ठित	Pre classical
प्राक सारगोनीय	Pre Sargonic
प्राचीनतम मिस्रीय भेड़	Ovis Longipe
प्रायाकार पात्र	Theriomorphic
प्रामाणिक सहजात घटनाएं	Synchronisms

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

प्लावनिक निक्षेप	Flood deposits
बड़े कलशों	Pithoi
बल्कानी गेहूं	Triticum monococcum
बलभी	Terrace
बहुरंगात्मक	Polychrome
बालुकांतरिक	Sand-Core
भ्रमियों	Whorls
भारतीय वृषभों	Bos Indicus
भारदायकों	Weights
भित्तिचित्रों	Trescoes
भीषण	Gary
भूरा पत्थर	Basalt
मंजूषा शवाधिकाल	Cist grave period
मंदिर प्रधान नगर	Cathedral City
मत्स्य पुच्छाकार	Fish-tailed
मानचित्र	Atlas
मिथ्या द्वार	False door
मिस्रेतिहासवेत्ताओं	Egyptologists
मीन ध्वज	Fish Standarel
मुद्रोत्कर्त्तन	Seal-engraving
मूर्तिकलानुसार	Plastically
मूल	Draft
मृत्तिका	Pise
मृतिकारोधक फलक	Dash board
मेरिम्दे निवासियों	Merimidians
मेहरावीनुमा	False Vaulted
मोद मंडली	Symposiums
यथावसर	Occasionally
रगड़कर तीक्ष्ण किया हुआ कुठार	Ground Stone Axe
रक्षावाहिनी	Militia

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पारिभाषिक शब्दावली

रूढ़िग्रस्त अवगत रूप	Degenerations
रूपांतरीकरण	Reduction
रोटिकोपयोगी एवं क्लब गेहूं	Bread and club Wheat
रोटियां	Loaves
लंबी पूंछ वाले एशियाई भेंड़	Urial
लाक्षणिकीकृत	Allegorical
लोहाभ रंग	Ferruginouswash
वंक्षु	Oxus
वक्र प्रतिमान	Rocker Pattern
वामन जाति	Pigmy race
विंदूत्कीरण	Stippling
विधा	Device
विस्तारापत्ति	Danger of Inflation.
वृत्त का कुंडल	Arc of a circle
वाणमुखलिपि	Cunciform
विशाल तिर्यगायित	Shomboid
विशिष्ट	Steatopygy
विशिष्ट स्थल	Patent Station
वृक्ष घास भूमि	Park land
वृक्ष घास स्थलीय शुष्क भू-भाग	Park land Steppe
वृश्चिक	Scorpian
व्यंजनाकार	Fass shaped
शल्कित	Flaked
शिला-स्मारकों	Dolemns
शिश्नावरण	Penistache
श्वेत मंदिर	White temple
संपुंज	Massive
संयंत्र	Engine
सपिच्छ	Feathered
समग्रकालिक	Full time

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समत्रिकोण	Tetrahedra
समानांतर व केंद्रवर्ती	Equids and cerivides
समोन्नतोदर	Plano convex.
समोन्नतोदर काल	Plano-convex Period
सहरूढ़ियों	Acenetions
साइक्लेडिक संगमरमर	Cycladic marble
सागरीय तटों	Levant Coasts
सानुक्रम लिपि	Hieratic
सामान्य गेहूं	Triticum Vulgare
सारगन युग	Sargonidage
सिंहधारक	Lion-dompter
सिंहाखेट	Lion-Hunt
सुकृत	Well-carved
सूक्ष्म रुखानियां	Celts
सूक्ष्म रूप में ढाल सकते थे	Could cast cire perdue
सोपान प्रतिमानों	Step patterns
स्तंभ मंदिर	Pillar temple
स्थलांतर्वर्ती	Underground
स्थायी जीवन	Sedentary life
स्वर्णाहार वाहकों	Torqne Bearers
स्वरूपायित	Characterized
हाल	Rim

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक १

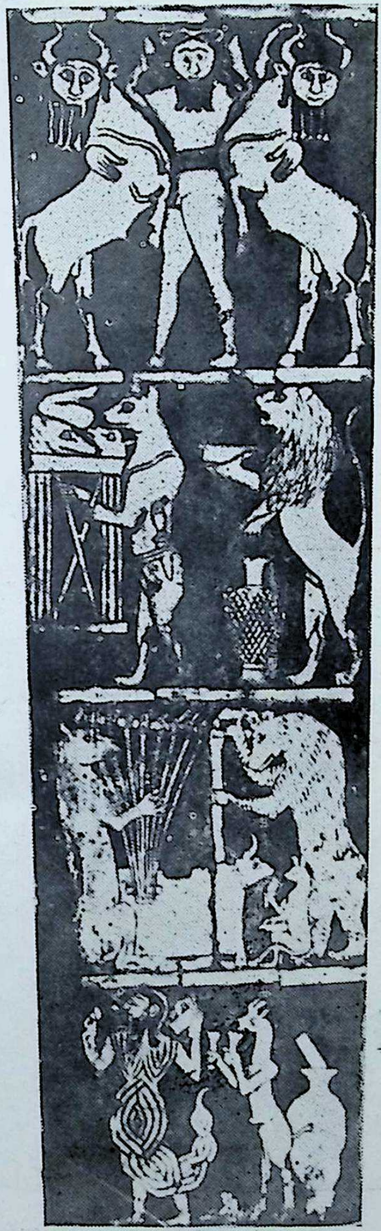

शंख पच्चीकारी, उर के शाही मकबरे से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ. जंगली पहाड़ी मेष (मफलॅन)

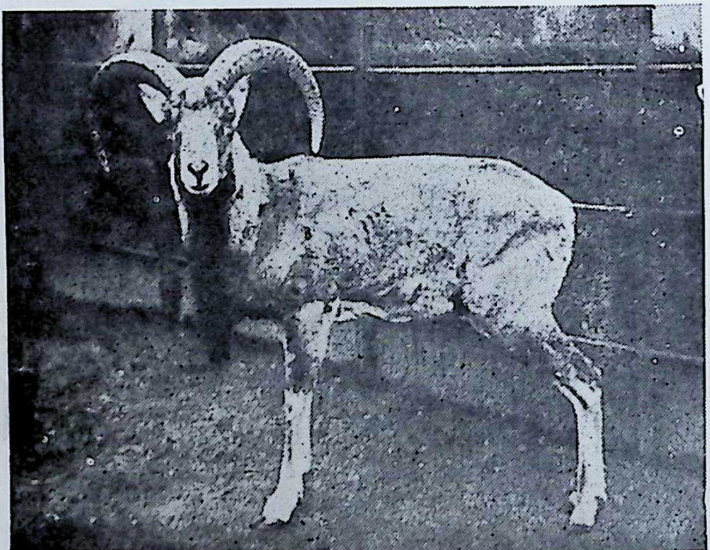

ब. ऐशियाई मेष (ऊरियल)
प्राणी विज्ञान संबंधी उद्यान, लंदन

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ३

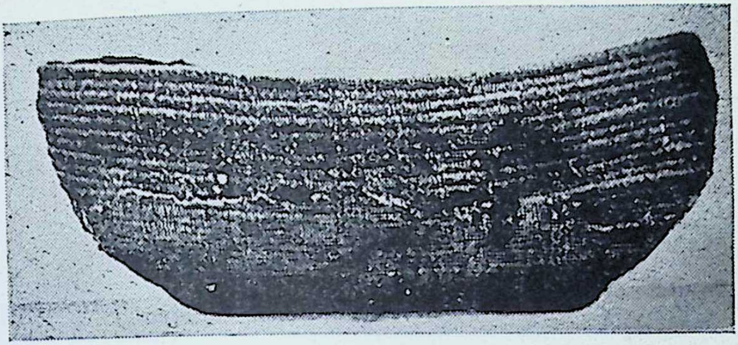

अ. नव-पाषाण-युगीन टोकरी, फायूम से
(चित्र : जी. काटोन-थांपसन)

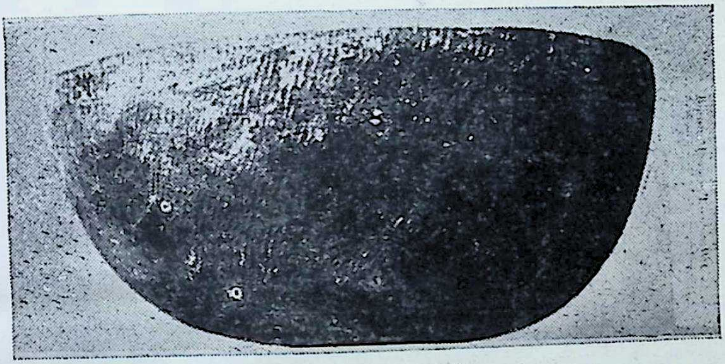

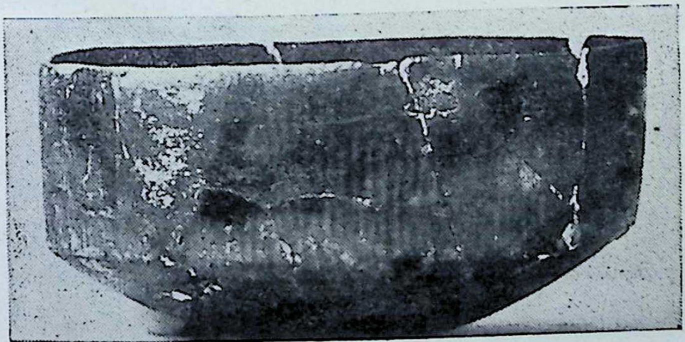

ब. दांतदार बदारियन पात्र
ब्रिटिश संग्रहालय

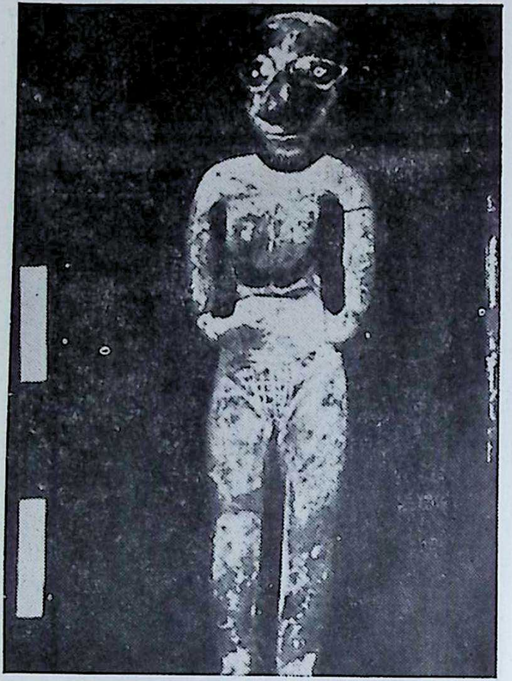

अ. बदारियन लघु-मूर्त्ति

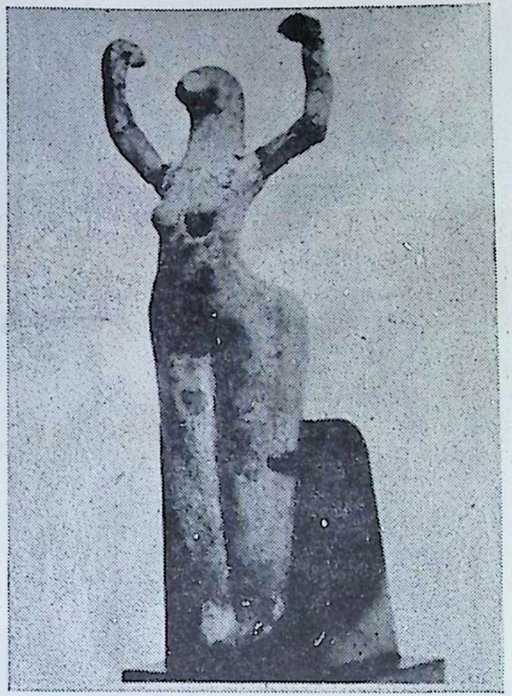

ब. अम्रतियन लघु-मूर्त्ति

ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ५

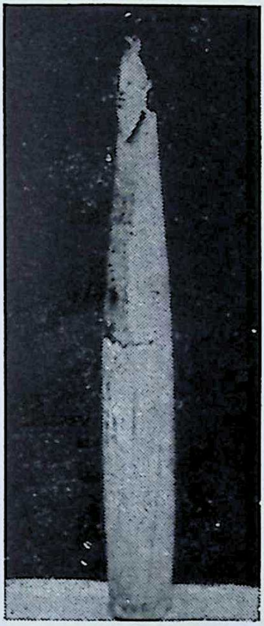

अ. हाथीदांत की लघु-मूर्त्ति

ब. कृष्ण-शीर्ष पात्र
शाही स्कौटी संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

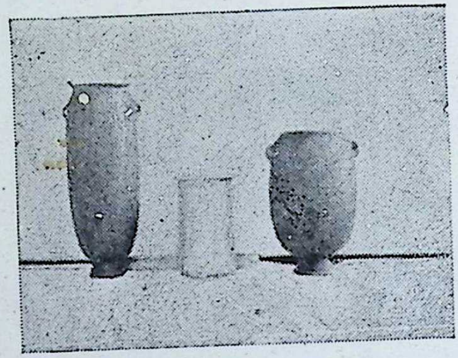

अ. भूरे-पाषाण और श्वेत-पाषाण के पात्र
शाही स्कौटी संग्रहालय

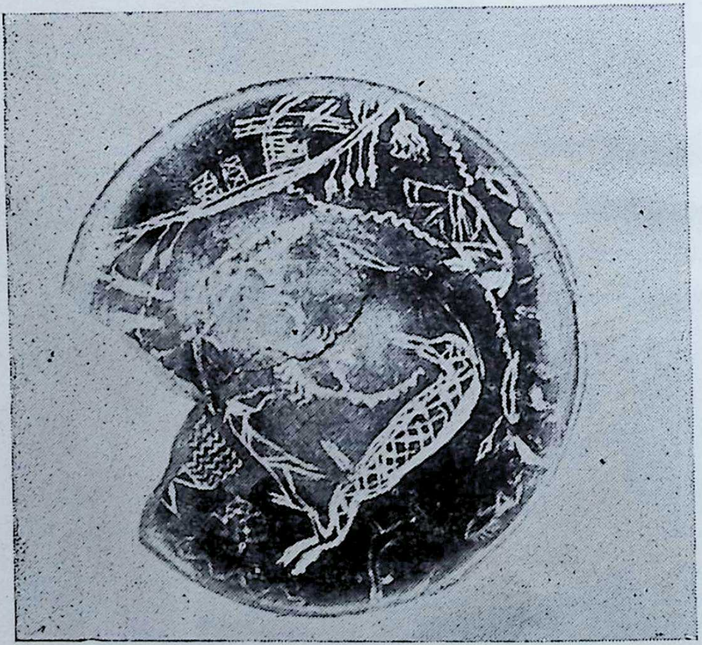

ब. कटोरे के आंतरिक भाग में नौकाकार व्यत्यस्तित श्वेत रेखाएं
मिस्रीय संग्रहालय, कैरो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अ

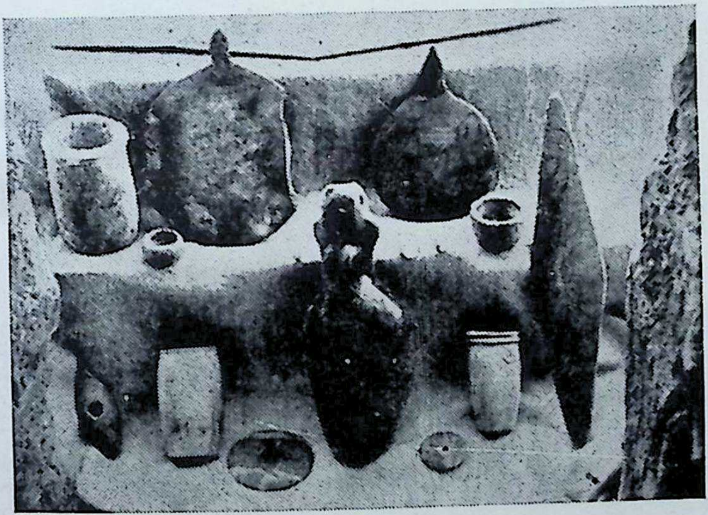

ब

डिओसपोलिस पर्व के समाधि-समूह, मिस्र अनुसंधान समिति से निर्दशित (अ) शिश्नावरण धारित लघु मूर्त्तियां (ब) नुकीले मुगदर, श्वेत पाषाणिक पात्र, चंद्राकार गदा, विशिष्ट लघु मूर्त्ति, चंद्राकार मुगदर, पाषाण का पात्र, विषमकोणाकार स्लेटी रंग-पट्ट

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ८

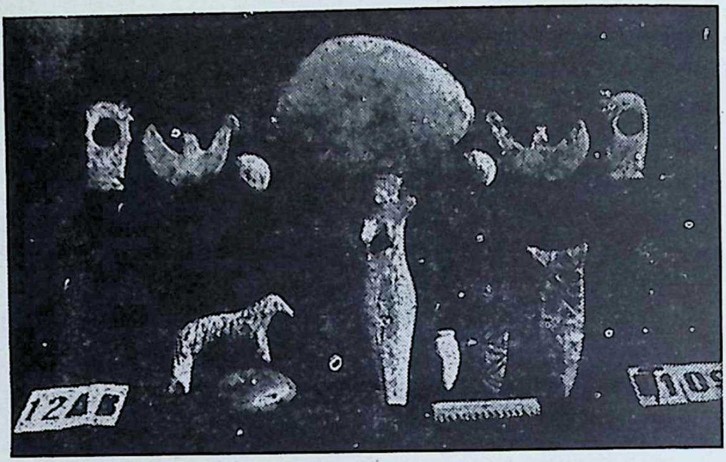

अ

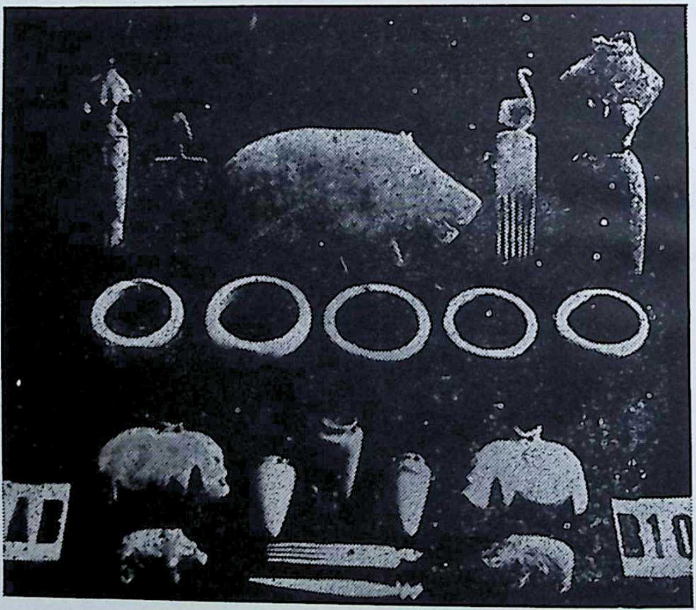

ब

डिओस्पोलिस पर्व के समाधि-समूह, मिस्र अनुसंधान समिति से निर्दशित (अ) ऊपरी पंक्ति, स्लेटी लोलकें और पशु आकृति के रंग-पट्ट, नीचे मृत् शिल्प के प्रतिरूप, धज्जे, रबड़, अनलाश्म का हंसुआ और मत्स्य-पुच्छाकार फलक; (ब) ऊपर, लघु मूर्त्तियां, कंघें और पशु आकृति के रंग-पट्ट; मध्य, कंगन; नीचे, जंतर, धज्जे और कंघे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

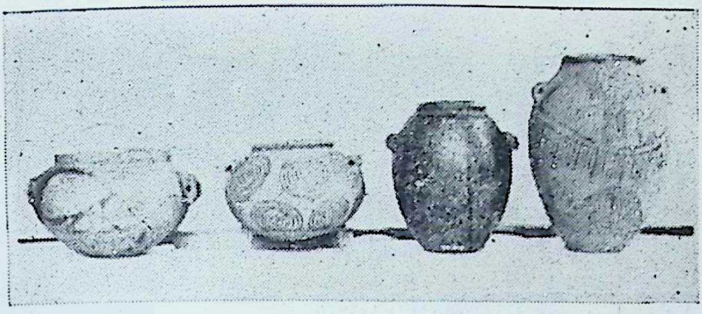

(अ) पाषाणिक पात्र और विभूषित मृत्पात्र की अनुकृति; शाही स्कौटी संग्रहालय

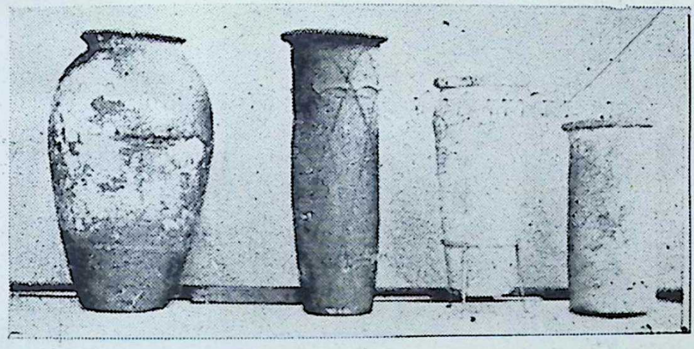

(ब) जर्जीयन लहरदार-मूठ वाले कलश और इसके कुल

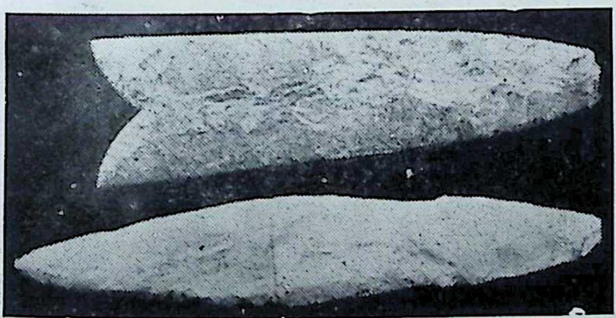

(स) अवाबील पुच्छाकार फलक और अनलाश्म के कटार; मिस्र अनुसंधान समिति

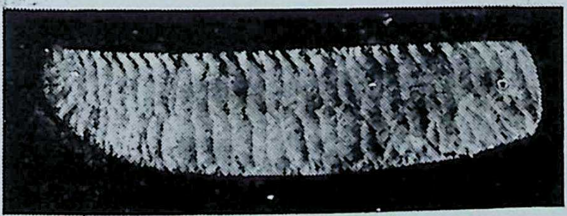

(द) क्रमिक-शल्कित निर्दशित अनलाश्म के चाकू

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक १०

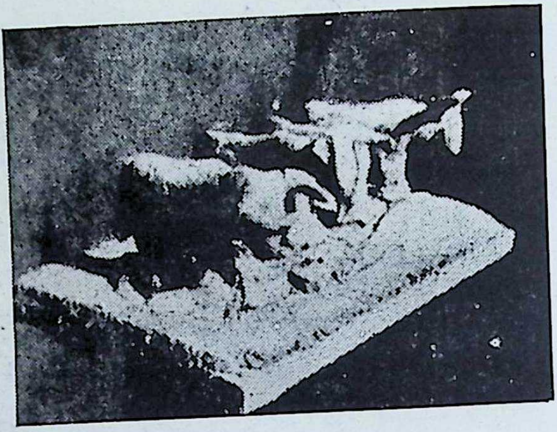

अ. अम्रतिजन ढ़ोर के प्रतिरूप; मिस्र अनुसंधान समिति

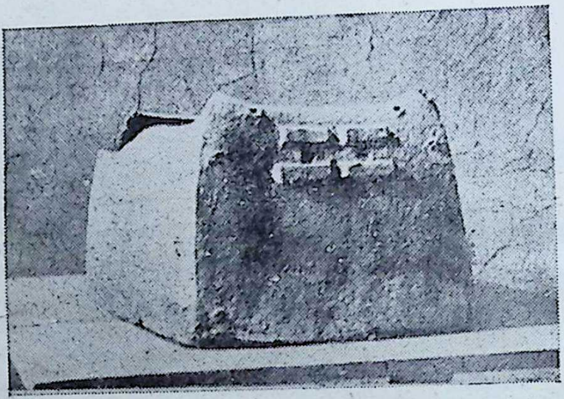

ब

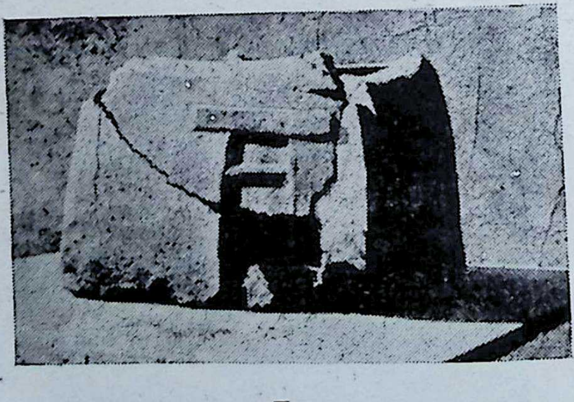

स

(ब-स) जर्जीयन-आवास के प्रतिरूप

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ११

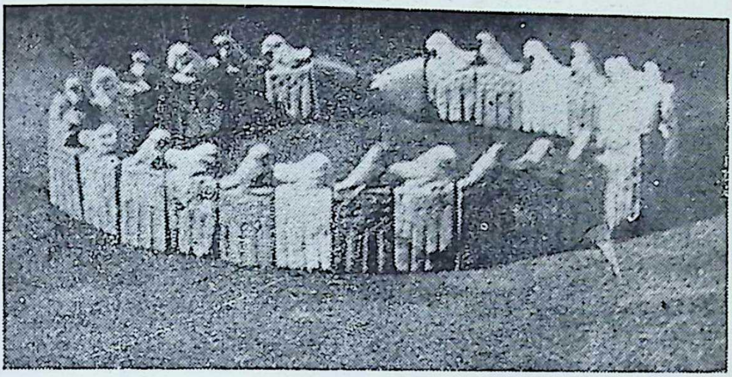

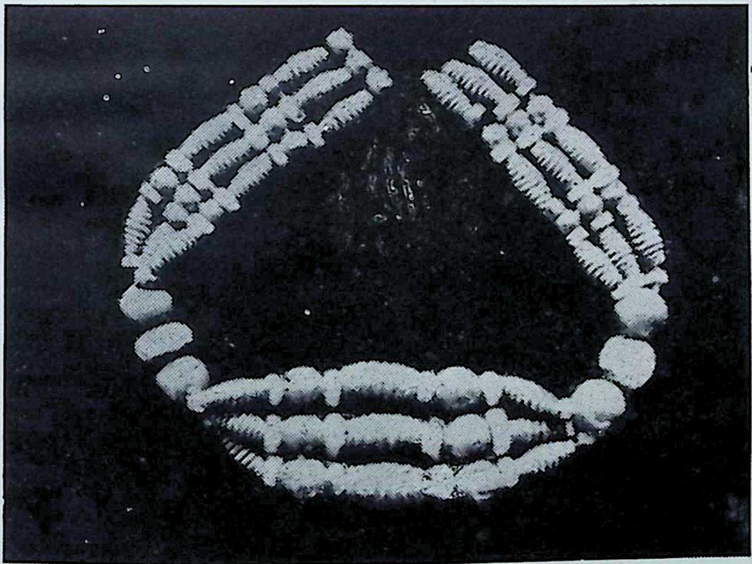

स्वर्ण के कंगन, बिल्लौर और नीलोपल, शाह जार की समाधि से; $\frac{3}{4}$
मिस्र अनुसंधान समिति

फलक १२

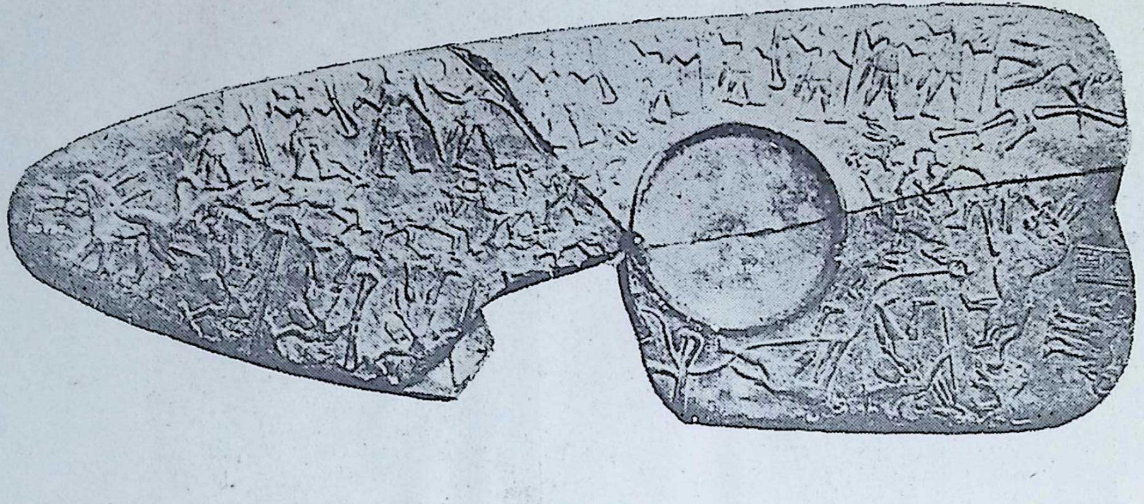

सिंहाखेट-रंग-पट्ट
ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सिहाखेट स्तंभ, इरेक से
इराक संग्रहालय, बगदाद

हस्सुना चित्रित एवं कर्त्तित पात्र
इराक संग्रहालय, बगदाद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक १५

अ

ब

पाषाण-काचित सोपान, प्रथम राजवंश, अजबेत एल-वाल्दा की समाधि से (हेलवान) (लूटेरों का प्रवेश-द्वार नीचे, बांये (ब) में)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

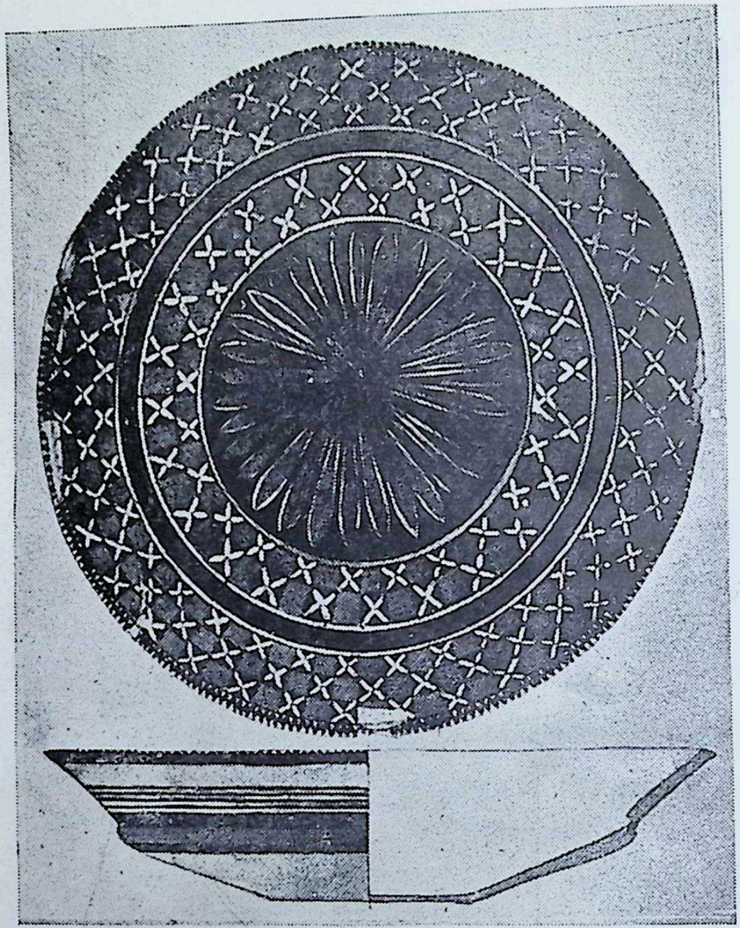

अ. बहुरंगात्मक हलफियन थाल, मलोवा के पश्चात ; $\frac{1}{4}$

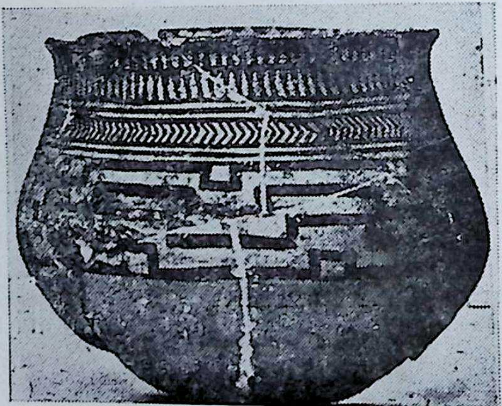

ब. चित्रित चषक, समारा से ; $\frac{1}{4}$, ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक १७

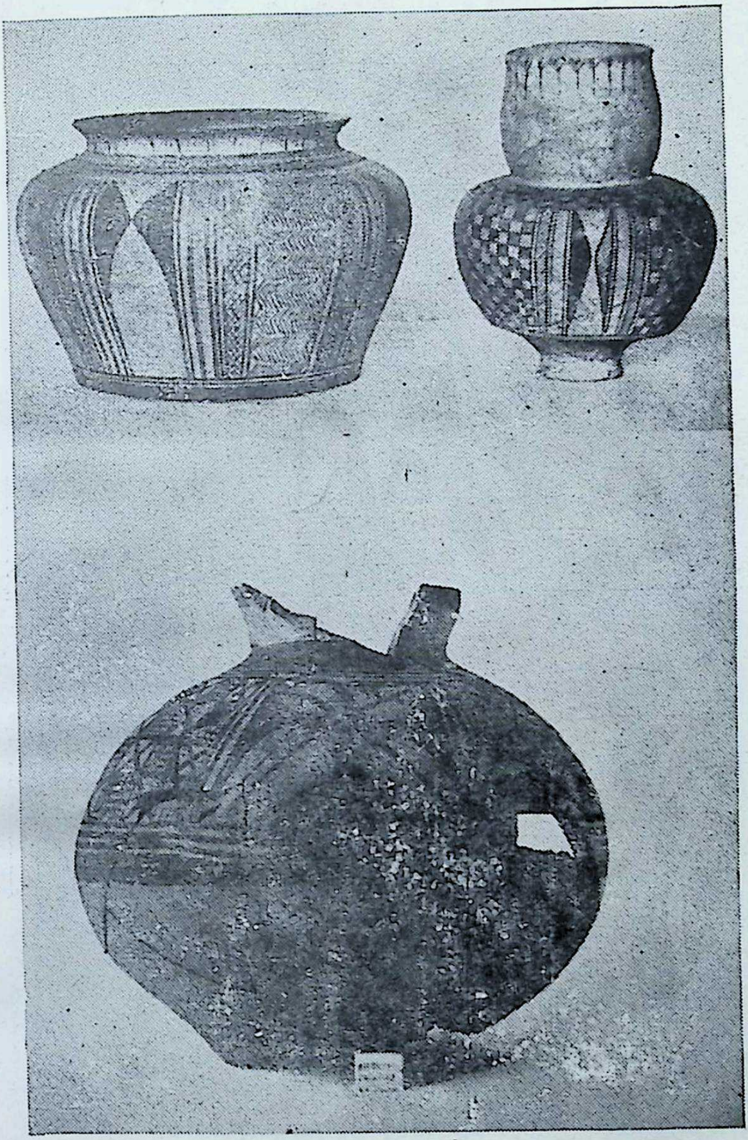

पात्र, तेल हलफ से
तेल हलफ संग्रहालय, बर्लिन

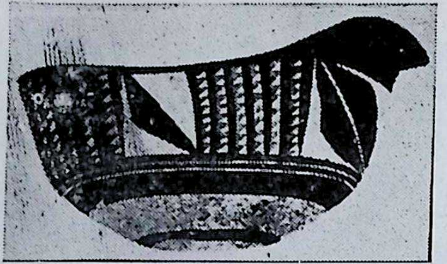

अ. उबेद "चटनी परोसने का नौकाकार पात्र"

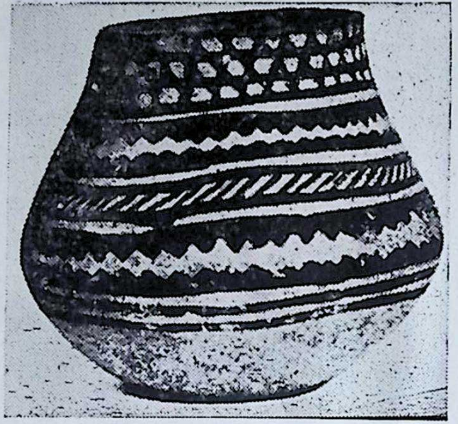

ब. समारा चषक

स. उबेद लघुमूर्त्तियां

ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक १६

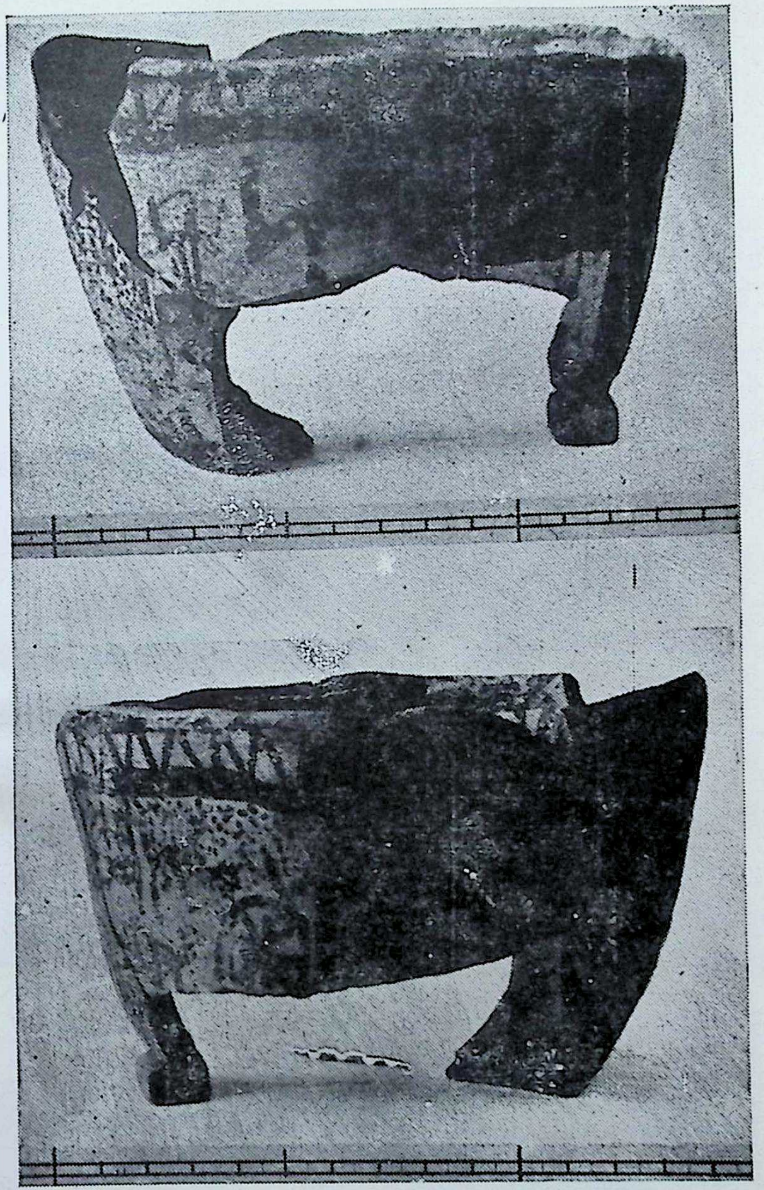

हलफियन पात्र पर निर्दिष्ट 'रथ' की आकृति

 Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

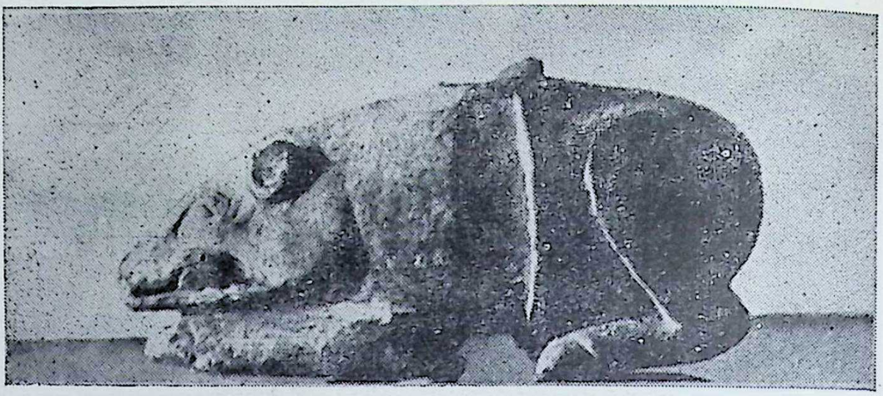

अ. पाषाण का सूअर, जम्देत नस्र काल का, उर

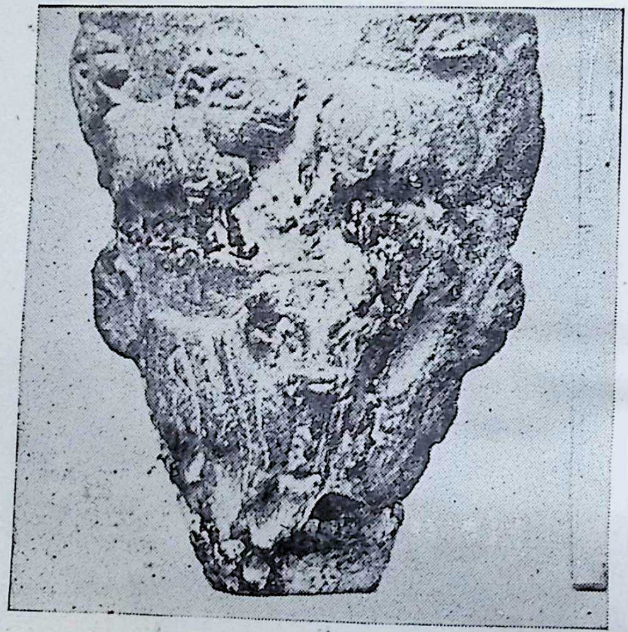

ब. तराशित पाषाण के पात्र, इरेक ; $\frac{2}{3}$, ब्रिटिश संग्रहालय

स. उरूक मुद्रा, इरेक से ; $\frac{2}{3}$, इराक संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक २१

टोंटीदार पात्र, जम्देत नस्र से; ¼

बहुरंगात्मक पात्र, जम्देत नस्र से; असमोलियन संग्रहालय, ऑक्सफोर्ड

फलक २२

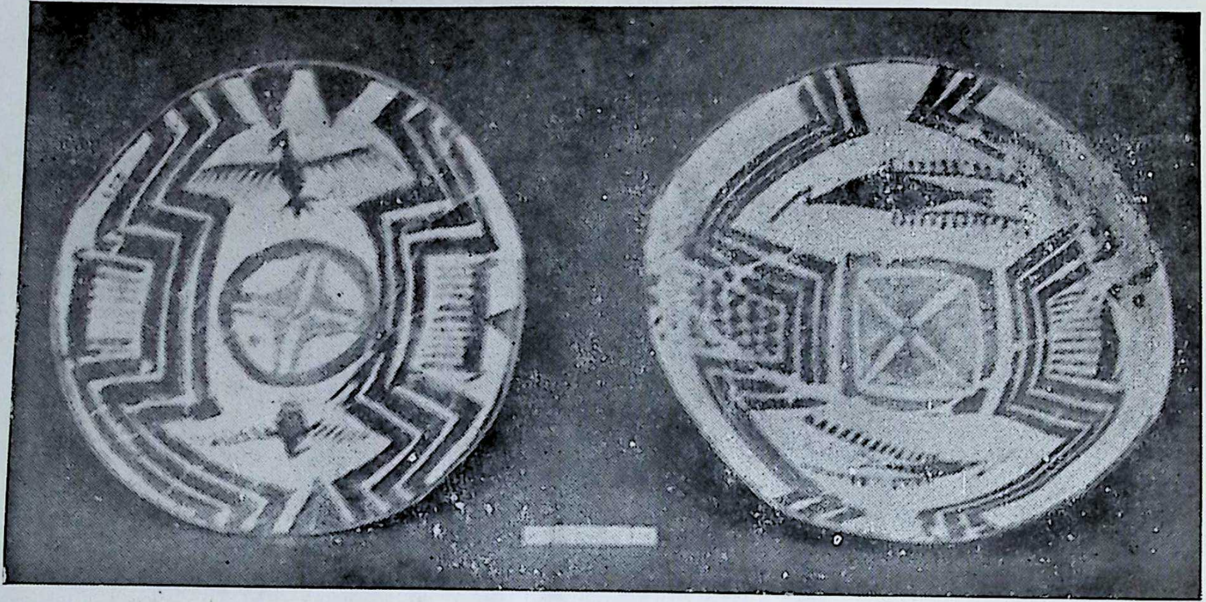

कटोरे, सूसा १ से
मुसी दु लावें, पेरिस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक २३

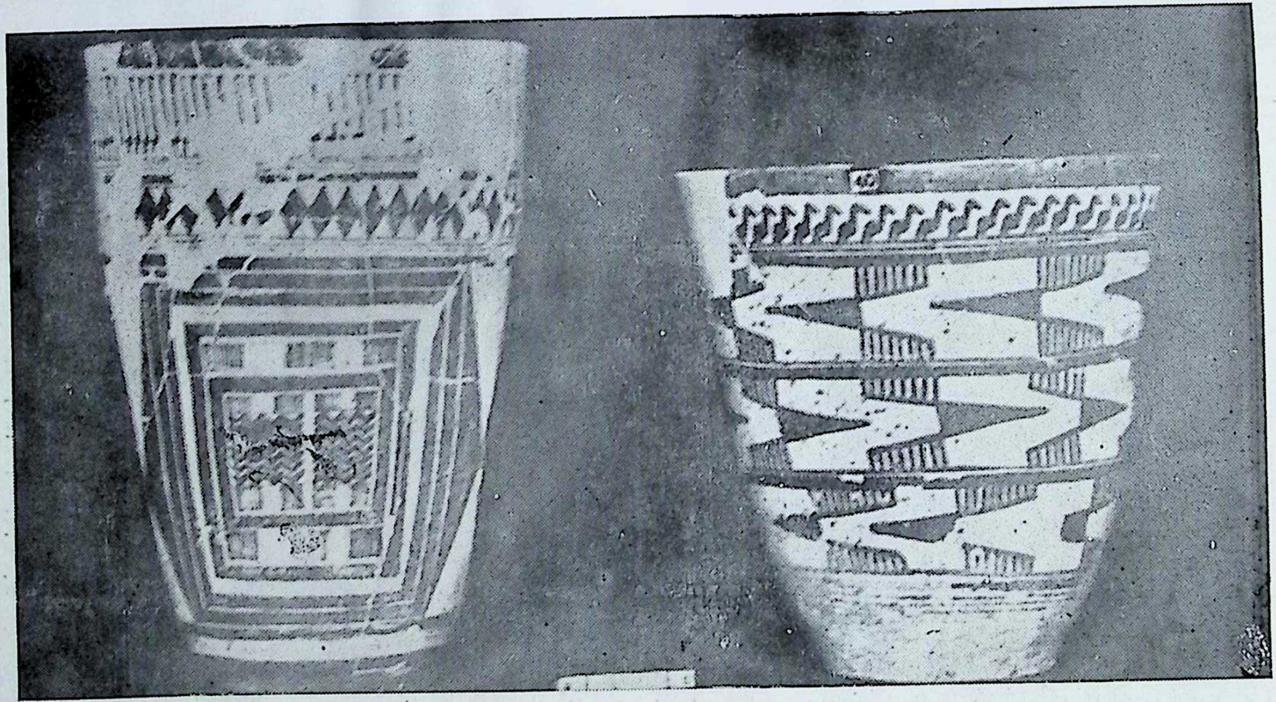

सादा गिलास, सूसा १ से
मुसी दु लार्वे, पेरिस

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

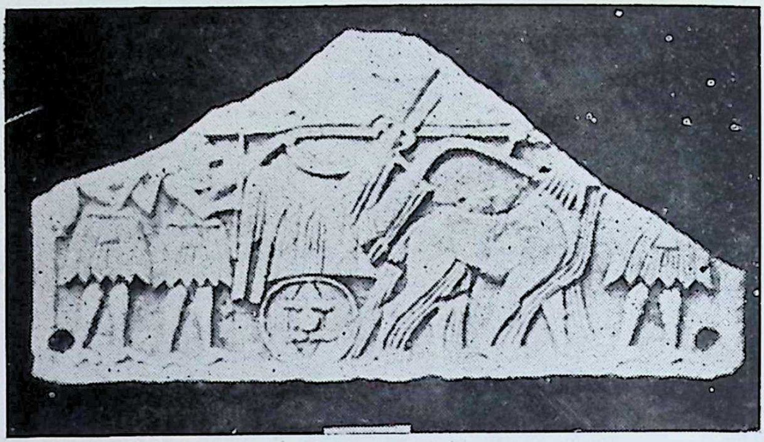

अ. न्यूनोत्य उत्कीरंणाओं निदर्शित रथ, उर

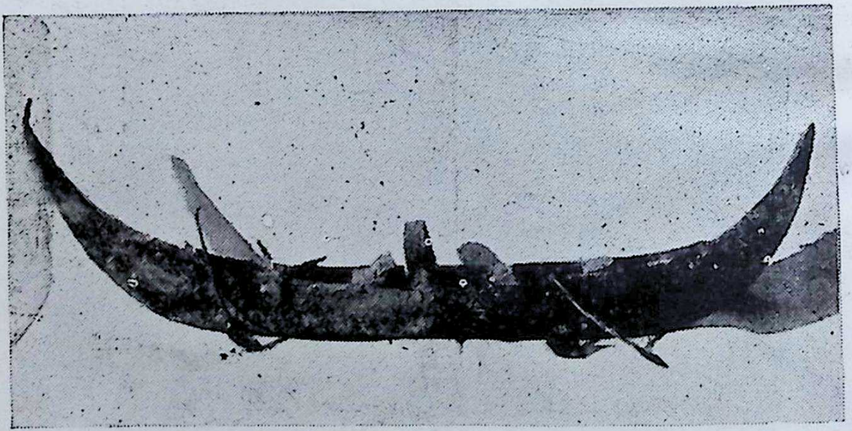

ब. चांदी का नौका, शाही समाधि से, उर
ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक २५

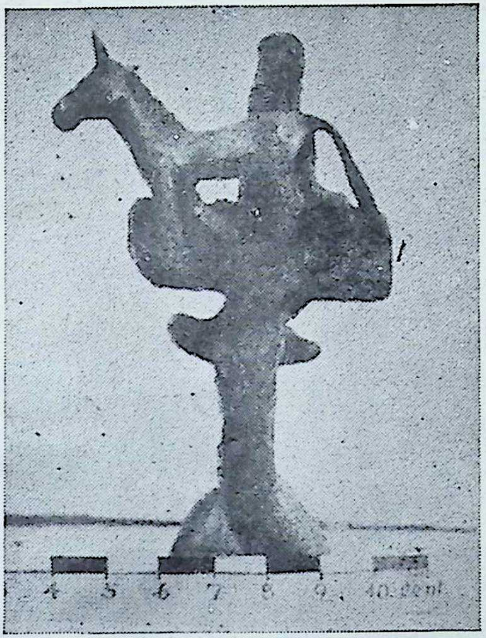

अ. रास-कड़ी युक्त जंतर, रानी सूब-अद की समाधि से, उर

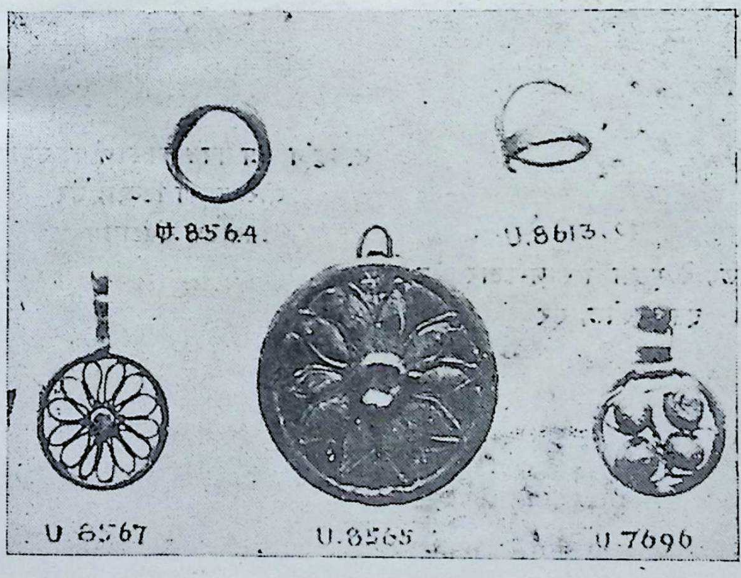

ब. कर्णफूल और लोलकें, शाही शवाधि-स्थान से, उर
ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक २६

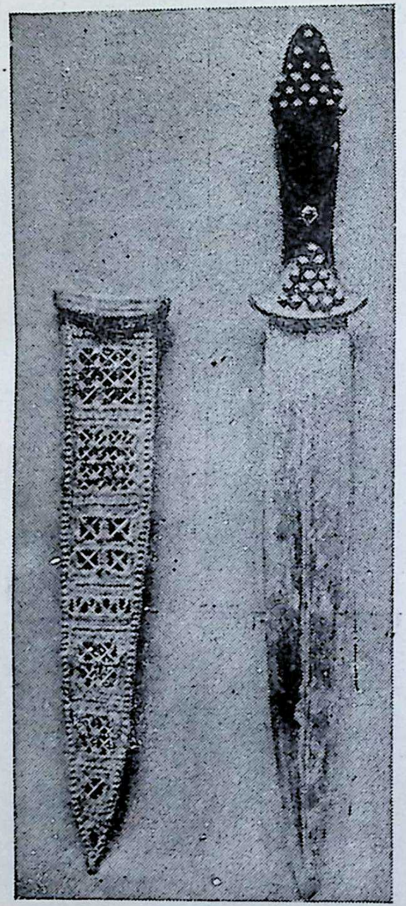

अ. नीलम के मूठवाला स्वर्ण-कटार और
इसका खोल, उर

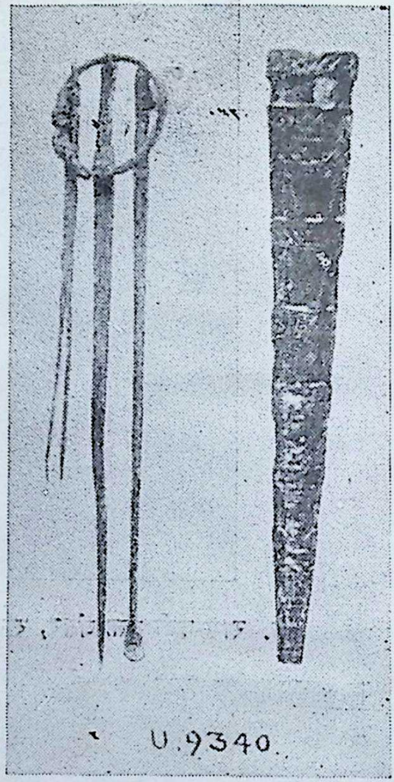

ब. शृंगार प्रमाधन का स्वर्ण का उपादान
और इसका डिब्बा, उर
ब्रिटिश संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

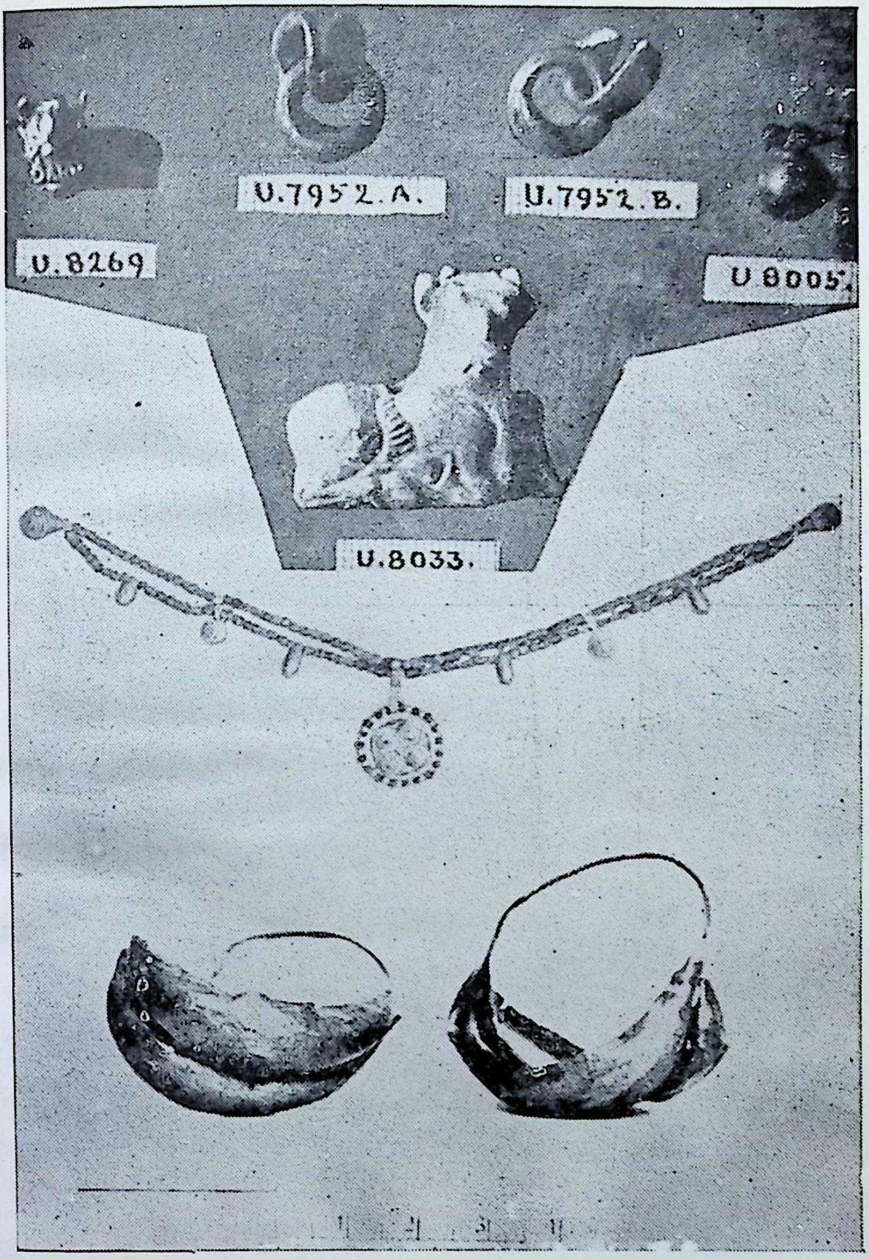

आभूषण, शाही शवाधिस्थान से, उर
ब्रिटिश संग्रहालय

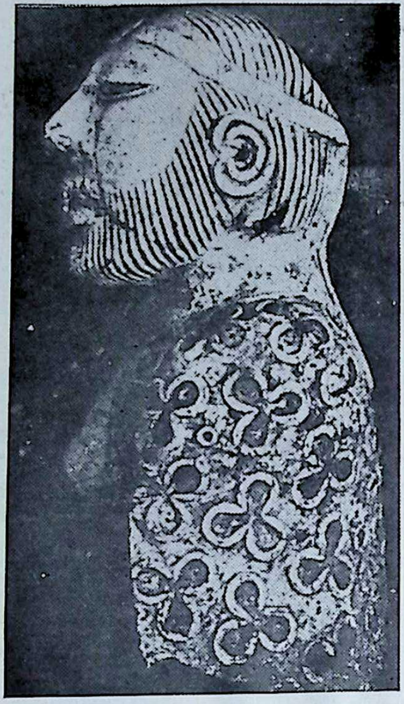

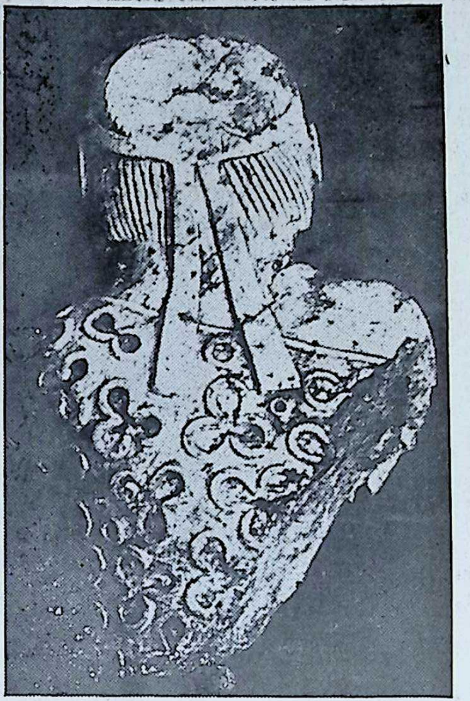

पाषाण-मूर्त्तिका, मोहनजोदड़ो से,
भारत का पुरातात्विक सर्वेक्षण

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

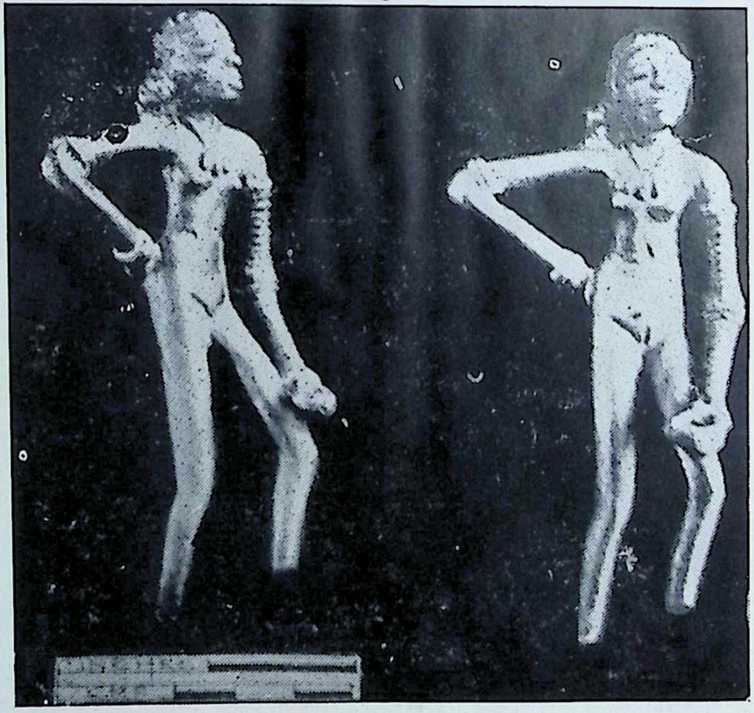

अ. नर्त्तन मुद्रा में तांबे की मूर्त्तिका, हड़प्पा
मध्येशिया सग्रहालय, दिल्ली

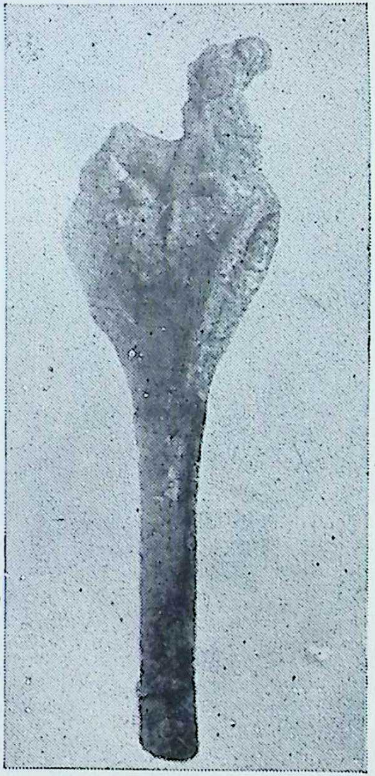

ब. तांबे के डंडे के ऊपर चढ़ा हुआ
ऊंट, खरब, $\frac{1}{2}$
पीबडी संग्रहालय, हार्वर्ड

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ३०

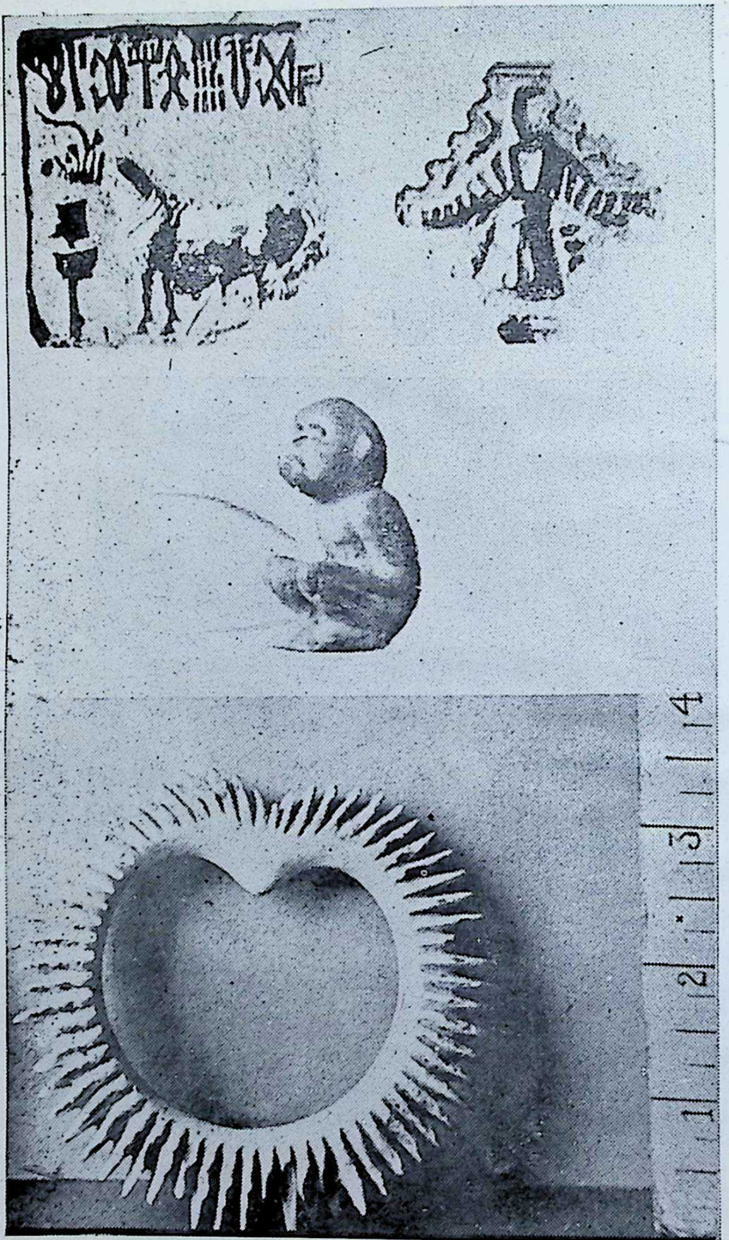

मुद्रा और जंतर, मोहनजोदड़ों से, १/१; और
फायंस कंगन, हड़प्पा से

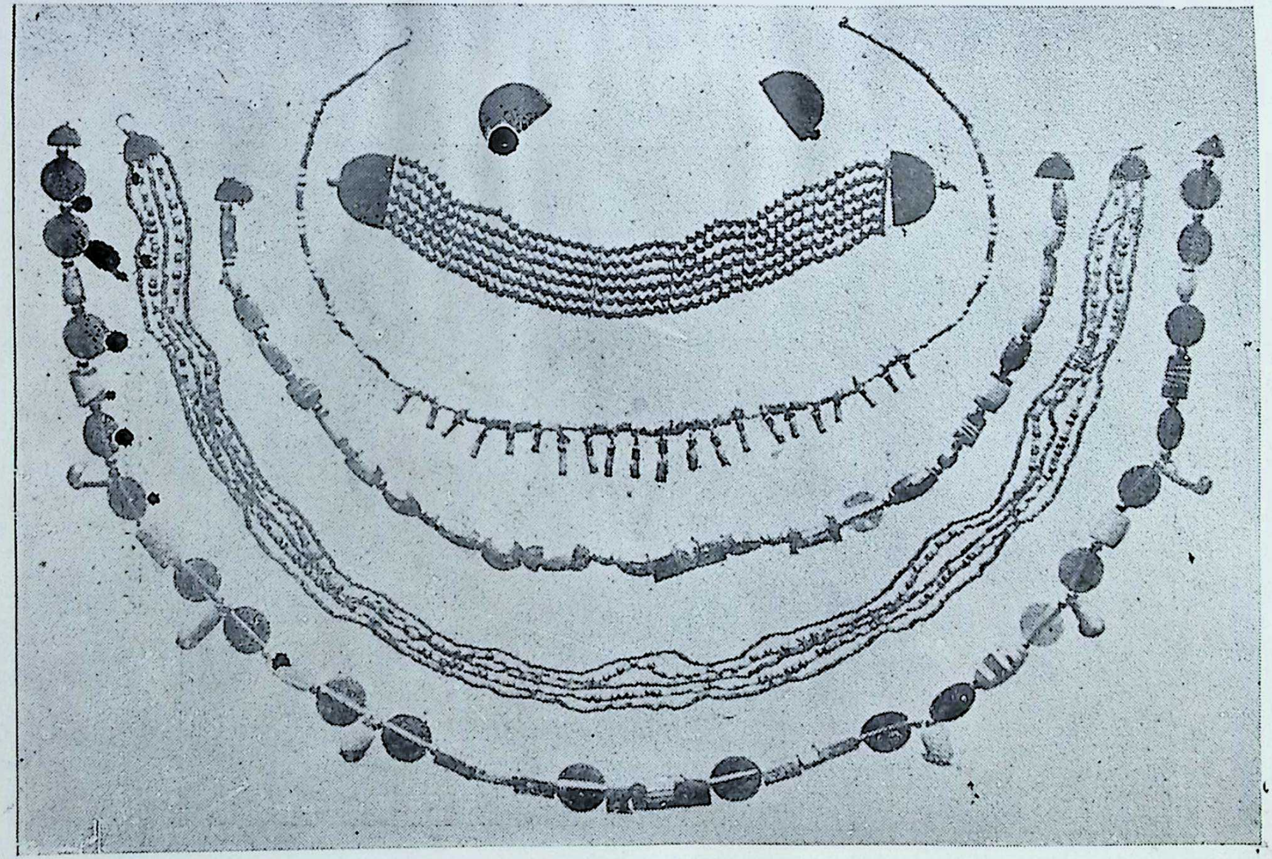

आभूषण, मोहनजोदड़ो से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

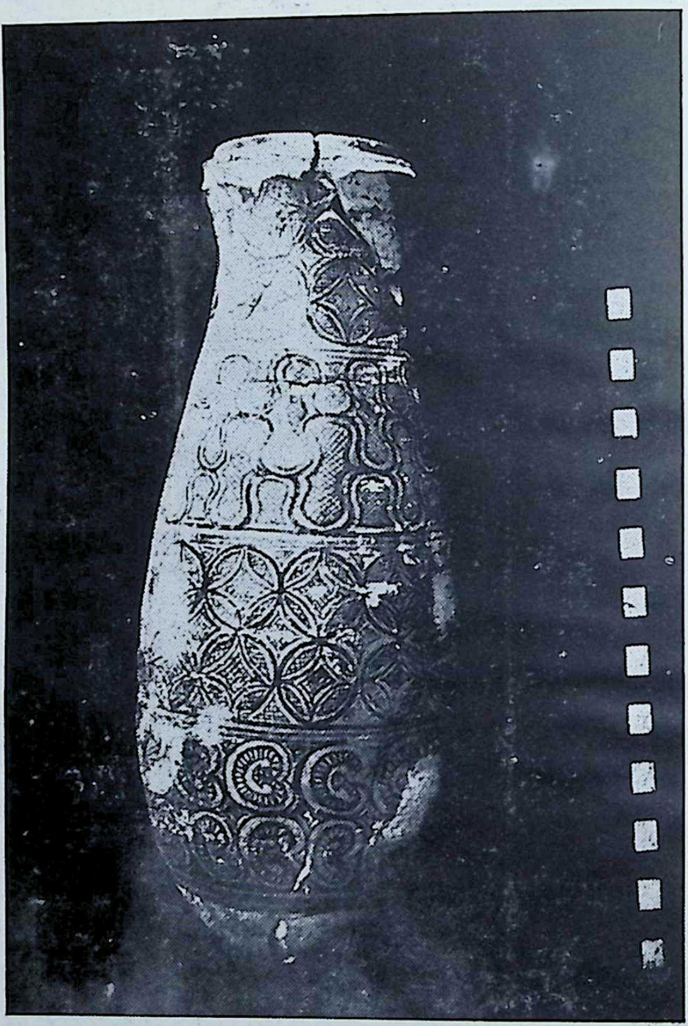

चित्रित-पात्र, मोहनजोदड़ो से

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

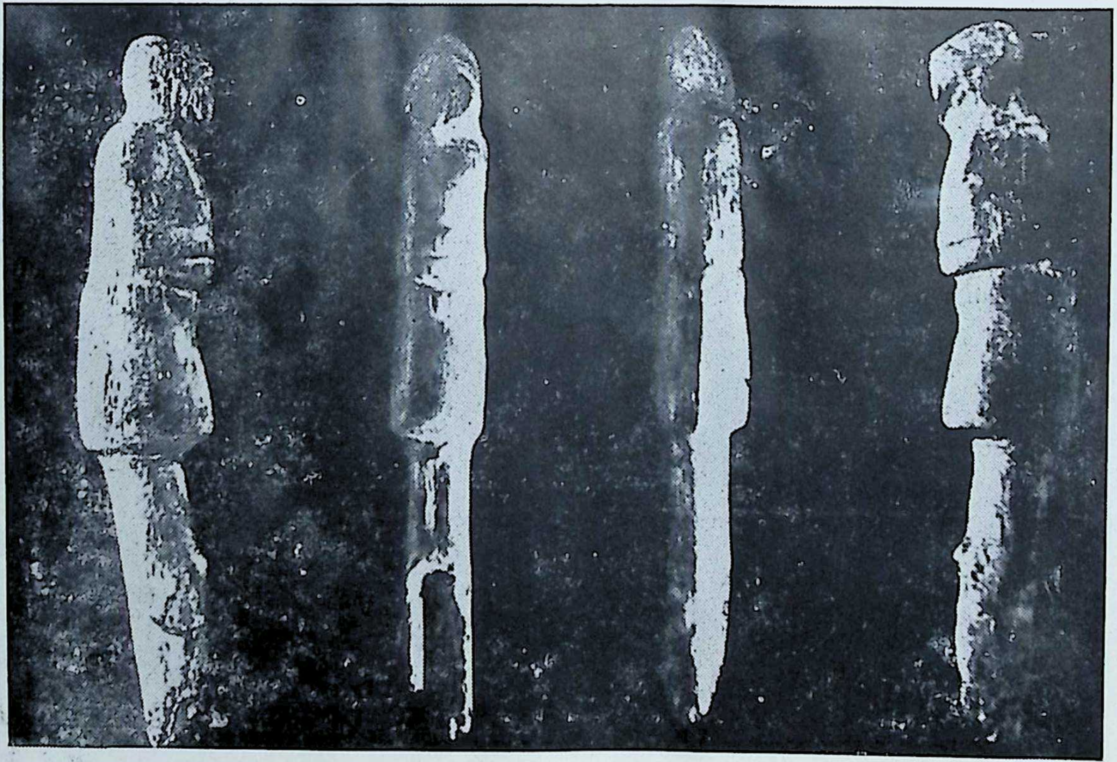

हड्डी-कृत हसुए की मूठ, सियालक १; $\frac{२}{३}$

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ३४

चित्रित मृत्पात्र, सियालक २ से

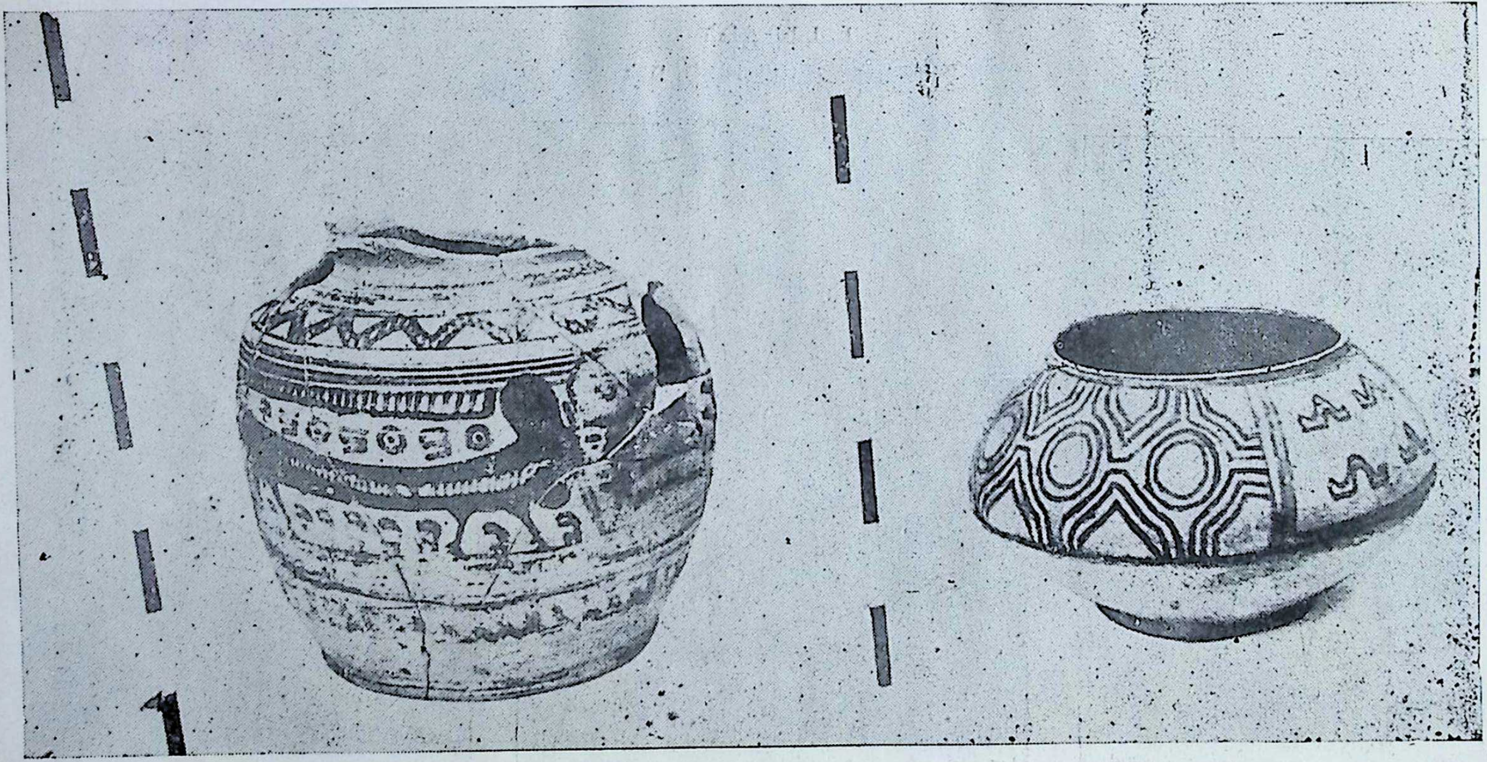

अ. कुल्ली शैली में चित्रित मृत्पात्र, मेही से   ब. बहुरंगात्मक पात्र, नाल से

मध्येशिया संग्रहालय, दिल्ली

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

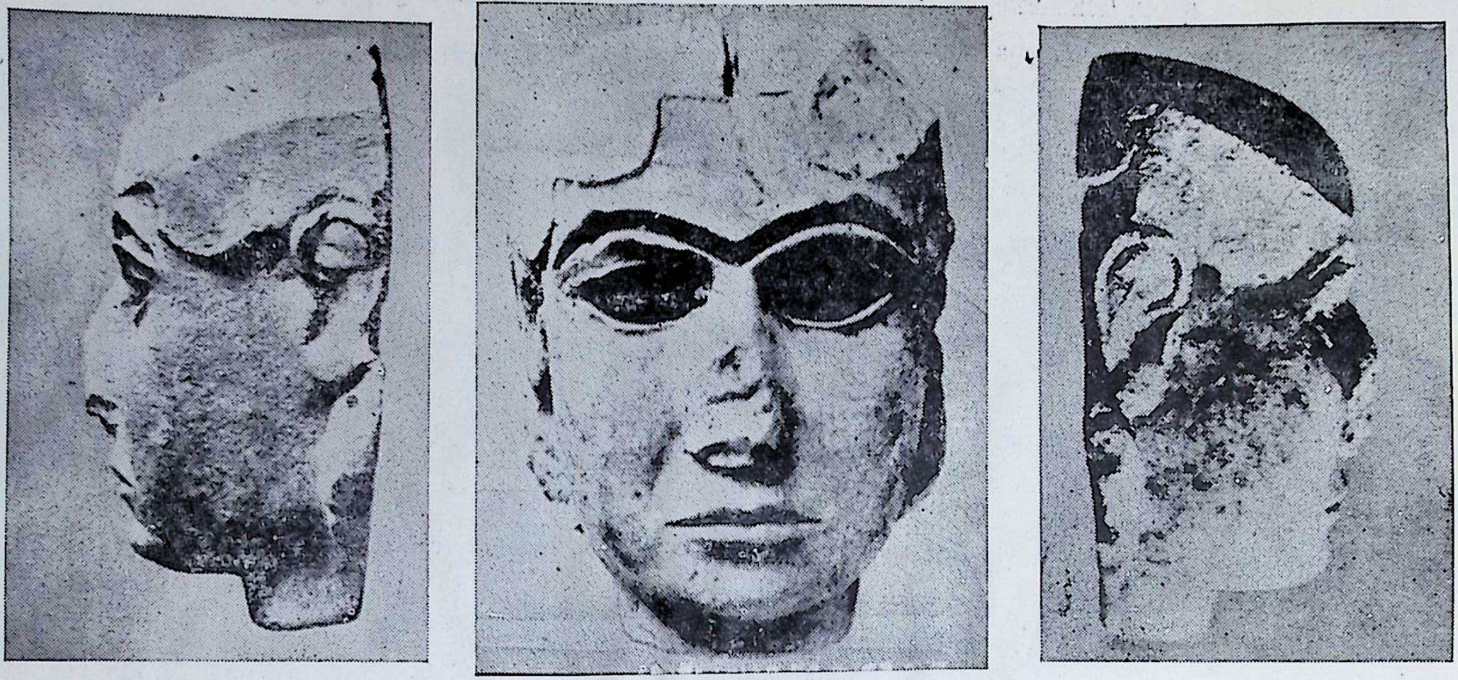

श्वेत पाषाण का सिर, इरेक से; २/५
इराक संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

श्वेत पाषाण का सिर, चक्षु मंदिर ब्रेक से; दे
इराक संग्रहालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

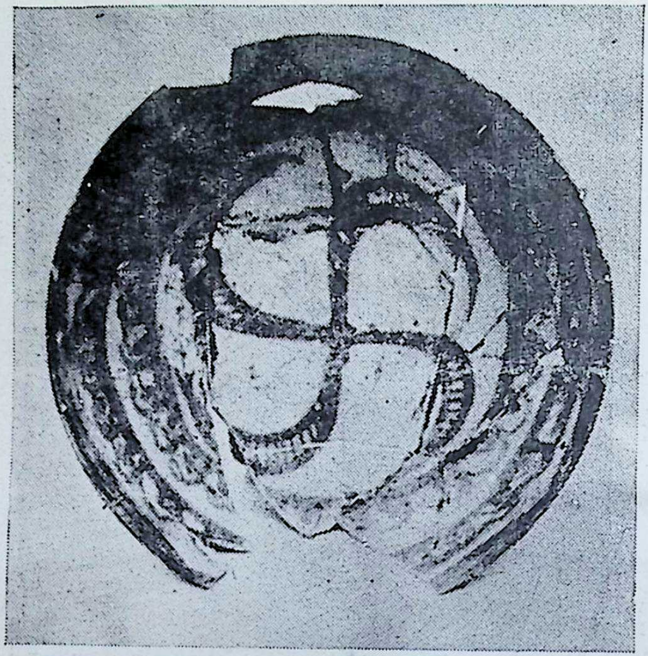

थाल, १/३, और भद्दे मृत्पात्र, २/५, शाही-टुंप शवाधिस्थान से
मध्येशिया संग्रहालय, दिल्ली,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फलक ३६

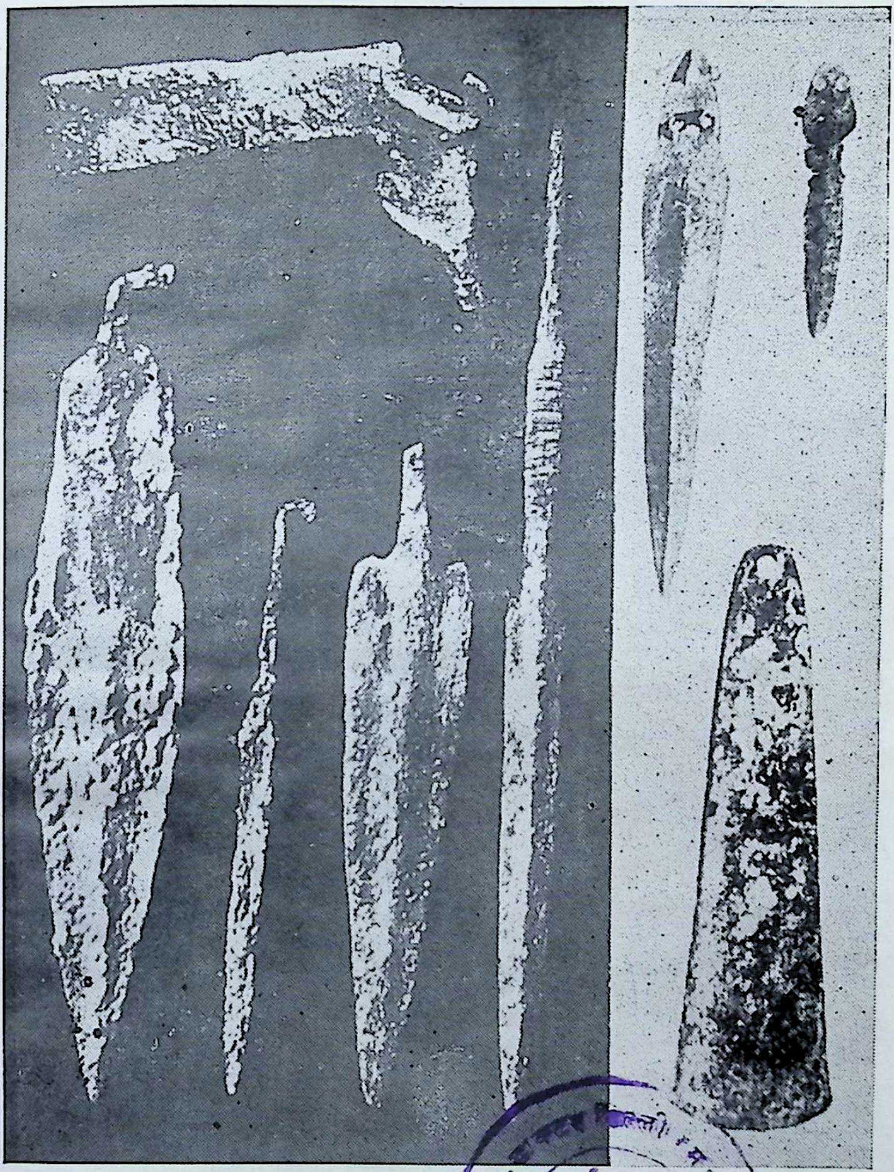

तांबे की कुल्हाड़ी, कटारें, बर्छे के सिरे, तिल-बार्सिब से; सूक्ष्म रुखानियां, बिब्लोस ४ से, $\frac{1}{3}$; कटारें, बिब्लोस २ के शवाधिस्थान से, $\frac{1}{4}$

3908

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

८३०.१
भा १३६.श्री

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai